

डा. विशेषलक्ष्मी 'वीणा'

एम. ए., एल. टी., पी-एच. डी., आई. जी. डी., साहित्य-भूषण.

जन्म : ३१ दिसम्बर १९५० ई०

रुचि : काव्य, सङ्गीत, चित्रकला, समीक्षा, निबन्ध-लेखन एवं गृह-कार्य ।

प्रकाशित : नारी सौन्दर्य और व्यायाम, आधुनिक मेक-अप निर्देशिका, लेडीज स्लीमिंग कोर्स, एवं महिलोपयोगी अन्य अनेक पुस्तकें। पत्र-पत्रिकाओं में लेखादि का प्रकाशन ।

अप्रकाशित : कविता, कहानी, निबन्ध-संग्रह ।

प्रसारित : आकाशवाणी द्वारा अनेक वार्ताएँ ।

स्थायी पता : २६ एम.आई.जी., महाविद्या आवासीय योजना, मथुरा (उ. प्र.) ।

वर्तमान पता : द्वारा : वीणा प्रिन्टर्स, पीर कल्यानी, मोतीलाल नेहरू रोड, आगरा

सम्प्रति : डी.लिट्. हेतु शोध-रत, अध्ययन एवं लेखन ।

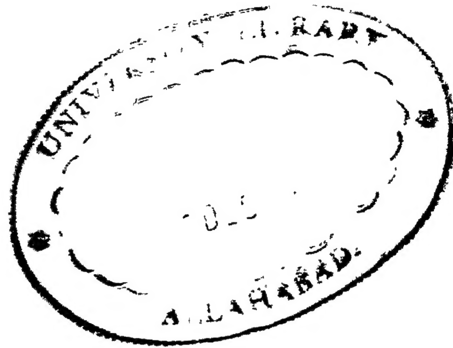
हिन्दी कवि-सम्मेलन
और मंचीय-कवियों का साहित्यिक-योगदान

[आगरा विश्वविद्यालय की पी-एच० डी० उपाधि हेतु स्वीकृत शोध-प्रबन्ध]

डा० विशेषलक्ष्मी 'वीणा'
एम०ए०, एल०टी०, पी-एच०डी०



प्रगति प्रकाशन, आगरा-३.



प्रथम संस्करण : 1985 / मूल्य : एक सौ पच्चीस रुपये / प्रकाशक : प्रगति प्रकाशन बेतूल बिल्डिंग आगरा–282003 / मुद्रक : राष्ट्रभाषा प्रेस, आगरा–2।

HINDI KAVI -SAMMELAN AUR MANCHIYA KAVIYON KA SAHITYIK-YOGDAN : DR.VISHESHLAXMI 'VEENA', Rs. 125-00

प्राक्कथन

हिन्दी-जगत् में सार्वजनिक कवि-सम्मेलनों की परम्परा का सूत्रपात आज से लगभग 60 वर्ष पूर्व हुआ था। उससे पूर्व देश में उर्दू-मुशाइरों का ही प्रचलन था। यदा-कदा राजदरबारों में आयोजित होने वाले काव्योत्सवों में सामान्य-जन का प्रवेश वर्जित रहने से सर्व-साधारण को उनका कोई लाभ नहीं पहुँच पाता था। बाद में, कुछेक हिन्दी कवियों द्वारा राजमहलों से बाहर छोटी-मोटी पढ़न्त-गोष्ठियों अथवा कवि-गोष्ठियों का भी आयोजन किया जाने लगा; परन्तु स्थान, प्रकाश-व्यवस्था एवं ध्वनि-विस्तारक यन्त्रादि की कमी के कारण उनमें उपस्थित होने वाले काव्य-रसिकों की संख्या सीमित ही रही। इस प्रकार तत्कालीन हिन्दी कविता जन-साधारण के लिए केवल पाठ की वस्तु ही बनी रही, उसे कवि-मुख से सुन पाने का सौभाग्य विरल व्यक्तियों को ही मिल पाता था।

विद्युत्-प्रकाश एवं ध्वनि-विस्तारक यन्त्रों की उपस्थिति में सार्वजनिक कवि-सम्मेलनों के उद्भव से हिन्दी-जगत् में एक नवीन युग का सूत्रपात हुआ है। ऐसे कवि-सम्मेलन हिन्दी-कविता के प्रचार-प्रसार के माध्यम तो बने ही हैं, जन-जागरण तथा सामाजिक एवं राष्ट्रीय कर्तव्य-बोध की दिशा में भी इनका योगदान महत्त्व-पूर्ण सिद्ध हुआ है। स्वतन्त्रता-पूर्व जन-मानस में स्वराज्य-प्राप्ति की लालसा को जगाने तथा स्वातन्त्र्योत्तर-काल में "भारत-चीन" तथा "भारत-पाक" युद्ध के अव-सरों पर स्वतन्त्रता की रक्षा तथा राष्ट्र के प्रति कर्तव्य-पालन की दिशा में देशवासियों को प्रेरित करने में कवि-सम्मेलनों ने जिस महत्त्वपूर्ण भूमिका को निभाया है, वह हिन्दी-साहित्य के इतिहास का एक स्वर्णिम-पृष्ठ है। समय-समय पर शासन की त्रुटियों की ओर इंगित करते हुए, जन-भावनाओं की अभिव्यक्ति में भी मंचीय-कवि पीछे नहीं रहे हैं। सच पूछा जाय तो आज के मंचीय-कवि ने जन-भावनाओं के साहित्यिक-प्रवक्ता का स्वरूप ग्रहण कर लिया है और किसी भी विषय पर किये

जाने वाले भाषणों की तुलना में, उसका काव्य-पाठ जन-गण-मन को विशेष रूप से आन्दोलित करता है।

इन सब के अतिरिक्त सार्वजनिक मनोरंजन के प्राचीन तथा हल्के माध्यमों से जो जन-रुचि विकृत होती चली जा रही थी, उसे स्वस्थ, सोद्देश्य, साहित्यिक एवं बौद्धिक रस-धारा की ओर प्रेरित करने में भी मंचीय-कवियों के प्रयास प्रशंसनीय कहे जा सकते हैं। अपनी इन अनेक विशेषताओं के कारण हिन्दी-साहित्य की इस अभिनव-विधा ने अल्पकाल में ही इतनी अधिक लोकप्रियता प्राप्त कर ली है कि आज देश के प्रायः सभी भागों मे प्रतिवर्ष सैकड़ों की संख्या में सार्वजनिक हिन्दी कवि-सम्मेलन आयोजित किये जाते हैं और उनमें उपस्थित रहने वाले काव्य-प्रेमी श्रोताओं की संख्या लाखों तक जा पहुँचती है। आकाशवाणी, दूर-दर्शन तथा फिल्मों में भी कवि-सम्मेलनों का आयोजन किया जाना इस साहित्यिक-विधा की लोक-प्रियता का एक अन्य उदाहरण है।

कवि-सम्मेलन के मंच से काव्य-पाठ करने वाला कवि केवल अपनी साहित्यिक-प्रतिभा को ही प्रकट नहीं करता, अपितु वह अपने कण्ठ-स्वर तथा हाव-भावादि के प्रदर्शन द्वारा काव्य-गत विषय-वस्तु को साकार रूप देने की चेष्टा भी करता है। इस प्रकार मंचीय-काव्य अपने श्रव्य तथा दृश्य—इन दोनों रूपों में जन-मानस के आकर्षण का केन्द्र बनता है। अपनी इस दुहरी विशेषता के कारण ही मंचीय-कवि साहित्यिक दृष्टि से अधिक समृद्ध अमंचीय-कवियों की तुलना में कहीं अधिक लोक-प्रिय होकर, प्रत्यक्ष जन-सम्पर्क के माध्यम से समाज एवं राष्ट्र को विशेष रूप से आन्दोलित करने में सक्षम सिद्ध होते हैं।

सार्वजनिक कवि सम्मेलनों का प्रचार-प्रसार ज्यों-ज्यों बढ़ा है, मंचीय-कवियों की संख्या में भी उतनी ही वृद्धि होती चली गई है। विगत तीन दशकों में तो उनका एक अलग वर्ग-सा ही बन गया है, जिसे "मंचीय-कवि" अथवा "कवि-सम्मेलनी कवि" की संज्ञा दी जाती है। देश के कोने-कोने में बिखरे हुए ये मंचीय-कवि अपनी प्रतिभा, साधना, सृष्टि, शिल्प एवं प्रस्तुतीकरण की कला के माध्यम से हिन्दी-साहित्य की अभिवृद्धि करने के साथ ही हिन्दी-कविता को लोक-प्रिय बनाने, कविता के माध्यम से जन-भावनाओं को उजागर करने तथा राष्ट्रीय-समस्याओं के समाधान में दिशा-निर्देश का कार्य भी कर रहे हैं।

सार्वजनिक कवि-सम्मेलनों के उद्भव से पूर्व हिन्दी का कवि अपने सम्पूर्ण जीवन-काल में भी उतनी लोक-प्रियता प्राप्त नहीं कर पाता था, जितनी कि आज के मंचीय-कवि अल्प-काल में ही प्राप्त कर लेते हैं। इस दृष्टि से देखा जाय तो कवि-सम्मेलन साहित्य, समाज तथा राष्ट्र के साथ-साथ स्वयं कवि के हित में भी अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

विगत तीन दशकों में हिन्दी कवि-सम्मेलनों ने न केवल एक संस्था का रूप ले लिया है, अपितु वे एक व्यावसायिक-क्षेत्र के रूप में भी परिवर्तित हुए हैं; जिसके फलस्वरूप आज के अनेक कवियों के लिये मंचीय काव्य-पाठ जीविकोपार्जन का एक प्रमुख माध्यम बन गया है। अस्तु, राज्याश्रय के अभाव में कवि-सम्मेलन मंचीयककवियों के आश्रयदाता भी कहे जा सकते हैं।

विगत चार दशकों में हिन्दी के जिन मंचीय-कवियों ने अखिल भारतीय ख्याति अर्जित की है, उनमें पचास प्रतिशत से भी अधिक ब्रजभाषा-भाषी क्षेत्र से सम्बन्धित रहे हैं। ब्रजक्षेत्र के सुविख्यात जीवित मंचीय-कवियों में सर्वश्री राजेश दीक्षित, रामकुमार चतुर्वेदी 'चंचल' तथा उदयप्रताप सिंह (सभी वीर रस), गोपाल दास "नीरज", सोम ठाकुर, आत्म प्रकाश शुक्ल तथा शिशुपाल सिंह "निर्धन" (सभी गीतकार), गोपाल प्रसाद व्यास, निर्भय हाथरसी, काका हाथरसी, गोविन्द व्यास तथा अशोक चक्रधर (सभी हास्य-व्यंग्यकार) एवं देवराज दिनेश, मुकुट बिहारी "सरोज", डा. रामगोपाल शर्मा "दिनेश", डा.देवर्षि सनाढ्य, राधेश्याम "प्रगल्भ", भैयालाल व्यास तथा प्रकाश मिश्र (विविध रस) आदि ब्रजक्षेत्र से ही सम्बन्धित हैं।

हिन्दी कवि-सम्मेलनों के उद्‌भव तथा उसमें प्रमुख रूप से भाग लेने वाले ब्रजक्षेत्र के मंचीय हिन्दी-कवियों का इतिहास लगभग 60 वर्ष पुराना हो चुका है, तथापि इस महत्त्वपूर्ण विषय पर अभी तक किसी शोध-कार्य का न होना आश्चर्य-जनक-सा प्रतीत होता था। अपने इस शोध-प्रबन्ध के माध्यम से मैंने हिन्दी-साहित्य के इतिहास के एक अभाव की पूर्ति का विनम्र प्रयास किया है, जो आपके समक्ष प्रस्तुत है।

शोध का यह विषय सर्वथा नवीन, मौलिक तथा रोचक है, इसमें सन्देह नहीं। इस दिशा में कार्यारम्भ करते समय मेरा विश्वास था कि साहित्यिक-योगदान करने वाले ब्रजक्षेत्र के मंचीय-कवियों की संख्या 50 से अधिक नहीं होगी, परन्तु ज्यों-ज्यों खोज आरंभ की गई तथा कार्य आगे बढ़ा, इस संख्या में निरन्तर वृद्धि होती चली गई, फलत. प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में ब्रज क्षेत्र से संबंधित 250 से भी अधिक मंचीय-कवियों का विशिष्ट उल्लेख हुआ है। यह संख्या ब्रज क्षेत्र के लिये तो गौरवा-स्पद है ही, हिन्दी-साहित्य के लिये भी गर्व करने योग्य है। ब्रजक्षेत्र से सम्बन्धित मंचीय-कवि आज न केवल अपने ही देश के विभिन्न भागों मे, अपितु यूरोप तथा अमेरिका आदि विदेशों में भी प्रतिष्ठित होकर, हिन्दी-साहित्य की श्री—वृद्धि कर रहे हैं। गीता-गायक भगवान् श्रीकृष्ण के पावन लीला-क्षेत्र से उद्‌भूत हिन्दी की यह रसवन्ती काव्य-धारा युग-युगों तक काव्य-प्रेमियों के मन-मानस को तरंगायित करती रहेगी तथा इसका स्वरूप दिन-प्रतिदिन अधिकाधिक मोहक होता चला जाएगा, ऐसी आशा करना अस्वाभाविक नहीं है।

हिन्दी कवि-सम्मेलन तथा मंचीय-कवियों के सम्बन्ध में कहीं होने के कारण प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के लिये सम्पूर्ण सामग्री सर्वथा तथा एकत्र की गई है। इस गुरुतर कार्य के सम्यक्-निष्पादन हेतु मुझे सैकड़ों पत्र लिखने, अनेक कवियों से साक्षात्कार तथा उनकी रचनाओं का अध्ययन करने की आवश्यकता पड़ी है। अस्तु, सर्वप्रथम मैं उस परमपिता परमेश्वर की अत्यन्त आभारी हूँ, जिसकी कृपा से आज यह कठिन कार्य सम्पन्न हो सका है तथा शोध-प्रबन्ध को प्रस्तुत रूप दिया जा सका है।

यह शोध-प्रबन्ध निम्नलिखित 7 प्रकरणों में विभाजित है—

(1) **प्रथम प्रकरण**—"परिचय तथा विषय-विश्लेषण" से सम्बन्धित है। इसमें निम्नलिखित विषयों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है—

(क) हिन्दी कवि-सम्मेलन : एक सक्षिप्त-परिचय।

(ख) हिन्दी कवि-सम्मेलन के उद्भव से पूर्व की स्थिति।

(ग) हिन्दी कवि-सम्मेलनों का उद्भव और प्रसार।

प्रथम शीर्षक के अन्तर्गत हिन्दी कवि-सम्मेलनों के स्वरूप का परिचय प्रस्तुत करते हुये उसके भेद, काव्य-पाठ का क्रम, संचालन, ध्वनि एवं प्रकाश-व्यवस्था तथा आतिथ्य-सत्कार आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय शीर्षक अन्तर्गत कवि-सम्मेलनों के उद्भव से पूर्व की स्थिति, उर्दू-काव्य और मुशाइरे, राजदरबारों के काव्योत्सव, पढ़न्त-गोष्ठियों तथा कवि-गोष्ठियों के स्वरूप और उनमें भाग लेने वाले प्रमुख कवियों के विषय में आवश्यक जानकारी प्रस्तुत की गई है।

तृतीय शीर्षक के अन्तर्गत हिन्दी कवि-सम्मेलनों के उद्भव तथा प्रसार का इतिवृत्त, स्वतन्त्रता-पूर्व तथा स्वातन्त्र्योत्तरकालीन कवि-सम्मेलनों के स्वरूप, कवि-सम्मेलनों के संस्थापक तथा प्रसारक प्रमुख कवि एवं कवि-सम्मेलनों की विकास-गाथा का उल्लेख किया गया है।

(2) **द्वितीय प्रकरण**—"हिन्दी कवि-सम्मेलनों की उपयोगिता और उनका प्रभाव" विषय से सम्बन्धित है। इसमें निम्नलिखित विषयों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है—

(क) हिन्दी के प्रचार-प्रसार में योगदान।

(ख) संस्कृति-संरक्षण, कुरीति-निवारण, सामाजिक-क्रान्ति, स्वतन्त्रता-संग्राम तथा जन-जागरण में योगदान।

(ग) स्वतन्त्र-अभिव्यक्ति तथा बौद्धिक-मनोरंजन में योगदान।

उक्त शीर्षकों के अन्तर्गत सम्बन्धित विषयों पर कवि-सम्मेलनों के प्रभाव

का संक्षिप्त-विवेचन प्रस्तुत करते हुए, उनकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला गया है।

(3) **तृतीय प्रकरण**—"मंचीय हिन्दी कवि तथा उनके वर्ग" से सम्बन्धित है। इसमें निम्नलिखित विषयों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है—

(क) "कवि" तथा "मंचीय-कवि" की विभाजक-रेखायें।

(ख) रसों के आधार पर मंचीय-कवियों के वर्ग।

(ग) परतन्त्र-भारत के प्रमुख मंचीय-कवि।

(घ) स्वतन्त्र-भारत के प्रमुख मंचीय-कवि।

उक्त शीर्षक के अन्तर्गत विषय-विश्लेषण करते हुये ब्रजक्षेत्र से असम्बद्ध उन कवियों का संक्षिप्त-परिचय प्रस्तुत किया गया है, जिन्होंने मंचीय-कवि के रूप में विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की है। जो कवि मंचीय-ख्याति अर्जित नहीं कर सके, उन्हें इस विवेचन की परिधि से प्रथक् ही रक्खा गया है।

(4) **चतुर्थ प्रकरण**—"मंचीय-कविताओं का स्वरूप और उनका प्रचार-प्रसार" विषय से सम्बन्धित है। इसमें निम्नलिखित विषयों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है—

(क) हिन्दी-साहित्य के काल-विभाजन से कवि-सम्मेलनों का संबंध।

(ख) स्वतन्त्रता पूर्व मंचीय-कविताओं का स्वरूप।

(ग) स्वातन्त्र्योत्तर मंचीय-कविताओं का स्वरूप।

(घ) मंचीय-कविताओं का प्रकाशन।

(ङ) मंचीय-कविताओं का प्रसारण।

उक्त शीर्षकों के अन्तर्गत देश-कालीन परिस्थितियों के आधार पर सम्बन्धित विषयों का संक्षिप्त-विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

(5) **पंचम प्रकरण**—"ब्रजक्षेत्र के प्रमुख मंचीय हिन्दी-कवि और उनका साहित्यिक योगदान" विषय से सम्बन्धित है। इसमें निम्नलिखित विषयों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है—

(क) ब्रजभाषा-भाषी क्षेत्र की सीमाएँ।

(ख) स्वतन्त्रता-पूर्व के ब्रजक्षेत्रीय प्रमुख मंचीय हिन्दी-कवि और उनका साहित्यिक-योगदान।

(ग) स्वातन्त्र्योत्तर-कालीन ब्रजक्षेत्रीय प्रमुख मंचीय हिन्दी-कवि और उनका साहित्यिक-योगदान।

प्रथम शीर्षक अन्तर्गत ब्रजभाषा-भाषी क्षेत्र की सीमाओं का निर्धारण करते हुए उसकी परिधि में वर्तमान "उत्तर प्रदेश" के मथुरा, आगरा, अलीगढ़, एटा तथा

हिन्दी कवि-सम्मेलन तथा मंचीय-कवियों के सम्बन्ध में कहीं कोई उल्लेख न होने के कारण प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के लिये सम्पूर्ण सामग्री सर्वथा नवीन रूप में ढूँढी तथा एकत्र की गई है। इस गुरुतर कार्य के सम्यक्-निष्पादन हेतु मुझे सैकड़ों पत्र लिखने, अनेक कवियों से साक्षात्कार तथा उनकी रचनाओं का अध्ययन करने की आवश्यकता पड़ी है। अस्तु, सर्वप्रथम मैं उस परमपिता परमेश्वर की अत्यन्त आभारी हूँ, जिसकी कृपा से आज यह कठिन कार्य सम्पन्न हो सका है तथा शोध-प्रबन्ध को प्रस्तुत रूप दिया जा सका है।

यह शोध-प्रबन्ध निम्नलिखित 7 प्रकरणों में विभाजित है—

(1) **प्रथम प्रकरण**—"परिचय तथा विषय-विश्लेषण" से सम्बन्धित है। इसमें निम्नलिखित विषयों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है—

(क) हिन्दी कवि-सम्मेलन : एक संक्षिप्त-परिचय।

(ख) हिन्दी कवि-सम्मेलन के उद्भव से पूर्व की स्थिति।

(ग) हिन्दी कवि-सम्मेलनों का उद्भव और प्रसार।

प्रथम शीर्षक के अन्तर्गत हिन्दी कवि-सम्मेलनों के स्वरूप का परिचय प्रस्तुत करते हुये उसके भेद, काव्य-पाठ का क्रम, संचालन, ध्वनि एवं प्रकाश-व्यवस्था तथा आतिथ्य-सत्कार आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय शीर्षक अन्तर्गत कवि-सम्मेलनों के उद्भव से पूर्व की स्थिति, उर्दू-काव्य और मुशाइरे, राजदरबारों के काव्योत्सव, पढ़न्त-गोष्ठियों तथा कवि-गोष्ठियों के स्वरूप और उनमें भाग लेने वाले प्रमुख कवियों के विषय में आवश्यक जानकारी प्रस्तुत की गई है।

तृतीय शीर्षक के अन्तर्गत हिन्दी कवि-सम्मेलनों के उद्भव तथा प्रसार का इतिवृत्त, स्वतन्त्रता-पूर्व तथा स्वातन्त्र्योत्तरकालीन कवि-सम्मेलनों के स्वरूप, कवि-सम्मेलनों के संस्थापक तथा प्रसारक प्रमुख कवि एवं कवि-सम्मेलनों की विकास-गाथा का उल्लेख किया गया है।

(2) **द्वितीय प्रकरण**—"हिन्दी कवि-सम्मेलनों की उपयोगिता और उनका प्रभाव" विषय से सम्बन्धित है। इसमे निम्नलिखित विषयों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है—

(क) हिन्दी के प्रचार-प्रसार में योगदान।

(ख) संस्कृति-संरक्षण, कुरीति-निवारण, सामाजिक-क्रान्ति, स्वतन्त्रता-संग्राम तथा जन-जागरण में योगदान।

(ग) स्वतन्त्र-अभिव्यक्ति तथा बौद्धिक-मनोरंजन में योगदान।

उक्त शीर्षकों के अन्तर्गत सम्बन्धित विषयों पर कवि-सम्मेलनों के प्रभाव

का संक्षिप्त-विवेचन प्रस्तुत करते हुए, उनकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला गया है।

(3) **तृतीय प्रकरण**—"मंचीय हिन्दी कवि तथा उनके वर्ग" से सम्बन्धित है। इसमें निम्नलिखित विषयों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है—

(क) "कवि" तथा "मंचीय-कवि" की विभाजक-रेखायें।

(ख) रसों के आधार पर मंचीय-कवियों के वर्ग।

(ग) परतन्त्र-भारत के प्रमुख मंचीय-कवि।

(घ) स्वतन्त्र-भारत के प्रमुख मंचीय-कवि।

उक्त शीर्षक के अन्तर्गत विषय-विश्लेषण करते हुये ब्रजक्षेत्र से असम्बद्ध उन कवियों का संक्षिप्त-परिचय प्रस्तुत किया गया है, जिन्होंने मंचीय-कवि के रूप में विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की है। जो कवि मंचीय-ख्याति अर्जित नहीं कर सके, उन्हें इस विवेचन की परिधि से प्रथक् ही रक्खा गया है।

(4) **चतुर्थ प्रकरण**—"मंचीय-कविताओं का स्वरूप और उनका प्रचार-प्रसार" विषय से सम्बन्धित है। इसमें निम्नलिखित विषयों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है—

(क) हिन्दी-साहित्य के काल-विभाजन से कवि-सम्मेलनों का संबंध।

(ख) स्वतन्त्रता पूर्व मंचीय-कविताओं का स्वरूप।

(ग) स्वातन्त्र्योत्तर मंचीय-कविताओं का स्वरूप।

(घ) मंचीय-कविताओं का प्रकाशन।

(ङ) मंचीय-कविताओं का प्रसारण।

उक्त शीर्षकों के अन्तर्गत देश-कालीन परिस्थितियों के आधार पर सम्बन्धित विषयों का संक्षिप्त-विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

(5) **पंचम प्रकरण**—"ब्रजक्षेत्र के प्रमुख मंचीय हिन्दी-कवि और उनका साहित्यिक योगदान" विषय से सम्बन्धित है। इसमें निम्नलिखित विषयों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है—

(क) ब्रजभाषा-भाषी क्षेत्र की सीमाएँ।

(ख) स्वतन्त्रता-पूर्व के ब्रजक्षेत्रीय प्रमुख मंचीय हिन्दी-कवि और उनका साहित्यिक-योगदान।

(ग) स्वातन्त्र्योत्तर-कालीन ब्रजक्षेत्रीय प्रमुख मंचीय हिन्दी-कवि और उनका साहित्यिक-योगदान।

प्रथम शीर्षक अन्तर्गत ब्रजभाषा-भाषी क्षेत्र की सीमाओं का निर्धारण करते हुए उसकी परिधि में वर्तमान "उत्तर प्रदेश" के मथुरा, आगरा, अलीगढ़, एटा तथा

मैनपुरी—ये पांचों जिले एवं बुलन्दशहर तथा इटावा जिलों का लगभग आधा-आधा भाग, वर्तमान "राजस्थान" का पूरा भरतपुर जिला (जिसमें भूतपूर्व धौलपुर रियासत का क्षेत्र भी सम्मिलित है) पूरा अलवर जिला एवं सवाई माधोपुर जिले की करौली तहसील; वर्तमान "मध्यप्रदेश" के भिण्ड तथा मुरैना—ये दोनों जिले तथा वर्तमान "हरियाणा" के फरीदाबाद जिले की पलवल तहसील का क्षेत्र सम्मिलित किया गया है।

द्वितीय शीर्षक के अन्तर्गत उक्त ब्रजभाषा-भाषी क्षेत्र से सबंन्धित उन कवियों के परिचय तथा साहित्यिक-योगदान का उल्लेख किया गया है, जिनका जन्म क्रमशः (क) सद् 1858 ई. से 1900 से तक तथा (ख) सन् 1901 ई. 1920 ई. तक की अवधि में हुआ था। इन दोनों वर्गों के कवियों को भी (अ) पुस्तक रूप में प्रकाशित तथा (ब) पुस्तक रूप में अप्रकाशित—इन दो उप-वर्गों में बाँटा गया है।

(क) उप-वर्ग में पहले पुस्तक रूप में प्रकाशित तथा मंचीय-कवि के रूप में अखिल भारतीय ख्यातिलब्ध 10 कवियों का विस्तृत-परिचय प्रस्तुत किया गया है; तदुपरान्त क्षेत्रीय-ख्याति के 9 अन्य कवियों का संक्षिप्त-परिचय देते हुए, अन्त में इसी उपवर्ग के 2 ऐसे अन्य प्रमुख कवियों का सामान्य-परिचय भी दिया गया है जिनकी कोई काव्य-पुस्तक प्रकाशित नहीं है।

"ख" उप-वर्ग में पहले पुस्तक रूप में प्रकाशित तथा मंचीय-कवि के रूप में विशेष ख्याति-लब्ध 23 कवियों का विस्तृत-परिचय प्रस्तुत किया गया है, तदुपरान्त क्षेत्रीय-ख्याति के 8 अन्य कवियों का संक्षिप्त परिचय देते हुए, इसी उप-वर्ग के 5 ऐसे अन्य प्रमुख कवियों का सामान्य-परिचय भी दिया गया है, जिनकी कोई काव्य-पुस्तक प्रकाशित नहीं है। अन्त में विभिन्न जिलों के पुस्तक रूप में अप्रकाशित तथा सामान्य-ख्यातिलब्ध कवियों की नामावली मात्र प्रस्तुत की गई है।

तृतीय शीर्षक के अन्तर्गत उन कवियों के परिचय तथा साहित्यिक-योगदान का उल्लेख किया गया है, जिनका जन्म क्रमशः (क) सन् 1921 से 1930 ई. तक तथा (ख) सन् 1931 से 1940 ई. तक की अवधि में हुआ है। इन दोनों वर्गों के कवियों को भी (अ) पुस्तक रूप में प्रकाशित तथा (ब) पुस्तक रूप में अप्रकाशित इन दो उप-वर्गों में बाँटा गया है।

"क" उप-वर्ग में पहले, पुस्तक रूप में प्रकाशित तथा मंचीय कवि के रूप में विशेष ख्यातिलब्ध 17 कवियों का विस्तृत परिचय प्रस्तुत किया गया है, तदुपरान्त क्षेत्रीय-ख्याति के 12 अन्य कवियों का संक्षिप्त-परिचय देते हुए, इस उप-वर्ग के 11 ऐसे अन्य प्रमुख कवियों का सामान्य परिचय भी दिया गया है, जिनकी कोई काव्य-पुस्तक प्रकाशित नहीं है। अन्त में विभिन्न जिलों के पुस्तक रूप में अप्रकाशित तथा सामान्य ख्याति लब्ध कवियों की नामावली मात्र प्रस्तुत की गई है।

"ख" उप-वर्ग में पहले पुस्तक रूप में प्रकाशित तथा मंचीय-कवि के रूप में विशेष ख्याति-लब्ध 22 कवियों का विस्तृत-परिचय प्रस्तुत किया गया है, तदुपरान्त क्षेत्रीय-ख्याति के 3 अन्य कवियों का संक्षिप्त-परिचय देते हुए इसी उप-वर्ग के 14 ऐसे अन्य प्रमुख कवियों का सामान्य-परिचय भी दिया गया है, जिनकी कोई काव्य-पुस्तक प्रकाशित नहीं है। अन्त में, विभिन्न जिलों के पुस्तक रूप में अप्रकाशित तथा सामान्य ख्यातिलब्ध कवियों की नामावली मात्र प्रस्तुत की गई है।

(6) **षष्ठ प्रकरण**—"ब्रजक्षेत्र के मंचीय हिन्दी-कवियों की नई पीढ़ी और उसका साहित्यिक योगदान", विषय से सम्बन्धित है। इसमें निम्नलिखित समयावधि में जन्मे ब्रजक्षेत्र के मंचीय हिन्दी-कवियों का परिचय प्रस्तुत किया गया है—

(क) सन् 1941 से 1950 ई. के मध्य जन्मे कवि।

(ख) सन् 1950 ई. के बाद जन्मे कवि।

प्रथम शीर्षक के अन्तर्गत सन् 1941 से 1950 ई. के मध्य जन्मे ब्रजक्षेत्र के पुस्तक रूप में प्रकाशित 8 मंचीय-कवियों का विस्तृत-परिचय प्रस्तुत किया गया है तथा पुस्तक रूप में अप्रकाशित 10 अन्य कवियों का संक्षिप्त-परिचय गया दिया है। अन्त में, इस वर्ग में आने वाले पुस्तक रूप में अप्रकाशित तथा सामान्य-ख्याति-लब्ध कवियों की जिलेवार नामावली प्रस्तुत की गई है।

द्वितीय शीर्षक के अन्तर्गत सन् 1950 ई. के बाद जन्मे ब्रजक्षेत्र के मंचीय कवियों की जिलेवार नामावली मात्र ही प्रस्तुत की गयी है, क्योंकि इस वर्ग के प्रायः सभी कवि अभी तक पुस्तक रूप में अप्रकाशित हैं।

(7) **सप्तम प्रकरण**—"ब्रजक्षेत्र से सम्बधित प्रमुख मंचीय हिन्दी-कवि और उनका साहित्यक-योगदान" विषय से सम्बन्धित है। इसमें ब्रजक्षेत्र से सम्बद्ध मंचीय-कवियों के विषय में निम्नानुसार विवरण प्रस्तुत किया गया है—

(क) ब्रजक्षेत्र में जन्मे प्रकाशित-कवि।

(ख) मूलतः ब्रजक्षेत्र के निवासी प्रकाशित-कवि।

(ग) ब्रजक्षेत्र से सम्बद्ध रहे प्रकाशित-कवि।

(घ) ब्रजक्षेत्र से किसी भी रूप में सम्बद्ध अप्रकाशित-कवि।

प्रथम शीर्षक के अन्तर्गत पुस्तक रूप में प्रकाशित उन 43 प्रमुख मंचीय-कवियों का विस्तृत-परिचय प्रस्तुत किया गया है, जिनका जन्म तो ब्रजक्षेत्र में हुआ, परन्तु जो वर्तमान में ब्रजक्षेत्र से बाहर निवास कर रहे हैं। अन्त में, इसी वर्ग के सामान्य मंचीय-ख्याति प्राप्त 2 अन्य कवियों का संक्षिप्त परिचय भी दिया गया है।

द्वितीय शीर्षक के अन्तर्गत पुस्तक रूप में प्रकाशित उन 4 प्रमुख मंचीय-कवियों का विस्तृत-परिचय प्रस्तुत किया है, जिनका जन्म ब्रजक्षेत्र से बाहर हुआ और जो

ब्रजक्षेत्र से बाहर ही रहे, परन्तु जिनका पैतृक-आवास ब्रजक्षेत्र ही रहा अर्थात् जिन्हें मूलतः "ब्रजवासी" ही कहा जाता है।

तृतीय शीर्षक के अन्तर्गत पुस्तक रूप में प्रकाशित उन 12 प्रमुख मंचीय-कवियों का विस्तृत-परिचय प्रस्तुत किया गया है, जिनका न तो जन्म ही ब्रजक्षेत्र में हुआ और न जो ब्रजक्षेत्र के मूल-निवासी ही हैं, तथापि जो अपने जीवन काल मे न्यूनतन् 3 वर्षों तक ब्रजक्षेत्र में स्थायीरूप से रहे हैं तथा किसी-न-किसी रूप में आजभी ब्रजक्षेत्र से अपना सम्पर्क बनाये हुए हैं।

चतुर्थ शीर्षक के अन्तर्गत उक्त तीनों वर्गों में से किसी भी वर्ग में आने वाले उन 11 कवियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है, जिनकी अभी तक कोई तक कोई काव्य-पुस्तक तो प्रकाशित नहीं हो पाई है, परन्तु जिन्होंने मंचीय-कवि के रूप में पर्याप्त ख्याति अर्जित की है। अन्त में इसी वर्ग के 20 अन्य कवियों का सामान्य परिचय प्रस्तुत करते हुए कुछ अन्य कवियों का भी नामोल्लेख किया गया है।

स्मरणीय है कि पूर्वोक्त चारों वर्गों में सभी आयु के कवि-सम्मिलित हैं।

उपसंहार—इस शोध-ग्रंथ का समापन करते हुए मैंने—

(1) हिन्दी कवि-सम्मेलनों के साहित्यिक-स्तर में गिरावट के प्रमुख कारण।

(2) हिन्दी कवि-सम्मेलनों के साहित्यिक-स्तर के गिरावट से ब्रजक्षेत्र के कवियों का सबन्ध।

(3) हिन्दी कवि-सम्मेलनों की समाप्ति के विचार का औचित्य।

(4) हिन्दी कवि-सम्मेलनों के साहित्यिक-स्तर में सुधार के उपाय।

(5) ब्रजक्षेत्र के विशिष्ट साहित्यिक-प्रतिभा सम्पन्न जीवित मंचीय-कवि।

इन विषयों पर भी अपने कुछ विचार प्रस्तुत किए हैं। संभव है कि उक्त विषय पर मेरे द्वारा व्यक्त विचारों से कुछ लोग असहमत हों, परन्तु सैकड़ों मंचीय-कवियों से साक्षात्कार तथा पत्र-व्यवहार करने तथा अनेक कवि-सम्मेलनों मे दर्शक तथा श्रोता के रूप में सम्मिलित होने के बाद मैंने जो कुछ देखा, सुना, पढ़ा तथा अनुभव किया है, उसके सारांश को बिना किसी संकोच के यहाँ प्रस्तुत कर दिया है। मंचीय-कवि तथा कवि-सम्मेलनों की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालने के उद्देश्य से मुझे उक्त विषयों पर लिखना भी आवश्यक प्रतीत हुआ। मेरी दृष्टि में इनका उल्लेख किये बिना यह शोध-कार्य अपूर्ण ही रह जाता।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में ब्रजक्षेत्र से सम्बन्धित जिन मंचीय-कवियों का उल्लेख किया गया है, उनके जीवनवृत्त एवं साहित्यिक-योगदान से सम्बन्धित सभी विवरण अद्यतन एवं प्रामाणिक हैं, क्योंकि जीवित कवियों से सम्बन्धित सभी सूचनायें उनसे प्रत्यक्ष-भेंट अथवा पत्राचार के माध्यम से, स्वयं उन्हीं के द्वारा लिखित रूप में प्राप्त

की गई हैं तथा दिवंगत कवियों के विषय में वांछित-सामग्री उनके परिवारीजनों, निकटस्थ-मित्रों अथवा प्रामाणिक ग्रंथों से संकलित की गई है। पुस्तकाकार-प्रकाशित कवियों की कविताओं के उद्धरण उनकी पुस्तकों से तथा अप्रकाशित कवियों की रचनाओं के उद्धरण उनके द्वारा प्राप्त कविताओं अथवा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं से उद्धृत किये गये हैं।

"विशेष" कथन के अन्तर्गत कवियों की रचनाओं आदि के संबंध में व्यक्त संक्षिप्त-अभिमत उनकी कृतियों के अध्ययन तथा उनके संबंध में प्रचलित सार्वजनीन-मान्यताओं पर आधारित हैं। जो कवि जितने अधिक मंचीय-ख्याति-लब्ध हैं, उनके सम्बन्ध में उसी अनुपात से विवेचन प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है।

पंचम से सप्तम प्रकरण तक जिन कवियों का उल्लेख किया गया है, उनके क्रम-निर्धारण में मंचीय-वरिष्ठता अथवा अकारादि-क्रम पर ध्यान न देकर, उनकी जन्म-तिथि को ही प्राथमिकता का आधार बनाया गया है तथा प्रत्येक कवि से सम्बन्धित जानकारी—(1) संक्षिप्त परिचय, (2) अन्य विवरण, (3) साहित्य-सेवा, (4) प्रकाशित पुस्तकें, (5) अप्रकाशित कृतियाँ, (6) विशेष-कथन तथा (7) काव्योदाहरण—इन उप-शीर्षकों के अन्तर्गत क्रमानुसार प्रस्तुत की गई है। इसमें यदि कहीं कोई 'रिक्ति' शेष है, तो उसके लिये यह समझना चाहिये कि सम्बन्धित जीवित-कवि ने अथवा दिवंगत-कवि के निकटस्थजनों ने उस विषय की जानकारी देने में स्वयं ही असमर्थता प्रकट की है। यों, अपनी ओर से मैंने यही प्रयत्न किया है कि जहाँ तक संभव हो, कोई 'रिक्ति' शेष न रहे।

अन्त में, मैं अपने निदेशक गुरुवर्य्य डा. श्रीभगवान शर्मा, प्राध्यापक, हिन्दी-विभाग, सेन्ट जान्स कालिज, आगरा की परम अनुग्रहीत हूँ, जिन्होंने प्रस्तुत शोध-ग्रन्थ की सम्पन्नता में मेरा यथोचित मार्ग-दर्शन किया है। मैं उन सभी जीवित-कवियों तथा दिवंगत-कवियों के आत्मीयजनों के प्रति भी हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे वांछित-विवरण, पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ तथा हस्तलिखित पाण्डुलिपियाँ आदि प्रदान कर उपकृत किया है।

परम आदरणीय पं. श्रीनारायण जी चतुर्वेदी (लखनऊ), पं. बनारसीदास चतुर्वेदी एवं श्री कृष्णलाल "कुसुमाकर" (फीरोजाबाद), श्री प्रेमदत्त पालीवाल, (स्व.) डा. मथुरा प्रसाद दुबे "कुलदीप", श्री सोम ठाकुर तथा श्री अज़ीज़ अकबराबादी (आगरा), डा. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय (जयपुर), डा. इन्द्रपाल सिंह "इन्द्र" (नागपुर), डा. रामगोपाल शर्मा "दिनेश" (उदयपुर), डा. चन्द्रभान रावत तथा श्री मधुसूदन चतुर्वेदी (हैदराबाद), श्री वीरेन्द्र मिश्र (बम्बई), श्री मधुर शास्त्री एवं श्री देवेन्द्र शर्मा "इन्द्र" (दिल्ली), श्री लाखन सिंह भदौरिया "सौमित्र" (मैनपुरी), श्री उदय प्रताप सिंह (शिकोहाबाद), श्री कृपाशंकर शर्मा (मुरैना), श्री दामोदर शर्मा (ग्वालियर), श्री मोहन लाल "मधुकर" (भरतपुर), श्री चन्द्र-

शेखर "प्रभात किरन" (एटा), डा. वेदप्रकाश "अमिताभ" (अलीगढ़) एवं ज्यो. राधेश्याम द्विवेदी, बा. वृन्दावन दास, डा. तपेश चतुर्वेदी, डा. त्रिलोकी नाथ "ब्रजबाल" तथा श्री मुनीश "मदिर" (मथुरा) को मैं किन शब्दों में धन्यवाद दूँ ? इन सभी महानुभावों ने समय-समय पर आवश्यक सूचनाएँ, सुझाव, सहयोग तथा मार्ग-दर्शन देकर इस शोध-कार्य की सम्पन्नता में अपनी अहैतुकी-कृपा प्रदर्शित की है। मैं इन सभी गुरुजनों के प्रति नत-मस्तक हूँ।

पी-एच. डी. उपाधि हेतु यह शोध-प्रबंध "ब्रजक्षेत्र के मंचीय हिन्दी कवियों का साहित्यिक-योगदान" शीर्षक से प्रस्तुत किया गया था।

उसी को अब अद्याविध संशोधित रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

ग्रंथ-प्रकाशन के समय तक जो कवि स्वर्गवासी हो चुके हैं, उनकी निधन-तिथि तथा अन्य प्रमुख घटनाओं का उल्लेख करते हुए 'परिशिष्ट' भाग को बढ़ाया गया है तथा उसमें देश के प्रायः सभी प्रमुख मंचीय-कवियों का संक्षिप्त-परिचय देकर, इसे सार्वदेशिक-स्तर पर उपयोगी बनाने की चेष्टा की गई है।

हिन्दी कवि-सम्मेलन एवं मंचीय हिन्दी-कवियों के विषय में सर्वाङ्गीण जानकारी प्राप्त करने के इच्छुक पाठकों तथा इस विषयों के अन्य शोधार्थियों के लिए भी यह ग्रंथ उपादेय सिद्ध होगा—ऐसी आशा है।

देवोत्थान एकादशी सं. 2041 वि.
द्वारा—वीणा प्रिन्टर्स
पीर कल्यानी, आगरा—4

—डा. विशेषलक्ष्मी 'वीणा'

अनुक्रमणिका

हिन्दी कवि-सम्मेलन
और
मंचीय-कवियों का साहित्यिक-योगदान

प्रकरण 1

परिचय तथा विषय-विश्लेषण

1. हिन्दी कवि-सम्मेलन : एक संक्षिप्त-परिचय ।
2. हिन्दी कवि-सम्मेलनों के उद्भव से पूर्व की स्थिति ।
3. हिन्दी कवि-सम्मेलनों का उद्भव एवं प्रसार ।

1. हिन्दी कवि-सम्मेलन : एक संक्षिप्त-परिचय

"कवि-सम्मेलन" का शाब्दिक अर्थ है—"कवियों का सम्मिलन" अर्थात् ऐसा आयोजन, जिसमें विभिन्न कवि एकत्र होकर अपनी-अपनी कविताओं का एक ही मंच से पाठ करें।

वर्तमान समय में कवि-सम्मेलनों का आयोजन प्रायः विद्यालयों तथा संस्थाओं के वार्षिकोत्सव; राष्ट्रीय, धार्मिक, सामाजिक अथवा ऐतिहासिक पर्व; महापुरुषों के जन्म-दिन तथा प्रदर्शनी, मेला आदि सामूहिक-उल्लास के अवसरों पर किया जाता है। कभी-कभी मात्र साहित्यिक-मनोरंजन के उद्देश्य से भी कवि-सम्मेलन आयोजित किये जाते हैं।

इनके अतिरिक्त अब आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों पर भी कवि-सम्मेलनों के आयोजन किये जाने लगे हैं। उनमें कुछ खुले पाण्डाल में श्रोताओं के सम्मुख किए जाते हैं तो कुछ स्टूडियो के भीतर बन्द कमरे में होते हैं, जिन्हें लोग केवल रेडियो के माध्यम से ही सुन पाते हैं। दूर-दर्शन (टेलीविजन) पर भी कवि-सम्मेलनों के कार्यक्रम प्रदर्शित किये जाते हैं। हाल ही में फिल्मों में भी कवि सम्मेलन को प्रवेश मिल गया है। श्री ताराचन्द बड़जात्या द्वारा निर्मित "कवि-सम्मेलन" नामक फिल्म इसका उदाहरण है।

मंच-व्यवस्था

मेला, प्रदर्शनी तथा संस्थाओं के वार्षिकोत्सवों के अवसर पर आयोजित किए जाने वाले कवि-सम्मेलन प्रायः पाण्डाल बनाकर किये जाते हैं। इनमें एक ओर लगभग 3 से 5 फुट तक ऊँचा मंच बनाया जाता है। जिस पर कवि-सम्मेलन के अध्यक्ष, उद्घाटनकर्ता, संयोजक तथा विशिष्ट-अतिथि बैठते है। मंच के सामने तथा दाँई-बाँई ओर श्रोताओं के बैठने का स्थान होता है। श्रोताओं के बैठने की व्यवस्था

आयोजकों की सुविधा तथा श्रोताओं की संख्या के आधार पर जमीन, फर्श अथवा कुर्सियों आदि पर की जाती है। बैठने की व्यवस्था इस प्रकार की जाती है कि सभी श्रोता मच से काव्य-पाठ करने वाले कवि की भाव-भंगिमाओं को भी भली-भाँति देख सकें तथा काव्य-पाठ करने वाले कवि की दृष्टि भी अधिकांश श्रोताओं पर पड़ सके।

जहाँ श्रोताओं की संख्या सीमित होती है, वहाँ कवि-सम्मेलन का आयोजन किसी छोटे-बड़े हॉल में भी कर लिया जाता है। ऑडीटोरियम तथा सिनेमाघरों के हॉल भी अब इस कार्य में प्रयुक्त होने लगे हैं।

श्रोताओं की विपुल संख्या तक कवि के कण्ठ-स्वर को पहुँचाने के लिए ध्वनि-विस्तारक यन्त्रों की तथा प्रकाश के लिए बिजली, गैस के हण्डे आदि की समुचित व्यवस्था की जाती है।

कवि-सम्मेलनों का आयोजन प्रायः रात्रि में ही किया जाता है, परन्तु कभी-कभी इन्हें दिन में भी आयोजित कर लिया जाता है।

काव्य-पाठ एव भाव-प्रदर्शन

कवि-सम्मेलनों मे एकत्र कवि विभिन्न रसों की रचनाओं का पाठ करते है। काव्य-पाठ के समय कवि केवल अपनी साहित्यिक-प्रतिभा का ही परिचय नहीं देता, अपितु वह अपने कण्ठ-स्वर एवं हाव-भावादि के द्वारा काव्यगत विषय-वस्तु को साकार रूप देने की चेष्टा भी करता है; इस प्रकार मंचीय-काव्य अपने श्रव्य तथा दृश्य—दोनों रूपों मे जन-मानस के आकर्षण का केन्द्र बनता है। स्वर-संयोजन तथा भाव-प्रदर्शन की कला में जो कवि जितना अधिक प्रवीण होता है, वह श्रोताओं को उतना ही अधिक आकर्षित करता है। काव्य-पाठ एवं भाव-प्रदर्शन—इन दुहरी विशेषताओं के कारण ही मंचीय-कवि साहित्यिक दृष्टि से अधिक समृद्ध तथा श्रेष्ठ अमंचीय-कवियों की तुलना में कहीं अधिक लोक-प्रियता प्राप्त कर लेता है तथा प्रत्यक्ष जन-सम्पर्क के कारण राष्ट्र तथा समाज को भी विशेष रूप से प्रभावित करता है।

कवि-सम्मेलन के भेद

कवि-सम्मेलन में काव्य-पाठ के लिये विभिन्न रसों की रचनायें सुनाने वाले कवि आमन्त्रित किये जाते हैं। उनमें वीर, श्रृंगार तथा हास्य रस के कवियों की मुप्रखता रहती है। कभी-कभी करुण तथा भक्ति रस की रचनायें भी सुनने को मिलती है। रसों की विभिन्नता के कारण एक अच्छा समां बँध जाता है, जिससे सभी रुचि के श्रोता आह्लादित होते हैं। युद्ध-काल में केवल "वीर-रस के कवि-सम्मेलन" होलि आदि उल्लास के पर्वों पर केवल "हास्य-रस के कवि-सम्मेलन' तथा कभी-कभी केवल "शृंगार-रस के कवि सम्मेलन" भी आयोजित किये जाते हैं कुछ धार्मिक-संस्थायें केवलभक्ति-रस के कवियों को ही आमंत्रित करती हैं। परन्तु ऐसे एक रसीय कवि-सम्मेलन अधिक सफल नहीं हो पाते; क्योंकि श्रोतागण एक ही

रस की कवितायें सुनते-सुनते थोड़ी देर बाद ऊब जाते हैं, अतः रसों की विविधता ही कवि-सम्मेलन को सफल बनाने में सर्वाधिक योग देती है ।

अन्य भेद

कवि-सम्मेलन के कुछ और भी भेद विकसित हुए हैं; यथा—(1) लोक-भाषायी कवि-सम्मेलन, (2) सर्व-भाषा कवि सम्मेलन तथा (3) कवयित्री-सम्मेलन आदि ।

लोक-भाषायी कविासम्मेलनों में केवल लोक भाषा, जैसे—ब्रजभाषा, अवधी, भोजपुरी, राजस्थानी, मालवी आदि के कवि अपनी क्षेत्रीय भाषाओं की कविताओं का पाठ करते हैं ।

सर्व-भाषा कवि-सम्मेलन में विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं के कवि अपनी रचनाओं का पाठ करते हैं । कहीं-कहीं उनके अनुवादकों की व्यवस्था भी रहती है, जोकि उनके हिन्दी अनुवाद अथवा व्याख्या साथ-ही-साथ प्रस्तुत करते जाते है । ऐसा एक कविासम्मेलन गणतन्त्र-दिवस के अवसर पर लाल किला, दिल्ली के प्रांगण में भी विगत वर्षों से आयोजित किया जाने लगा है तथा आकाशबाणी के कई केन्द्र भी इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करने लगे हैं ।

"कवयित्री-सम्मेलन" में केवल कवयित्रियाँ ही काव्य-पाठ करती हैं । पुरुष-कवि उसमें भाग नहीं लेते ।

परन्तु उक्त प्रकार के कवि-सम्मेलन भी प्रायः अधिक सफल नहीं हो पाते । लोक-भाषायी कवि-सम्मेलन तथा कवयित्री-सम्मेलन तो कुछ अंशों में जम भी जाते हैं, परन्तु "सर्व-भाषा कवि-सम्मेलन" नितान्त असफल सिद्ध होते हैं; कारण उसके श्रोता न तो सब भाषाओं के जानकार होते हैं और न अनुवादक द्वारा किया गया रूपान्तर ही मूल-कविता का सम्यक् आनन्द दे पाता है । कवि-सम्मेलन के मंच से काव्य-पाठ करने वाले कवि के माध्यम से श्रोताओं तथा दर्शकों को जो श्रव्य एवं दृश्य-दोनों प्रकार का आनन्द एक साथ मिलता है, "सर्वभाषा कवि-सम्मेलन" उसकी सम्यक् पूर्ति कर पाने में असफल ही रहते हैं ।

कवि-सम्मेलन को—(1) "स्थानीय" अथवा "क्षेत्रीय" तथा (2) "अखिल भारतीय" अथवा "अन्तर्प्रान्तीय"—इन दो विभागों में और बाँटा जा सकता है । स्थानीय अथवा क्षेत्रीय कवि-सम्मेलनों में केवल स्थानीय अथवा समीपवर्ती क्षेत्र के कवियों को ही काव्य-पाठ के लिए आमन्त्रित किया जाता है परन्तु ऐसे कवि-सम्मेलन भी प्रायः अधिक सफल नहीं हो पाते; क्योंकि स्थानीय अथवा क्षेत्रीय कवियों से स्थानीय श्रोता प्रायः पूर्व-परिचित रहते हैं तथा उनकी रचनायें भी पहले की अथवा कई बार की सुनी हुई रहती हैं, अतः उनके प्रति लोगों का आकर्षण कम हो जाता है । "घर का जोगी जोगिया आन गाँव का सिद्ध" वाली कहावत भी ऐसे

सम्मेलनों पर लागू होती है। परन्तु "अन्तर्प्रान्तीय" अथवा "अखिल भारतीय" स्तर के कवि-सम्मेलन, जिनमें सुदूर क्षेत्रों से आये हुए कवि एकत्र होते हैं, अत्यधिक सफल होते हैं। उनमें नये कवियों का दर्शन एवं नवीन कविताओं का श्रवण श्रोताओं के आकर्षण का मुख्य केन्द्र-विन्दु बनता है।

ऐसे कवि-सम्मेलन भी होते हैं, जिनमें स्थानीय तथा बाहरी—दोनों प्रकार के कवि भाग लेते हैं। यदि स्थानीय कवि भी उच्चकोटि के हुए तो ऐसे मिले-जुले कवि-सम्मेलन भी सफल सिद्ध होते हैं। यथार्थ में कवि-सम्मेलन की सफलता उसमें भाग लेने वाले कवियों, वर्ण्य-विषय तथा पाठ-शैली पर निर्भर करती है। कवि का व्यक्तित्व भी उसके कृतित्व में चार चाँद लगने वाला सिद्ध होता है।

अध्यक्षता एवं उद्घाटन

कवि-सम्मेलन की अध्यक्षता के लिये किसी वरिष्ठ कवि अथवा अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति का निर्वाचन किया जाता है। इस निर्वाचन की घोषणा बहुत दिनों पहले अथवा काव्य-पाठ आरंभ होने से पूर्व ही कर दी जाती है। अध्यक्ष द्वारा अपना आसन ग्रहण करने के बाद, यदि किन्हीं विशिष्ट महानुभाव को कवि-सम्मेलन का उद्घाटन करने के लिए आमंत्रित किया गया हो तो उनता परिचय देते हुए संयोजक उन्हें उद्घाटन-भाषण देने के लिए भी आमंत्रित करता है। उद्घाटम-भाषण के पश्चात् अथवा अध्यक्ष का निर्वाचन होने के बाद अध्यक्ष महोदय द्वारा आभार-प्रदर्शन के निमित्त 'दो शब्द' कहने की प्रथा है, परन्तु कुछ कवि-सम्मेलनों में अध्यक्षीय-भाषण कवि-सम्मेलन की समाप्ति पर ही होता है। अध्यक्ष महोदय यदि स्वयं भी कवि हों तो उन्हें काव्य-पाठ का प्रथम-चक्र पूरा होने के बाद अथवा सबके अन्त में कविता पढ़ने के लिये आमंत्रित किया जाता है। यदि उद्घाटनकर्ता भी कवि हों तो वे भी अध्यक्ष महोदय से पूर्व अपनी रचना का पाठ करते हैं।

मुख्य-अतिथि

यदि किन्हीं विशिष्ट महानुभाव को मुख्य-अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया हो तो वे भी उद्घाटन कर्ता के बाद ही कवि-सम्मेलन के श्रोताओं को सम्बोधित करते हैं।

परिचय तथा स्वागत

संयोजक द्वारा श्रोताओं को कवि-सम्मेलन में भाग लेने वाले कवियों का परिचय दिया जाता है तथा स्वागताध्यक्ष आदि पदाधिकारी माला आदि पहिनाकर अध्यक्ष, उद्घाटनकर्ता, मुख्य-अतिथि एवं कवियों का स्वागत करते हैं।

काव्य-पाठका क्रम

उक्त औपचारिकताओं के बाद कवि-सम्मेलन में काव्य-पाठ आरम्भ होता है। सर्वप्रथवम "वाणी-वन्दना" करने का नियम है। फिर पहले नई पीढ़ी के कवियों

को काव्य-पाठ के लिये आमंत्रित किया जाता है, बाद में क्रमश: पुरानी (वरिष्ठ) पीढ़ी के कवि आमन्त्रित किये जाते हैं। यहाँ नई पीढ़ी से तात्पर्य नवयुवक-कवियों से न होकर उन कवियों से है, जिनकी काव्य-प्रतिभा सामान्य-कोटि की मानी जाती है। तत्पश्चात् उत्तरोत्तर श्रेष्ठ काव्य-पाठ करने वाले कवियों को आमन्त्रित किया जाता है। जो कवि किसी समय अपने काव्य-पाठ के लिये विशेष प्रसिद्ध रहे हों, परन्तु वर्तमान में वृद्धावस्था अथवा अन्य कारणों से अधिक आकर्षक ढंग से काव्य-पाठ न कर पाते हों, उन्हें भी वरिष्ठता क्रम से बाद में ही आमन्त्रित किया जाता है। काव्य-जगत् के कोई विशिष्ट-ख्याति प्राप्त अमंचीय-कवि यदि संयोगवश अथवा विशेष आमत्रण पर कवि-सम्मेलन में उपस्थित हों तो उन्हें भी बाद में ही रचना-पाठ के लिये आमंत्रित करने की शिष्टता प्रदर्शित की जाती है। इसी प्रकार कवि-सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे कवि को भी अन्य सब कवियों के अन्त में काव्य-पाठ के लिये आमंत्रित किया जाता है। परन्तु कभी-कभी वरिष्ठता के इस क्रम में जानबूझ कर ढील भी दे दी जाती है। अनेक अवसरों पर ऐसा भी होता है, जब सामान्य कवियों की रचनाओं को सुनते-सुनते श्रोतागण ऊबने लगते हैं और वे काव्य-पाठ हेतु किसी प्रभावोत्पादक कवि की माँग कर उठते हैं, उस समय कवि-सम्मेलन का संचालक वरिष्ठता-क्रम को भंग करके तत्कालीन वातावरण को नियन्त्रित कर सकने की क्षमता रखने वाले किसी वरिष्ठ अथवा प्रभावशाली कवि के नाम की उद्घोषणा बीच में ही कर देता है। इस प्रकार श्रोताओं की रुचि एवं कवि-सम्मेलन की सफलता हेतु विभिन्न आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए ही काव्य-पाठ हेतु कवियों का क्रम निर्धारित किया जाता है। कभी-कभी जिन कवियों को श्रोतातों द्वारा अधिक सराहा जाता है, उन्हें क्रम से हटाकर बीच-बीच में अनेक बार काव्य-पाठ के लिए प्रस्तुत करने की आवश्यकता भी पड़ जाया करती है।

संचालक

कवि-सम्मेलन का प्रारंभ किस कवि से हो तथा बाद में अन्य कवि किस क्रम से अपनी रचनाओं का पाठ करें,—इसका निश्चय कवि-सम्मेलन के "संचालक" को करना पड़ता है।

प्रत्येक कवि-सम्मेलन में जो व्यक्ति एक-के-बाद दूसरे कवि को काव्य-पाठ के लिये आमंत्रित करता है, उसे "संचालक" अथवा "संयोजक" कहते हैं। संचालन का दायित्व प्रायः किसी कवि को ही सौंपा जाता है, परन्तु कहीं-कहीं कवि से इतर व्यक्ति भी कवि-सम्मेलन का सचालन करते है। मध्य प्रदेश आदि कुछ स्थानों में कवि-सम्मेलन का संचालन करने के लिये बाहर से किन्ही ऐसे व्यक्तियों को भी बुलाया जाता है, जो कवि न होते हुए भी मंच-संचालन की कला में दक्ष होते हैं। कहीं-कहीं प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले कवि-सम्मेलनों के 'स्थायी-संचालक' भी देखने को मिलते हैं तो कहीं-कहीं प्रतिवर्ष बदलते भी रहते हैं।

कवि-सम्मेलन की सफलता अथवा असफलता बहुत कुछ "संचालक" के विवेक पर भी निर्भर करती है। यदि संचालक श्रोताओं की रुचि एवं मनःस्थिति को भाँपने में कुशल हुआ तो वह कवियों के काव्य-पाठ का ऐसा क्रम निर्धारित करता है, जिससे कि कवि-सम्मेलन का वातावरण उत्तरोत्तर अनुप्राणित होता चला जाता है। इसके विपरीत अकुशल-संचालक वातावरण के लिये अनुपयुक्त कवि को काव्य-पाठ के लिये आमंत्रित कर, कवि-सम्मेलन की मिट्टी पलीद भी कर देते हैं। अस्तु, संचालक के पद पर सदैव ऐसे व्यक्ति को ही आसीन होना (करना) चाहिए, जो मंच पर काव्य-पाठ करने वाले प्रायः सभी कवियों की पाठ-शैली से पूर्व-परिचित हो तथा स्थानीय श्रोताओं की रुचि को भी भली-भाँति समझता हो। इसके अतिरिक्त संचालक का स्वयं का व्यक्तित्व भी इतना प्रभावशाली होना आवश्यक है कि वह किसी अवसर पर अकुलाए हुए अथवा हुल्लड़ मचाने वाले उद्धत-श्रोताओं को शान्त, एकाग्रचित तथा व्यवस्थित बनाये रखने में भी कारगर सिद्ध हो सके।

संचालक द्वारा समय-समय पर ली जाने वाली 'मीठी-चुटकियाँ' कवि-सम्मेलन के वातावरण को मौजूँ बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं, परन्तु उसके द्वारा निजी पाण्डित्य-प्रदर्शन अथवा चुटकुलेबाजी कवि-सम्मेलन की गरिमा को समाप्त अथवा कम कर देते है तथा श्रोताओं पर भी उसका कोई अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता। इधर कुछ समय से "आशु-कविता" द्वारा कवि-सम्मेलन के संचालन की एक नई प्रथा का जन्म हुआ है, जिसमें स्वयं को "आशु-कवि" घोषित करने वाले कोई कवि-सज्जन "संचालक" के पद पर बैठते हैं तथा काव्य-पाठ हेतु कवि का नाम पुकारने से लेकर अन्य विषयों पर भी अपनी तथाकथित आशु-कविता की झड़ी लगाकर, स्वपाण्डित्य-प्रदर्शन का दुराग्रह करने में भी नहीं चूकते। ऐसे संचालक कवि-सम्मेलन का आधा समय अपनी तथाकथित आशु-कविता को ही भेंट कर देते हैं तथा एक कवि का काव्य-पाठ समाप्त होने से लेकर दूसरे कवि के माइक पर आने से पूर्व, बीच में ही अपनी आशु-कविता का प्रयोग कर, कवि-सम्मेलन के वातावरण को खराब भी कर देते हैं। अतः कवि-सम्मेलन की सफलता के लिए यह भी आवश्यक है कि किसी ऐसे व्यक्ति को संचालन का भार न सौंपा जाय जो अन्य कवियों की अपेक्षा स्वयं के पाण्डित्य-प्रदर्शन को अधिक महत्व देता हो।

ध्वनि-व्यवस्था

कवि-समेलन की सफलता के लिए ध्वनि-व्यवस्था पर समुचित ध्यान दिया जाना आवश्यक है। लाउडस्पीकर इस प्रकार और इतनी संख्या में लगाए जाने चाहिए कि उनके माध्यम से सर्वत्र एक सी आवाज सुनाई दे सके। केवल श्रोताओं को ही नहीं; अपितु मंच पर उपस्थित काव्य-पाठ करने वाले कवियों को भी अपनी आवाज ठीक से सुनाई दे—इसका ध्यान रखना भी आवश्यक हैं। बीच-बीच में कम, अधिक अथवा खराब आवाज करने वाले लाउडस्पीकर कवि-सम्मेलन को चौपट कर

देने हैं । हजारों रुपये खर्च करके आयोजित किए जाने वाले बड़े-बड़े कवि-सम्मेलन लाउडस्पीकर की गड़बड़ी के कारण भी असफल होते हुए देखे जाते हैं ।

काव्य-पाठ करने वाला कवि जिस "माइक्रोफोन" के सामने खड़ा होकर अपनी कविता पढ़ता है, वह भी ध्वनि-व्यवस्था का एक प्रमुख अंग है । कुछ माइक्रोफोन ऐसे होते हैं, जो कवि के क्षीण कण्ठ-स्वर को भी उन्नत तथा सुरीला बनाकर प्रसारित करते हैं तो कुछ ऐसे भी होते हैं, जो कवि की स्वाभाविक-आवाज को तो बिगाड़ते ही हैं, उसके कण्ठ को भी खराब कर देते हैं । ऐसे माइकों को मंच से दूर ही रखना उचित है । कुछ अतिरिक्त धन-खर्च करके भी ध्वनि-विस्तारक यन्त्र ऐसे ही लगाने चाहिए, जो आवाज को अधिक आकर्षक रूप में प्रेषित करने की क्षमता रखते हों ।

ध्वनि-विस्तारक यन्त्र की देख-रेख करने वाले कारीगर का अपने कार्य में निपुण होना आवश्यक है । जब तक काव्य-पाठ हो, तब तक उसका अनिवार्य रूप से यन्त्र के समीप उपस्थित रहना भी जरूरी है, ताकि वह कवि की तेज अथवा कमजोर आवाज से यन्त्र का ताल-मेल बनाये रख सके । मशीन-नियन्त्रक के अपने स्थान से इधर-उधर हट जाने पर ध्वनि-व्यवस्था में यदि कोई खराबी आ जाती है, तो उसके कारण भी कवि-सम्मेलन चौपट हो जाया करते हैं ।

जहाँ विद्युत् उपलब्ध हो, वहाँ ध्वनि-विस्तारकयन्त्र समूह में बिजली से चलने वाली एम्प्लीफायर-मशीन तथा जहाँ बिजली न हो वहाँ बैटरी से चलने वाली मशीन का प्रयोग किया जाता है । परन्तु बिजली वाले स्थानों में यदि कभी थोड़ी अथवा अधिक देर के लिए बिजली चली जाती है तो उस स्थिति में "विद्युत्-एम्प्लीफायर" के काम बन्द कर देने के कारण ध्वनि-व्यवस्था ठप्प हो जाती है; फलतः कवि-सम्मेलन की सफलता में विघ्न पड़ जाता है । अस्तु, जिन स्थानों पर बिजली मौजूद हो, वहाँ भी बैटरी वाले एम्प्लीफायर-सैट को रखना आवश्यक है, ताकि किसी समय बिजली के फेल हो जाने पर उसके स्थान पर तुरन्त ही बैटरी वाले सैट को चालू किया जा सके।

काव्य-पाठ करते समय कवि को यह भी नियम ध्यान में रखना चाहिये कि वह माइक्रोफोन से कम-से-कम एक फुट की दूरी पर रहते हुए ही रचना-पाठ करे, इससे उसकी आवाज स्पष्ट सुनाई देगी तथा कण्ठ पर भी अधिक दबाब नहीं पड़ेगा । इसके विपरीत जो लोग माइक के अधिक समीप रहकर काव्य-पाठ करते हैं, उनकी आवाज भर्रा जाती है अथवा खराब सुनाई देती है; साथ ही उनके गले पर भी इतना दबाव पड़ता है कि वह शीघ्र बैठ जाता है । अस्तु, मंचीय-कवि को माइक पर काव्य-पाठ करने के नियमों की जानकारी होना भी आवश्यक है।

प्रकाश-व्यवस्था

कवि-सम्मेलन की सफलता के लिये समुचित प्रकाश-व्यवस्था भी आवश्यक है ।

कवियों के बैठने के स्थान अर्थात् मंच पर प्रकाश की ऐसी व्यवस्था होनी चाहिये कि वहाँ उपस्थित सभी व्यक्तियों, विशेषकर माइक पर काव्य-पाठ करने वाले कवि की भाव-भंगिमाओं को श्रोता एवं दर्शकगण स्पष्ट रूप में देख सकें। श्रोताओं (दर्शकों) के बैठने के स्थान में ऐसी प्रकाश-व्यवस्था रहनी चाहिये, जिससे कि काव्य पाठ करने वाला कवि उनकी प्रतिक्रिया को भलीभाँति अनुभव कर सके।

जिन स्थानों पर प्रकाश-व्यवस्था के लिये बिजली का प्रयोग किया गया है, वह भी किसी समय बिजली के फेल हो जाने पर अंधकार से बचने हेतु गैस के हण्डे, लालटेन आदि की व्यवस्था पहले से ही कर रखनी आवश्यक है।

बैठने की व्यवस्था

कवियों तथा श्रोताओं के बैठने की व्यवस्था पर भी समुचित ध्यान दिया जाना चाहिए। मंच पर जितने कवि तथा अन्य लोगों को बैठाना है, उसे उसी अनुपात में छोटा-बड़ा बनाया जाना चाहिये। छोटे आकार वाले मंच पर अधिक लोगों की भीड़ अव्यवस्था उत्पन्न करती है। अच्छा तो यह रहे कि मंच पर कवि, अध्यक्ष, उद्घाटनकर्ता, मुख्य-अतिथि तथा संचालक के अतिरिक्त अन्य किसी को बैठने ही न दिया जाय। प्रायः आयोजन समिति के पदाधिकारी अथवा कार्यकर्ता मंच पर बैठने का प्रयत्न करते हैं और वे स्वयं को जनता की दृष्टि में अधिक आगे लाने के उद्देश्य से कवियों को भी पीछे धकेल देते हैं। इसी प्रकार कभी-कभी सरकारी-अधिकारियों को भी मंच पर कवियों के सामने ले जाकर बैठा दिया जाता है। इन सब से न केवल मंच की गरिमा ही नष्ट होती है, अपितु कवियों तथा दर्शकों के मन पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अतः मंच पर केवल काव्य-पाठ से सम्बन्धित लोगों को ही बैठने देना चाहिये और वह इतना बड़ा भी होना चाहिये कि उस पर सब लोग आराम से बैठ सकें।

इसी प्रकार श्रोताओं के बैठने की भी उचित व्यवस्था करने आवश्यक है। मंच के दायें-बायें किनारों पर कुर्सियाँ आदि डाल कर विशिष्ट-श्रोताओं अथवा महिलाओं के बैठने की व्यवस्था की जा सकती है तथा सामने की ओर यदि कुर्सियाँ उपलब्ध न हों तो फर्श अदि बिछाकर ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि लोग वहाँ आराम से बैठ कर काव्य-पाठ सुन सकें। बिछावन के अभाव अथवा कमी के कारण जब कुछ लोग धरती पर बैठना पसन्द न करके चारों ओर घेरा-सा बनाकर खड़े हो जाते हैं तो उनके कारण बड़ी अव्यवस्था फैलती है। ऐसे खड़े हुए लोगों में कभी-कभी कुछ उपद्रवी तत्व भी आ जाते हैं, जो शोर मचाकर अथवा अन्य उपायों द्वारा आयोजन को विफल करने की चेष्टा करते हैं। भीड़ में खड़े उपद्रवी-तत्वों को पहिचानना तथा उन पर नियन्त्रण कर पाना भी कठिन होता है, परन्तु यदि लोगों के बैठने की व्यवस्था ठीक रहती उपद्रवी-तत्वों को सरलता पूर्वक नियन्त्रित भी किया जा सकता है।

प्रायः देखा जाता है कि कवि-सम्मेलनों में समझदार तथा वयस्क श्रोता तो पीछे की पंक्तियों में जा बैठते हैं तथा नासमझ एवं उपद्रवी-बालकों को मंच के सामने बैठा दिया जाता है अथवा वे स्वयं ही आगे आ बैठते हैं। यह भी कवि-सम्मेलन की असफलता का एक कारण बनता है। कारण, आगे बैठे हुए नासमझ बच्चे कुछ-न-कुछ उपद्रव करते ही रहते हैं, जिससे माइक पर काव्य-पाठ करने वाले कवि का ध्यान बँटता है और उसके उत्साह में कमी आ जाती है। इसके विपरीत यदि दृष्टि के समक्ष अर्थात् आगे की ओर, समझ श्रोता बैठे हों तो कवियों को काव्य-पाठ करने में प्रसन्नता होती है। अस्तु, मंच के सामने तथा समीप सदैव वयस्क तथा समझदार श्रोताओं को ही बैठाना चाहिए। नासमझदार बालकों को प्रथम तो कवि-सम्मेलन-स्थल में प्रविष्ट ही नही होने देना चाहिये और यदि वे आ ही गये हों तो उन्हें सबसे पिछली पंक्ति मे ही रखना चाहिए, ताकि उपद्रव करने पर उन्हें वहाँ से सरलता पूर्वक हटाया जा सके।

मंच तथा श्रोताओं के बीच की दूरी 6 फुट से अधिक नहीं रखनी चाहिये। यदि केवल 5 फुट ही रखी जाये तो अधिक उचित होगा। समझदार श्रोता कवि के जितने निकट रहेंगे और उनकी प्रतिक्रिया को समझने का अवसर जितनी शीघ्रता से प्राप्त होगा; काव्य-पाठ करने वाला कवि उतना ही अधिक उत्साहित होगा। कवि तथा श्रोताओं के बीच की दूरी यदि अधिक होती है तो कवि को श्रोताओं की प्रतिक्रिया की समुचित तथा शीघ्र अनुभूति नहीं हो पाती, जिसके कारण उसमें काव्य-पाठ के लिए वास्तविक-उत्साह भी जाग्रत् नहीं होता।

अन्त में, कवि तथा श्रोताओं की बैठक में यह ध्यान रखना भी आवश्यक है कि यदि कोई कवि अथवा श्रोता किसी आवश्यक कारणवश अपने स्थान से उठकर कहीं जाना चाहे तो उसे आसानी से रास्ता मिल जाय तथा उसके कारण अन्य लोगों को कोई कठिनाई न हो।

महिलाओं, विशिष्ट श्रोताओं, वयस्कों तथा बच्चों के बैठने के लिये अलग-अलग कक्षों का निर्माण तथा उनके आवागमन हेतु अलग-अलग मार्गों का निर्धारण पहले से ही कर देना व्यवस्था का एक आवश्यक अंग होना चाहिये। जिस समय कोई कवि काव्य-पाठ कर रहा हो, उस समय किसी प्रकार की हलचल अथवा आवागमन न हो—यह ध्यान रखना भी अत्यन्त आवश्यक है।

कवि-सम्मेलन का समापन

कवि-सम्मेलन के समापन के समय उसमे भाग लेने वाले कवियों, अध्यक्ष, उद्घाटनकर्ता, मुख्य-अतिथि, कार्यकर्ता, सहयोगी तथा श्रोताओं के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर, उन्हें कवि-सम्मेलन की सफलता में सहयोग के लिए धन्यवाद देने का भी नियम है। इस कर्तव्य का निर्वाह आयोजन करने वाली संस्था के प्रधान, मंत्री अथवा किसी

अन्य वरिष्ठ सदस्य द्वारा किया जाता है। कहीं-कहीं धन्यवाद-ज्ञापन के उपरान्त 'राष्ट्र-गीत' के गायन के बाद ही कवि-सम्मेलन का विसर्जन होता है।

आतिथ्य-सत्कार

कवि-सम्मेलन में भाग लेने वाले कवियों के आतिथ्य-सत्कार, भोजन, विश्राम, यात्रा-व्यय, पारिश्रमिक अथवा पुरस्कार आदि की व्यवस्था कार्यक्रम के आयोजकों की ओर से की जाती है। वर्तमान समय के अधिकांश कवि-सम्मेलन व्यावसायिक रूप ले चुके हैं, अतः उनमें भाग लेने वाले कविगण अपने लिए पारिश्रमिक एवं यात्रा-व्यय आदि के रूप में एक निश्चित धनराशि की माँग पहले ही कर लेते हैं। कवि तथा आयोजक के बीच पत्राचार अथवा प्रत्यक्ष-भेंट आदि द्वारा निश्चित की गई वह धनराशि कवि-सम्मेलन से पूर्व ही अग्रिम रूप में अथवा कवि-सम्मेलन की समाप्ति पर कवि को भेंट कर दी जाती है। परन्तु अभी भी कुछ मंचीय-कवि ऐसे हैं, जो व्यावसायिकता से परे रह कर कवि-सम्मेलनों में साहित्य-सेवा के उद्देश्य से ही भाग लेते हैं और आयोजकों द्वारा मार्ग-व्यय एवं पारिश्रमिक आदि के रूप में उन्हें जो कुछ भी भेंट कर दिया जाता है, उसी को वे सहर्ष स्वीकार कर लेते हैं।

व्यय-भार

कवि-सम्मेलन के आयोजन पर होने वाला व्यय आयोजक-संस्थाएँ अथवा व्यक्ति वहन करते हैं। कुछ कवि-सम्मेलन सार्वजनिक चन्दे द्वारा अथवा प्रवेश-पत्र (टिकट) की बिक्री द्वारा धन-संग्रह करके भी आयोजित किये जाते हैं।

हिन्दी कवि-सम्मेलनों का यही संक्षिप्त-परिचय है।

2. हिन्दी कवि-सम्मेलनों के उद्भव से पूर्व की स्थिति

(क) उर्दू-काव्य और मुशाइरे—

उर्दू—उर्दू भाषा का जन्म बारहवीं शताब्दी में हुआ माना जाता है। मुहम्मद गौरी ने सन् 1199 ई० में जब दिल्ली-विजय की तथा उसके प्रतिनिधि के रूप में कुतुबुद्दीन ऐबक ने शासन सँभाला, उस समय फारसी तथा पंजाबी के वे शब्द जो लाहौर में पहले से ही बोले जाते थे, यहाँ की बोली में घुल-मिल गये तथा ब्रजभाषा, राजस्थानी एवं हरियाणावी भाषाओं के शब्द मिलकर एक नई बोली बन गई, जिसे अमीर-खुसरो (1255-1355 ई०) ने "हिन्दवी" अथवा "देहलवी" कहा है।

मुगल-शासन के बाद "हिन्दवी" ज़बान की और उन्नति हुई तथा इसमें फ़ारसी शब्दों का प्रयोग बढ़ गया, तब इस भाषा का नाम "हिन्दवी" से "रेख़ता" हो गया। शाहजहाँ के समय में इसका नाम "रेख़ता" से बदल कर "उर्दू" हुआ

---

1. हिन्दी साहित्य कोश 1, पृ. 181, प्रकाशक : ज्ञान मण्डल लि.

परन्तु मुगल-शासन के अन्तिम समय (1857 ई०) तक उर्दू के लिए "रेख़ता" शब्द का प्रयोग भी होता रहा।"

शाइरी और शाइर—उर्दू भाषा में "काव्य-रचना" को 'शाइरी' तथा काव्य-सृजन करने वाले को "शाइर" कहा जाता है।

दीवान और साहिबे-दीवान—उर्दू भाषा में काव्य-संग्रह को "दीवान" कहा जाता है तथा जिस शाइर की कविताओं का संग्रह प्रकाशित हो चुका हो, उसको "साहिबे-दीवान" कहते हैं। "उर्दू का पहला 'साहिबे-दीवान' शाइर मुहम्मद कुली कुतुबशाह (1580-1611 ई०) था।"[1]

नज़्म, मिस्रा और शेर—"नज़्म" का शाब्दिक अर्थ है—काव्य अर्थात् पद्य। नज़्म में प्रयुक्त होने वाली पंक्तियों को "मिस्रा" कहा जाता है। "मिस्रा" अर्थात् पद्य की एक पंक्ति। दो पद्यबद्ध पंक्तियों को 'शेर' कहते हैं। 'शेर' शब्द फ़ारसी के 'शऊर' से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है—'वह मोहक कथन, जिसे कहने वाले (शाइर) ने किसी ख़ास इरादे के साथ पद्यबद्ध किया हो।' शेर में मोहक कथन तथा ख़ास इरादे की कैद इसलिये लगाई गई है कि अक्सर 'नस्र' (गद्य) भी मात्राओं में पूरा हो जाता है, परन्तु उसमें मोहकता तथा ख़ास इरादे की कमी पाई जाती है।'[2]

नज़्म के भेद—नज़्म अर्थात् पद्य के निम्नलिखित 10 भेद (किस्मे) बताये गए हैं :—

(1) ग़ज़ल (2) क़सीदा
(3) मस्नवी (4) मुसम्मत
(5) क़ता (6) रुबाई
(7) तरकीब बन्द (8) तरजीअ् बन्द
(9) मुस्तज़ाद (10) फ़र्द

उक्त भेदों की संक्षिप्त परिभाषा निम्नानुसार है—

(1) **ग़ज़ल**—इसका शाब्दिक अर्थ है—'औरतों से बातें करना, जवानी का ज़िक्र करना तथा इश्को-मोहब्बत का फ़साना सुनाना।'

तकनीकी अर्थ में—"एक जैसे वज़न तथा क़ाफ़िया (तुक) वाले शेरों के समूह को 'ग़ज़ल' कहते हैं। ग़ज़ल में मुख्यतः व्यक्तिगत प्रेम-भावनाओं का चित्रण होता है। इसमें प्रेमिका के विभिन्न गुणों का प्रेमी द्वारा वर्णन किया जाता है। इसके

1. वही, पृ. 279
2. नसीमुल बलागत, ले. मौलवी हा. सै. जलालुद्दीन अहमद: प्रकाशक : अनवार अहमदी, इलाहाबाद; पृ. 104

अतिरिक्त दर्शन आध्यात्म, वेदान्त, भक्ति तथा हृदय पर बीती हुई घटनाओं (अनुभूतियों) आदि विषयों पर भी ग़ज़ल कही (लिखी) जाती है।"[1] (उर्दू में शेर लिखने को 'शेर कहना' कहा जाता है)।

आधुनिक समय में ग़ज़ल के माध्यम से मानव-जीवन संबंधित सभी बातों—जिनमें धर्म, राजनीति तथा समाज सम्बन्धी घटनायें भी सम्मिलित हैं—का वर्णन किया जाता है।

ग़ज़ल के मुख्य तीन भाग हो भाग होते हैं :—

(1) मत्ला (2) मक्ता, और

(3) बीच के शेर।

जिस शेर से ग़ज़ल प्रारम्भ की जाती है, उसे 'मत्ला' कहते हैं। इसके दोनों मिस्रों में एकसा क़ाफ़िया (तुकान्त) होता है। इसे हम हिन्दी गीतों की ध्रुव पंक्ति अथवा स्थायी का प्रतिरूप भी कह सकते हैं। प्राचीन शाइर अपनी ग़ज़लों में सिर्फ एक 'मत्ला' कहते थे, परन्तु बाद के शाइरों ने कई-कई मत्ले कहे हैं। पहले मत्ले के बाद वाले, दूसरे मत्ले को 'हुस्ने मत्ला' कहा जाता है।

'मक्ता' उस शेर को कहते हैं, जिस पर ग़ज़ल खत्म की जाती है अर्थात् जो ग़ज़ल का सबसे अन्तिम शेर होता है। इसके किसी भी मिस्रे (पंक्ति) में शाइर अपने 'तखल्लुस' (उपनाम) का प्रयोग करता है, जिससे यह पता चले कि वह किस शाइर की रचना है।

ग़ज़ल के बीच के शेर कम से कम पाँच तथा अधिक से अधिक सत्रह तक हो सकते हैं, परन्तु यदि 17 शेर बद एक मत्ला तथा फिर अशआर लिखे जायें तो उसे 'दो ग़ज़ला' कहते हैं। इसी प्रकार 'सह ग़ज़ल' तथा 'चौ ग़ज़ला' भी दो सकते हैं।

ग़ज़ल में बीच के शेरों की संख्या के उक्त प्राचीन नियम का परिपालन बाद के अनेक शाइरों ने नहीं किया है। मिर्ज़ा ग़ालिब के दीवान में कुछ ग़ज़लें तीन शेर की तथा मुन्शी मुनीर माहिर आदि की सत्रह से अधिक अशआर (शेरों) वाली ग़ज़लें भी पाई जाती हैं।

ग़ज़ल में अशआर की संख्या सदैव 'ताक़' (विषय) रखी जाती है। यदि किसी ग़ज़ल में 'जुफ्त' (सम-सख्यक अशआर हों तो उसे 'ऐब' (दोष) मोना जाता है। उर्दू ग़ज़ल का अधिकांश 'हिज्र' (विरह) के भावों पर अधारित होता है। हिज्र, (विरह) को 'ताक़' (विषम) तथा 'वस्ल' (संयोग) की। 'जुफ्त' (सम) का

1. नमीमुल बलाग़त, पृ. 105

पर्याप्त माना गया है। अतः ग़ज़ल में विषम-संख्यक शेर ही रखे जाते हैं। इसके अतिरिक्त माशूक को 'यकता' और 'बेमिसाल' समझा जाता है, आशिक की दृष्टि में दुनियाँ में उसका कोई उदाहरण नहीं मिलता, इसलिये भी ग़ज़ल के अशआर विषम-संख्यक रखे जाते हैं।"[1]

ग़ज़ल की दो किस्में मानी गई हैं :—

(1) ग़ज़ले मुसल्सल और (2) ग़ज़ले ग़ैर मुसल्सल।

ग़ज़ले मुसल्सल—वह ग़ज़ल होती है, जिसके सभी अश्आर एक दूसरे से संबंधित हों अर्थात् सभी शेर एक ही विषय के हों। रामपुर के नबाब यूसुफ अलीखां की निम्नलिखित ग़ज़ल इसका उदाहरण है—

"मैंने कहा कि दाव-ए-उल्फ़त मग़र ग़लत।
कहने लगे कि हाँ ग़लत, और किस क़दर ग़लत॥
तासीरे आहोज़ारिए शब हायतार झूट।
आवाज़ ए कुबूले दुआए सहर ग़लत॥
सोज़े जिगर से होंठ पे बुतखाला इफ्तिरा।
शोरे .फ़ुगां से जुम्बिशे दीवारों दर ग़लत॥"[2]

ग़ज़ले ग़ैर मुसल्सल—उस ग़ज़ल को कहते हैं, जिसके हर शेर का भाव अलग हो। "जलाल" की निम्नलिखित ग़ज़ल इसका उदाहरण है—

"शौक अल्लाह के उस चश्में तमाशाई का।
हौसला तंग हुआ जाता है बीनाई का॥
आज कुछ लिपटे ही जाते हैं वो आईने से।
निश्शा बेखुद किए देता है खुद आराई का॥
ले लिया यार ने आग़ोश में दिल यूँ मचला।
मैं तो दीवाना, हूँ नादान की दानाई का॥"[3]

आदि।

उर्दू ग़ज़ल का प्रारम्भ अरब वालों के क़सीदे हैं, जिनके आरम्भ में अक्सर "तश्बीब" (प्रारंभिक-शेर) के तौर पर ग़ज़ल लिखी हैं। अरब की खुसूसियात (विशेषतायें) ग़ज़ल में हैं। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें माशूक का ऐसा चित्रण किया जाता है, जिसके पास दूसरों की पहुँच होना तो दूर, स्वयं अपनी (आशिक) की भी पहुँच नहीं हो पाती। वह पर्दानशीन और अपरमित स्वाभिमानी होता है।

---

1. नसीमुल बलाग़त, पृ. 106-107
2. वही, पृ. 108
3. वही, पृ. 109

उसका आशिक हमेशा 'हिज्र' (विरह) में तड़पते रह कर उस पर अपनी जान तक कुर्बान कर देता है। इसका मुख्य कारण यह है कि ग़ज़ल कहने वाले आशिक का महबूब 'माशूके-हक़ीक़ी' अर्थात् ईश्वर होता था; जिसमें दूसरे. को प्रवेश करने की मज़ाल नहीं थी। अस्तु, अरब की नकल करते हुए उर्दू ग़ज़ल में भी वैसे ही भाव व्यक्त किए जाते हैं तथा ग़ज़ल का प्रमुख आधार "विरह" ही होता है।"[1]

"ग़ज़ल की असली कसौटी प्रभावोत्पादकता है। इसमें शाइर प्रतीकों का प्रयोग करता है। अच्छी ग़ज़ल वही मानी जाती है, जिसमें असर तथा मौलिकता हो और जिसे पढ़ने तथा सुनने वाला यह समझे कि यह उसी के दिल की बात कही गई है।"[2]

"भारत में ग़ज़ल की सर्वप्रथम रचना करने वाले शाइर ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती थे। उर्दू के प्रारंभिक कवियों में "वली" (1668-1744 ई.) ने भी ग़ज़लें लिखी हैं तथा "मीर को ग़ज़लों का सम्राट माना जाता है।"[3]

जैसाकि पहले कहा जा चुका है, वर्तमान समय में ग़ज़ल के शेरों की संख्या तथा विषय-वस्तु सम्बन्धी प्राचीन नियम टूट गये हैं तथा किसी भी विषय पर कितनी भी संख्या में ग़ज़ल के शेर कहे जाते हैं। आधुनिक काल के शाइर अर्श मल्सियानी की एक ग़ज़ल के कुछ शेर नमूने के रूप में यहाँ प्रस्तुत हैं—

"सनमख़ाने में भी शान-ए-ख़ुदा मालूम होती है।
नज़र मेरी हक़ीकत-आशना मालूम होती है।।
गुमां होता है जिस पर नग्म-ए-जांसोज़ का सबकी।
मेरे टूटे हुये दिल की सदा मालूम होती है।।
तसन्नोअ की फुसूँ-कारी का कुछ ऐसा असर देखा।
कि ये दुनिया मुझे दुनिया-नुमा मालूम होती है।"[4]

(2) **क़सीदा**—इसका शाब्दिक अर्थ है—"गाढ़ा मग्ज़" अर्थात् "ठोस-मस्तिष्क"। तकनीकी अर्थ में—"क़सीदा" उन अशआर को कहते है, जिनमें किसी की तारीफ़ अथवा निन्दा की गई हो अथवा जिनमें कोई उपदेश अथवा ज़माने की शिकायत वग़ैरह हो। यह हिन्दी के "काव्य-रूपक" जैसा होता है। क़सीदे में अल्फ़ाज बुलन्द, मज़ामीन आला तथा रूपक मनमोहक होने चाहिये। उसमें गंभीरता, शाब्दिक-चमत्कार, अर्थ-चमत्कार तथा सबसे बढ़कर संक्षिप्तता अर्थात् थोड़े शब्दों में बड़ी बात कह देने का गुण होना आवश्यक है, ताकि वह अपने प्रभाव को पूर्णरूपेण प्रकट कर सके।

---

1. नसीमुल बलाग़त, पृ. 110
2. हिन्दी साहित्य कोश, खण्ड 1, पृ. 278
3. वही, पृ. 278
4. अर्शमल्सियानी, प्रकाशक, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, पृ. 60

क़सीदे के आरंभ में केवल एक "मत्ला" होता है। आवश्यकतानुसार बीच-बीच में अन्य मत्ले भी लाये जा सकते हैं; परन्तु एकही स्थान पर कई मत्ले नहीं रखे जाते। इसमें कम-से-कम 19 शेर होते हैं तथा अधिक से अधिक चाहे जितने शेर रखे जा सकते हैं। क़सीदे की दो किस्में मानी गई हैं—

(1) तमहीदिया, और

(2) ख़िताबिया।

"तमहीदिया"—उस क़सीदे को कहते है जिसके प्रारंभ में वास्तविक मन्तव्य प्रकट करने से पूर्व शबाब के दिन, प्रेमिका, शराब, कबाब, मस्ती, मिलन, मौसमे-बहार, वर्षा, उपवन आदि का वर्णन किया जाता है। इस तमहीद को "तश्बीब" कहा जाता है। "क़सीदए-तमहीदिया" के पांच अनुभाग होते है—

(1) तश्बीब, (2) गुरेज़,
(3) मद्ह, (4) दुआ, और
(5) ख़ात्मा।

"**तश्बीब**" की व्याख्या पहले की जा चुकी है। "**गुरेज़**" उस शेर अथवा अश्आर (शेरों के समूह) को कहते हैं, जिनमें "तमहीद" अथवा "तश्बीब" से अस्ल-मतलब (वर्ण्य-विषय) की ओर मोड़ लिया जाता है। इस मोड़ का निहायत नफ़ीस (सुन्दर) होना आवश्यक है। जिस क़सीदे मे "गुरेज़" बग़ैर किसी "मुनासबत" (अनुकूलता) के होती है, उसे "मुक्तज़िब" कहते हैं।

"**मद्ह**" उन अश्आर को कहते है, जिनमें "अस्ल-मक़सद" (आवश्यक-कथन) का बयान किया गया हो। "**दुआ**" उन अश्आर को कहा जाता है, जिनमें प्रशंसनीय-व्यक्ति (जिसके लिये क़सीदा लिखा गया हो) के लिये "दुआ" की जाय और यदि क़सीदा किसी व्यक्ति की निन्दा में लिखा गया हो तो उसके लिये "बद्दुआ" की जाय। "**ख़ात्मा**" उन आख़िरी अश्आर को कहा जाता है, जिनके द्वारा क़सीदे को ख़त्म किया जाता है। इन अश्आर में शाइर अपने मतलब (उद्देश्य) को व्यक्त करता है।"[1]

टिप्पणी – क़सीदे में "दुआ" और "ख़ात्मे" में से चाहे जिसे पहले लाया जा सकता है।

संक्षेप में, क़सीदा उस 'काव्य-रूपक' को कहते हैं जो किसी की प्रशंसा अथवा निन्दा के लिये लिखा गया हो। इसके प्रत्येक शेर का दूसरा मिस्रा एक ही रदीफ़ तथा क़ाफ़िये का होता है।

पुराने ज़माने में दरबारी-शाइर अपने स्वामी की प्रशंसा अथवा निन्दा में

---

1. नसीमुल बलाग़त, पृष्ठ 120

ऐसे क़सीदे अधिक लिखा करते थे। वर्तमान समय में "क़सीदा" लिखने की प्रथा समाप्तप्राय है।

"सौदा" लिखित एक क़सीदे के कुछ अंश उदाहरण के लिये नीचे उद्धृत किए जा रहे हैं:—

तश्बीब—

उठ गया बहमनो दै का चमनिस्तां से अमल।
तेग़ उर्दी ने किया मुल्के ख़िज़ां मुस्तासल॥
सिज्दये शुक्र में है शाखे. समरदार हर एक।
देखकर बाग़े जहाँ में करमे इज़्ज़ोजल॥
आदि।

गुरेज़—

ताकुजा शह्र करूँ मैं कि बक़ौले उर्फ़ी।
असगर अजफ़ैजे हवा सब्ज़ शुबद्दर मिनक़ल॥
निस्वत इस फ़स्ल को पर क्या है सुख़न से मेरे।
है फ़िज़ा उसकी तो दो चार ही दिन में फ़ैसल॥
आदि।

मद्ह—

दीद तेरी बदौलिए हक़ से निगह का है ख़लल।
एक शै दो नज़र आती है ब-चश्मे अहवल॥
साइले दस्ते क़रम के तेरे हर सुब्हो मसा।
दौलत हर दो जहाँ से हो ग़नी अब्दे अक़ल॥
आदि।

ख़ात्मा—

अर्ज़ अहवाल ही अपना है मुझे इससे ग़रज़।
ताबा आख़िर जो ये मौज़ू में किया अज़ अव्वल॥
सो तो वो क्या है रहा हो ये जो तुझ से मख़फ़ी।
नहीं राज़े दो जहाँ आँख से तेरी ओझल॥
आदि।

दुआ—

ताक़ते तूले सुख़न आगेभी टुक "सौदा" को।
बख़्श ऐ कुव्वते बाज़ू ए नबी ए मुर्सल॥
चाहता है करे आख़िर वो दुआईया पर।
नज़्म तुझ मद्ह की बेहतर जो क़लामे अव्वल॥
आदि

ख़िताबिया—उस क़सीदे को कहते हैं, जिसमें कोई इब्तिदा (भूमिका) न लिख कर आरंभ से ही अस्ल-मतलब (वास्तविक-उद्देश्य) का वर्णन आरंभ कर दिया जाय। उदाहरण के लिये नीचे "सौदा" रचित उस क़सीदे के अंश उद्धृत किए जा रहे हैं, जिसे उसने नवाब दबीरुल मुल्क जलाउद्दीन शुजालुद्दौला बहादुर की प्रशंसा में लिखा था—

"आया अमल में तेग से तेरे वो कारज़ार।
देखा जिसे न तर्के फ़लक ने बरोज़गार॥
बेसर हुए हैं आज ये सरकश के मर निहाल।
ख़ाक उनकी पर हो तो न लावे समर शाख़सार॥
सरंचंग इस तरह कि दिखाए कि ताबे हश्र।
मद्फूं हो जिस ज़मी पै तो वां उठ सके ग़ुबार॥
आदि"[1]

(3) **मस्नवी**—इसका शाब्दिक अर्थ है—"दो जुज" (भागों) वाली वस्तु।" इसका तकनीकी अर्थ है—"वह नज़्म, जिसके हर शेर के दोनों मिस्रों में क़ाफ़िया आये और हर शेर का क़ाफ़िया पहले शेर के क़ाफ़िये से भिन्न हो तथा उन तमाम शेरों के समूह द्वारा किसी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक अथवा पौराणिक कथा का वर्णन किया जाय। जैसे—"मस्नवी गुलज़ारे नसीम", "ज़ह्रे इश्क" आदि।"[2]

"मस्नवी" को ऐसे "कथा-काव्य" का प्रतिरूप भी कह सकते हैं, जो "महाकाव्य" के निकट पहुँच सकता है; जैसे—खण्ड-काव्य। इसमें हर शेर के दोनों मिस्रे एक ही रदीफ़ तथा क़ाफ़िये में (सानुप्रास) होते हैं और हर शेर का रदीफ़ तथा क़ाफ़िया एक दूसरे से अलग भी होता है।"[3]

"मस्नवी" में सर्वप्रथम 'हम्द' (मंगलाचरण) लिखना आवश्यक है। तदुपरान्त वर्ण्य-विषय का उल्लेख करने से पूर्व एक भूमिका तय्यार की जाती है। इन बातों के बिना "मस्नवी" अपूर्ण मानी जाती है। मस्नवी का अन्त किसी उपदेशात्मक ढंग पर किया जाता है। चूँकि मस्नवी किसी क़ौम अथवा देश का इतिहास होती है, अतः उसमें सभी घटनाओं का विस्तार पूर्वक वर्णन किया जाता है। समाप्ति के समय पाठक को पूर्व-लिखित बातें विस्मृत न हो जाँय, अतः अन्त मे सम्पूर्ण कथा का सारांश इस प्रकार से लिखा जाता है कि पाठक को उससे कुछ सोचने-समझने तथा विचार

---

1. नसीमुल बलागत, पृ. 111
2. वही, पृ. 112
3. वही, पृ. 112

करने का अवसर प्राप्त हो सके। परन्तु देखा गया है कि उर्दू की मस्नवी का ख़ात्मा (अन्त) सामान्यतः त्रुटि-पूर्ण ही होता है।"[1]

उर्दू में मस्नवी' के लिए 7 बह्रें (छन्द) निश्चित की गई हैं। इन बह्रों (छन्दों) के अतिरिक्त अन्य किसी बह्र में मस्नवी लिखना उचित नहीं समझा जाता। इन सातों बह्रों के नाम तथा वज़्न (काव्य-पद के अक्षरों को गणों की मात्राओं से मिला कर बराबर करने को 'वज़्न' मिलाना कहते हैं) निम्नानुसार होते हैं—

(1) नाम—"मुताकारिब मुसम्मन मकसूर या महज़ूफ़।

वज़्न—फ़ऊलन फ़ऊलन फ़ऊलन फ़े'ल।

या

फ़ऊलन फ़ऊलन फ़ऊलन फ़ऊल।

इस बह्र (छन्द) में प्रायः जग अथवा सुल्तान की मस्नवी कही जाती है, जैसे—फ़ारसी में "शाहनामा" आदि। परन्तु मीरहसन ने इस बह्र में 'मस्नवी सहरुलबयान' कही है, जो इश्किया (श्रृंगाररस की) है।

(2) नाम—"हजज मुसद्दस महज़ूफ़ या मकसूर।"

वज़्न—मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन फ़ऊलुन।

या

मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईल।

इस बह्र में प्रायः आशिक-माशूक का ज़िक्र किया जाता है। जैसे—"मस्नवी ऐजाज़े इश्क" तथा "मैराजुल मज़ामीन" आदि।

(3) नाम—"हजज मुसद्दस अख़्रम मकबूज या अख़्रम उश्तर महज़ूफ़ या मकसूर।

इसका पहला रुक्न (भाग या मिस्रा) "अख़्रम मकबूज" या "अख़्रम उश्तर" होता है और आख़िरी रुक्न (अन्तिम भाग) महज़ूफ़ या मकसूर होता है। इनके वज़्न क्रमशः निम्नानुसार होते हैं—

वज़्न (क)—मफ़ऊल मुफ़ाइलन मफ़ऊलुन।

या

मफ़ऊल मुफ़ाइलन मफ़ाईल।

वज़्न (ख)—मफ़ऊलुन फ़ाइलुन मफ़ऊलुन।

या

मफ़ऊलुन फ़ाइलुन मफ़ाईल।

---

1. नसीमुल बलाग़त, पृ. 114

(4) नाम—ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मजनून मकसूर या महज़ूफ़।

वज़न—फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़ेलुन।

या

फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़एलान।

इस बह्र में मज़ामीन इश्किया भी होते हैं तथा उपदेशात्मक भी। "बहारे-
, "फरेबे-इश्क" तथा "ज़हरे-इश्क" आदि मस्नबियां इसी बह्र में हैं।

(5) नाम—बह्र रमल मुसद्दस मकसूर या महज़ूफ़।

वज़न—फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलुन।

या

फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलान।

इस बह्र में हिकायात आलिम, औलिया (ऋषि-मुनि आदि) के उपदेश लिखे
ाते हैं। "मस्नवी गुलज़ारे इब्राहीम" तथा "ईजादे रंगीन" आदि इसी बह्र में हैं।

(6) नाम --रमल मुसद्दस मजनून मकसूर या महज़ूफ़।

वज़न—फ़ाइलातुन फ़एलातुन फ़ेलुन।

या

फ़ाइलातुन फ़एलातुन फ़ेलान॥

इस बह्र में औलिया अल्लाह के बारे में लिखा जाता है। इसे ईजाद करने
ाले अमीर खुसरो हैं।

(7) नाम—सरीःमुसद्दस मुतव्वी महज़ूफ़ या मुतव्वी मुतव्वी महज़ूफ़ या
मकसूर।

वज़न—मुफ़्तएलुन मुफ़्तएलुन फ़ाइलुन।

या

मुफ़्तएलुन मुफ़्तएलुन फ़ाइलान।

इस बह्र में हर किस्म के मज़ामीन लिख सकते हैं। इसमें छोटी-छोटी मस्न-
यां लिखी गयी हैं। हकीम गौस की हज्व (निन्दा) में "सौदा" की एक मस्नवी
ी बह्र में है।

उक्त सातों बह्रों के अलावा अन्य बह्रों में भी मस्नवियां लिखी गई हैं, परन्तु
सब गैरदिलचस्प हैं।

(4) **मुसम्मत**—यह शब्द "तस्मीन" से लिया गया है, इसका शाब्दिक
ं है—"मोती पिरोना"।

तकनीकी दृष्टि से इसमें चन्द मिस्रे एक ही वज़न (वज़न) में कहे जाते हैं
ा उसी वज़न के कई बन्द (चरण) कहकर प्रत्येक बन्द का "काफ़िया" पहले

बन्द से भिन्न रखा जाता है। यदि इन बन्दों के मिस्रे "ताक़" (विषम-संख्यक) हों तो अन्तिम मिस्रे का "क़ाफ़िया" हर बन्द में वही रखा जाता है, जो पहले बन्द का हो और यदि मिस्रे "जुफ़्त" (सम-संख्यक) हों तो अन्तिम दो मिस्रों का भी वही क़ाफ़िया रखा जाता है, जो ऊपर वाले मिस्रे में हो; परन्तु कभी-कभी उसे बदल भी दिया जाता है।

"मुसम्मत" की निम्नलिखित 8 क़िस्में मानी गई हैं--

(1) मुसल्लस — तीन मिस्रों वाला।
(2) मुरब्बा — चार मिस्रों वाला।
(3) मुख़म्मस — पाँच मिस्रों वाला।
(4) मुसद्दस — छः मिस्रों वाला।
(5) मुसब्बा — सात मिस्रों वाला।
(6) मुसम्मन — आठ मिस्रों वाला।
(7) मुतस्सा — नौ मिस्रों वाला।
(8) मुअश्शर — दस मिस्रों वाला।

यहां केवल "मुसल्लस" तथा "मुरब्बा" के उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं :—

मुसल्लस —

"बुरका जो अपने मुँह से सनम ने उठा दिया।
सबको खुदा के नूर का जल्वा दिखा दिया।।
सज्दे को मैहरे माह ने भी सर झुका दिया।"

मुरब्बा--

"उसको मुज्रा है जो कहता जार आगे जो रज़ा।
इश्क में दिलवर के हूँ बीमार आगे जो रज़ा।
यार से कहता था जो हर बार आगे जो रज़ा।
आबरू रखियो मेरी ऐ यार आगे जो रज़ा।

(5) **क़ता**—इसका शाब्दिक अर्थ है—"टुकड़ा"। तकनीकी अर्थ में— "क़ता" उस मुसल्सल (क्रमबद्ध) नज़्म को कहते हैं, जिसके हर शेर का मतलब दूसरे शेर पर आधारित हो। जिसके मत्ले में क़ाफ़िया न हो, बल्कि क़ाफ़िये के बिना ही पहले शेर के दो मिस्रे हों। क़ते में कम से कम दो शेर तथा अधिक से अधिक 17 शेर होते हैं, परन्तु कुछ शाइरों ने इससे भी अधिक अश्आर के क़ते लिखे हैं।

क़ते का एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत है :—

"मैं न तड़पा जो दमे जिब्ह तो ये बाइस था।
कि रहा मद्दे नज़र हुस्न का आदाब मुझे।।

वर्ना वो शोख़ कि जो गुल से भी नाज़ुक हो सिवा,
लेवे इस तरह से जानूं के तले दाब मुझे ।।"[1]

(6) **रुबाई**—इसे "दो बैती" और "तराना" भी कहते हैं। इसमें चार मिस्त्रे होते हैं। इसके पहले, दूसरे तथा चौथे मिस्त्रे का क़ाफ़िया एक सा होना आवश्यक है। यदि तीसरे मिस्त्रे में भी क़ाफ़िया हो तो कोई हर्ज़ नहीं है।

रुबाई के 24 वज़न मुकर्रर हैं। एक उदाहरण नीचे प्रस्तुत है—

"औरों के लिये जो दिल सदा लेते है।
इन्सान फूलों को सर चढ़ा लेते हैं ।।
और जो झुके रहते हैं बाइज़्जो नियाज़।
मर्दम उन्हें आँखों पै बिठा लेते हैं ।।[2]

(7) **तरकीब बन्द** और

(8) **तरजीअ् बन्द**—इसमें पहले चन्द अश्आर ग़ज़ल या क़सीदे के तौर पर कहे जाते हैं, जिनकी संख्या पांच से कम और ग्यारह से अधिक नहीं होती। इसके बाद उन्हीं अश्आर की बह्र में एक शेर कहा जाता है, जिसका "क़ाफ़िया" पूर्वोक्त शेरों से भिन्न होता है। उस एक शेर को अन्य शेरों के अन्त में लगा दिया जाता है। ऐसे मजमूए (शेरों के समूह) को "बन्द" कहा जाता है।

जब एक बन्द पूरा हो जाय, तो चन्द अश्आर बतौर ग़ज़ल अथवा क़सीदे के फिर कहें तथा पहले बन्द की भांति एक शेर क़ाफ़िये में कह कर अन्त में लगादें तो उस समूह का नाम "तरजीअ्बन्द" होगा। इसमें बाद वाले दोनों शेर हम-क़ाफ़िया होंगे, परन्तु यदि अन्त वाले शेर दोनों जगह मुख़्तलिफ (भिन्न) क़ाफ़िये वाले हों तो उस समूह को "तरकीब बन्द" कहा जाएगा।"[1]

(9) **मुस्तजाद**—ग़ज़ल, रुबाई अथवा किसी नज़्म के साथ एक-एक फ़िक्रा (वाक्य) मौजूं जोड़ने पर उस नज़्म को "मुस्तजाद" कहा जाता है। जैसे—

"है जब से मुझे तुझसे जुदाई प्यारे। है हाल तबह ।।
ग़म से है जां लब पै आई प्यारे। इन्ना लिल्लाह ।।
ऐ काश जो जानता ये मैं पहले से। होगा ये हाल ।।
करता हर्गिज़ न आशनाई प्यारे। ख़ालिक है गवह ।।"

कभी-कभी सिर्फ दो मिस्त्रों में ही फ़िक्रा मुस्तजाद लाते हैं, जैसे—

"जिस बाग में वो सर्व गुलन्दाम नहीं है।

---

1. नसीमुल बलाग़त, पृ. 115
2. वही, पृ. 122
3. वही, पृ. 128

जिस वज़्म में वो शम्अ-ए-दिल आराम नहीं है ।
वीरान है गोया ।"[1]

(10) **फ़र्द**—उस शेर को "फ़र्द" कहते हैं, जिसके दोनों मिस्रों में से एक पर भी क़ाफ़िये (तुकान्त) की पाबन्दी न हो । दोनों मिस्रे हम-क़ाफ़िया होंगे तो वह शेर क़सीदा अथवा ग़ज़ल का मत्ला होगा और यदि वह मस्नवी का शेर हुआ तो उसे "बैत" कहा जाएगा । इन दोनों में से जो अलग हो, उसी को "फ़र्द" कहते हैं ।"[2]

टिप्पणी—आधुनिक समय में "नज़्म" शब्द का प्रयोग उस कविता के लिये किया जाता है, जो आकार में बड़ी तथा किसी एक ही विषय से सम्बन्धित हो । ऐसी नज़्म को तकनीकी-भाषा में "जदीद नज़्म" कहा जाता है । जदीद नज़्में सभी विषय पर लिखी जाती हैं । इनमें शाइर न केवल समस्याओं का ही वर्णन करता है, अपितु उनके हल के लिये अपने सुझाव भी प्रस्तुत करता है । ऐसी नज़्में प्रायः बिना तरन्नुम के (बिना गाये) ही पढ़ी जाती हैं ।

उदाहरण के लिये "अर्श" मल्सियानी की एक नज़्म का कुछ अंश यहाँ उद्धृत है—

"क़सम उस हुस्न की, जिसमें है शोखी भी लताफ़त भी ।
क़सम उस हुस्न की, जिसमें है तलख़ी भी हलावत भी ।।
क़सम उस हुस्न की सारा ज़माना जिसका शैदा है ।
क़सम उस हुस्न की, राज़-ए-जहां जिससे हुवैदा है ।।
क़सम उस हुस्न की, पहली सिफ़त है जिसकी रा नाई ।
क़सम उस हुस्न की, दर्बा है जिसके दर की ज़ेबाई ।।"[3]

बह्र—इसका शाब्दिक अर्थ है—छन्द । उर्दू-काव्य में बह्रों की कुल संख्या 19 मानी गयी है, जिनके नाम निम्नानुसार हैं—

(1) तवील, (2) मदीद,
(3) बसीत, (4) क़ामिल
(5) वाफ़िर, (6) हज़ज,
(7) रमल, (8) रजज़,
(9) मुन्सरिह़, (10) मुज़ारेअ़,
(11) सरीअ़, (12) ख़फ़ीफ,
(13) मुजतस् (14) मुख्तज़ब,

---

1. नसीहुल बलाग़त, पृ. 132
2. वही, पृ. 136
3. अर्श मल्सियानी, प्रकाशक-राजपाल एण्ड संस, पृ. 23 ।

(15) तकारुब या मुताक़ारिब, (16) मुतादारिक,
(17) जदीद, (18) क़रीब, तथा
(19) मुशाकिल।

इनमें से पहली पांच बह्रें अहले-अरब अर्थात् अरब वालों अथवा अरबी में शाइरी लिखने वालों के साथ मख़सूस (सम्बद्ध) हैं। इन बह्रों में अहले-अजम (अर्थात् ईरानी अथवा फ़ारसी में शाइरी लिखने वाले) शेर नहीं कहते। अन्तिम तीन बह्रें अहले-अजम (ईरानियों अथवा फारसी के शाइरों) के साथ मख़सूस (सम्बद्ध) हैं। इनमें अहले-अरब (अरबी के शाइर) शेर नहीं कहते। बाकी बह्रें—अर्थात् संख्या छः से सोलह तक की बह्रें—"मुश्तरिक़" अर्थात् सब लोगों के लिये मान्य हैं, अतः उनमें "अहले-अरब" तथा "अहले-अजम"- दोनों ही शेर कहते हैं। इस प्रकार अहले-अरब पहली 16 बह्रों में शेर कहते हैं तथा अहले-अजम अन्तिम 14 बह्रों में शेर कहते हैं।"[1]

रुक्न— उर्दू शाइरी में 7 'अर्कान' (अर्थात् सात प्रकार के "रुक्न")"[2] हैं, जो निम्नानुसार हैं—

(1) फ़ऊलन (2) फ़ाइलुन
(3) मफ़ाईलुन (4) मुस्तफ़ एलुन
(5) मुताफ़ाएलुन (6) फ़ाएलातुन
(7) मफ़ऊलातुन

जो बह्रें एक ही "रुक्न" की 'तकरार' (पुनरावृत्ति) से हासिल हुई हैं (बनी हैं), वे निम्नलिखित सात हैं—

(1) हज़ज, (2) रमल,
(3) क़ामिल, (4) वाफ़िर,
(5) मुताक़ारिब, (6) मुतादारिक,
(7) रजज़

जो बह्रें दो रुक्न के मिश्रण से तय्यार हुई हैं, वे निम्नलिखित 12 हैं :—

(1) तवील, (2) मदीद,
(3) बसीत, (4) सरीअ्
(5) खफ़ीफ़, (6) मुजतस्,

---

1. आईन-ए-उरूज़ो काफ़िया। सम्पादक—कन्हैयालाल माथुर "तालिब" हाथरसी। प्रकाशक : मुस्तफ़ाई प्रेस, आगरा, पृ. 8
2. छन्द के आधारभूत शब्दों को रुक्न कहा जाता है। "रुक्न" के बहुवचन को "अर्कान" कहते हैं।

(7) मन्सरिह् (8) मुज़ारेअ्
(9) मुक्तज़ब (10) जदीद (इसे 'ग़रीब' भी कहते हैं)
(11) क़रीब और (12) मुशाकिल

इस प्रकार उक्त 19 मुख्य बह्रों के त्रिभागानुभाग के आधार पर सैकड़ों किस्म की बह्रें तय्यार हुई हैं।"[1]

नशिस्त—शाइरों द्वारा सामूहिक रूप से काव्य-पाठ की छोटी गोष्ठी को "नशिस्त" कहा जाता है। प्राचीन काल में "नशिस्त" में भाग लेने वाले शाइरों के लिये पहले से ही कोई 'तह्र-मिस्रा' (समस्या-पूर्ति के हेतु किसी छन्द की एक पंक्ति) दे दिया जाता था, जिसकी पूर्ति शाइर लोग अपने-अपने ढंग से करते थे। पुराने ज़माने की नशिस्तों में एक शम्अ अर्थात् मोमबत्ती (या दीपक) जलाकर रख दी जाती थी। शाइर लोग एक क्रम से बैठते थे तथा जिस शाइर के आगे शम्अ रख दी जाती थी, वह अपना काव्य-पाठ आरम्भ कर देता था। इस प्रकार नशिस्त में भाग लेने वाले प्रायः सभी शाइरों के सम्मुख बारी-बारी से शम्अ रखी जाती थी और वे क्रमशः अपना काव्य-पाठ करते थे। नशिस्तें आज भी होती हैं, परन्तु उनका स्वरूप अब स्वतन्त्र कवि-गोष्ठियों जैसा हो गया है अर्थात् उनमें समस्या-पूर्ति विषयक रचनायें सुनाना आवश्यक नहीं रह गया है।

मुशाइरा—प्राचीन-काल में नवाबों तथा शहन्शाहों के दरबारों में उर्दू काव्य-पाठ के छोटे-बड़े कार्यक्रम होते रहते थे तथा जन-साधारण के बीच नशिस्तों के आयोजन हुआ करते थे। इन्हीं आयोजनों ने जब आगे चलकर बड़े सार्वजनिक काव्य-समारोहों का स्वरूप ग्रहण कर लिया तो उन्हें 'मुशाइरा' कहा जाने लगा। इस प्रकार मुशाइरे का तकनीकी अर्थ हुआ—"वृहद् सार्वजनिक उर्दू काव्य-समारोह।"

प्रारम्भ में मुशाइरों में भी समस्या पूर्त्तियों अर्थात् मिस्रा-तह्र पर आधारित काव्य-पाठ का ही बोल-बाला रहा। बाद में, उनमें स्वतन्त्र-विषयों पर भी काव्य-पाठ होने लगा।

"लाहौर में मौहम्मद हुसैन आज़ाद ने वहाँ के शिक्षा-विभाग के अंग्रेज डायरेक्टर कर्नल हाल रॉयड की सहायता से "अंजुमने पंजाब" नामक एक उर्दू साहित्य-संस्था की स्थापना की, जिसका नाम बाद में "अंजुमने उर्दू" कर दिया गया। इस अंजुमन के तत्वावधान में सन् 1874 ई. में ऐसे मुशाइरे होने लगे, जिनमें मिस्रा-तह्र के स्थान पर कोई विषय दिया जाने लगा तथा शाइर लोग उस विषय पर नज़्में लिखकर सुनाने लगे।"[2] "ज़दीद नज़्म" की शुरूआत भी यहीं से हुई मानी जाती है।

---

1. अ ईन-ए-उरूज़ो काफ़िया, पृ. 10-11
2. हि दी साहित्य कोश, खण्ड—1, पृ. 400

"कुछ और आगे चलकर विषय से सम्बन्धित प्रतिबन्ध भी समाप्त हो गया, तब मुशाइरों में विभिन्न विषयों से सम्बन्धित नज़्में—ग़ज़ल, रुबाई, क़ता आदि-पढ़े जाने लगे। उन्नीसवीं शताब्दी में मुशाइरों ने पर्याप्त लोकप्रियता अर्जित की तथा उनका प्रचार-प्रसार भी खूब बढ़ा।"[1]

इन मुशाइरों को भी सार्वजनिक हिन्दी कवि-सम्मेलनों के उद्‌भव का प्रेरक कहा जा सकता है।

(ख) राजदरबारों के काव्योत्सव

प्राचीन काल में अधिकांश कवियों को राज्याश्रय प्राप्त रहा— इसका उल्लेख साहित्य के इतिहास मे पाया जाता है। राजा भोज एवं विक्रमादित्य के नाम संस्कृत कवियों के आश्रयदाता के रूप मे बहुश्रुत है। मुगल-शासकों के दरबार में भी विभिन्न भाषाओं के कवि स्थायी रूप से आश्रय प्राप्त करते थे। अकबर के "नवरत्नों" में अधिकांश कवि थे। राजा मानसिंह, छत्रपति शिवाजी तथा बुन्देलखण्ड केसरी महाराज छत्रसाल भी कवियों का अत्यधिक सम्मान करते थे।

"महाराज छत्रसाल स्वयं भी अच्छे कवि थे तथा मान भट्ट, विन्ध्य कवि, रामदास, प्रचण्ड, नवलशाह, लाल आदि 82 कवि उनके राज्याश्रित थे, जिनको उन्होंने जागीर, धन-मान आदि देकर सन्तुष्ट किया था।"[2] वीर रस के महाकवि भूषण को छत्रपति शिवाजी तथा महाराज छत्रसाल द्वारा अपरिमित सम्मान देने की कथाएँ तो प्रसिद्ध हैं ही।

बुन्देलखण्ड के परवर्ती राजा-महाराजाओं ने भी कवियों को यथेष्ट सम्मान दिया। उनमें ओरछा के महाराजा वीरसिंह जू देव का नाम विशेष प्रसिद्ध है। ग्वालियर, ईडर (पंजाब), पटियाला, चण्डीगढ़, रामपुर, भरतपुर आदि रियासतें भी दीर्घकाल तक कवियों की आश्रयदाता के रूप में प्रसिद्ध रहीं।

उत्तर भारत तथा मध्यप्रदेश की अनेक तत्कालीन रियासतों के अपने-अपने राजकवि भी थे। इसके अतिरिक्त एक राज्य के कवि का दूसरे राज्य में आवागमन भी लगा रहता था।

राजा-महाराजाओं के जन्म-दिवास अथवा अन्य विशिष्ट अवसरों पर 'काव्योत्सव" आयोजित किए जाने के प्रमाण भी मिलते हैं। ऐसे उत्सव प्रायः राजकीय-संरक्षण में ही होते थे तथा उनमें भाग लेने वाले कविगण या तो राजा की प्रशंसा में लिखी गई रचनाओं का पाठ करते थे अथवा फिर नायिका-भेद आदि बिषय पर कवितायें सुनाते थे।

उक्त दरबारी-काव्योत्सवों में, जिन्हें पंजाब में "कवि-दरबार" भी कहा जाता

---

1. हिन्दी साहित्य कोश, खण्ड-1, पृष्ठ 400
2. वीर चरितामृत : लेखक : कविमणि कृष्णदास, पृष्ठ 286

था, प्रायः राजा, उनके दरबारीगण तथा विशिष्ट आमन्त्रित श्रोता ही सम्मिलित होते थे। कभी-कभी सार्वजनिक-स्थलों पर भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित किए जाने के प्रमाण मिलते हैं, परन्तु वे भी प्रायः राजकीय-संरक्षण में तथा समस्या-पूर्त्ति प्रधान ही होते थे। ऐसे आयोजनों में एक ही समस्या (काव्य-पंक्ति) की पूर्त्ति पर, अलग-अलग रचनाओं का पाठ कर, कविगण अपनी प्रतिभा द्वारा श्रोताओं को चमत्कृत करने का प्रयास करते थे।

बुन्देलखण्ड की ओरछा, टीकमगढ़, रींवा, पन्ना तथा छतरपुर एवं राजस्थान और पंजाब की विभिन्न रियासतों में इस प्रकार के काव्योत्सवों का प्रचलन विशेष रूप से था। काव्योत्सवों में भाग लेने वाले कवियों को राज्य द्वारा धन-मान आदि देकर पुरस्कृत किया जाता था। परन्तु इस प्रकार के राज्याश्रित कवियों की रचनाओं में जन-साधारण की समस्याओं एवं दुःख-दर्द का कोई उल्लेख नहीं होता था, अत. वे सर्वसाधारण के आकर्षण का केन्द्र नहीं बन सके, और वे दरबारी-काव्योत्सव केवल "दरबारी" ही बने रहे।

(ग) पढ़न्त-गोष्ठियाँ

राजदरबारों के काव्योत्सवों में जिन कवियों तथा काव्य-रसिक श्रोताओं को प्रवेश नहीं मिल पाता था, उनकी काव्य-पाठ एवं काव्य-श्रवण संबंधी अभिरुचि ही संभवतः पढ़न्त-गोष्ठियों को जन्म देने का कारण बनी।

प्रारम्भ—पढ़न्त-गोष्ठियों के उद्‌भव का कोई प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नहीं होता, परन्तु इस परम्परा का सैकड़ों वर्ष पुराना होना सुनिश्चित है। यों, इसका प्रारंभ अष्टछाप के कवियों द्वारा सामूहिक पद-गायन से भी माना जाता है तथा इसका उद्‌गम-स्थल भी ब्रजक्षेत्र को ही स्वीकार किया जाता है।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि ब्रजभाषा के अभ्युदय के साथ ही उसमें जिस माधुर्य-रस पूर्ण साहित्य की सृष्टि हुई, उसने भारत के एक बड़े भू-भाग को काव्य-रस से आप्लावित कर, अपनी ओर अत्यन्त शीघ्रता से आकर्षित कर लिया था।"[1] उस रस का अधिकाधिक आदान-प्रदान करने का सबल माध्यम बनीं ये पढ़न्त-गोष्ठियाँ।

आरंभ में इन गोष्ठियों में पद-गायन का ही अधिक प्रचलन था। ये गोष्ठियाँ प्रायः ब्रज में मनाये जाने वाले नित्योत्सव, पर्वोत्सव एवं वर्षोत्सव के अवसरों पर आयोजित की जाती थीं। इनमें भाग लेने वाले कवि, जो अधिकतर पद रचना करते थे, तथा अच्छे गायक भी होते थे, प्रायः स्वरचित (कभी-कभी अन्य कवियों द्वारा रचित भी) पदों का गायन किया करते थे। प्रत्येक कवि उत्सव के अवसरानुकूल विभिन्न पदों की रचना कर, उन्हें गाकर सुनाया करता था। अष्टछाप के प्रसिद्ध कवि-सूरदास

1. ब्रज का इतिहास (1), सं. कृष्णदत्त वाजपेयी, पृ. 1

नन्ददास, कृष्णदास आदि इन गोष्ठियों के प्रमुख आकर्षण-केन्द्र बने रहे। बाद में इन गोष्ठियों के स्वरूप में परिवर्तन परिलक्षित हुआ तथा पदों का स्थान कवित्त, सवैया, घनाक्षरी आदि छन्दों ने ले लिया। ऐसी गोष्ठियों में छन्दों को गाकर ही पढ़ना आवश्यक नहीं था, फिर भी अधिकांश कवि अपने छन्दों का स-स्वर पाठ ही किया करते थे। जिन्हें गाना नहीं आता था, उन्हें बिना गाये हुए भी छन्द पढ़ने की छूट रहती थी।

प्रसार—इस प्रकार की पढ़न्त-गोष्ठियाँ अत्यधिक लोक-प्रिय हुई। इन्हें न केवल सार्वजनिक-स्थलों, अपितु व्यक्तिगत निवासों पर भी आयोजित किया जा सकता था तथा इनके माध्यम से केवल चार-पाँच व्यक्ति भी मिल-बैठ कर काव्या-नन्दित हो सकते थे, अतः इनका प्रचार-प्रसार खूब हुआ। ब्रजक्षेत्र से उद्भूत इस प्रकार की गोष्ठियां धीरे-धीरे अन्य प्रदेशों में भी आयोजित होने लगी। उत्तर प्रदेश के वाराणसी, प्रयाग, कानपुर, झाँसी, इटावा, फर्रुखाबाद, रामपुर, आदि नगरों के अतिरिक्त वर्तमान मध्यप्रदेश के ग्वालियर और मुरैना; बुन्देलखण्ड के ओरछा, टीकम-गढ़, पन्ना, बिजावर, छतरपुर, और रींवा तथा पंजाब के पटियाला तथा ईडर स्टेट आदि नगर इन गोष्ठियों के केन्द्र बने। ब्रजक्षेत्र में आगरा, भरतपुर, डीग, अलीगढ, हाथरस, एटा, कासगंज, मथुरा, वृन्दावन, गोवर्धन, गोकुल, महावन, बल्देव आदि स्थान तो इनके गढ़ थे ही, अन्य नगरों में भी पढ़न्त गोष्ठियां खूब पल्लवित हुई।

पढ़न्त-गोष्ठियों के प्रति जन-साधारण का आकर्षण तब और भी अधिक बढ़ गया, जब उनमें कवियों के अतिरिक्त उन लोगों को भी भाग लेने की छूट दे दी गई, जो स्वयं तो काव्य-रचना नहीं करते थे, परन्तु जिन्हें अन्य कवियों की बहुसंख्यक कवितायें याद होती थी। इसका उत्तम प्रभाव यह हुआ कि पढ़न्त-गोष्ठियों में सक्रिय रूप से भाग लेने के इच्छुक इतर लोग भी अन्य कवियों के विभिन्न विषयों, रसों तथा शैलियों से संबंधित सैकड़ों-हजारों छन्दों को कण्ठस्थ करने लगे और केवल इतना ही नहीं, स्वयं भी काव्य-रचना हेतु प्रयत्नशील बने। इस प्रकार पढ़न्त-गोष्ठियों के कारण भी कविता के प्रचार-प्रसार में अत्यधिक वृद्धि हुई।

विषय-वस्तु—पढ़न्त-परम्परा के प्रारंभिक पद-गायन-काल में, जिस उत्सव पर गोष्ठी का आयोजन किया गया हो, केवल उसी से सम्बन्धित पदों के गायन की प्रथा थी। बाद की पढ़न्त-गोष्ठियों में इस परम्परा का निर्वाह इस प्रकार किया जाने लगा कि वसन्तोत्सव पर केवल वसन्त, दीपावली पर केवल दीपोत्सव, होलिकोत्सव पर केवल होली तथा अन्य पर्वों तथा अवसरों पर केवल उसी पर्व अथवा अवसर से सम्बन्धित छन्दों का पाठ होने लगा। इससे भी अधिक आगे जाकर नायिका के केवल कुच, नेत्र, कपोल, अधर, नासिका, वस्त्र, आभूषण, गति, रति; राधा-कृष्ण के केवल रास, विलास, हास-परिहास, सौन्दर्य-शृंगार आदि तथा केवल वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शिशिर आदि ऋतु; इसी प्रकार अन्य पदार्थों अथवा प्राणियों के किसी एक विशिष्ट-

वर्ग अथवा विषय से सम्बन्धित छन्दों का ही पाठ होने लगा। इसके फलस्वरूप अवसर एवं विषयानुकूल छन्द-पाठ करने की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विभिन्न कवियों द्वारा एक-एक विषय पर अनेक छन्दों की रचना की जाने लगी, जिससे ब्रजभाषा के काव्य-भांडार में आशातीत वृद्धि हुई। साथ ही इन गोष्ठियों ने काव्य-रसिक जनता को भी अपनी ओर अधिकाधिक आकर्षित किया।

भारतेन्दु-युग—भारतेन्दु-युग पढ़न्त-गोष्ठियों के प्रचार-प्रसार का स्वर्ण-काल माना जाता है। भारतेन्दुजी ने "नक्षत्र-मण्डल" नामक एक संस्था की स्थापना की थी, जो इन गोष्ठियों के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती थी। ब्रजक्षेत्र के अतिरिक्त काशी, कानपुर, प्रयाग, झांसी तथा पटियाला नगर इन गोष्ठियों के प्रमुख केन्द्र थे। बुन्देलखण्ड की विभिन्न रियासतों में भी ऐसी गोष्ठियाँ आयोजित की जाती थीं।

जिस प्रकार आधुनिक कवि-सम्मेलनों में विभिन्न कवि एक से दूसरे स्थान पर आते-जाते बने रहते हैं, उसी प्रकार इन पढ़न्त-गोष्ठियों (जिन्हें "कवि-गोष्ठी" भी कहा जाता था) में भाग लेने हेतु एक नगर के कवि दूसरे नगर में आते-जाते रहते थे। ब्रजक्षेत्र में रथ का मेला तथा मुड़िया पूनों आदि सार्वजनिक पर्वों के अवसरों पर ऐसी गोष्ठियाँ बड़े पैमाने पर आयोजित की जाती थीं, जिनमें अन्य नगरों के कवि भी बड़ी संख्या मे भाग लेने के लिये आते थे। यही स्थिति अन्य नगरों की भी थी। ऐसी विशिष्ट गोष्ठियों में श्रोताओं की संख्या भी अधिक हो जाया करती थी।

"काशी का कवि-समाज बहुत समय तक पूर्व तथा पश्चिम के ब्रजभाषा कवियों के सम्मिलन का प्रमुख केन्द्र बना रहा। बाद में सनेहीजी के नेतृत्व में कानपुर भी इस सम्मिलन का एक प्रमुख स्थल बन गया।"[1]

पढ़न्त-गोष्ठियों के प्रमुख कवि—उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तथा बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में पढ़न्त-गोष्ठियों में भाग लेने वाले कुछ प्रमुख स्वर्गीय कवियों के अकारादिक्रम तथा क्षेत्रानुसार नाम निम्नलिखित हैं—

सर्वश्री अंबिकादत्त व्यास, अयोध्यानाथ 'अवधेश', काशीपति त्रिपाठी, राव कृष्णदेवशरणसिंह, 'गोप', बा. गिरधर दास, जगन्नाथदास 'रत्नाकर' जगमोहन-सिंह, प्रेमीहरि, बेनीद्विज, बचऊचौबे, ब्रजचन्द बल्लभीय, बैजनाथसिंह, "किंकर", रामकृष्ण वर्मा, राधाकृष्णदास, रामचन्द्र शुक्ल, लक्ष्मीनारायण सिंह "ईश", पं. विजयानन्द, सरदार कवि, सुधाकर द्विवेदी, हनुमान कवि तथा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (सभी बनारस)

सर्वश्री अभिराम शर्मा, किशोरचन्द कपूर "किशोर", गया प्रसाद शुक्ल "सनेही", जगदम्बा प्रसाद मिश्र "हितैषी", राय देवी प्रसाद "पूर्ण", प्रणयेश, प्रताप

1. ब्रज का इतिहास 2, सं. कृष्णदत्त बाजपेयी, पृ. 399

नारायण मिश्र, बालकृष्ण शर्मा "नवीन", बचनेश, श्यामनारायण मिश्र, श्यामबिहारी शुक्ल "तरल" एवं सत्यनारायण पाण्डेय (सभी कानपुर)।

सर्वश्री पं. जगन्नाथ प्रसाद मिश्र "बदौआगुरु" तथा डा. रमाशंकर शुक्ल "रसाल" (सभी प्रयाग)।

सर्वश्री अम्बिकेश, डा. आनन्द, नबीबख्श 'फलक', नाथूराम माहौर, प्रचण्ड, ब्रजेश एवं लाल कवि (सभी बुन्देलखण्ड)।

सर्वश्री ऋषिनाथ, ठाकुर, नरहरि बन्दीजन, ला. भगवानदीन, भवानीदास, महापात्र, लाल तथा रामदत्त (सभी फतेहपुर)।

सर्वश्री बल्लभ दीक्षित, ललितेश एवं शिशुपाल सिंह "शिशु" (सभी इटावा)।

सर्वश्री अबिकेश भट्ट, ब्रजेश तथा श्याम सेवक (सभी रींवा)।

सर्वश्री अनूप शर्मा, रामप्रसाद त्रिपाठी एव ठा. रामेश्वर बख्श सिंह (सभी सीतापुर)।

सर्वश्री अयोध्यानाथ "अवधेश", बलराम मिश्र एवं लच्छीराम ब्रह्म भट्ट (सभी बस्ती)।

सर्वश्री उमराव सिंह पांडेय, पं० गंगाधर "गंगकवि" तथा शिवशंकर भारती (सभी मैनपुरी)।

सर्वश्री खूबीराम, वैद्य गजराजसिंह "सरोज", जगन सिंह सेंगर, नथूराम शंकर शर्मा "शंकर", बाबूराम "प्रेमी", मुकुंद कवि, शिवलाल, बा. शीतलदास "मौनी", तथा श्यामलाल (सभी अलीगढ़)।

सर्वश्री ईश्वरी बौहरे, गंगा प्रसाद कमठान तथा गंगा प्रसाद पांडेय (सभी धौलपुर)।

सर्वश्री कुंभन तथा सांवल प्रसाद चतुर्वेदी (सभी भरतपुर)।

सर्वश्री अजयराम लवानियां, मुंशी पन्नालाल "प्रेमपुंज", पं. मुरलीधर, मोती, मन्नी, रामचन्द्र सेनी, शंठ कवि, श्रीधर पाठक तथा हरिशंकर शर्मा (सभी आगरा)।

सर्वश्री लच्छीराम (अयोध्या), गोबिन्द गिल्ला भाई (काठियाबाड़), कुं. हरिश्चन्द्र देव वर्मा "चातक" (फर्रुखाबाद), रामलाल श्रीवास्तव (गोरखपुर), यज्ञदत्त शर्मा (डिबाई), बद्रीनारायण चौधरी "प्रेमघन" (मिर्जापुर), रामप्रसाद त्रिपाठी तथा कपिल (मुजफ्फर नगर), ब्रजनन्दन कविरत्न (रायबरेली), रूपनरायण पांडेय (लखनऊ), तथा बा. शिवनन्दन सहाय (सीहोर)।

इनके अतिरिक्त मथुरा-वृन्दावन क्षेत्र के प्रमुख कवियों के नाम निम्नानुसार हैं—

सर्वश्री उरदाम, कालीचरन माली, गोस्वामी कन्हैयालाल, डॉ० कन्हैयालाल पोद्दार, किशोरी लाल गोस्वामी, किशोर, ला. किशनलाल, 'कृष्ण कवि' शतरंज-मास्टर, किशोरी रमण "अलि", खड्ग कवि, कुं. गजराजसिंह, गोपभट्ट, गोपालराय बन्दीजन, गोबिन्द कवि, ग्वाल कवि, चुन्नी लाल "शेष", छबीले लाल गोस्वामी, दयानिधि, द्विजदेव, देवद्विज, नत्थीलाल जड़िया, नंदनंदन, नवनीत चतुर्वेदी, नत्थोमल हलवाई, नवीन, नारायणदास शर्मा "मुनीम", नारायणदास दालवाले, नारायणदास सेंगरिया, पतोल, प्रियतमदत्त चतुर्वेदी "चच्चन", प्रेमी कवि, पुरुषोत्तम दास "सैया", बलभद्र, वल्लभ-सखा, ब्रजबल्लभ बाबूलाल सर्राफ, उस्ताद बिरजीसिंह, भगवानदत्त चतुर्वेदी, भोलानाथ भंडारी, गुरू मनिया भटट, मदन मोहन, मानिक लाल, मुरली कवि, रमन लाल गोस्वामी, रामचन्द्र "चन्द्र", रामलला "लालकवि", रामदयाल "दयाल", राधाचरण गोस्वामी, रोशनलाल वेदपाठी, लाड़लीलाल, लाल बलवीर, श्यामसुन्दर श्रीनाथ, ला.साङ्गराम. सूदन, हरदेव, हीरालाल चतुर्वेदी आदि ।

विशेष—पढ़न्त-गोष्ठियो में भाग लेने वाले कुछ कवि आशु-कविता भी करते थे । जब किसी विषय-विशेष से सम्बन्धित अपने अथवा प्राचीन कवियों के छन्द उन्हें याद नहीं रहते थे, तो वे तत्काल ही नये छन्द गढ़ कर सुना दिया करते थे । ऐसी पढन्त-गोष्ठियां कभी-कभी शर्त लगाकर भी आयोजित की जाती थीं तथा उनमें हारने वाले पक्ष को विजयी-पक्ष का महत्व स्वीकार करते हुए एक निश्चित दण्ड-राशि भी देनी पड़ती थी ।

गोवर्धन-निवासी श्री नारायणदास सेंगरिया के विषय में यह प्रसिद्ध है कि उन्हें अपने तथा प्राचीन कवियों के सहस्रों छन्द कण्ठस्थ थे तथा वे कभी भी किसी गोष्ठी में पराजित नहीं हुए । अनेक प्रतिद्वन्द्विता पूर्ण कार्यक्रमों में उन्होंने 'कलम रुकै तौ सर कलम कराइयो" का उद्घोष करते हुए अपनी विजय-वैजयन्ती को बड़ी शान से फहराया था । वे आशु-कवि भी थे ।

ऐसी प्रतिद्वन्द्विता पूर्ण पढ़न्त-गोष्ठियाँ कभी-कभी तीन-तीन दिन तक अविराम गति से चलती रहती थीं। ब्रजक्षेत्र में पढ़न्त-गोष्ठी की यह परम्परा अद्यतन जीवित है, यद्यपि उनके आकर्षण में निरन्तर कमी आती चली जा रही है । अन्य नगरों में भी ऐसी पढ़न्त-गोष्ठियों के आयोजन यदा-कदा होते रहते हैं ।

वर्तमान कवि—पढ़न्त-गोष्ठियों में भाग लेने वाले पुरानी तथा नई पीढ़ी के जो कवि अभी तक विद्यमान हैं, उनमें से प्रमुख नाम निम्नलिखित हैं—

सर्वश्री रामचरण हयारण "मित्र", सेवकेन्द्र त्रिपाठी तथा गौरीशंकर द्विवेदी "शंकर" (सभी झांसी) ।

सर्वश्री विकास वाजपेयी तथा रसिकेश (सभी कानपुर) ।

सर्वश्री पं. अमृतलाल चतुर्वेदी,[1] कृष्णलाल "कुसुमाकर", प्रणव शास्त्री, मानव-जी (सभी आगरा नगर तथा जिला)।

सर्वश्री बल्लभजी दीक्षित एवं शिवदत्त चतुर्वेदी (इटावा)।

सर्वश्री कैलाश चन्द्र "कृष्ण", गोविन्दचतुर्वेदी[2], गोपाल प्रसाद व्यास, गोबिन्दराम पाठक, दीनानाथ चतुर्वेदी "सुमनेश", देवकीनदंन कुम्हेरिया, बालमुकुंद चतुर्वेदी "मुकुंद", यमुनाप्रसाद चतुर्वेदी "प्रीतम", रामनारायण अग्रवाल, राजाबाबू बर्मन, ज्यो. राधेश्याम द्विवेदी एवं विष्णुदत्त शर्मा (सभी मथुरा नगर एवं जिला)।

सर्वश्री कविमणि कृष्णदास (पन्ना), चतुरेश[3] (दतिया), श्यामाचरण "श्याम" (हाथरस) एवं हरदेव गुप्त (छतरपुर) आदि।

अन्य कवि—ब्रजक्षेत्र के जिन अन्य कवियों को ब्रजभाषा के प्राचीन कवियों के शताधिक छन्द याद हैं तथा जो पढ़ंत-गोष्ठियों में भाग लेते रहते हैं, उनमें सर्वश्री उपेन्द्रदत्त शर्मा, घनश्याम "घनश्री", चतुर्भुज चतुर्वेदी, राजेन्द्र रंजन, राधेश्याम वर्मा, राजेन्द्र दत्त शर्मा एवं शिवदत्त शर्मा के नाम उल्लेखनीय हैं।

स्मरणीय है कि पढ़न्त-गोष्ठियों में केवल ब्रजभाषा के छन्दों का पाठ करने की ही प्रथा है।

(घ) कवि-गोष्ठियाँ

पढ़न्त-गोष्ठियों में ब्रजभाषा की रचनाओं का ही पाठ किया जाता था, क्योंकि खड़ी बोली के विकास से पूर्व ब्रजभाषा ही काव्य-रचना के लिये सक्षम तथा सर्वोत्कृष्ट मानी जाती थी। ब्रजभाषा-काव्य सम्पन्न भी खूब था, परन्तु कालान्तर में जब खड़ी बोली में भी काव्य-रचना होने लगी, तब हिन्दी के कवि स्पष्टतः दो वर्गों में बँट गये—(1) ब्रजभाषा के कवि तथा (2) खड़ी बोली के कवि।

यद्यपि ब्रजभाषा के कुछ पुराने कवियों ने समय की गति को पहिचान कर खड़ी बोली में भी काव्य-रचना आरम्भ कर दी थी; तथापि खड़ी बोली के नवीन कवि, जिनकी संख्या में बड़ी तेजी से वृद्धि हो रही थी, अपनी काव्य-साधना में प्रायः उनसे दूर ही बने रहे।

सनेहीजी—ब्रजभाषा के जिन कवियों ने खड़ी बोली को बड़ी तेजी से अपनाया और उसमें स्वयं काव्य-सृजन करने के अतिरिक्त अन्य लोगों को भी प्रोत्साहित

---

1. अब स्वर्गवासी हो चुके हैं।
2. अब वर्षों से पक्षाघात-पीड़ित हैं।
3. अब स्वर्गवासी हो चुके हैं।

किया, उनमें कानपुर के स्व० पं० गया प्रसाद शुक्ल "सनेही" (जो 'त्रिशूल' उपनाम से भी कविता लिखते थे), का नाम सर्वोपरि है ।

"सनेहीजी ब्रजभाषा के मर्मज्ञ तो थे ही, उन्हें हिन्दी तथा उर्दू का भी अच्छा ज्ञान था । वे सन् 1900 ई. पूर्व से ही ब्रजभाषा-काव्य की रचना करने लगे थे । उनकी पहली कविता "रसिक मित्र" नामक पत्रिका में सन् 1904 या 1905 ई. में प्रकाशित हुई थी । बाद में सन् 1913 ई. में "प्रताप" (कानपुर) में उनकी "कृषक क्रन्दन" शीर्षक खड़ी बोली की रचना प्रकाशित हुई । उस कविता ने आधुनिक हिन्दी के निर्माता आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का ध्यान आकर्षित किया । उन्होंने सनेहीजी को "सरस्वती" में लिखने के लिये आमन्त्रित किया । फलतः एक लम्बे अरसे तक वे "सरस्वती" में लिखते रहे, तत्पश्चात् सन् 1928 ई. में उन्होंने स्वयं "सुकवि" नामक पत्रिका का प्रकाशन एवं सम्पादन आरम्भ कर दिया । यह "काव्य-पत्रिका" सन् 1950 ई० तक निरन्तर प्रकाशित होती रही तथा उसने सैकड़ों कवियों की काव्याभिव्यक्ति को इस रूप में उपस्थित किया कि जिस की नींव पर आगे चलकर खड़ी बोली की कविता का राजमहल दृढ़तापूर्वक खड़ा हो सका ।

सनेहीजी केवल कवि नहीं थे, अपितु वे सैकड़ों कवियों के निर्माता, गुरु, संशोधक तथा हिन्दी कविता के कर्मठ प्रचारक-प्रसारक भी थे । काव्य-क्षेत्र में उनके प्रभाव तथा आचार्यत्व का सहज अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि हिन्दी में कवियों का एक "सनेही-सम्प्रदाय" ही है, जो कानपुर के बाहर भी दूर-दूर तक फैला हुआ है । ब्रजभाषा की भाँति, खड़ी बोली में कवित्त तथा सवैया छन्दों में काव्य-रचना करना इस सम्प्रदाय की मुख्य शैली है ।

सनेहीजी ने ब्रजभाषा, खड़ी बोली तथा उर्दू—इन तीनों में ही काव्य-रचना की, परन्तु लगता है कि समय की गति को भाँपकर, खड़ी बोली की कविता के प्रचार प्रसार में ही वे विशेष प्रयत्नशील बने रहे । खड़ी बोली को काव्य-माध्यम के रूप में विकसित, पुष्ट एवं प्रसारित करने में उनका योगदान श्रीधर पाठक, हरिऔध तथा मैथिलीशरण गुप्त से किसी अंश में कम नहीं है । हिन्दी-प्रचारक तथा कवि-निर्माता के रूप में तो वे तो इन सबसे बहुत आगे हैं । उर्दू की परम्परा से घनिष्ठ रूप में सम्बद्ध होने के कारण खड़ी बोली की प्रकृति का उन्हें यथेष्ट ज्ञान था, इसीलिये वे हिन्दी-कविता को इतने परिष्कृत रूप में उपस्थित कर सके । द्विवेदी-युग के कुछ पहले से ही ब्रजभाषा एवं खड़ी बोली का जो विवाद प्रारम्भ हो गया था, उसमें बहुधा खड़ी बोली के समर्थकों को दोनों ही माध्यमों में लिखकर खड़ी बोली की शक्ति प्रमाणित करनी पड़ती थी । 'सनेहीजी' ऐसे कवियों में अपना विशिष्ट स्थान रखते थे ।

हिन्दी कविता को गोष्ठियों तथा कवि-सम्मेलनों के माध्यम से जनता तक पहुँचाने का मुख्य श्रेय भी सनेहीजी को ही है। उन्हें हिन्दी कवि-सम्मेलनों का वास्तविक-प्रतिष्ठापक कहा जा सकता है।[1]

अन्य कवि—एक ओर कानपुर में जहाँ सनेहीजी अपनी पूरी शक्ति के साथ हिन्दी कविता को प्रतिष्ठित करने में जुटे थे, वहीं ब्रजक्षेत्र में पं. नाथूराम शंकर शर्मा 'शंकर' (हरदुआगंज, अलीगढ़), पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी, बल्लभजी दीक्षित (इटावा); श्री सुनहरीलाल "पराग" (एटा), वैद्य गजराज सिंह 'सरोज' (सिकन्दराराऊ, अलीगढ़) तथा स्व. कौशलेन्द्र (मैनपुरी) प्रभृति कविगण, जो आरम्भ में ब्रजभाषा में ही काव्य-सृजन करते थे, खड़ी बोली की काव्य-रचना तथा उसके प्रचार-प्रसार के लिये प्राणपण से सचेष्ट हो उठे। अन्य स्थानों में पं. श्रीधर पाठक, श्री जयशंकर प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध", गुरुभक्तसिंह 'भक्त', ठा. गोपालशरण सिंह आदि कवियों ने भी इसी मार्ग को अपनाया। इन सब के प्रयत्नों के फलस्वरूप ब्रजभाषा की कवि-गोष्ठियों के समानान्तर हिन्दी कवि-गोष्ठियों का प्रचलन प्रारम्भ हुआ। खड़ी बोली के प्रति आकर्षित जन-साधारण का झुकाव इन गोष्ठियों की ओर होना स्वाभाविक ही था, अतः धीरे-धीरे ब्रजभाषा की गोष्ठियाँ अथवा पढ़न्त-गोष्ठियों का अस्तित्व तिरोहित होने लगा तथा उनका स्थान खड़ी बोली (जिसे बाद में 'हिन्दी' नाम दिया गया) की कविताओं ने ले लिया।

वर्ण्य-विषय—ब्रजभाषा-काव्य में मुख्यतः धर्म, दर्शन, पाप-पुण्य, नायिका-भेद, नीति, प्रकृति, राधा-कृष्ण, देवी-देवता तथा ऐतिहासिक पात्र ही कविता की विषय-वस्तु बने हुए थे। हिन्दी कविता ने जब इन सबके अतिरिक्त जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी प्रवेश किया तो स्वभावतः वह अधिक लोकप्रिय सिद्ध हुई। दीर्घकालीन एकरसता से ऊबे हुए काव्य-रसिक हिन्दी कविता में नवीनता के दर्शन पाकर उसकी ओर इतनी तेजी से आकर्षित हुए कि सैकड़ों वर्ष पुराने एवं समृद्ध ब्रज-काव्य-भाण्डागार की चमक फीकी पड़ने लगी तथा हिन्दी-कविता अल्पकाल में ही उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित हो गई।

काव्य-पाठ—ब्रजभाषा की पढ़न्त-गोष्ठियों में अन्य कवियों की रचनायें सुनाने की भी छूट दी गई थी, परन्तु हिन्दी कवि-गोष्ठियों में इसे स्वीकृत नहीं किया गया। हिन्दी कवि-गोष्ठी में कवि केवल स्वरचित-रचना का ही पाठ करता है तथा उस पर किसी विषय, छन्द अथवा समस्या पूर्ति का भी कोई बन्धन नहीं रहता। इससे जहाँ विभिन्न रसों तथा शैलियों के कवियों को एक साथ काव्य-पाठ का अवसर मिलता है, वहीं श्रोताओं को भी उनकी विविधता विशेष रूप से आकर्षित करती है।

---

1. हिन्दी साहित्य कोश, भाग—2, पृष्ठ

अन्य बातें—कवि-गोष्ठियों में भाग लेने वाले कवियों की संख्या कोई निश्चित नहीं होती। कम से कम दो तथा अधिक से अधिक कितने भी कवि इनमें भाग ले सकते हैं। श्रोताओं की संख्या भी अधिक नहीं रहती। इन गोष्ठियों में प्रायः वे ही श्रोता उपस्थित होते हैं, जो कविता के मर्म को भली-भाँति हृदयंगम कर पाते हैं।

कवि-गोष्ठी के लिये मंच, लाउडस्पीकर, प्रकाश आदि की विशेष व्यवस्था करने की आवश्यकता भी नहीं पड़ती। चूँकि गोष्ठी में श्रोताओं की संख्या कम रहती है, अतः कविगण बिना माइक तथा बिना मंच के ही श्रोताओं के बीच बैठ कर, काव्य-पाठ करते हैं। ये गोष्ठियाँ प्राय. 1 से 6 घण्टे तक चलती हैं। आधुनिक हिन्दी-जगत् में ऐसी गोष्ठियों के आयोजन सर्वत्र होते रहते हैं। वर्तमान काल में, इनमें काव्य-रसास्वादन हेतु भाग लेने वाले श्रोताओं की संख्या में भी वृद्धि होने लगी है।

3. हिन्दी कवि-सम्मेलनों का उद्भव एवं प्रसार

पढ़ंत-गोष्ठियाँ तथा कवि-गोष्ठियाँ ही वर्तमान हिन्दी कवि-सम्मेलनों की जननी हैं। इन गोष्ठियों के द्वारा जब जनसाधारण में काव्य-श्रवण के प्रति विशेष रुचि जाग्रत हुई, तब अधिकाधिक लोगों को उसका लाभ पहुँचाने की दृष्टि से काव्य पाठ के जो कार्यक्रम बड़े पैमाने पर आयोजित किए गये, उन्हें "कवि-सम्मेलन" कहा जाने लगा।

उर्दू-मुशाइरे बहुत पहले से ही सार्वजनिक रूप में आयोजित किए जा रहे थे—यह बात पहले कही जा चुकी है। उनके समानान्तर हिन्दी-कविता को प्रतिष्ठित एवं लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से हिन्दी कवियों तथा काव्य-प्रेमियों ने भी विशाल पैमाने पर सार्वजनिक हिन्दी कवि सम्मेलन आयोजित करने की परम्परा का सूत्रपात किया।

प्रथम कवि-सम्मेलन—"हिन्दी-जगत् में सर्वप्रथम सार्वजनिक कवि-सम्मेलन सन् 1922 ई० में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर कानपुर नगर में आयोजित किया गया।"[1] उसकी अध्यक्षता बा. जगन्नाथदास "रत्नाकर" ने की तथा उसके स्वागताध्यक्ष पं. गयाप्रसाद शुक्ल "सनेही" थे। इस विराट् आयोजन के प्रेरक भी सनेहीजी ही थे। इस कवि-सम्मेलन में सर्वश्री श्रीधर पाठक, रामनरेश त्रिपाठी, अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध", दुलारेलाल भार्गव, अभिराम, हितैषी, रूपनारायण पाण्डेय, भगवती चरण वर्मा, गुलाबरत्न वाजपेयी, नन्दकिशोर 'वाणी भूषण', चुन्नी गुरु, अनूप शर्मा प्रभृति कवियों ने काव्य-पाठ किया था तथा पुरुषोत्तम टण्डन, सरदार नर्मदासिंह, स्वामी नारायणानन्द,

---

1. सनेही अभिनन्दन ग्रन्थ : सं. शंभूरत्न त्रिपाठी, पृष्ठ 92

ज्योतिप्रसाद भार्गव, शम्भूदयाल गुप्त, चन्दनलाल गर्ग तथा भगवती प्रसाद वाजपेयी **आदि प्रमुख विद्वान् श्रोता के रूप में सम्मिलित** हुए थे । स्व. अनूप शर्मा के काव्यपाठ **को इसमें सर्वाधिक सराहा गया था ।**[1]

---

1. प्रस्तुत शोध-कार्य प्रारम्भ करते समय (सन् 1979 ई. में) शोधार्थिनी ने आदरणीय पं. श्रीनारायणजी चतुर्वेदी को भी पत्र लिखकर यह आग्रह किया था कि हिन्दी के प्रथम कवि-सम्मेलन के विषय में यदि उन्हें कोई जानकारी हो तो उसे प्रदान करने की कृपा करें । उस समय श्री चतुर्वेदी जी ने अपने उत्तर में लिखा था कि इस विषय की कोई प्रामाणिक जानकारी उनके पास नहीं है । साथ ही यह भी सूचित किया था कि संम्भवतः हिन्दी का पहला कवि-सम्मेलन सन् 1925 ई. के आस-पास कभी हुआ होगा । बाद में शोधार्थिनी को अन्य सूत्रों से मिले पुष्ट प्रमाणों द्वारा यह ज्ञात हुआ कि हिन्दी का पहला कवि-सम्मेलन सन् 1922 ई. में 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर कानपुर नगर में आयोजित हुआ था और उसके आयोजक थे स्व० पं. गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही', जिसका उल्लेख प्रस्तुत शोध-प्रबंध में किया गया है ।

   अब इस शोध-ग्रंथ का प्रकाशन कार्य आरंभ होने से कुछ पूर्व ही बम्बई से प्रकाशित साप्ताहिक 'धर्मयुग' के 1 अप्रैल 1984 ई. के अङ्क में पं. श्रीनारायणजीचतुर्वेदी का एक लेख "हिन्दी का सबसे पहला कवि-सम्मेलन" शीर्षक से प्रकाशित हुआ है, जिसमें उन्होंने हिन्दी का प्रथम कवि-सम्मेलन विक्रम संवत् 1950, तदनुसार सन् 1895 ई. में फतेहगढ़ (वर्तमान उत्तर प्रदेश) के तत्कालीन कलैक्टर श्री ग्राउस द्वारा आयोजित किये जाने की बात कही है। चतुर्वेदी जी के अनुसार–"श्री ग्राउस हिन्दी के अनन्य भक्त थे । उन्होंने अपने कार्य-काल की समाप्ति पर भारत छोड़ कर इंग्लैंड प्रस्थान करते समय हिन्दी वालों से विदा लेने के लिए, अपनी ही कोठी पर, काव्य-पाठ का एक कार्यक्रम आयोजित किया था तथा उसकी अध्यक्षता भी उन्होंने स्वयं ही की थी। इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले कवियों के लिए उन्होंने एक समस्या भी दी थी, जिसकी पूर्ति लगभग 50 कवियों ने की थी। जो पूर्तिकार कार्यक्रम में भाग लेने नहीं आ सके थे, उन्होंने अपनी पूर्तियाँ कलैक्टर साहब के पास भिजवा दी थीं । कार्यक्रम में अनेक रईस प्रतिष्ठित लोग तथा कविता-प्रेमी श्रोता के रूप में भी आमंत्रित किये गये थे जिनमें सेठ हरप्रसाद का नाम उल्लेखनीय है । इस सम्मेलन में सर्वश्रेष्ठ पूर्ति पं. नाथूराम शंकर शर्मा 'शंकर' की मानी गई थी तथा उन्हें ग्राउस साहब ने अपने हाथ से एक स्वर्ण-पदक, एक दुशाला तथा हिन्दी में हस्ताक्षरित अपना एक फोटो पुरस्कार के रूप में दिया था । दूसरी सर्वश्रेष्ठ पूर्ति बूंदी की श्रीमती चन्द्रकला की मानी गई, जो कि आयोजन में

अन्य आयोजन—इसके बाद सन् 1924 ई. में क्राइस्ट चर्च कालिज की हिन्दी साहित्य परिषद के संरक्षण में एक और बृहद कवि-सम्मेलन का आयोजन

भाग लेने नहीं आई थीं; उन्हें डाक द्वारा कुछ पुस्तकें उपहार के रूप में भेज दी गयी थीं।"

श्री चतुर्वेदी जी के उक्त कथन से स्वतः ही स्पष्ट है कि ग्राउस साहब द्वारा अपने विदेश-गमन के समय, अपनी ही कोठी पर, अपनी ही अध्यक्षता में आयोजित उक्त कार्यक्रम, जिसमें कि कतिपय विशिष्ट लोगों को श्रोता के रूप में भी आमन्त्रित कर लिया गया था तथा जिसमें समस्या-पूर्ति की कैद भी थी, 'सार्वजनिक कवि-सम्मेलन' न होकर एक 'कवि-गोष्ठी' ही रहा होगा। इस प्रकार की गोष्ठियां तो ग्राउस साहब के कार्यक्रम से पूर्व भी खूब आयोजित होती रहती थीं, जिसके अनेक प्रमाण उपलब्ध हैं।

कतिपय विशिष्ट आमंत्रित श्रोताओं के बीच किसी निजी आवास पर आयोजित काव्य-पाठ के कार्यक्रमों की गणना 'कवि-गोष्ठी' के अन्तर्गत ही की जाती है। जिस कार्यक्रम में श्रोतागण बिना किसी रोक-टोक के भाग ले सकें तथा जिसमें समस्यापूर्ति आदि की कोई क़ैद भी न हो, परम्परा से सार्वजनिक 'कवि-सम्मेलन' का नाम उसी को दिया जाता है। अस्तु, चतुर्वेदीजी ग्राउस साहब द्वारा आयोजित कवि-गोष्ठी को "हिन्दी का पहला कवि-सम्मेलन" नाम देकर इस विषय के जिज्ञासुओं को संभवतःअनजाने में ही भ्रमित कर बैठे हैं। उनके लेख का शीर्षक किसी भी स्थिति में उपयुक्तनहीं माना जा सकता।

ग्राउस साहब ने उक्त कार्यक्रम जिस संवत् में आयोजित किया था श्रीचतुर्वेदीजी का जन्म-वर्ष भी वही संवत् है, अतः उनका कथन किसी पढ़ी अथवा सुनी गई बात पर ही आधारित हो सकता है। वे स्वयं प्रत्यक्षदर्शी गवाह नहीं हैं? अतः उनका कथन प्रामाणिक कैसे मान लिया जाय?

श्री चतुर्वेदीजी के उक्त लेख में और भी अनेक असंगत बातें कही गई हैं। उदाहरण के लिए—उन्होंने आगरा के 'संठ' कवि के विषय में लिखा है कि संठजी की समस्या, पूर्ति के समय मैं आयु में इतना छोटा था कि उनका वास्तविक नाम जानने की उत्सकता ही नहीं हुई।" जबकि संठ जी द्वारा की गई एक समस्या पूर्ति चतुर्वेदीजी को अभी तक याद रही है और अपने लेख में उसे उद्धृत भी किया है।

यथार्थ में, संठ जी (वास्तविक तथा पूरा नाम पं. श्यामलाल शुक्ल 'संठकवि', इनका विस्तृत परिचय इसी शोध-प्रबन्ध में उल्लिखित है) चतुर्वेदी जी से आयु में

किया गया, जिसकी अध्यक्षता पं. गया प्रसाद शुक्ल "सनेही" ने की थी। उसके दो-दिन बाद ही कुछ स्थानीय लोगों की प्रेरणा से उक्त कालिज के छात्रावास के तत्वावधान में एक अन्य विशाल कवि-सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता बा. जगन्नाथदास "रत्नाकर" ने की। इन दोनों कवि-सम्मेलनों में सनेही-जी, अवधेश "निश्चल", पं. राजाराम शुक्ल, "राष्ट्रीय आत्मा", हृदयेश, करुणेश आदि अनेक कवियों ने भाग लिया था।

"सन् 1925 ई. में कानपुर में ही कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर, दो प्रतिद्वन्द्वी कवि-सम्मेलन भी आयोजित किए गये, जिनमें एक वर्ग के नेता सनेहीजी थे।"[1]

प्रसार—इस प्रकार सार्वजनिक कवि-सम्मेलनों का सूत्रपात सन् 1922 ई. में कानपुर नगर से हुआ तथा उसके प्रवर्तक पं. गया प्रसाद शुक्ल "सनेही" बने। बाद में कानपुर के कवि-सम्मेलन की सफलता से प्रेरित होकर देश के कोन-कोने में कवि-सम्मेलन आयोजित होने लगे। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भरतपुर, शिमला, हरिद्वार, नागपुर आदि अधिवेशनों में भी अखिल भारतीय स्तर के कवि-सम्मेलन आयोजित किये गये, जिनके कारण देश के सभी भागों में कवि-सम्मेलनों की लोक-प्रियता में अभिवृद्धि हुई। बाद में तो हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, काशी नागरी प्रचारिणी

मात्र 6 वर्ष बड़े थे तथा जिन वर्षों में चतुर्वेदी जी आगरा नगर में जिला विद्यालय निरीक्षक के पद पर कार्यरत थे, उन दिनों शंठजी की रचनाएँ आगरा के सर्वाधिक प्रचलित दैनिक समाचार पत्रों में प्रतिदिन प्रकाशित हुआ करती थीं। वे श्री चतुर्वेदीजी से भलीभाँति परिचित थे तथा चतुर्वेदीजी भी उनके नाम-काम-धाम से भली-भाँति परिचित रहे होंगे, इसमें सन्देह नहीं। तथापि चतुर्वेदीजी ने शंठजी के विषय को कुछ और ही मोड़ देकर क्यों लिखा है, इसे वे ही जानते होंगे।

सार्वजनिक हिन्दी कवि-सम्मेलनों के जनक स्व. पं. गयाप्रसाद जी शुक्ल 'सनेही', जो आयु में पं. श्री नारायणजी चतुर्वेदी से 12 वर्ष बड़े थे, अपने जीवन-काल में इस शोध-प्रबन्ध की लेखिका के पारिवारिक-आवास पर अनेक बार पधारे थे तथा उन्होंने स्वयं भी हिन्दी का पहला कवि-सम्मेलन सन् 1922 ई. में स्वयं के द्वारा कानपुर में आयोजित करने की पुष्टि की थी।

अस्तु, मेरे कहने का तात्पर्य मात्र इतना ही है कि हिन्दी के प्रथम कवि-सम्मेलन के संबंध में 'पहली अप्रेल' को प्रकाशित श्री चतुर्वेदी जी का अभिमत स्वीकार करने योग्य नहीं है।
—लेखिका

1. सनेही अभिनन्दन ग्रंथ—पं. लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी का लेख, पृ. 80

सभा तथा अन्य साहित्यिक संस्थाओं के वार्षिक अधिवेशनों के अवसर पर कवि-सम्मेलन आयोजित करने की एक प्रथा-सी ही बन गई। धीरे-धीरे मेला, प्रदर्शनी आदि में भी कवि-सम्मेलन आयोजित किये जाने लगे।

साहित्यिक-संस्थाओं के बाद धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, शैक्षणिक एवं व्यावसायिक संस्थाओं के अधिवेशनों में भी जन-समूह को आकर्षित करने हेतु कवि-सम्मेलन कराया जाना आवश्यक समझा जाने लगा। बड़े नगरों में होती हुई यह प्रथा धीरे-धीरे छोटे-छोटे कस्बों तक फैलती गई। वर्तमान समय में दार्जिलिंग (आसाम) से लेकर बम्बई (महाराष्ट्र) तक तथा श्रीनगर (कश्मीर) से लेकर मद्रास तक—देश के प्रायः सभी भागों में प्रतिवर्ष सहस्रों की संख्या में स्थानीय, प्रादेशिक एवं अखिल भारतीय स्तर के कवि-सम्मेलन आयोजित किये जाते हैं तथा बड़े-बड़े नगरों में तो एक वर्ष के भीतर 10-20 तक की संख्या में कवि-सम्मेलनों के आयोजन होते रहते हैं।

प्रसार का कारण—कवि-सम्मेलनों के इस व्यापक प्रचार-प्रसार का प्रमुख कारण खड़ी बोली की सरलता तथा उसकी कविताओं में जन-रुचियों तथा जन-समस्याओं को वाणी देने की हृदयग्राही क्षमता रही है। मुगल शासन-काल से लेकर अंग्रेजी शासन-काल तक सरकारी काम-काज की भाषा के रूप में 'उर्दू' का प्रयोग प्रमुख रूप से होता था, अतः उस भाषा के जानकारों के लिये उर्दू-मुशाइरे आकर्षण का प्रमुख केन्द्र बने हुए थे; जबकि जन-साधारण ब्रजभाषा-काव्य की ओर अधिक आकर्षित था। खड़ी बोली की कविता में ब्रजभाषा के लालित्य तथा उर्दू की आत्मा का समीकरण हुआ। अतः ब्रज-भाषा काव्य-प्रेमी तो इसकी ओर आकर्षित हुए ही, उर्दू-शाइरी के प्रशंसकों के लिये भी वह अभिनन्दनीय बन गई। सरकारी काम-काज की भाषा में हिन्दी का वर्चस्व ज्यों-ज्यों बढ़ने लगा, त्यों-त्यों हिन्दी-कविता तथा कवि-सम्मेलनों की भी श्रीवृद्धि हुई। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् हिन्दी के 'राष्ट्रभाषा' पद पर प्रतिष्ठित होते ही, हिन्दी कवि-सम्मेलन और अधिक लोकप्रिय बन गये तथा मुशाइरों का रंग फीका पड़ गया।

प्रारंभिक स्थिति—आरंभ में हिन्दी कवि-सम्मेलन समस्या-पूर्त्तियों तक ही सीमित रहे। उन दिनों अपनी-अपनी विद्वत्ता प्रदर्शित करने के लिये, कभी-कभी मंच पर ही कवियों में आपसी चख-चख हो जाया करती थी और उनमें एक दूसरे को पछाड़ने की होड़ सी लगी रहती थी। श्रोतागण भी इस स्थिति का भरपूर आनंद उठाते थे, परन्तु बाद में समस्या-पूर्ति का युग समाप्त हो गया तो ये बातें भी आई-गई हो गईं। कवि-सम्मेलनों के मंच से विभिन्न विषय, रस, छन्द तथा शैलियों की स्वतन्त्र-रचनायें प्रस्तुत की जाने लगीं। इस परिवर्तन ने भी कवि-सम्मेलनों को अधिक लोकप्रिय बनाया।

विज्ञान का सहयोग—कवि-सम्मेलनों के व्यापक प्रचार-प्रसार में आधुनिक वैज्ञानिक-आविष्कारों का योगदान भी महत्वपूर्ण रहा है। जब तक ध्वनि-विस्तारक यन्त्रों का आविष्कार नहीं हुआ था, तब तक मंच पर काव्य-पाठ करने में केवल वे ही कवि सफल हो पाते थे, जिनका कण्ठ-स्वर पैंना हो। परन्तु उन्नत कण्ठ-स्वर की भी एक सीमा थी। ध्वनि-विस्तारक यन्त्र के अभाव में कवि अधिक से अधिक दो-चार हजार श्रोताओं तक ही अपनी आवाज को पहुँचा पाता था, अतः प्रारंभिक दिनों में, कवि-सम्मेलनों में श्रोता भी अधिक संख्या में एकत्र नहीं होते थे। ध्वनि-विस्तारक यन्त्र तथा विद्युत्-प्रकाश के आविष्कार ने उन्नत कण्ठ-स्वर की आवश्यकता को समाप्त कर दिया। लाउडस्पीकर की सहायता से सामान्य कण्ठ-स्वर वाला कवि भी अपनी रचना को लाखों श्रोताओं तक पहुँचाने में समर्थ हो गया तथा विद्युत्-प्रकाश ने काव्य-पाठ के समय कवि की भाव-भंगिमाओं को देखने में दर्शकों को पर्याप्त सहायता प्रदान की। इस प्रकार कवि-सम्मेलन अपने श्रव्य तथा दृश्य-दोनों रूपों में श्रोताओं एवं दर्शकों के आकर्षण का केन्द्र बन गया। वर्तमान युग की साज-सज्जा भी उसमें सहयोगिनी बनी। इन सबके फलस्वरूप कवि-सम्मेलन में बहुसंख्यक जनता रुचि लेने लगी। वर्तमान समय में तो अनेक स्थानों पर ऐसे-ऐसे विशाल कवि-सम्मेलन भी होते हैं, जिनमें श्रोताओं की संख्या पचास हजार से भी ऊपर पहुँच जाती है।

पुरानी पीढ़ी का योगदान—कवि-सम्मेलनों को लोकप्रिय बनाने तथा उसके प्रचार-प्रसार में योग देने का सर्वाधिक श्रेय हिन्दी की पुरानी पीढ़ी के उन कवियों को है, जिनका उद्देश्य उर्दू-मुशाइरों की प्रतिद्वन्द्विता में हिन्दी कवि-सम्मेलनों को प्रतिष्ठित करना तथा इस सशक्त माध्यम के द्वारा हिन्दी की अधिकाधिक सेवा करना रहा था। इस संबंध में पं० गया प्रसाद शुक्ल "सनेही" का नामोल्लेख पहले ही किया जा चुका है। उन्हीं की पीढ़ी के सर्वश्री पं. जगदम्बा प्रसाद मिश्र "हितैषी", अनूपशर्मा, पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी, पं० माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा "नवीन", रामनरेश त्रिपाठी', ठा० गोपाल शरण सिंह, अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध", कु० हरिश्चन्द्र देववर्मा "चातक" तथा पं० नाथूराम शंकर शर्मा "शंकर" आदि महाकवियों ने हिन्दी कवि-सम्मेलनों को लोक-प्रिय बनाने में अधिक परिश्रम किया। इन महानुभावों ने जहाँ एक ओर अपनी लेखनी द्वारा माँ भारती के भांडार को भरा, वहीं दूसरी ओर देश के विभिन्न भागों में हिन्दी कवि-सम्मेलनों को आयोजित करने के लिए काव्य-प्रेमियों को प्रेरित भी किया। उक्त महाकवियों के बाद की पीढ़ी में हिन्दी कवि-सम्मेलनों के उन्नायक के रूप में, पं० बंशीधर शुक्ल, पं० रामभरोसे लाल पाण्डेय 'पंकज', वैद्य गजराजसिंह "सरोज", सुनहरी लाल 'पराग' डॉ० आनन्द, शिवमंगलसिंह 'सुमन', चतुर्भुज दीक्षित "चतुरेश", रामचरण हयारण "मित्र" कुंजबिहारी पाण्डेय, शिशुपालसिंह 'शिशु', बलवीरसिंह 'रंग' तथा राजेश दीक्षित के नाम सम्मान पूर्वक लिये जा सकते हैं।

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पूर्व तक ये सभी कविगण बिना किसी आर्थिक अथवा वैयक्तिक प्रलोभन के, मात्र हिन्दी-सेवा की भावना लेकर ही, देश के विभिन्न भागों में कवि-सम्मेलन आयोजित करने हेतु स्थानीय लोगों को प्रेरित करने तथा अपने काव्य-पाठ द्वारा उन्हें सफल बनाने में प्राणपण से सचेष्ट बने रहे। आज हिन्दी कवि-सम्मेलनों की जो मनमोहक हरियाली देश में सर्वत्र फैली दिखाई देती है, उसके लिए ऊसर-भूमि को उर्वरा बनाने में इन्हीं कवियों के कठोर-श्रम का खाद-पानी लगा है तथा इन्हीं के कारण आज का हिन्दी काव्य-मंच इतनी लोकप्रियता प्राप्त कर सका है।

स्वर-माधुर्य—कुछ लोग हिन्दी कवि-सम्मेलनों को लोकप्रिय बनाने में उन कवियों का भी योगदान मानते हैं, जो अपने कण्ठ-स्वर के माधुर्य से श्रोताओं को आकर्षित करने की विशेष क्षमता रखते थे। ऐसे कवियों में स्व. गोपालसिंह नेपाली तथा डा. हरिवंशराय 'बच्चन' का नाम पहले लिया जाता है, जिन्होंने अपनी 'मधुशाला' तथा शृंगारिकगीतों को काव्य-रसिकों के समक्ष स्वर-माधुर्य के साथ प्रस्तुत करते हुए गीतकार के रूप में विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की। उनके बाद की पीढ़ी में अन्य नाम श्री रंग तथा नीरज का है। यद्यपि बच्चन जी हिन्दी कवि-सम्मेलनों के उद्भव-काल में ही काव्य-मंच पर प्रतिष्ठित हो गये थे, तथापि यह मानने का कोई कारण नहीं है कि अपने कण्ठ-स्वर की मधुरता के बल पर उन्होंने हिन्दी काव्य-मंच को लोकप्रिय बनाने में कोई सहायता पहुँचाई हो। यही बात नेपाली रंग नीरज तथा अन्य गायक-कवियों पर भी लागू होती है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि न तो सभी कवि-सम्मेलनों में बच्चनजी अथवा अन्य गायक-कवियों को पहले ही बुलाया जाता था और न वे आज ही पहुँच पाते हैं। गायक-कवियों की अनुपस्थिति के कारण ही कोई कवि-सम्मेलन असफल हुआ हो, यह भी कभी देखने-सुनने में नहीं आया। गायक-कवियों ने अपने स्वर-माधुर्य के बल पर वैयक्तिक रूप में भले ही कुछ अधिक ख्याति अर्जित कर ली हो, परन्तु कवि-सम्मेलनों के प्रचार-प्रसार अथवा उन्हें लोकप्रिय बनाने में इनका कोई योगदान रहा हो, ऐसी बात नहीं है।

कवि-सम्मेलन के लिये कविता मुख्य तथा स्वर गौण वस्तु है, यदि दोनों का संयोग हो जाय तो उसे 'सोने में सुहागा' कह सकते हैं। परन्तु सुहागे के अभाव में स्वर्ण का मूल्य कम नहीं होता। कवि-सम्मेलनों में वीर तथा हास्य-रस की कविताएँ तो प्रायः बिना गाये ही पढ़ी जाती हैं। जन-मानस पर उनका प्रभाव भी गेय-गीतों से कम नहीं पड़ता। सच पूछा जाय तो बिना गाये काव्य-पाठ करने वाले वीर तथा हास्य-रस के सशक्त-कवि काव्य-मंच पर अच्छे-से-अच्छे गायक-कवि को धराशायी भी कर देते हैं। अस्तु, गायन तथा स्वर-माधुर्य का अपना महत्व होते हुए भी, उन्हें कवि-सम्मेलन की सफलता के लिये आवश्यक नहीं माना जा सकता।

व्यापक-प्रसार के प्रमुख काल—हिन्दी कवि-सम्मेलनों के व्यापक प्रसार के दो काल प्रमुख हैं—(1) सन् 1947 ई. में स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद हिन्दी के राष्ट्रभाषा पद पर प्रतिष्ठित होने का समय, और (2) सन् 1962 ई. में भारत-चीन युद्ध का समय।

स्वतन्त्रता-पूर्व विदेशी शासन-काल में अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता पर लगाये गये विभिन्न प्रतिबन्धों के कारण कवि की लेखनी तथा वाणी पूर्णरूप से मुखर नहीं हो पाती थी। वह जो कुछ लिखना अथवा कहना चाहता था उसे अधिकतर सांकेतिक-भाषा में प्रतीकों के माध्यम से ही लिखता और कहता था। शासन-व्यवस्था का विरोध, अत्याचार, शोषण, उत्पीड़न, दरिद्रता, परतन्त्रता, कुरीति आदि विषयों पर लिखते समय उसे तात्कालिक कानूनी-सीमाओं का ध्यान भी रखना पड़ता था। स्वतन्त्रता के सूर्योदय के साथ ही ऐसे सभी प्रतिबन्ध समाप्त हो गये, फलतः कवि को लिखने तथा कहने के लिए नई सुविधायें प्राप्त हुईं। इस उन्मुक्त-वातावरण का प्रभाव कवि-सम्मेलनों के काव्य-पाठ पर भी पड़ा, जिसके कारण वह आकर्षण का प्रमुख केन्द्र बन गया।

सन् 1962 ई. में भारत-चीन युद्ध के समय लगभग 105 वर्ष बाद भारतीय जनता को पहली बार किसी शत्रु से प्रत्यक्ष—लोहा लेने का अवसर उपस्थित हुआ। उस समय लोगों को जन-जागरण हेतु कवि की वाणी ही सर्वाधिक प्रेरणादायक अनुभव हुई। अतः उस अवधि में ऐसे स्थानों पर भी, जहाँ कभी गोष्ठी तक नहीं हुई थी, विशाल कवि-सम्मेलन आयोजित किये गये। इन कवि-सम्मेलनों में रामधारी सिंह "दिनकर", शिशुपाल सिंह "शिशु", शिवमंगल सिंह "सुमन", डा. आनंद, राजेश दीक्षित तथा देवराज "दिनेश" जैसे वीररस के अखिल भारतीय ख्याति प्राप्त कवियों ने अपनी तेजस्वी वाणी तथा ओजस्वी कविताओं द्वारा देश के जन-मानस में एक नवीन उत्साह, बल, स्फूर्ति एवं राष्ट्रीय-चेतना का संचार किया। अन्य कवि भी सामयिक-रचनायें लिखकर उस काल के जन-जागरण में सहयोगी बने। इसके कुछ समय बाद ही 'भारत-पाक युद्ध' की विभीषिका उपस्थित हुई। उस समय भी देशभर में व्यापक पैमाने पर कवि-सम्मेलन आयोजित किये गये। द्वितीय 'भारत-पाक युद्ध' के समय भी यही हुआ। इस अवधिमें आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों पर भी कवि-सम्मेलनों का आयोजन हुआ तथा शासकीय-स्तर पर भी उन्हें प्रोत्साहित किया गया। इन सबके फलस्वरूप देश भर में हिन्दी कवि-सम्मेलनों का और अधिक व्यापक प्रचार हो गया।

वर्तमान-स्थिति—वर्तमान काल में कवि-सम्मेलनों के प्रति भारतीय जनता का आकर्षण इतना अधिक बढ़ चुका है कि हिन्दी-भाषी क्षेत्रों के अतिरिक्त हैदराबाद, मद्रास, बंगाल, आसाम आदि अहिन्दी प्रदेशों तथा नेपाल, अमेरिका आदि विदेशों में

भी हिन्दी कवि-सम्मेलन आयोजित होने लगे हैं। बड़े नगरों के अतिरिक्त छोटे-छोटे कस्बों तथा गाँवों तक में इस हिन्दी काव्य-वृक्ष की जड़ें फैल चुकी हैं।

आकाशवाणी तथा दूरदर्शन केन्द्रों पर कवि-सम्मेलनों का आयोजन तथा प्रसारण, फिल्मों में कवि-सम्मेलनों के दृश्यों का अंकन तथा पत्र-पत्रिकाओं में कवि-सम्मेलनों की चर्चा—ये घटनायें हिन्दी कवि-सम्मेलन की लोकप्रियता तथा उसके दिनों-दिन बढ़ते प्रचार-प्रसार की प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।



प्रकरण 2

हिन्दी कवि-सम्मेलनों की उपयोगिता और उनका प्रभाव

1. हिन्दी के प्रचार-प्रसार में योगदान।
2. संस्कृति-संरक्षण, कुरीति-निवारण, सामाजिक-क्रान्ति, स्वतन्त्रता-संग्राम तथा जन-जागरण में योगदान।
3. स्वतन्त्र-अभिव्यक्ति एवं बौद्धिक-मनोरंजन में योगदान।

हिन्दी-प्रचार, सांस्कृतिक, सामाजिक, साहित्यिक तथा राजनीतिक क्षेत्रों में हिन्दी कवि-सम्मेलनों की उपयोगिता एवं प्रभाव को निम्नानुसार आँका जा सकता है—

1. हिन्दी के प्रचार-प्रसार में योगदान

अंग्रेजी-शासनकाल में 'अंग्रेजी' को प्रथम तथा 'उर्दू' को द्वितीय राजभाषा का स्थान प्राप्त था। 'हिन्दी' की कहीं कोई पूछ नहीं थी। उस स्थिति को देखकर हिन्दी के साहित्यकारों तथा प्रेमियों के हृदय में बड़ी वेदना होती थी।

भारतेन्दु-युग (सन् 1868-1903 ई.) के कवियों में स्वयं भारतेन्दुजी ने राष्ट्रभाषा हिन्दी की इस उपेक्षा को बड़ी गहराई से अनुभव किया था तथा देश-वासियों को संबोधित करते हुए कहा था—

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल।
निज भाषा के ज्ञान बिन, मिटत न हिय कौ सूल।।"

"इसी प्रकार पं. श्रीधर पाठक आदि कवियों ने भी हिन्दी की दुर्दशा पर आँसू बहाये थे तथा हिन्दी की उन्नति के लिये देशवासियों का आह्वान किया था। इन लोगों के प्रयत्नों के फलस्वरूप जन-साधारण में हिन्दी के प्रति विशेष अनुराग जगा।

जिस प्रकार आधुनिक-काल में हिन्दी की फिल्में भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार की एक सबल माध्यम सिद्ध हुई हैं, उसी प्रकार भारतेन्दु-काल की कवि-गोष्ठियों से लेकर वर्तमान समय तक के कवि-सम्मेलनों ने भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

कवि-सम्मेलनों में श्रोताओं के रूप में भाग लेने वाले हजारों अहिन्दी-भाषी लोग, उनमें पढ़ी जाने वाली रचनाओं को सुन-सुन कर हिन्दी भाषा के अध्ययन की

ओर आकर्षित हुए हैं। इतना ही नहीं, अहिन्दी-भाषियों ने स्वयं भी हिन्दी में काव्य-सृजन की चेष्टा की है। अस्तु, हिन्दी के प्रचार-प्रसार में कवि-सम्मेलनों का भी विशेष योगदान रहा है, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

2. संस्कृति-संरक्षण, कुरीति-निवारण, सामाजिक-क्रान्ति स्वतन्त्रता-संग्राम तथा जन-जागरण में योगदान

हिन्दी कवि-सम्मेलनों ने संस्कृति-संरक्षण, कुरीति-निवारण, स्वतन्त्रता-संग्राम, सामाजिक-क्रान्ति तथा जन-जागरण में भी अपना योगदान किया है, क्योंकि इन सभी विषयों पर प्रायः सभी प्रमुख मंचीय-कवियों ने कवितायें लिखी हैं तथा उनके माध्यम से लाखों श्रोताओं के हृदयों को आन्दोलित किया है। पुरानी पीढ़ी के ऐसे मंचीय-रचनाकारों में सर्वश्री पं. श्रीधर पाठक, पं. नाथूराम शंकर शर्मा "शंकर" श्री सत्यनारायण कविरत्न, पं. गयाप्रसाद शुक्ल "सनेही", पं. माखनलाल चतुर्वेदी, श्री बालकृष्ण शर्मा "नवीन", पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला", ठा. गोपाल शरण सिंह, पं. अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध", श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान, श्री रामधारी सिंह "दिनकर", श्री सोहनलाल द्विवेदी तथा श्री जगन्नाथ प्रसाद "मिलिन्द" आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

उक्त मंचीय-कवियों की रचनाओं के कुछ अंश यहाँ उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किए जा रहे हैं :—

संस्कृति-संरक्षण—रामधारी सिंह "दिनकर" ने देशवासियों के समक्ष प्राचीन भारतीय-संस्कृति का चित्र खींचते हुए वर्तमान-दुर्दशा का वर्णन निम्नलिखित पंक्तियों में किया था—

"अंकित है इतिहास पत्थरों पर जिनके अभियानों का,
चरण-चरण पर चिह्न यहाँ मिलता जिनके बलिदानों का,
गुंजित जिनके विजय-नाद से, हवा आज भी बोल रही,
जिनके पदाघात से कम्पित धरा अभी तक डोल रही,
कहदो उनसे जगा कि उनकी ध्वजा धूलि में सोती है।
सिंहासन है शून्य, सिद्धि उनकी विधवा सी रोती है।"[1]

ठा. गोपालशरण सिंह ने प्राचीन भारत की तस्वीर को इस रूप में उपस्थित किया था—

"जिसने जग को था मुक्ति-मार्ग दिखलाया,
जिसने उसको था कर्मयोग सिखलाया,
था जिसका दिव्यालोक लोक में छाया,

---

1. श्री रामधारीसिंह "दिनकर", इतिहास के आँसू, पृष्ठ 2

जिसका गुण सबने मुक्त-कण्ठ से गाया,
था जिसका सारा विश्व सदैव पुजारी,
वह भरतभूमि है, यही हमारी प्यारी ॥"[1]

श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला" ने अपनी "खण्डहर" शीर्षक कविता में देशवासियों को भारतीय-संस्कृति की रक्षा के हेतु जैमिनी, पतंजलि, व्यास आदि ऋषि-मुनियों का स्मरण निम्नलिखित शब्दों में कराया था—

"आर्त-भारत, जनक हूँ मैं,
जैमिनी—पतंजलि—व्यास ऋषियों का,
मेरी ही गोद पर, शैशव विनोद कर—
तेरा है बढ़ाया मान
राम, कृष्ण, भीमार्जुन—भीष्म नरदेवों ने ।
तुमने मुख फेर लिया,
सुख की तृष्णा से अपनाया है गरल,
हो बसे नव छाया में,
नव स्वप्न ले जगे
भूले वह मुक्त प्राण, साम-गान, सुधा-पान
तव चरणों में प्रणाम ।"[2]

कुरीति-निवारण—समाज में फैली विभिन्न कुरीतियों के विरोध में भी अनेक कवियों ने अपनी लेखनी उठाई । उदाहरण के लिये 'दहेज' की कुप्रथा के विरोध में पं. गया प्रसाद शुक्ल "सनेही" रचित इन पंक्तियों को देखिये—

"पत्थर से दिल हुए हमारे नहीं पिघलते,
कन्यायें थक रहीं आग में जलते-जलते,
शुष्क-हृदय है हाय ! अश्रु भी नहीं निकलते,
हम ऐसे खल, हुए नहीं ऐसे दुःख खलते ।"[3]

पं. अयोध्यासिंह उपाध्याय ने समाज में फैली ऊँच-नीच की भावना को वेद-विरुद्ध बताते हुए लिखा था—

"सभी जाति से प्यार हैं वे जताते ।
सभी देश से नेह हैं वे निभाते ॥"[4]

---

1. डा. गोपाल शरण सिंह, संचिता, पृ. 63
2. श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला", अनामिका, पृ. 30
3. पं. गया प्रसाद शुक्ल "सनेही", सनेही अभिनंदन ग्रन्थ, पृ. 401
4. पं. श्रीधर पाठक, भारत गीत, पृ. 126

सामाजिक-क्रान्ति—पं. गयाप्रसाद शुक्ल "सनेही" ने अपनी "अछूत" शीर्षक रचना में छुआछूत को निम्नलिखित शब्दों में, फटकार लगाई थी—

"एक ही विधाता के अमृत-पुत्र, एक देश,
कुछ यों अपूत, कुछ पूत कैसे हो गये ?
सबकी नसों में रक्त एक ही प्रवाहित है,
कुछ देव-दूत, कुछ भूत कैसे हो गये ?
जाने क्या समाई धुन भारत-निवासियों को,
होके ब्रह्मज्ञानी, अवधूत कैसे हो गये ?
बन्धु श्री वशिष्ठ व्यास विदुर पराशर के,
वाल्मीकि—वंशज अछूत कैसे हो गये ?"[1]

"देश के सभी धर्मावलम्बी एक ही भारतीय-समाज के अंग हैं"—श्रीधर पाठक की निम्नलिखित पंक्तियों में यह बात स्पष्ट की गई है—

"हिन्दू, मुसलमान, ईसाई,
बौद्ध, पारसी, जैनी भाई,
मन्दिर, मूरत, तीरथ, मस्जिद,
मक्का, प्राग, हज्ज, गुरुद्वारा।
प्यारा हिन्दुस्तान हमारा ॥"[2]

सामाजिक-विषमता के प्रति विद्रोह व्यक्त करने वाली ठा. गोपाल शरण सिंह की निम्नलिखित पंक्तियां देखिये—

'सभी प्रकृति के पुत्र, जान सबको है प्यारी,
पायें प्रकृति प्रसाद, सभी हैं सम अधिकारी,
धनाधीश क्यों रहे एक, दूसरा भिखारी,
है यह अति अन्याय, लोक-उत्पीड़नकारी,
मिलता दोनों को नहीं, समुचित श्रम का मोल है।
प्रकट न देखें लोग पर, भरी ढोल में पोल है ॥"[3]

अंग्रेज-नौकरशाही द्वारा आम-जनता के प्रति दुर्व्यवहार पर कटु-व्यंग्य करते हुये पं. नाथूराम शंकर शर्मा "शंकर" ने लिखा था—

"नौकरशाही दे चुकी भारत ! तुझे स्वराज।
डाल न आशा आग में, असहयोग का राज ॥
क्रूर-कुशासन की ध्वजधारी। कट्टर कूट कुनीति पसारी ॥

---

1. पं. गया प्रसाद शुक्ल "सनेही", सनेही अभिनंदन ग्रंथ, पृ. 401
2. पं. श्रीधर पाठक, भारतगीत, पृ. 126
3. ठा. गोपाल शरण सिंह, संचिता, पृ. 111

हा, न लोक-भय से डरती है । भारत का भुरता करती है ।।
अकड़ अड़ाती है चितचाही । अटकी कुटिला नौकरशाही ।।"[1]

सामाजिक-विषमता का एक चित्र पं. गयाप्रसाद शुक्ल "सनेही" की इन पंक्तियों में देखिये—

"भूख-भूख चिल्लाय, कभी बालक रोते हैं ।
टुकड़े सौ-सौ हाय, कलेजे के होते हैं ।"[2]

पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला" की "दान" शीर्षक कविता में भिखारी का एक चित्र इस प्रकार खींचा गया है—

"अति क्षीण कंठ, है तीव्र श्वास,
जीता ज्यों जीवन से उदास ।
ढोता जो वह, कौनसा शाप ?
भोगता कठिन, कौनसा पाप ?"[3]

स्वतन्त्रता-संग्राम—स्वतन्त्रता-प्राप्ति के हेतु हिन्दी कवियों ने जितनी प्रेरणा-दायक कवितायें लिखीं और उनका जन-मानस पर जितना जादुई-प्रभाव पड़ा, उसके विषय में जितना भी लिखा जाय, कम है । यहाँ हम मंचीय-कवियों की कविताओं की कुछ ऐसी पंक्तियां उद्धृत कर रहे हैं, जिन्होंने लाखों देश-वासियों को स्वातन्त्र्य-युद्ध में भाग लेने के लिये प्रेरित किया था ।

पं. माखनलाल चतुर्वेदी "एक भारतीय आत्मा" की "फूल की चाह" शीर्षक कविता की निम्न लिखित पंक्तियां द्रष्टव्य हैं—

"चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं, प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर हे हरि ! डाला जाऊँ,
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ
मुझे तोड़ लेना वनमाली ! उस पथ पर देना तुम फेंक ।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक ।।"[4]

श्री सोहनलाल द्विवेदी की निम्नलिखित पंक्तियाँ उस समय पूरे देश में गूँजा करती थीं—

---

1. पं. नाथूराम शंकर शर्मा "शंकर", शंकर-सर्वस्व, पृ. 206
2. पं. गया प्रसाद शुक्ल "सनेही", आर्त-कृषक, पृ. 4
3. पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी, "निराला", अपरा, पृ. 37
4. श्री माखनलाल चतुर्वेदी, युगचरण, पृ. 641

"वन्दना के इन स्वरों में एक स्वर मेरा मिलालो ॥
वन्दिनी-माँ को न भूलो, राग में जब मत्त फूलो,
अर्चना के रत्नकण में, एक कण मेरा मिलालो ॥
जब हृदय का तार बोले, शृंखला के बन्द खोले,
हों जहाँ बलिशीश अगणित, एक शिर मेरा मिलालो ॥"[1]

इसी प्रकार श्री गयाप्रसाद शुक्ल "त्रिशूल" ने लिखा था—

"तू जन्म भूमि की सुन पुकार।
बंधन में पड़ी सिसकती है,
विपदा है कड़ी सिसकती है;
उपचार नहीं कोई चलता,
व्याकुल हर घड़ी सिसकती है;
साहस कर साहस, ले उबार।
तू जन्म भूमि की सुन पुकार ॥"[2]

जन-जागरण—जन-जागरण की दिशा में हिन्दी के मंचीय-कवियों की निम्नलिखित काव्य-पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं—

पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला" ने "जागो फिर एक बार" शीर्षक कविता में लिखा था—

"तुम हो महान्
तुम हो सदा महान्
है नश्वर यह दीन-भाव
कायरता, काम-परता
ब्रह्म हो तुम
पद-रज भर भी है नहीं
पूरा यह विश्व-भार,
जागो फिर एक बार"[3]

सुभद्राकुमारी चौहान की "विजयादशमी" शीर्षक कविता की निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिये—

"दो विजये! वह आत्मिक-बल दो,
वह हुंकार मचाने दो।

---

1. श्री सोहनलाल द्विवेदी, भैरवी, पृ. 1
2. गयाप्रसाद शुक्ल 'त्रिशूल', सनेही अभिनंदन ग्रन्थ, पृ. 349,
3. पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला", अपरा, पृ. 9,

अपनी निर्बल आवाजों से,
दुनियाँ को दहलाने दो ।।"[1]

पं. सोहनलाल द्विवेदी की निम्नलिखित पंक्तियां जन-जागरण की सन्देश-वाहिका रहीं—

"क्या ग्राम-ग्राम, क्या नगर-नगर
से कोटि-कोटि चल पड़े किधर ?
नव-यौवन का आवेश लिये,
वह कौन चला जाता पथ पर,
है नवयुग का संदेश लिये ?"[2]

श्री जगन्नाथप्रसाद "मिलिन्द" ने अपनी "झाँसी की रानी की समाधि पर" शीर्षक कविता में भारतीय जन-जागृति का चित्र निम्नलिखित पंक्तियों में खींचा था—

"आज भी स्मरण तुम्हारा देवि, मचा देता हड़कंप प्रचंड,
विजय के कोहनूर का म्लान झुका देता मस्तक उद्दंड;
स्वप्न में सहसा तुमको देख, डगमगाते रक्षित भू-खंड,
त्रस्त होते विस्तृत साम्राज्य, डोलते सिंहासन दुर्दण्ड;
कांप उठते मिथ्या इतिहास, धसकते युग-युग के पाखण्ड,
थरथराते हाथों से छूट, भूमि पर गिरते शासन-दंड;
प्रकंपित कर महलों की नींव, दर्प दुर्गा का शतशत खण्ड,
जाग उठता स्मृतियों के साथ तुम्हारा भय, आतंक अखण्ड ।"[3]

श्री गयाप्रसाद शुक्ल "त्रिशूल" ने युवकों का आह्वान करते हुए लिखा था—

"उठो, युवकगण ! उठो, भेद का भांडा फोड़ो,
आड़े आयें अगर रूढ़ि के बन्धन, तोड़ो;
सम्मुख उन्नति पथ प्रशस्त है, इसे न छोड़ो,
राष्ट्र बनाओ और देश से नाता जोड़ो;
जाग्रत हो जातीयता उन भावों का ध्यान हो ।
भारत के अरमान हो, तुम्हीं देश की शान हो ।"[4]

स्वातन्त्र्योत्तर काल में भी हिन्दी के मंचीय-कवि ऐसे सभी विषयों पर

---

1. सुभद्राकुमारी चौहान, मुकुल, पृ. 95
2. श्री सोहनलाल द्विवेदी, भैरवी, पृ. 45
3. श्री जगन्नाथ प्रसाद "मिलिन्द", जीवनज्योति, पृष्ठ 100
4. श्री त्रिशूल, सनेही अभिनन्दन ग्रन्थ, पृष्ठ 325

कविताएँ लिखकर हिन्दी के प्रचार-प्रसार, संस्कृति-संरक्षण, कुरीति-निवारण, सामाजिक-क्रांति तथा जन-जागरण आदि के क्षेत्रों में अपना साहित्यिक योगदान करते चले आ रहे हैं। ऐसे कवियों में सर्वश्री नागार्जुन, राजेश दीक्षित, राजबहादुर "विकल", दामोदर स्वरूप 'विद्रोही', मुकुट बिहारी सरोज तथा धर्मपाल अवस्थी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

3. स्वतन्त्र अभिव्यक्ति एवं बौद्धिक मनोरंजन में योगदान

स्वतन्त्र-अभिव्यक्ति में योगदान

जब तक भारत परतन्त्र रहा, तब तक देशवासियों को अपनी अनेक भावनाओं—मुख्यतः राजनीतिक—की स्वतन्त्र-अभिव्यक्ति का अधिकार प्राप्त नहीं था; फलतः परतन्त्र-भारत के अधिकांश कवि अपनी तथा जन-साधारण की मनोभावनाओं को ऐतिहासिक तथा पौराणिक कथानकों अथवा प्राकृतिक उपादानों एवं अन्य प्रतीकों के माध्यम से ही व्यक्त कर पाते थे। तत्कालीन राष्ट्रीय रचनाकारों—जिनमें सर्वश्री गयाप्रसाद शुक्ल "त्रिशूल", पं० माखन लाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा "नवीन", जगन्नाथ प्रसाद "मिलिन्द", श्यामनारायण पाण्डेय, सोहनलाल द्विवेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान तथा रामधारी सिंह "दिनकर" आदि प्रमुख हैं, ने अपनी कविताओं में राष्ट्रीय-विचारों की अभिव्यक्ति के हेतु प्रतीकात्मकता का ही आश्रय लिया था, अतः तत्कालीन रचनाओं में लक्षणा-व्यंजना का ही प्राधान्य बना रहा।

स्वतन्त्रता के सूर्योदय के बाद जब भारतीय-संविधान में विचारों की स्वतन्त्र-अभिव्यक्ति को मौलिक-अधिकार के रूप में मान्यता दे दी गई तो उसके फलस्वरूप मंचीय हिन्दी-कविता ने नये युग में प्रवेश किया। स्वातन्त्र्योत्तरकाल में हिन्दी की जो युवा-पीढ़ी राष्ट्रीय-रचनाकार के रूप में मंच पर प्रतिष्ठित हुई, उसने संविधान द्वारा प्रदत्त वैचारिक-अभिव्यक्ति का लाभ उठाकर अपनी कविताओं को एक सर्वथा नवीन परिवेश में प्रस्तुत करना आरम्भ कर दिया। वह शासन की त्रुटियों तथा राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय, सामाजिक एवं सामयिक घटनाओं के सन्दर्भ में, अपने विचारों को कविता के माध्यम से खुलकर प्रकट करने लगी। अतः उसकी मंचीय-कविताओं में "लक्षणा" तथा "व्यंजना" के स्थान पर "अभिधा" को प्रधानता मिली। इस शैली के प्रमुख रचनाकारों में श्री राजेश दीक्षित का नाम अग्रगण्य है।

श्री राजेश दीक्षित सन् 1942 ई० से ही राष्ट्रीय-रचनाकार के रूप में हिन्दी काव्य-मंच पर अखिल भारतीय ख्याति अर्जित कर रहे थे तथा तात्कालिक परिस्थितियों में वे भी अपने पूर्ववर्ती कवियों के अनुगामी बने हुए थे, परन्तु सन् 1945 ई० सेउन्होंने अपनी लेखनी को एक नया मोड़ देना आरम्भ कर दिया तथा सम-सामयिक, सामाजिक, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर अभिधा-प्रधान मंचीय-कवितायें लिखने का सूत्रपात किया। उनकी ऐसी रचनाओं को प्रारम्भ में "काव्यात्मक-भाषण" अथवा "भाषणात्मक-काव्य" की संज्ञायें भी दी गईं, परन्तु अल्पकाल में ही उनकी

यह नवीन मंचीय-काव्य-शैली इतनी अधिक लोकप्रिय सिद्ध हुई कि अनेक समकालीन तथा परवर्ती मंचीय-कवियों ने भी उसे बड़ी तेजी से अपनाया। इस प्रकार हिन्दी के मंचीय-काव्य में एक "राजेश-स्कूल" की भी स्थापना हो गई। "राजेश-शैली" के स्वातन्त्र्योत्तर कालीन प्रमुख मंचीय-कवियों में सर्वश्री ब्रजेन्द्र अवस्थी, दामोदर स्वरूप 'विद्रोही", आनन्द मिश्र तथा उदय प्रताप सिंह आदि के नाम लिये जा सकते हैं। आगे चलकर यह शैली और भी अधिक पुष्ट बनी। वर्तमान काल के बहुसंख्यक मंचीय राष्ट्रीय-रचनाकार इसी शैली में काव्य-सृजन तथा काव्य-पाठ करते दिखाई देते हैं।

कल्पित-आकांक्षाओं की पूर्ति न हो पाने के कारण सन् 1950 ई. से ही स्वदेशी-शासन के विरुद्ध जन-भावनाएँ आक्रोश का रूप धारण करने लगी थीं। समय बीतने के साथ ही वे और अधिक पुष्ट होती चली गईं। इस अवधि में हिन्दी-मंच के जिन राष्ट्रीय रचनाकारों ने अपनी सामयिक-कविताओं के माध्यम से उन्हें खुल कर अभि-व्यक्ति प्रदान की; उनमें सर्वश्री बंशीधर शुक्ल, डा० आनन्द, शिशुपालसिंह "शिशु" नागार्जुन तथा राजेश दीक्षित के नाम उल्लेखनीय हैं। इनसे बाद वाली पीढ़ी के कुछ कवि भी इस दिशा में अग्रसर हुए।

भारत-चीन युद्ध तथा भारत-पाक युद्धों के समय हिन्दी कवि-सम्मेलनों की उपयोगिता तथा प्रभाव को सम्पूर्ण देश में विशेष रूप से अनुभव किया गया। उस समय हिन्दी काव्य-मंच के राष्ट्रीय-रचनाकारों ने अपनी ओजस्वी कविताओं के माध्यम से न केवल देशवासियों की ठंडी-धमनियों में उष्ण-रक्त का संचार ही किया, अपितु उन्हें राष्ट्र-रक्षार्थ तन, मन, धन तथा सर्वस्व समर्पण के हेतु प्रेरित भी किया। उन दिनों देशभर में सहस्रों की संख्या में वीररस-प्रधान राष्ट्रीय कवि-सम्मेलन आयोजित हुए, जिनमें सभी राष्ट्रीय-रचनाकारों ने शासन से अपने समस्त मतभेद भुलाकर, भारतीय-जनता में राष्ट्र-भक्ति की भावना जाग्रत् की तथा 'राष्ट्रीय-सुरक्षा-कोष' में लाखों रुपयों की अभिवृद्धि कराने में भी योगदान किया।

इसी भांति देश के विभिन्न भागों में जब कभी बाढ़, सूखा आदि प्राकृतिक-विपत्ति की घटनायें घटीं, उस समय पीड़ितों की सहायतार्थ आयोजित किये जाने वाले कवि-सम्मेलन भी अपने उद्देश्य में सफल होते रहे हैं।

सन् 1975 ई० के उत्तरार्द्ध में जब देश में "आपात-कालीन स्थिति" लागू की गई तथा उसके अन्तर्गत 'अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता' को प्रतिबन्धित कर दिया गया, उन दिनों में भी सर्वश्री नागार्जुन तथा राजेश दीक्षित आदि कतिपय राष्ट्रीय-रचनाकारों ने अपने कवि-धर्म का निर्भयता पूर्वक पालन किया था और वे अपनी सामयिक-कविताओं के माध्यम से जन-भावनाओं को निरन्तर अभिव्यक्ति प्रदान करते रहे थे।

सन् 1977 ई० के सत्ता-परिवर्तन के युग में भी हिन्दी काव्य-मंच के

राष्ट्रीय-रचनाकारों ने अपनी महत्वपूर्ण साहित्यिक-भूमिका अदा की। तदुपरान्त सत्तारूढ़-दल की आन्तरिक-कलह को उजागर करने तथा उसके प्रति जन-आक्रोश को व्यक्त करने में भी वे पीछे नहीं रहे। वर्तमान में भी वे अपनी राष्ट्रीय-कवि-धर्म का निर्वहन करने में सचेष्ट बने हुए हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि जन-भावनाओं की स्वतन्त्र-अभिव्यक्ति में हिन्दी के मंचीय-कवियों का महत्वपूर्ण योगदान रहता चला आया है।

बौद्धिक-मनोरंजन में योगदान

हिन्दी-काव्य मंच के राष्ट्रीय-रचनाकार जहाँ चिन्तन प्रधान कवितायें लिखकर, उनके माध्यम से श्रोताओं के मन-मस्तिष्क को झकझोरते तथा उन्हें राष्ट्र तथा समाज के प्रति कर्त्तव्य-पालन हेतु प्रेरित करते हैं, वहीं शृंगारी-गीतकार तथा हास्य-व्यंग्य के कवि उन्हें बौद्धिक-मनोरंजन प्रदान कर, आह्लादित करने का कार्य भी कर रहे हैं।

स्वातन्त्र्योत्तर-काल में हिन्दी-काव्य मंच पर ऐसी मनोरंजक तथा आह्लादकारी कविताओं का प्रचलन कुछ अधिक ही बढ़ा है, जिसके निम्नलिखित कारण माने जा सकते हैं—

(क) **राष्ट्र-चिन्तन की दुरुहता**—राष्ट्र-चिन्तन परक कवितायें लिखना अधिक दुष्कर-कार्य होता है। इसके लिए विशद् अध्ययन, घटनाओं का समुचित ज्ञान, समाज के विभिन्न वर्गों से नैकट्य, सूक्ष्म-दृष्टि तथा निष्पक्ष-विवेचक-बुद्धि आदि अनेक गुणों की आवश्यकता होती है। सामान्य-कवि के लिए यह सब कर पाना बहुत कठिन प्रतीत होता है। फिर, ऐसी रचनायें राजनीतिक-कारणों से एक पक्ष के लिए रुचिकर तथा दूसरे के लिए अरुचिकर भी ठहरती हैं; जिसका प्रभाव कवि के निजी-जीवन पर भी पड़ता है। अतः सुविधाभोगी-कवि इन सब जटिलताओं में फँसने की अपेक्षा उस सहज-मार्ग को अपनाना अधिक पसन्द करते हैं, जिससे उन्हें धन-मान आदि की सरलतापूर्वक उपलब्धि हो सके और श्रम भी कम करना पड़े। अस्तु, वर्तमान युग में राष्ट्र-चिन्तक कवियों की संख्या में जहाँ निरन्तर ह्रास हो रहा है, वहाँ सुविधाभोगी कवियों की संख्या बढ़ती चली जा रही है।

(ख) **राजनीतिज्ञों द्वारा उपेक्षा**—आजादी का मुख्य लक्ष्य प्राप्त हो जाने के बाद देश की जनता ने "रामराज्य" की जो सुखद-कल्पना की थी, वह साकार नहीं हुई। देश की राजनीतिक परिस्थितियों में ऐसे मोड़ आते रहे, जिनके कारण बहुसंख्यक देशवासी राजनीतिज्ञों के प्रति अनास्थावान् होते चले गये। उन्हें यह भी अनुभव होने लगा कि "वर्तमान-कालीन शासक अथवा विरोध-पक्षके पेशेवर-राजनीतिज्ञों द्वारा देश की स्थिति में सुधार की आशा कर पाना व्यर्थ है; क्योंकि वे सभी देश-सेवा की आड़ में निजी स्वार्थों को ही सर्वोपरि महत्व दे उठे हैं। ऐसी स्थिति में राष्ट्रीय-रचनाकार कवि कुछ भी क्यों न कहें, आधुनिक राजनीतिज्ञों के

मन पर उसका किंचित् प्रभाव नहीं पड़ेगा; क्योंकि उनकी दृष्टि में कवि और उसके कथन का अब कोई महत्व नहीं रह गया है।" इस पलायनवादी मनोवृत्ति ने राष्ट्रीय-रचनाओं की तुलना में शृंगारी-गीत तथा हास्य-व्यंग्य की रचनाओं को विशेष प्रश्रय दिया है।

(ग) आत्म-प्रवंचना—जीवन के अभाव, संत्रास, बेकारी-बेरोजगारी, मँहगाई तथा भुखमरी आदि से पीड़ित देश का निम्न तथा मध्यम वर्ग (कवि-सम्मेलन के श्रोताओं में जिसकी संख्या सर्वाधिक होती है) अपने मन पर चिन्ताओं का भार न डाल कर, आत्म-प्रवंचना द्वारा क्षणिक-शान्ति पाने को लालायित हो उठा है। ठीक उसी प्रकार, जैसे कि कुछ लोग अपना ग़म-ग़लत करने के लिये शराब पी लिया करते हैं। ऐसे लोग कवि-सम्मेलनों में राष्ट्रीय-रचनायें सुन कर अपने मन-मस्तिष्क को राष्ट्र-चिन्तन के बोझ से बोझिल होने देने की अपेक्षा शृंगारी-गीत तथा हास्य-व्यंग्य की रचनाओं में रस लेकर, उसे बहलाने अथवा भुलावे में डालने की ही अधिक चेष्टा करते हैं। बहुसंख्यक श्रोताओं की यह मनःस्थिति भी राष्ट्रीय-रचनाओं के प्रति उदासीनता का कारण बनी है।

उक्त कारणों के फलस्वरूप वर्तमान काल के अधिकांश कवि-सम्मेलन तथा-कथित-बौद्धिक मनोरंजन के केन्द्र बनते चले जा रहे हैं तथा कवि-सम्मेलनों के मंच पर राष्ट्रीय-रचनाकारों की तुलना में शृंगारी-गीतकार तथा हास्य-व्यंग्यकार अधिक प्रश्रय पारहे हैं।

बौद्धिक-मनोरंजन का यदि साहित्यिक-स्वरूप बना रहे तो वह शोभनीय होता है, परन्तु यदि वह 'विद्रूप' का रूप ग्रहण कर ले तो राष्ट्रीय-हित की दृष्टि से चिन्ताजनक-स्थिति बनती है। सन्तोष की बात है कि हिन्दी-मंच के अधिकांश शृंगारी-कवि साहित्यिक-सीमाओं के भीतर ही चल रहे हैं और वे अपनी रचनाओं के माध्यम से काव्य-रसिकों को उत्तम कोटि का बौद्धिक-मनोरंजन प्रदान कर रहे हैं। ऐसे कवियों में सर्वश्री बलवीर सिंह "रंग",[1] गोपालदास "नीरज", रामावतार त्यागी, रमानाथ अवस्थी, भारतभूषण तथा सोम ठाकुर आदि के नाम प्रमुख हैं। परन्तु स्वातन्त्र्योत्तर काल में हास्य-व्यंग्य के कवि के रूप में जिस नवीन-पीढ़ी का मंचोदय हुआ है, उनमें सर्वश्री विश्वनाथ "विमलेश", कवि हुल्लड़, माणिक वर्मा, ओमप्रकाश आदित्य तथा अशोक चक्रधर जैसे कतिपय कवियों को छोड़कर अधिकांश ऐसे हैं, जिनकी रचनायें विद्रूप, वीभत्सता, नैतिकता एवं अश्लीलता की सीमाओं को भी पार कर रही हैं। 'साहित्यिकता' के तो उनमें कहीं 'दर्शन भी नहीं होते। प्रसन्नता का विषय है कि जागरूक काव्य-श्रोता ऐसे विद्रूप-रचनाकारों को अब हेय-दृष्टि से भी देखने लगे हैं।

---

1. अब स्वर्गीय

अस्तु, हिन्दी कवि-सम्मेलन बौद्धिक-मनोरंजन का भी साधन है तथा उसने सार्वजनिक मनोरंजन के प्राचीन साधनों—नौटंकी, स्वांग, भड़ैती आदि की तुलना में जन-साधारण की रुचि को कहीं अधिक परिष्कृत भी किया है।

उक्त विवेचन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि हिन्दी कवि-सम्मेलनों का हिन्दी के प्रचार-प्रसार के अतिरिक्त संस्कृति-संरक्षण, कुरीति-निवारण, सामाजिक-क्रान्ति, स्वतन्त्रता-संग्राम तथा जन-जागरण में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है तथा वर्तमानकाल में वे स्वतन्त्र-अभिव्यक्ति तथा बौद्धिक-मनोरंजन में भी अपनी प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं।



प्रकरण 3

मंचीय हिन्दी-कवि तथा उनके वर्ग

1. कवि तथा मंचीय-कवि की विभाजक-रेखाएँ।
2. रसों के आधार पर मंचीय-कवियों के वर्ग।
3. परतन्त्र-भारत के प्रमुख मंचीय-कवि।
4. स्वतन्त्र-भारत के प्रमुख मंचीय-कवि।

1. कवि तथा मंचीय-कवि की विभाजक-रेखाएं

मंच—"कवि" तथा "मंचीय-कवि" की विभाजक-रेखाओं का निर्धारण करने से पूर्व "मंच" शब्द पर विचार कर लेना आवश्यक है।

सामान्यतः 'मंच' उस स्थान को कहा जाता है, जहाँ उपस्थित हो कर कवि, वक्ता अथवा कलाकार श्रोताओं अथवा दर्शकों के समक्ष कुछ कहता अथवा अपनी किसी कला का प्रदर्शन करता है।

प्राचीनकाल में "मंच" के भेद विकसित नहीं हुए थे, परन्तु वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण आधुनिक युग में "मंच" के अनेक भेद विकसित हो गये हैं, जिन्हें मुख्यतः दो वर्गों में बाँटा जा सकता है—(1) प्रत्यक्ष-मंच और (2) अप्रत्यक्ष-मंच।

"**प्रत्यक्ष मंच**" उस स्थान को कहा जाता है, जहाँ कोई वक्ता, कवि अथवा कलाकार श्रोताओं तथा दर्शकों के समक्ष स्वयं उपस्थित होकर कुछ कहता अथवा अपनी किसी कला का प्रदर्शन करता है।

"**अप्रत्यक्ष-मंच**" की परिभाषा के अन्तर्गत आकाशवाणी (रेडियो), दूर-दर्शन (टेलीविजन), फिल्म, पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकों आदि को रक्खा जा सकता है। इन मंचों पर वक्ता अथवा कलाकार प्रत्यक्ष रूप में तो उपस्थित नहीं होता; परन्तु उनकी रचना, वाणी, चित्र अथवा कला-प्रदर्शन आदि श्रोताओं तथा दर्शकों के समीप आ पहुँचते हैं।

आकाशवाणी के प्रसारण द्वारा कवि, वक्ता, संगीतज्ञ आदि का कण्ठ-स्वर सुनाई देता है। दूर-दर्शन तथा फिल्मों के माध्यम से वह चित्र के रूप में अपनी कला का प्रदर्शन करते हुए दिखाई तथा सुनाई देता है। पत्र-पत्रिकाओं एवं पुस्तकों आदि के माध्यम से उसकी रचनायें पाठकों को दृष्टिगोचर होती हैं।

संयोग की बात है कि आज के अधिकांश ख्यातनामा मंचीय-कवि उक्त दोनों प्रकार के मंचों से सम्बन्धित हैं; परन्तु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में 'मंचीय-कवि' के रूप में केवल उन्हीं कवियों का उल्लेख किया गया है, जोकि "प्रत्यक्ष-मंच" से अवश्य सम्बन्धित रहे हैं। केवल 'अप्रत्यक्ष-मंच' से सम्बधित कवियों को इस शोध-कार्य की परिधि से बाहर ही रखा गया है।

मंचीय-कवि—जो कविता लिखता है, वह "कवि" है। मंचीय-कवि भी कविता लिखते हैं, अतः वे "कवि" की श्रेणी में स्वतः ही आ जाते हैं; परन्तु सामान्य-कवि को "मंचीय-कवि" बनने के लिए कुछ अतिरिक्त-योग्यताओं से युक्त होने की आवश्यकता पड़ती है।

सामान्यतः 'मंचीय-कवि' में निम्नलिखित 5 विशेषताएँ पाई जाती हैं—

(1) काव्य-पाठ शैली में प्रभावोत्पादकता।

(2) विषय-वस्तु को अधिक स्पष्ट करने वाली समुचित हाव-भाव प्रदर्शन की कला।

(3) कविताओं की कण्ठाग्रता।

(4) प्रत्येक वर्ग के श्रोताओं की समझ में आ सकने योग्य भाषा की सरलता।

(5) श्रोताओं तथा दर्शकों को सहज ही आकर्षित कर लेने वाला व्यक्तित्व।

अब तक के सभी सफल मंचीय-कवियों में उक्त पाँचों विशेषताएँ न्यूनाधिक मात्रा में अवश्य पाई गई हैं। जो इनसे वंचित रहे, वे 'मंचीय-कवि' के रूप में सफल नहीं हो सके; फिर भले ही वे कितने ही उच्चकोटि के काव्य-सर्जक क्यों न रहे हों। उदाहरणार्थ-सर्वश्री मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानन्दन पन्त, सियारामशरण गुप्त, महादेवी वर्मा, अज्ञेय, उपेन्द्रनाथ "अश्क", नरेश मेहता, केदारनाथ अग्रवाल तथा धर्मवीर भारती आदि कवि उक्त विशेषताओं की कमी अथवा अभाव के कारण ही "मंचीय-कवि" के रूप में सफलता प्राप्त नहीं कर सके।

व्यक्तित्व—विभिन्न रसों के मंचीय-कवियों के व्यक्तित्व में अलग-अलग भिन्नताओं (विशेषताओं) का होना भी उन्हें अधिक सफल बनाता है। मंच पर मुख्यतः वीर, हास्य तथा शृंगार—इन्हीं तीन रसों के रचनाकार अधिक पसन्द किए जाते हैं। अतः इन रसों के कवियों के व्यक्तित्व में निम्नलिखित अतिरिक्त विशेषताएँ उन्हें "अधिक सफल मंचीय-कवि" बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं—

"वीर-रस" के मंचीय-कवि का शरीर भारी-भरकम एवं बलिष्ठ, डील-डौल लम्बा तथा व्यक्तित्व रौबदार होना उचित है। कण्ठ-स्वर ओजस्वी तथा गुरु-गंभीर होना चाहिये। काव्य की भाषा सरल तथा प्रवाहमयी हो एवं विषय-वस्तु ऐतिहासिक, राजनीतिक अथवा सामयिक घटनाओं से सम्बन्धित हो। सामाजिक,

आर्थिक-विषमताओं तथा अनाचार शोषण-उत्पीड़न, वर्ग-भेद आदि के विरोध में लिखी गई ओजस्वी-कविताएँ श्रोताओं द्वारा विशेष रूप से पसन्द की जाती हैं। इस रस के काव्य-पाठ में भाव-भंगी के प्रदर्शन की अधिक आवश्यकता पड़ती है, अतः कवि का उसमें दक्ष होना भी आवश्यक है। काव्य-पाठ की शैली ऐसी होनी चाहिए, जो श्रोताओं को रोमांचित करदे। वीर-रस की रचनाएँ प्रायः लम्बी होती हैं, अतः कवि की स्मरण-शक्ति भी तीव्र होनी चाहिये। वीर-रस का काव्य-पाठ प्रायः बिना गाये ही किया जाता है, परन्तु कुछ कवि ओजस्वी रचनाओं को गा कर भी पढ़ते हैं।

"हास्य-रस" के 'मंचीय-कवि' का कण्ठ-स्वर कोई अधिक महत्व नहीं रखता, फिर भी उसका स्पष्ट होना आवश्यक है। काव्य की भाषा सरल तथा विषय-वस्तु जन-जीवन एवं सामयिक-समस्याओं से सम्बन्धित होनी चाहिये। आलोचनात्मक व्यंग्य-कविताएँ भी श्रोताओं द्वारा खूब पसन्द की जाती हैं। जो रचनाएँ श्रोताओं के हृदय में गुदगुदी उत्पन्न करने में सक्षम हों, वे ही मंच पर अधिक सफल होती हैं। वीभत्स, अश्लील तथा कटूक्तिपूर्ण चित्रण हास्य-कविता को विद्रूप बना देते हैं। तीव्र-हास्य की बजाय व्यंग्य-रचनाएँ अधिक जमती हैं। हास्य-रस के कवि का व्यक्तित्व यदि ऐसा हो कि उसे देखते ही श्रोताओं के चेहरे पर मुस्कुराहट खिल उठे, तो वह मंच पर अधिक सफलता प्राप्त करता है।

"श्रृंगार रस" के गीतकार के लिए कण्ठ-स्वर की मधुरता मंचीय-सफलता हेतु एक अनिवार्य शर्त है। कवि का व्यक्तित्व सुन्दर तथा आकर्षक हो, शरीर गौर-वर्ण एवं छरहरा हो तो अत्युत्तम। भारी-भरकम अथवा मरियल शरीर, गहरे श्यामवर्ण तथा अनाकर्षक व्यक्तित्व वाले कवि का कण्ठ-स्वर चाहे मधुर ही क्यों न हो, उसके मुख से श्रृंगारी-गीतों का पाठ न तो शोभा देता है और न श्रोताओं को आकर्षित ही कर पाता है। इसके अतिरिक्त श्रृंगारिक-रचनाएँ प्रायः युवक-कवियों के मुख से ही अधिक अच्छी लगती हैं। प्रौढ़ अथवा वृद्ध कवि के मुख से श्रृंगारी-गीत सुनकर श्रोतागण उसका मज़ाक भी बनाने लगते हैं। गीतों का विषय प्रणय, मिलन, विरह आदि से संबंधित होना चाहिए। भाषा सरल हो तो अत्युत्तम, अन्यथा कण्ठ-स्वर मधुर हो तो प्रांजल भाषा में लिखी गई रचनाएँ भी श्रोताओं द्वारा मनोयोग पूर्वक सुनी जा सकती हैं।

कुछ गीतकार अपने गीतों को बिना गाये हुए भी पढ़ते हैं, परन्तु उनकी रचनाओं के विषय प्रायः "प्रेम" से सम्बन्धित न होकर राजनीतिक, सामाजिक अथवा धार्मिक होते हैं। कण्ठ-माधुर्य के अतिरिक्त उनमें मंचीय-कवि के लिए आवश्यक प्रायः अन्य सभी विशेषताएँ पाई जाती हैं, अतः वे भी मंच पर सफलता प्राप्त कर लेते हैं।

"कवि" तथा "मंचीय-कवि" की प्रमुख विभाजक-रेखाएँ उपर्युक्त ही हैं।

जो कवि मंच के लिए इन आवश्यक-विशेषताओं से जितने अधिक समृद्ध होते हैं, वे उतनी ही अधिक लोकप्रियता भी प्राप्त करते हैं।

2. रसों के आधार पर मंचीय-कवियों के वर्ग

रसों के आधार पर मंचीय-कवियों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है—

(क) वीर रस के कवि।
(ख) हास्य रस के कवि।
(ग) श्रृंगार रस के कवि।
(घ) अन्य रसों के कवि।

वीर रस के कवि—इस वर्ग में वे कवि आते हैं, जो ऐतिहासिक, पौराणिक, सामाजिक, राजनीतिक, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय अथवा सामयिक घटनाओं को आधार बना कर ओजस्वी-रचनायें लिखते हैं। युद्ध, शोषण, उत्पीड़न, सामाजिक एवं आर्थिक-वैषम्य; कुरीति, अनाचार, अत्याचार, हिंसक-घटनाएँ, राष्ट्रभक्ति, बलिदान, कुटिल-नीति, गरीबी, भुखमरी, मंहगाई, अभाव, अकाल आदि विषय इस रस के कवियों की रचनाओं के प्रमुख अंग होते हैं। साम्राज्यवाद, पूँजीवाद, सामन्तवाद, सम्प्रदाय-वाद, क्षेत्रवाद, जातीयतावाद, तानाशाही, धार्मिक-अन्धविश्वास एवं कुप्रथाओं के विरोध में लिखी गई रचनाएँ भी खूब सराही जाती हैं। रौद्र-वीभत्स तथा भयानक रसों की रचनाएँ भी इसी वर्ग के अन्तर्गत आ जाती हैं, परन्तु इन रसों का प्रयोग कम ही होता है।

हास्य रस के कवि—इस वर्ग में वे कवि आते हैं, जिनकी रचनाओं का विषय चाहे कुछ भी हो; परन्तु उनमें हास्य अथवा व्यंग्य का पुट अवश्य होता है।

श्रृंगार रस के कवि—इस वर्ग में वे कवि आते हैं, जिनकी रचनाओं का मुख्य विषय प्रणय-लीलाओं से सम्बन्धित होता है। विरह-मिलन, मान-मनुहार, नख-शिख, रूप-सौन्दर्य, यौवन आदि के अतिरिक्त मधुपान, प्रकृति-वर्णन आदि विषयों की गणना भी सामान्यतः श्रृंगार रस के अन्तर्गत ही की जाती है। लोकगीतों के गायक भी इसी श्रेणी के माने जाते हैं।

अन्य रसों के कवि—इस वर्ग में करुण, भक्ति, वात्सल्य तथा अद्‌भुत्‌ रसों की रचनाएँ लिखने वाले कवि आते हैं। ऐसी रचनाओं में दार्शनिकता का पुट प्रायः अधिक रहता है तथा उनकी भाषा भी प्रांजल अथवा दुरूह होती है। इस कारण वे सामान्य-श्रोताओं की समझ से परे की वस्तु बन जाती हैं और उन्हें सुनने में विशेष आनन्द भी नहीं आता। बहुसंख्यक श्रोताओं को आकर्षित करने में असमर्थ रहने के कारण इन रसों की रचनाएँ लिखने वाले कवियों को कवि-सम्मेलनों के मंच पर यदा-कदा ही बुलाया जाता है। इन रसों के प्राधान्य वाली केवल वे ही कविताएँ

श्रोताओं द्वारा पसन्द की जाती हैं, जिनमें शृंगारिकता अथवा हास्य का भी कुछ पुट हो; परन्तु ऐसी रचनाएँ लिख पाने की क्षमता रखने वाले कवियों की संख्या बहुत ही कम है।

उक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कवि-सम्मेलन के मंच पर मुख्यतः वीर, हास्य तथा शृंगार रस के कवि ही सफलता प्राप्त कर पाते हैं।

3. परतन्त्र-भारत के प्रमुख मंचीय-कवि

यों, परतन्त्र-भारत में स्थानीय-ख्याति के सैकड़ों मंचीय-कवि हुए हैं, परन्तु उनमें से जिन्होंने विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की तथा जो सुदूरवर्ती स्थानों पर भी काव्य-पाठ हेतु आमन्त्रित किये जाते रहे, उन्हें निम्नलिखित तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है—

(क) वे कवि, जो केवल ब्रजभाषा में ही काव्य-सृजन करते थे और मंच से भी केवल ब्रजभाषा की रचनाएँ ही सुनाते थे।

(ख) वे कवि, जो ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली—दोनों में काव्य-सृजन करते थे तथा मंच से भी दोनों प्रकार की कविताएँ सुनाते थे।

(ग) वे कवि, जो ब्रजभाषा में कम तथा खड़ी बोलो में अधिक काव्य-सृजन करते थे, परन्तु मंच से प्रायः खड़ी बोली की रचनाएँ ही सुनाते थे।

उक्त वर्ग के प्रमुख कवियों का संक्षिप्त परिचय नीचे दिये जा रहा है, परन्तु स्मरणीय है कि इस सूची में ब्रजक्षेत्र से सम्बद्ध कवियों का नामोल्लेख नहीं किया गया है, क्योंकि उनके विषय में आगे प्रकरण 5, 6 तथा 7 में विस्तार पूर्वक लिखा जायेगा।

"क" वर्ग के कवि—इनमें प्रमुख नाम निम्नलिखित हैं—

(1) श्री जगन्नाथदास "रत्नाकर" (सं. 1923 वि.—सं. 1989 वि.) इनका जन्म काशी में हुआ था तथा मृत्यु हरिद्वार में हुई।

"ख" वर्ग के कवि—इसमें प्रमुख नाम निम्नलिखित हैं—

(1) श्री प्रताप नारायण श्रीवास्तव (1856—1894 ई.) इनका जन्म कानपुर में हुआ था तथा मृत्यु भी वहीं हुई।

(2) पं. अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध" (1866—1941 ई.)—इनका जन्म निजामाबाद (आजमगढ़) में हुआ था तथा मृत्यु भी वहीं हुई।

(3) राय देवी प्रसाद "पूर्ण" (सन् 1868—1915 ई.)—इनका जन्म कानपुर में हुआ था और मृत्यु भी वहीं हुई।

(4) पं. गयाप्रसाद शुक्ल "सनेही" (सन् 1883-1968 ई.)—इनका जन्म उन्नाव जिले के "हड़हा" नामक गाँव में हुआ था तथा मृत्यु भी वहीं हुई।

(5) श्री अनूप शर्मा (सन् 1900-1973 ई.)—इनका जन्म नवीनगर (जि. सीतापुर) में हुआ था तथा मृत्यु भी वहीं हुई।

इस वर्ग के कवियों में कुछ अन्य नाम हैं—सर्वश्री (1) जगदम्बा प्रसाद मिश्र "हितैषी", (2) हृदय नारायण "हृदयेश", (3) करुणेश तथा (4) अवधेश (सभी कानपुर), (5) वचनेश (फर्रुखाबाद), (6) रसिकेन्द्र (झालावाड़) तथा (7) नाथूराम माहौर (झाँसी)—ये सभी कवि अब दिवंगत हो चुके हैं।

"ग" वर्ग के कवि—इस वर्ग के कवि मुख्यतः सन् 1935 ई. के बाद प्रकाश में आये। इन्हें रसों के आधार पर निम्न चार उपवर्गों में बाँटा जा सकता है—

(अ) वे कवि, जो अन्य रसों में काव्य-सृजन करते हुए भी मंच से केवल ओजस्वी-कविताओं का पाठ ही अधिक करते रहे तथा "वीररस के कवि" अथवा "ओजस्वी-कवि" के रूप में विख्यात हुए।

(आ) वे कवि, जो अन्य रसों में काव्य-सृजन करते हुए भी मंच से केवल हास्य-व्यंग्य की रचनाओं का ही अधिक पाठ करते रहे तथा "हास्य-रस के कवि" के रूप में प्रसिद्ध हुए।

(इ) वे कवि, जो मच पर केवल शृंगारिक रचनाओं का ही पाठ करते रहे और "शृंगारी-कवि" के रूप में प्रसिद्ध हुए। इस वर्ग के जो कवि स-स्वर काव्य-पाठ करते थे, उन्हें "गीतकार" कहा गया।

(ई) वे कवि, जो मंच पर किसी रस-विशेष की रचनाओं का पाठ न करके विविध विषयों तथा रसों की कविताओं का पाठ करते रहे तथा केवल "कवि" रूप में जाने गये।

प्रथम उपवर्ग के ओजस्वी-कवियों में निम्नलिखित नाम प्रमुख हैं—

(1) **स्व. पं. माखनलाल चतुर्वेदी** (1889-1968 ई.)—आपका जन्म मध्यप्रदेश के "बावई" नामक स्थान में हुआ था, परन्तु आपके जीवन का अधिकांश भाग "खण्डवा" (म. प्र.) में व्यतीत हुआ और वहीं आपकी मृत्यु भी हुई। आपके "हिमकिरीटिनी", "हिमतरंगिणी", "युग चरण" आदि अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हैं। आप "एक भारतीय आत्मा" के नाम से राष्ट्रीय-रचनाएँ लिखते थे तथा मंच पर उन्हीं का पाठ भी करते थे, अतः आपको वीर-रस के कवि के रूप में ही प्रसिद्धि मिली।

(2) **स्व. पं. बालकृष्ण शर्मा "नवीन"** (1897-1960 ई.)—आपका जन्म ग्वालियर राज्य के "भयाना" नामक गाँव में हुआ था, परन्तु राष्ट्रीय-आन्दोलनों तथा राजनीति में भाग लेते हुए आपका अधिकांश जीवन कानपुर में व्यतीत हुआ। आपके "कुमकुम", "रश्मिरेखा", "क्वासि" आदि काव्य-संकलन प्रकाशित हैं। आप भी मंच से ओजस्वी राष्ट्रीय रचनाओं का पाठ ही अधिक किया करते थे, अतः जन-साधारण में वीररस के कवि के रूप में ही विख्यात हुए।

(3) **स्व. पं सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला"** (1897-1967 ई.)—आपका जन्म पश्चिमी-बंगाल की महिषादल स्टेट के "मेदिनीपुर" नामक ग्राम में हुआ था, परन्तु आपके जीवन का अधिकांश भाग प्रयाग में ही बीता और वहीं आपकी मृत्यु भी हुई। निराला जी को छायावाद के प्रमुख स्तम्भों में से एक माना गया है। इन्होंने विभिन्न रसों तथा विविध विषयों पर सैकड़ों रचनाएँ लिखी हैं। कविता को छन्द के बन्धन से मुक्त करने का साहसिक कार्य भी इन्हीं ने किया था, अतः इन्हें हिन्दी-काव्य में "मुक्त-छन्द" का प्रवर्तक भी कहा जाता है। आपके अनेक कविता-संग्रह तो प्रकाशित हैं ही; उपन्यास, कहानी तथा अनुवाद-ग्रन्थ भी प्रकाशित हैं। कवि-सम्मेलनों के मंच से ये प्रायः ओजपूर्ण रचनाओं, यथा—"राम की शक्ति पूजा" आदि का ही अधिक पाठ करते थे, अतः जन-साधारण में इन्हें भी "ओजस्वी-कवि" के रूप में ही जाना गया।

(4) **स्व. श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान** (1904-1948 ई.)—आपका जन्म प्रयाग में हुआ था तथा जीवन का अधिकांश भाग जबलपुर में व्यतीत हुआ था। "खूब लड़ी मर्दानी, वह तो झांसी वाली रानी थी" शीर्षक आपकी कविता देश भर में अत्यधिक प्रसिद्ध हुई थी। आप ओजस्वी-स्वर में कविताओं का पाठ करती थीं, अतः हिन्दी की "वीर-रस" की प्रथम मंचीय-कवयित्री के रूप में प्रसिद्ध हुईं। आपके दो काव्य-संकलन—"त्रिधारा" एवं "मुकुल" शीर्षक से प्रकाशित हैं।

(5) **श्री रामचरण हयारण "मित्र"** (1904 ई.)—आपका जन्म झाँसी में हुआ था और वर्तमान में भी वहीं निवास कर रहे हैं। आपने "झाँसी की रानी" शीर्षक महाकाव्य लिखा है तथा अन्य अनेक रचनाएँ भी की हैं। बुन्देलखण्ड के वीररस के कवि के रूप में आपने पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त की है। आपके अनेक काव्य-संकलन प्रकाशित हैं।

(6) **श्री सोहनलाल द्विवेदी** (1905 ई.)—आपका जन्म फतेहपुर जिले के "बिन्दकी" नामक स्थान में हुआ था और वहीं रहते हैं। आपको गांधीवादी युग का श्रेष्ठ कवि स्वीकार किया गया है। स्वाधीनता-संग्राम के दिनों में आपकी रचनाएँ श्रोताओं में स्फूर्ति तथा प्रेरणा का संचार किया करती थीं, अतः आपको भी "वीररस" के कवि के रूप में ही मान्यता प्राप्त हुई। आपके द्वारा लिखित अनेक खण्ड-काव्य तथा स्फुट काव्य-संकलन प्रकाशित हैं।

(7) **श्री जगन्नाथ प्रसाद "मिलिन्द"** (1907 ई.)—आपका जन्म मुरार (ग्वालियर) में हुआ था और वर्तमान में आप 'ग्वालियर' में ही निवास कर रहे हैं। आपने राष्ट्रीय-आन्दोलनों में सक्रिय रूप से भाग लिया तथा मंच से प्रायः ओजस्वी-रचनाओं का ही पाठ किया, अतः आप भी वीररस के कवि के रूप में जाने गये। आपके "जीवन संगीत" "बलिपथ के गीत" "नवयुग के गान" आदि अनेक काव्य-संकलन, कथा-संग्रह तथा नाटक आदि प्रकाशित हैं।

(8) **स्व. श्री रामधारी सिंह "दिनकर"** (1908-1974 ई.)—आपका जन्म सिमरियाघाट, जि. मुंगेर (बिहार) में हुआ था तथा मृत्यु पटना में हुई। आप "हुँकार", "कुरुक्षेत्र", "उर्वशी", रश्मिरथी", "तुमुल" आदि अनेक महाकाव्य, खण्ड-काव्य तथा स्फुट रचनाओं के प्रणेता हैं। आपने पद्य के अतिरिक्त गद्य भी पर्याप्त लिखा है। विविध विषयों पर आपकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हैं। ये काव्य-मंच से अपनी गुरु-गंभीर वाणी में प्रायः ओजस्वी-रचनाओं का पाठ ही अधिक किया करते थे, अतः वीररस के कवि के रूप में ही विख्यात हुए।

(9) **पं श्यामनारायण पाण्डेय** (1910 ई.)—आपका जन्म आज़मगढ़ जिले के मऊनाथ भंजन नामक ग्राम में हुआ और वहीं रह रहे हैं। आपने जौहर, हल्दीघाटी, जय हनुमान आदि अनेक महाकाव्य, खण्डकाव्य तथा स्फुट रचनाएँ लिखी हैं। अपनी ओजस्वी-वाणी तथा तेजस्वी-लेखनी के बल पर आप आज भी हिन्दी जगत् में वीर रस के श्रेष्ठतम कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं।

(10) **श्री नागार्जुन** (1910 ई.)—आपका जन्म-तरौनी (जिला दर-भंगा) में हुआ था। आपका वास्तविक नाम श्री वैद्यनाथ मिश्र है। आजकल आप दिल्ली में रहते हैं। आपके द्वारा लिखित "युगधारा", "सतरंगे पंखों वाली" आदि काव्य-संकलन एवं अनेक उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। मंच पर ओजस्वी-रचनाओं का पाठ करने के कारण आप भी वीररस के कवि रूप में जाने जाते हैं।

(11) **स्व. पं. राम भरोसे लाल पाण्डेय "पंकज"** (1913-1982 ई.)—आपका जन्म उत्तर प्रदेश के लखीमपुर-खीरी जिले के "सहसपुर" नामक गाँव में हुआ था, परन्तु सुदीर्घकाल तक आपने पीलीभीत जिले के "पूरनपुर" नामक कस्बे में निवास किया और वहीं इनकी मृत्यु भी हुई। आपने "हरिसिंह नलवा" तथा "महाराणा प्रताप" शीर्षक महाकाव्यों की रचना की है। आपने काफी समय तक काव्य-मंच से ओजस्वी-रचनाओं का पाठ किया, परन्तु बाद में दृष्टि-शक्ति क्षीण हो जाने के कारण मंच से सन्यस्त हो गये थे। आपकी रचनाओं के अनेक संकलन प्रकाशित हैं।

(12) **स्व. डा. आनन्द** (1914—1979 ई.)—आपका जन्म जालौन (उ. प्र.) में हुआ था और वहीं आपकी मृत्यु भी हुई। आपने "झाँसी की रानी" नामक महाकाव्य लिखा था, जो अभी तक अप्रकाशित है। स्फुट रचनाओं के कुछ संग्रह प्रकाशित भी हो चुके हैं। ओजस्वी काव्य-पाठ तथा सशक्त रचनाओं के बल पर आपने वीर-रस के कवि के रूप में अखिल भारतीय ख्याति अर्जित की थी।

(13) **डा. शिवमंगल सिंह "सुमन"** (1916 ई.)—आपका जन्म उन्नाव में हुआ था। 'विक्रम विश्वविद्यालय' के उपकुलपति पद से अवकाश प्राप्त कर, इन दिनों आप लखनऊ में रह रहे हैं। अपने ओजस्वी काव्य-पाठ के कारण ही आप भी वीररस के कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं। यों आपने अनेक रसों में काव्य-रचना की है तथा आपके द्वारा लिखित अनेक पुस्तकें प्रकाशित हैं।

(14) **डा. रघुवीर शरण "मित्र"** (1919 ई.)—आपका जन्म मेरठ में हुआ था और वहीं निवास भी कर रहे हैं। ओजस्वी काव्य-पाठ के लिए पर्याप्त प्रसिद्ध भी हैं। आपने अनेक महाकाव्य, खण्ड-काव्य तथा स्फुट रचनाएँ लिखी हैं तथा गद्य-साहित्य का भी सृजन किया है। आपके अनेक ग्रंथ प्रकाशित हैं।

(15) **स्व. डा. ओमप्रकाश दीक्षित** (1921-1977 ई.)—आपका जन्म सहारनपुर में हुआ था। आपकी "हाथीहूल" शीर्षक ओजस्वी-कविता श्रोताओं को रोमांचित कर दिया करती थी। आपके काव्य-पाठ का ढंग भी बड़ा आकर्षक था। वीररस के कवि रूप में आपने पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त की थी। आपकी रचनाओं के संकलन भी प्रकाशित हैं।

(16) **श्रीकृष्ण "सरल"** (1922 ई.)—आपका जन्म उज्जैन में हुआ था। आजकल आप वहीं निवास कर रहे हैं। आप भी वीररस के मंचीय-कवि के रूप में ख्याति प्राप्त हैं। आपके द्वारा लिखित अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं।

(17) **श्री मेघराज "मुकुल"** (1923 ई.)—आपका जन्म बीकानेर में हुआ। आजकल आप जयपुर में निवास कर रहे हैं। राजस्थानी भाषा में लिखी आपकी "सेणाणी" नामक कविता देशभर में अत्यधिक लोकप्रिय हुई तथा वीररस के कवि के रूप में ही आप समादृत भी हुए। आपके भी काव्य-संकलन प्रकाशित हैं।

द्वितीय उप-वर्ग के हास्य-व्यंग्य के कवियों में निम्नलिखित नाम प्रमुख हैं—

(1) **स्व. श्री कृष्णदेव प्रसाद गौड़ "बेढब बनारसी"** (1895-1968 ई.)—आपका जन्म बनारस में हुआ था तथा मृत्यु भी वहीं हुई। आप परिष्कृत-हास्य के श्रेष्ठ कवि माने जाते थे। आपकी लिखी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हैं।

(2) **स्व. श्री दयाशंकर दीक्षित "देहातीजी"** (1902-1983 ई.)—आपका जन्म कानपुर में हुआ तथा मृत्यु भी वहीं हुई। आपने खड़ी बोली तथा अवधी—दोनों में हास्य-व्यंग्य रचनाएँ लिखी हैं।

(3) **स्व. श्री चतुर्भुज दीक्षित "चतुरेश"** (1907-1984 ई.)—आपका जन्म दतिया (म. प्र) में हुआ था तथा वहीं मृत्यु भी हुई। आप खड़ी बोली तथा बुन्देली के प्रमुख हास्य-कवि थे। आपकी कुछ पुस्तकें प्रकाशित हैं।

(4) **स्व. श्री कुंजबिहारी पाण्डेय** (1910-1983 ई.)—आपका जन्म बड़नगर (जिला उज्जैन) में हुआ था और वहीं मृत्यु भी हुई। आपने हास्य-व्यंग्य के कवि के रूप में पर्याप्त लोकप्रियता अर्जित की थी। आपके काव्य-संकलन भी प्रकाशित हैं।

(5) **स्व. श्री कान्तानाथ पाण्डेय "चोंच"** (1914-1972 ई.)—आपका जन्म वाराणसी में हुआ था तथा वहीं मृत्यु भी हुई। आप भी शिष्ट-हास्य के सफल मंचीय-कवि थे। आपका काव्य-संकलन प्रकाशित है।

(6) **श्री वासुदेव गोस्वामी** (1914 ई.)—आपका जन्म दतिया (म. प्र.) में हुआ। आजकल वहीं रह रहे हैं। आप शिष्ट-हास्य के अच्छे कवि है। आपका एक काव्य-संकलन प्रकाशित हैं।

(7) **स्व. श्री चन्द्र भूषण त्रिवेदी "रमई काका"** (1915-1982 ई.)—आपका जन्म लखनऊ में हुआ तथा वहीं मृत्यु भी हुई। आप वर्तमान-युग में अवधी के सर्वश्रेष्ठ हास्य-कवि के रूप में प्रसिद्ध रहे। आपने खड़ी बोली में भी व्यंग्य-रचनाएँ लिखी हैं। आपके उपनाम की इतनी अधिक प्रसिद्धि हुई कि बाद में हिन्दी के अनेक हास्य-कवियों ने अपने नाम के साथ "काका" शब्द जोड़ लिया। आपकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हैं।

तृतीय उप-वर्ग के श्रृंगारी तथा गीतकार कवियों में निम्न नाम प्रमुख हैं—

(1) **स्व. श्री गोपाल सिंह "नेपाली"** (1902-1963 ई.)—आपका जन्म बेतिया (चम्पारन) में हुआ था। आपके जीवन का अधिकांश भाग बम्बई में बीता। आपने अनेक फिल्मों में भी गीत लिखे, जो पर्याप्त प्रसिद्ध हुए। मंचीय-गीतकारों में इन्होंने अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त की थी। आपके काव्य-संकलन भी प्रकाशित हैं।

(2) **डा. हरिवंश राय "बच्चन"** (1907 ई.)—आपका जन्म इलाहाबाद में हुआ था। वर्तमान में आप, कभी बम्बई तथा कभी दिल्ली में निवास करते हैं। आपकी "मधुशाला" ने हिन्दी में एक नये युग का सूत्रपात किया था। पुरानी पीढ़ी के गीतकारों में इन्होंने सर्वाधिक ख्याति अर्जित की है। आपने अन्य भाषाओं की रचनाओं के पद्यानुवाद भी किए हैं। आपकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हैं।

(3) **श्रीमती विद्यावती "कोकिल"** (1914 ई.)—आपका जन्म हसनपुर (मुरादाबाद) में हुआ था। वर्तमान में आप पाण्डिचेरी के अरविन्दाश्रम में निवास कर रहीं हैं। स्वर-माधुर्य में इन जैसी कोई मंचीय-कवयित्री प्रसिद्ध नहीं हुई। ये अधिकतर दार्शनिक-गीतों का ही पाठ करती थीं। अब एक लम्बे समय से आपने मंचों पर जाना छोड़ दिया है। आपका काव्य-संकलन प्रकाशित है।

(4) **श्रीमती सुमित्रा कुमारी सिन्हा** (1914 ई.)—आपका जन्म लखनऊ में हुआ था। आजकल आप वहीं निवास कर रही हैं। "कोकिल" तथा सुभद्राकुमारी चौहान के बाद महिला कवयित्रियों में आपने ही सर्वाधिक ख्याति अर्जित की। आपके काव्य-संकलन प्रकाशित हैं।

(5) **श्री रामेश्वर शुक्ल "अंचल"** (1915 ई.)—आपका जन्म किशनपुर (जि. फतेहपुर) में हुआ था। आजकल आप जबलपुर (म. प्र.) में निवास कर रहे हैं। कोमल भावनाओं के श्रृंगारी गीतों के लिए आपने विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की है। आपके अनेक काव्य-संकलन प्रकाशित हैं।

(6) **श्री जानकीवल्लभ शास्त्री** (1916 ई.)—आपका जन्म मैगर (जि. गया) में हुआ था तथा वर्तमान में भी वहीं निवास कर रहे हैं। आप हिन्दी तथा उर्दू—दोनों भाषाओं में काव्य-सृजन करते हैं तथा गीतकार के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त हैं। आपकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हैं।

(7) **श्री चन्द्र प्रकाश वर्मा "चन्द्र"** (1917 ई.)—आपका जन्म सिहोरा (जि. जबलपुर) में हुआ था। वर्तमान में आप जबलपुर में ही निवास कर रहे हैं। शृंगारी-कवि के रूप में आप पर्याप्त ख्याति अर्जित कर चुके हैं। आपकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हैं।

(8) **श्री गिरिजा कुमार माथुर** (1918 ई.)—आपका जन्म अशोक नगर (म. प्र.) में हुआ था। आजकल आप दिल्ली में रह रहे हैं। आपकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हैं। आरंभ में आपने गीतकार के रूप में पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त की थी। बाद में आप प्रयोगवादी कवि हो गए तथा अब मंच से सन्यस्त हैं।

(9) **श्री मोती बी. ए.** (1916 ई.)—आपका जन्म बरहज (जि. देवरिया) में हुआ था। वर्तमान में भी वहीं निवास कर रहे हैं। आप भी गीतकार के रूप में पर्याप्त लोकप्रिय रहे। अब मंच से प्राय विराग ले लिया है। आपकी भी कई पुस्तकें प्रकशित हैं।

(10) **कुं. श्रीपाल सिंह "क्षेम"** (1922 ई.)—आपका जन्म जौनपुर में हुआ था तथा वर्तमान में भी वहीं रह रहे हैं। "गीतों के राजकुमार" के रूप में आपने पर्याप्त लोकप्रियता अर्जित की है। आपकी लिखी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हैं।

(11) **श्रीमती चन्द्रमुखी ओझा "सुधा"** (1924 ई.)—आपका जन्म इलाहाबाद में हुआ था तथा वर्तमान में भी वहीं रह रही हैं। आप भी मंच की बड़ी लोकप्रिय कवयित्री रहीं। आपके काव्य-संकलन भी प्रकाशित हैं। अब मंच से प्रायः हट गई हैं।

चतुर्थ उप-वर्ग अर्थात् विविध रसों के कवियों में निम्न नाम प्रमुख हैं—

(1) **स्व. डा. भगवती चरण वर्मा** (1903-1981 ई.)—आपका जन्म लखनऊ में हुआ था तथा मृत्यु भी वहीं हुई। आप छायावाद के प्रमुख कवि माने जाते थे। कथाकार एवं नाटककार के रूप में भी विख्यात रहे। आपकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हैं, जिनमें "चित्रलेखा" (उपन्यास) की बड़ी प्रसिद्धि है।

(2) **डा. रामकुमार वर्मा** (1905 ई.)—आपका जन्म इलाहाबाद में हुआ था तथा वर्तमान में भी वहीं रह रहे हैं। आपके लिखे काव्य, नाटक, निबंध तथा आलोचना-विषयक अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हैं।

(3) **स्व. श्रीविष्णुदत्त मिश्र "तरंगी"** (1911-1976 ई.)—आपका जन्म जबलपुर में हुआ था तथा मृत्यु भोपाल में हुई। आपके "जय काश्मीर" आदि अनेक काव्य तथा अन्य विषयों के ग्रंथ प्रकाशित हैं।

(4) **श्री भवानी प्रसाद मिश्र** (1913 ई.)—आपका जन्म नरसिंहपुर (मध्यप्रदेश) में हुआ था। इन दिनों दिल्ली में रह रहे हैं। आपकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हैं। संवेदनशील कविताओं के लिए आपने विशेष प्रसिद्धि पाई है।

(5) **श्री हंसकुमार तिवारी** (1918-1983 ई.)—आपका जन्म पुरुलिया (बंगाल) में हुआ था तथा मृत्यु गया में हुई। आपकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हैं। एक सफल कवि होने के अतिरिक्त आप बंगला के अच्छे अनुवादक तथा कथाकार भी थे।

टिप्पणी—उक्त कवियों में अधिकांश सफल गद्य-लेखक भी रहे। इनमें से जीवित कुछ कवि मंच पर काव्य-पाठ करना छोड़ चुके हैं तथा कुछ अब भी मंच से सम्बद्ध हैं।

4. स्वतन्त्र-भारत के प्रमुख मंचीय-कवि

ब्रजक्षेत्र से असम्बद्ध जिन कवियों ने स्वतन्त्रता-प्राप्ति अर्थात् 1947 ई. के बाद से मंचीय-कवि के रूप में विशेष ख्याति अर्जित की उन्हें निम्नलिखित तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है—

(1) "क" **वर्ग**—वे कवि, जो सन् 1947 से 1962 ई. की अवधि में मंच पर प्रतिष्ठित हुए।

(2) "ख" **वर्ग**—वे कवि जो सन् 1962 से 1970 ई. के बीच मंचीय-कवि के रूप में मान्य हुए।

(3) "ग" **वर्ग**—वे कवि, जो सन् 1970 ई. के बाद मंचीय-कवि के रूप में प्रसिद्ध हुए।

रसों के आधार पर उक्त वर्गों के प्रमुख मंचीय-कवियों की नामावली निम्नानुसार है। स्मरणीय है कि इस सूची में ब्रजक्षेत्र से सम्बद्ध कवियों को सम्मिलित नहीं किया गया है।

(1) "क" वर्ग के कवि

(अ) **वीर रस**—सर्वश्री शिवसिंह "सरोज" (लखनऊ), हुकुमचन्द बुखारिया "तन्मय" (ललितपुर), राममनोहर त्रिपाठी (बम्बई) तथा शारदा प्रसाद "मनोज" (छतरपुर) आदि।

(आ) **हास्य रस**—सर्वश्री बेधड़क बनारसी (वाराणसी), शारदा प्रसाद "भुशुण्ड" (लखनऊ), भावसार बा (उज्जैन), जीवनलाल "विद्रोही" (भोपाल), विश्वनाथ "विमलेश" (झुंझुनू), निराधार (छिबरामऊ), दिनकर सोनवलकर (रतलाम), मिश्रीलाल जायसवाल (कटनी), आद्याप्रसाद मिश्र "उन्मुक्त" (प्रतापगढ़), स्व. जीजाबुन्देलखण्डी (दमोह), श्री सूंड़ फैजाबादी (आजमगढ़) तथा श्री गणेश शंकर बंधु (कानपुर) आदि।

(इ) **शृंगार रस**—सर्वश्री रामावतार त्यागी, रमानाथ अवस्थी, चिरंजीत, (दिल्ली), डा. शंभुनाथसिंह (वाराणसी), ठाकुर प्रसाद सिंह तथा कैलाश वाजपेयी (लखनऊ), शेखर (कलकत्ता), शिव बहादुर सिंह भदौरिया (रायबरेली), आनन्दी सहाय शुक्ल (रायगढ़), डा. जगदीश वाजपेयी (मुजफ्फर नगर), देवकराम "सुमन"

(सहारनपुर); लवकुश दीक्षित (सीतापुर), स्व. गोपीकृष्ण 'गोपेश' (इलाहाबाद), तथा श्रीमती सुमंगला मिश्रा (बदायूँ), आदि।

(ई) **विविध**—सर्वश्री कल्याण कुमार जैन "शशि" (रामपुर), क्षेमचन्द्र "सुमन" (दिल्ली), शिवकुमार श्रीवास्तव (सागर), निरंकार देव "सेवक" (बरेली), बालकृष्ण गर्ग 'बालक' (अजमेर), स्व. राधाकृष्ण (रांची), तथा ओमप्रकाश आनन्द (पटियाला) आदि।

टिप्पणी—उक्त कवियों में से प्रायः सभी के काव्य-संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। इस सूची में जिन कवियों के नाम के आगे स्व. लिखा है, वे दिवंगत हो चुके हैं तथा कुछ कवि आयु-वार्द्धक्य अथवा अन्य कारणों से वर्तमान में काव्य-मंच से सन्यास भी ले चुके हैं।

(2) "ख" वर्ग के कवि

(अ) **वीररस**—सर्वश्री राजबहादुर "विकल" (जलालाबाद), दामोदर स्वरूप "विद्रोही" (शाहजहांपुर), चन्द्रशेखर मिश्र (वाराणसी), छैलबिहारी वाजपेयी "वाण" (हरदोई), देवी प्रसाद "राही" (कानपुर), ब्रजेन्द्र अवस्थी (बदायूँ), शिवानन्द मिश्र बुन्देला (उरई), बालकवि बैरागी (मनासा-मन्दसौर), राजेन्द्र अनुरागी (भोपाल), लक्ष्मी नारायण कुशवाहा (काशीपुर), जगन्नाथ व्यास (मेरठ), प्रकाश दीक्षित (ग्वालियर), प्रकाश उप्पल (उज्जैन), रघुराजसिंह हाड़ा (झालावाड़), नलिनीश त्रिगुणायत (फर्रुखाबाद), राधारमन त्रिवेदी "रम्मन" (पीलीभीत), गिरिजाशंकर त्रिवेदी (देहरादून), कृष्णदत्त "करुणेश" तथा धर्मपाल "दत्त" (सहारनपुर) एवं श्रीकृष्ण मित्र (गाजियाबाद) आदि।

(आ) **हास्यरस**—सर्वश्री ओम् प्रकाश "आदित्य", डा. विश्वदेव शर्मा एवं श्रीमती सरला भटनागर (दिल्ली), माणिक वर्मा (हरदा), सुरेश उपाध्याय (होशंगाबाद), हुल्लड़ मुरादाबादी (वर्तमान में बम्बई), धर्मजीत "सबरस" (मुजफ्फर नगर), सुरेन्द्र मोहन मिश्र (चंदौसी), त्रिलोक गोयल (अजमेर), मधुप पाण्डेय (नागपुर), तथा मतवाला (फैजाबाद) आदि।

(इ) **श्रृंगाररस**—सर्वश्री पारस भ्रमर (बहराइच), भारत भूषण (मेरठ) विकल साकेती (फैजाबाद), सन्तोषानन्द तथा बाल स्वरूप "राही" (दिल्ली), पवन दीवान (राजिम) माहेश्वर तिवारी "शलभ" (वर्तमान में-मुरादाबाद), मंजुल मयंक (हमीरपुर), तारादत्त 'निर्विरोध तथा चन्द्रकुमार "सुकुमार" (जयपुर), हरीश निगम (उज्जैन), गिरिवरसिंह "भंवर" (देवास), सुल्तान मामा (तराना), रामचन्द्र शर्मा "अधीर" (रामपुर), सिन्दूर (कानपुर), चन्द्रसेन विराट् (उज्जैन), दुलीचंद शशि (हैदराबाद), विष्णुदत्त त्रिपाठी "राकेश" तथा श्रीमती स्नेहलता "स्नेह" (लखनऊ), ब्रजेश "चंचल" (कोटा), बेकल उत्साही (बलरामपुर), गजानन वर्मा तथा श्रीमती माया गोबिन्द (वर्तमान में-बम्बई), बटुक चतुर्वेदी (भोपाल), रामकृष्ण दीक्षित

"विश्व", श्याम श्रीवास्तव तथा श्रीबाल पांडेय (जबलपुर), रामकुमार शर्मा (छिन्दवाड़ा), शैलेन्द्र गोयल (वर्तमान में-सोनीपत), परमेश्वर "द्विरेफ" (चिड़ावा), उदयभानु 'हंस' (हरियाणा), ब्रजमोहन "सपूत" (शाहपुरा), महेन्द्रकुमार सिंह "नीलम" (वाराणसी), डा. परशुराम "विरही" (शिवपुरी), कुँवर बेचैन तथा श्रीमती मधुभारतीय (गाजियाबाद), स्व. उमाकान्त मालवीय (इलाहाबाद), डा. सुधारानी शर्मा एवं श्रीमती ज्ञानवती सक्सैना (बरेली), डा. रमासिंह (जोधपुर), श्रीमती पुखराज पाण्डेय (आगर-उज्जैन), श्रीमती मालती श्रीवास्तव (छतरपुर), श्रीमती श्यामा "सलिल" तथा श्रीमती राजकुमारी 'रश्मि' (ग्वालियर), श्रीमती सत्यादत्ता 'शर्मा' (करनाल), श्रीमती शीला मिश्रा (देहरादून), श्रीमती सावित्री शर्मा (लखनऊ), श्रीमती प्रभा मिश्रा (इलाहाबाद), उर्मिला निरखे (धार), तथा श्री दामोदर शर्मा (ग्वालियर) आदि।

(ई) **विविध**—सर्वश्री रमेश गुप्त (लखनऊ), अशोक चतुर्वेदी (झांसी), रवीन्द्र शलभ (मेरठ), शेरजंग गर्ग (दिल्ली), रमेश महबूब (इन्दौर), कैलाश मड़वैया (टीकमगढ़), हरिनन्दन चतुर्वेदी (कटनी), उपेन्द्र मिश्र (पन्ना) तथा बद्री विशाल गुप्त (पुवायां, शाहजहांपुर) आदि।

उक्त कवियों में से कुछ के काव्य-संकलन प्रकाशित हैं तथा शेष पत्र-पत्रिकाओं में छपते रहते हैं।

3. "ग" वर्ग के कवि

(अ) **वीर रस**—सर्वश्री धर्मपाल अवस्थी (कानपुर), सत्यनारायण सत्तन (इन्दौर), मोहदत्त साथी एवं उर्मिलेश शंखधार (बदायूँ), वेदप्रकाश "सुमन" (मुरादनगर), दुर्गेश दीक्षित (टीकमगढ़), संतोष दीक्षित (उरई), नरेन्द्र मिश्र (चित्तौड़) तथा हरिओम् पंवार (मेरठ) आदि।

(आ) **हास्यरस**—सर्वश्री हरिभक्तसिंह पंवार (बहराइच), अल्हड़ बीकानेरी एवं सुरेन्द्र शर्मा (दिल्ली), कवि हुक्का (बिजनौर), काका देवेश (बिल्सी-बदायूँ), सुरेश "नीरव" (ग्वालियर), नारायणदत्त "टोपा" (अमावता-इटावा), दशरथ पुजारी (जबलपुर), हरिभजनसिंह 'फटीचर' (झांसी), दिलजीत सिंह "रील" (भोपाल), ओम्प्रकाश "भौंपू" (उज्जैन) तथा श्री गुरुप्रसाद सक्सेना (नरसिंहपुर) आदि।

(इ) **श्रृंगार रस**—सर्वश्री राजा सन्तोषसिंह एवं सुरेन्द्र शर्मा (छतरपुर), शिवकुमार श्रीवास्तव "अर्चन" (रीवां), शतदल (कानपुर), गुणसागर विद्यार्थी (टीकमगढ़), कुमार शिव, श्रीमती पारस दुलारी तथा कुसुम जोशी (कोटा), रमेश यादव (भोपाल), इसाक "अश्क" (शाजापुर), कु. प्रेमलता "नीलम" (दमोह) तथा अम्बर प्रियदर्शी एवं श्रीमती विद्या 'रश्मि' (जबलपुर) आदि।

उक्त सूची के अधिकांश कवि अप्रकाशित हैं।

टिप्पणी—इस सूची में केवल उन्हीं कवियों के नाम सम्मिलित किए गए हैं, जिन्हें अन्तर्राज्यीय-स्तर पर काव्य-हेतु आमन्त्रित किया जाता है। □

प्रकरण 4

मंचीय हिन्दी-कविताओं का स्वरूप तथा प्रचार-प्रसार

1. हिन्दी-साहित्य के काल-विभाजन से हिन्दी कवि-सम्मेलनों का सम्बन्ध।
2. स्वतन्त्रता-पूर्व मंचीय हिन्दी-कविताओं का स्वरूप।
3. स्वातन्त्र्योत्तर कालीन मंचीय हिन्दी-कविताओं का स्वरूप।
4. मंचीय हिन्दी-कविताओं का प्रकाशन।
5. मंचीय हिन्दी-कविताओं का प्रसारण।

1. हिन्दी-साहित्य के काल-विभाजन से हिन्दी कवि-सम्मेलनों का सम्बन्ध

काल-विभाजन—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने "हिन्दी साहित्य के इतिहास" में संवत् 1050 वि. से पूर्व के समय को "आदिकाल" मानते हुए हिन्दी-कविता के निम्नलिखित 4 काल निर्धारित किये हैं—

(1) वीरगाथा-काल (सं. 1050 वि. से 1375 वि. तक)।

(2) भक्ति-काल (सं. 1375 वि. से 1700 वि. तक)।

(3) रीति-काल (सं. 1700 वि. से 1900 वि. तक)।

(4) आधुनिक-काल (सं. 1900 वि. से अद्यतन)।"[1]

काव्य की विभिन्न प्रवृत्तियों के आधार पर विद्वानों ने आधुनिक-काल का विभाजन निम्नानुसार किया है—

---

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, ले. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, सोलहवां संस्करण सं 2025 वि., पृ. 3

टिप्पणी—हिन्दी-साहित्य के प्रारंभिक-काल के विषय में विद्वानों में मतभेद हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जहाँ इसका प्रारंभ सं. 1050 वि. से मानते हैं, वहाँ राहुल सांकृत्यायन, डा. रामकुमार वर्मा तथा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी प्रभृति विद्वान् इसका प्रारंभिक-काल सातवीं-आठवीं शताब्दी से मानते हैं। इसी प्रकार "वीरगाथा काल" के नामकरण के विषय में भी विद्वानों में मतभेद हैं। कुछ विद्वानों ने इसका नाम "चारणकाल" रक्खा है तो कुछ ने "आदिकाल" नाम दिया है।

(क) भारतेन्दु-युग (सन् 1868 ई. से 1903 ई. तक)।
(ख) द्विवेदी-युग (सन् 1903 ई. से 1920 ई. तक)।
(ग) छायावाद-युग (सन् 1920 ई. से 1935 ई. तक)।
(घ) प्रगतिवाद-युग (सन् 1935 ई. से 1943 ई. तक)।
(च) प्रयोगवाद-युग (सन् 1943 ई. से 1953 ई. तक)।
(छ) नई कविता-युग (सन् 1953 ई. से अद्यतन)।

काल-विभाजन से कवि-सम्मेलनों का संबंध—पूर्वोक्त हिन्दी-साहित्य के काल-विभाजन के आधार पर विचार किया जाय तो हिन्दी कवि-सम्मेलनों का प्रारंभ "छायावादी-युग" से होता है।

मंचीय हिन्दी-काव्य की भाषा और शैली—रीति-काल तक हिन्दी-काव्य की भाषा ब्रजभाषा ही रही। "भारतेन्दु-युग" में ब्रजभाषा के साथ ही खड़ी बोली में भी काव्य-सृजन का सूत्रपात हुआ, परन्तु काव्य की प्रमुख भाषा ब्रजभाषा ही बनी रही। "द्विवेदी-युग" में ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली—दोनों में समान रूप से काव्य-सृजन किया गया, परन्तु "छायावादी-युग" में खड़ी बोली ही काव्य-सृजन की मुख्य भाषा बन गई। 'प्रगतिवादी-युग' में सर्वत्र खड़ी बोली का वर्चस्व-स्थापित हो गया तथा ब्रजभाषा एक क्षेत्रीय-भाषा के रूप में सिमट कर रह गई। वर्तमान समय में खड़ी बोली के एक हज़ार कवियों के पीछे ब्रजभाषा का कोई एक कवि ही दिखाई देता है। अस्तु, भाषा के आधार पर मंचीय-काव्य हिन्दी-साहित्य के काल-विभाजन का ही अनुगामी बना रहा है।

परन्तु शैली की दृष्टि से मंचीय हिन्दी-काव्य का उक्त 'काल-विभाजन से कोई सम्बन्ध प्रतीत नहीं होता। कारण, ऐतिहासिक-दृष्टि से छायावाद-युग के तिरोहित हो जाने पर भी हिन्दी कवि-सम्मेलनों के मंच पर वह आज भी अपनी पूरी गरिमा के साथ प्रतिष्ठित है। इतना ही नहीं, रीति-कालीन शैली का काव्य भी कवि-सम्मेलनों में खूब पसन्द किया जाता है, बशर्ते उसका प्रस्तुतीकरण अच्छे ढंग से किया गया हो।

हिन्दी काव्य-मंच के ख्याति प्राप्त गीतकारों में सर्वश्री गोपाल सिंह 'नेपाली' से लेकर डा. हरिवंशराय 'बच्चन', बलवीर सिंह "रंग", गोपाल दास "नीरज", रामावतार त्यागी, रमानाथ अवस्थी, पारस "भ्रमर", भारत भूषण, सोमठाकुर तथा किशन सरोज तक को छायावादी शैली का ही कवि कहा जा सकता है। इन कवियों में से कुछ ने जब प्रयोगवादी अथवा "नई कविता" शैली के गीत लिखकर मंच से सुनाए तो उन्हें पसन्द नहीं किया गया, फलतः इन्हें प्रयोगधर्मा-रचनाएँ सुनानी बन्द कर देनी पड़ीं।

इसी प्रकार प्रयोगवादी तथा नई-कविता शैली के कवियों को (जो पत्र-पत्रिकाओं में प्रायः ही प्रकाशित होते रहते है) जब-जब कवि-सम्मेलनों के मंच पर

काव्य-पाठ के लिए आमंत्रित किया गया, तब-तब वे प्रायः असफल ही सिद्ध हुए हैं। अपवाद रूप में वीरेन्द्र मिश्र तथा श्री कैलाश वाजपेयी जैसे प्रयोगवादी गीतकार अपने स्वर-माधुर्य के कारण कुछ समय तक तो मंच पर चले, परन्तु रचनाओं की अतिशय बौद्धिकता एवं प्रयोगधर्मिता ने अन्ततः इन्हें भी मंच से हटने अथवा कम बुलाये जाने की स्थिति में ले जाकर खड़ा कर दिया।

उक्त विवेचन से निष्कर्ष निकलता है कि छायावादी शैली के गीतकार ही कवि-सम्मेलन के मंच पर अभी तक सफल होते रहे है तथा "प्रयोगवाद", "नई कविता" अथवा अन्य किसी वाद विशेष से संबंधित काव्य को हिन्दी कवि-सम्मेलनों का मंच अभी तक आत्मसात् नहीं कर पाया है। यही बात शृंगार के अतिरिक्त अन्य रसों के कवियों पर भी लागू होती है।

छायावादी-युग में प्रतिष्ठित हुए वीररस के कवि श्री श्यामनारायण पाण्डेय जैसी शैली में ही वीररस की कविताएँ लिखने तथा सुनाने वाले सर्वश्री (स्व.) डा. आनन्द, (स्व.) शिशुपालसिंह "शिशु", राजेश दीक्षित, रामकुमार चतुर्वेदी "चंचल", (स्व.) आनन्द मिश्र, ब्रजेन्द्र अवस्थी, दामोदर स्वरूप 'विद्रोही' तथा उदयप्रतापसिंह तक को जितनी मंचीय-लोकप्रियता प्राप्त हुई, उतनी किसी प्रयोगधर्मा वीररस के कवि को नही मिल सकी।

हास्यरस में भी छायावादी-युग के स्व. 'बेढब' बनारसी की शैली को ही आगे बढ़ाने वाले सर्वश्री रमई काका, गोपालप्रसाद व्यास, बेधड़क बनारसी, कवि कुल्हड़, काका हाथरसी, माणिक वर्मा, हुल्लड़ मुरादाबादी, शैल चतुर्वेदी तथा सुरेश उपाध्याय आदि ही मंचीय-कवि के रूप में ख्याति प्राप्त कर सके। प्रयोगवादी शैली के हास्य-व्यंग्यकार भी मंच पर असफल ही सिद्ध हुए है।

और तो और, आधुनिक हिन्दी कवि-सम्मेलनों के मंच पर रीतिकालीन-शैली में ब्रजभाषा के छन्दों का पाठ करने वाले (स्व.) रामलला "ललाकवि", (स्व.) थान-सिंह शर्मा "सुभाषी", श्री गोबिन्द चतुर्वेदी, श्री श्यामाचरण "श्याम", श्री राजेश दीक्षित तथा श्री सोमठाकुर आदि कवि भी श्रोताओं द्वारा सदैव समादृत होते रहे हैं।

उक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि हिन्दी कवि-सम्मेलनों के मंचीय-इतिहास का हिन्दी काव्य-साहित्य के काल-विभाजन से कोई सम्बन्ध नहीं है। उसकी शैली का अपना एक प्रथक् ही अस्तित्व है।

स्वतन्त्रता-पूर्व मंचीय हिन्दी-कविताओं का स्वरूप

वर्ण्य-विषय—सार्वजनिक हिन्दी कवि-सम्मेलनों के उद्‌भव (सन् 1922 ई.), से पूर्व आयोजित होने वाली कवि-गोष्ठियो में कविता के वर्ण्य-विषय मुख्यतः प्रकृति-

सौन्दर्य, भगवद्भक्ति, नायिका-भेद, प्रणय-लीलाएँ तथा पौराणिक एवं ऐतिहासिक आख्यान ही हुआ करते थे। कुछ रचनाएँ सामाजिक-कुरीतियों तथा धार्मिक-पाखण्डों के विरोध में भी लिखी जाती थी। प्रकृति-चित्रण-काव्य के लिए पं. श्रीधर पाठक, भक्ति-काव्य के लिए पं. अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध", प्रणय-काव्य के लिए श्री गुरुभक्त सिंह "भक्त", ऐतिहासिक-काव्य के लिए श्री श्यामनारायण पाण्डेय तथा पौराणिक-काव्य के लिए श्री रामधारी सिंह "दिनकर" ने विशेष ख्याति अर्जित की थी। सामाजिक-कुरीतियों तथा धार्मिक-पाखण्डों के विरुद्ध कविताएँ लिखने वालों में पं नाथूराम शंकर शर्मा "शंकर" का नाम प्रसिद्ध रहा।

सन् 1916 ई. जब महात्मा गांधी का भारतीय-राजनीति में प्रवेश हुआ तो जन-साधारण के हृदय में विदेशी-शासन के प्रति घृणा एवं विद्रोह के साथ ही स्वराज्य-प्राप्ति की लालसा का अभ्युदय भी हुआ, जिसके फलस्वरूप मंचीय हिन्दी-काव्य के स्वरूप में भी परिवर्तन के लक्षण दृष्टिगोचर हुए।

स्वतन्त्रता-पूर्व की मंचीय हिन्दी-कविताओं के स्वरूप में आये हुए परिवर्तनों को निम्नलिखित कालों में विभाजित किया जा सकता है—

(क) सन् 1922 ई. से 1934 ई. तक की कविताएँ।

(ख) सन् 1935 ई. से 1941 ई. तक की कविताएँ।

(ग) सन् 1942 ई. से 1947 ई. तक की कविताएँ।

(क) सन् 1922 ई. से 1934 ई. तक—इस अवधि में मंचीय-काव्य से प्रकृति-चित्रण तथा भक्ति-विषयक रचनाएँ प्रायः विलुप्त हो गईं। सामाजिक एवं धार्मिक अन्ध-विश्वासों के विरुद्ध भी कम सुनाया जाने लगा तथा राष्ट्रीय-भक्तिपरक रचनाओं ने प्रमुख स्थान प्राप्त कर लिया।

(ख) सन् 1935 ई. से 1941 ई. तक—इस अविध में मंचीय-काव्य के प्रमुख विषय रहे—(1) राष्ट्रीयता एवं (2) मांसल-प्रणय। "राष्ट्रीयता" की परिधि में विदेशी-शासन के प्रति घृणा एवं विद्रोह की भावना, स्वराज्योपलब्धि की लालसा, राष्ट्र-नेताओं का स्तवन, भारत माता की वंदना तथा पौराणिक एवं ऐतिहासिक कथानकों के माध्यम से राष्ट्र-प्रेम को अभिव्यक्त करने वाली कविताएँ रहीं तथा "मांसल-प्रणय" के अन्तर्गत मान-मनुहार, विरह-मिलन, रूप-सौन्दर्य, मधुपान आदि विषय मुख्य रहे। इस अवधि के राष्ट्रीय रचनाकार मांसल-प्रणय विषयक कविताओं का भी सृजन करते थे, परन्तु वे उन्हें मंच से प्रायः सुनाते नहीं थे। जबकि मात्र मांसल-प्रणय सम्बन्धी रचनाओं वाले कवियों का राष्ट्रीय-काव्य-सृजन से कोई सम्बन्ध ही नहीं रहा और यदि किसी का थोड़ा-बहुत रहा भी तो वह राष्ट्रीय-रचनाकार के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त नहीं कर पाया।

सन् 1935 ई. से 1941 ई. तक की अवधि के राष्ट्रीय रचनाकारों में सर्वश्री पं. गया प्रसाद शुक्ल "त्रिशूल", पं. माखनलाल चतुर्वेदी, श्री बालकृष्ण शर्मा "नवीन", पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान, श्री जगन्नाथ प्रसाद "मिलिन्द", पं. श्यामनारायण पाण्डेय, श्री रामधारी सिंह "दिनकर" तथा श्री सोहन-लाल द्विवेदी के नाम मंचीय-कवि के नाते उल्लेखनीय हैं। इसी अवधि में मांसल-प्रणय विषयक काव्य के रचनाकारों में सर्वश्री गोपालसिंह नेपाली, डा. हरिवंशराय "बच्चन", रामेश्वर शुक्ल "अंचल", श्रीमती सुमित्राकुमारी सिन्हा तथा श्री जानकी-बल्लभ शास्त्री ने मंचीय-कवि के रूप में विशेष ख्याति अर्जित की।

उक्त अवधि में कुछ हास्य-व्यंग्य के रचनाकार भी रहे, जिनमें सर्वश्री कृष्णदेव प्रसाद गौड़ "बेढब बनारसी", कांता नाथ पांडेय 'चोंच' तथा रमई काका आदि के नामों का उल्लेख किया जा सकता है, परन्तु ऐसे हास्य-कवि राष्ट्रीय रचनाकारों अथवा मांसल-प्रणय के कवियों जैसी विशेष ख्याति अर्जित नहीं कर पाये, क्योंकि यह समय मुख्यतः ओजस्वी तथा गौणतः श्रृंगारी कविताएँ पसन्द करने का ही बना रहा।

(ग) सन् 1942 ई. से 1947 ई. तक—इस अवधि में हिन्दी काव्य-मंच पर "राष्ट्रवाद" का प्रभाव सर्वाधिक रहा। श्रृंगार तथा हास्य-व्यंग्य के कुछ कवि भी मंच पर रहे, परन्तु उनका स्थान तथा प्रभाव गौण ही था। इस अवधि में पुरानी पीढ़ी के अतिरिक्त नई पीढ़ी के जिन कवियों ने अखिल भारतीय स्तर पर मंचीय-ख्याति अर्जित की, उनमें से कुछ प्रमुख नाम इस प्रकार हैं—

श्री सुनहरी लाल "पराग" (एटा), श्री रामभरोसेलाल पाण्डेय "पंकज" (पीलीभीत), श्री गजराजसिंह 'सरोज' (सिकन्दराराऊ-अलीगढ़), डा. ओमप्रकाश दीक्षित (सहारनपुर), श्री रघुवीर शरण "मित्र" (मेरठ), डा. शिवमंगल सिंह "सुमन" (उज्जैन), श्री शिशुपाल सिंह "शिशु" (इटावा), डा. आनन्द (जालौन), श्री हुकुम-चन्द बुखारिया "तन्मय" (ललितपुर) तथा श्री राजेश दीक्षित (आगरा)—ये सभी राष्ट्रीय धारा के ओजस्वी-कवि के रूप में प्रसिद्ध हुए।

सर्वश्री बलवीरसिंह 'रंग' (एटा), स्व. शील चतुर्वेदी (झाँसी), श्री गोपालदास "नीरज" (अलीगढ़) तथा श्री जगदम्बा प्रसाद "त्यागी" (वर्तमान में—भोपाल) ने श्रृंगारी गीतकार के रूप में पर्याप्त ख्याति अर्जित की।

सर्वश्री गोपाल प्रसाद व्यास (दिल्ली), बेधड़क बनारसी (बनारस), कुंजबिहारी पाण्डेय (बड़नगर—उज्जैन) एवं श्री चतुरेश (दतिया) हास्य-व्यंग्यकार के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हिन्दी काव्य-मंच पर सन् 1922 ई. से 1934 ई. तक विविध रसों तथा विविध विषयों की कविताएँ पढ़ी जाती रहीं, परन्तु

सन् 1935 ई. से सन् 1947 ई. तक मुख्यतः राष्ट्रीय विषयों से सम्बन्धित रचनाओं का ही प्राधान्य रहा। शृंगार तथा हास्य-व्यंग्य की कविताएँ क्रमशः द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करती रहीं।

प्रगति एवं प्रयोगवादी कविताओं की असफलता—सन् 1935 ई. से 1943 ई. तक के "प्रगतिवादी युग" में शोषण, उत्पीड़न, सामन्तवाद, साम्राज्यवाद तथा पूँजीवाद के विरोध और समाजवाद एवं साम्यवाद के स्वागत में कविताएँ लिखने की प्रथा आरंभ हुई।

सन् 1943 ई. के बाद आरंभ होने वाले "प्रयोगवादी युग" में हिन्दी-कविता के क्षेत्र में नये-नये प्रयोग भी किए गए; परन्तु इन दोनों—प्रगतिवाद तथा प्रयोगवाद—वर्गों की कविताएँ हिन्दी-कवि-सम्मेलनों के मंच पर सफल नहीं हो सकीं और वे पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं में ही सिमट कर रह गईं। इसके निम्नलिखित मुख्य कारण रहे—

(1) स्वतन्त्रता-पूर्व कवि-सम्मेलनों में उपस्थित होने वाले अधिकांश श्रोताओं का बौद्धिक-स्तर इतना उन्नत नहीं था कि वे क्लिष्ट एवं गरिष्ठ भाषा में लिखित प्रगतिवादी अथवा प्रयोगवादी काव्य को पचा पाते।

(2) विदेशी-शासन के प्रति विद्रोह की भावना रहते हुए भी जन-सामान्य के हृदय में सामन्तवाद तथा पूँजीवाद के प्रति विशेष घृणा नहीं थी।

(3) जिस "कांग्रेस" संगठन के नेतृत्व में राष्ट्रीय स्वतन्त्रता-संग्राम लड़ा जा रहा था, उसमें आभिजात्य, पूँजीपति, धनी, दरिद्र, मालिक, मजदूर, शिक्षित तथा अशिक्षित सभी वर्गों के स्त्री-पुरुष कंधे से कंधा मिलाकर कार्यरत थे। ऐसी स्थिति में, वर्ग-संघर्ष की भावना उनके मुख्य-लक्ष्य (विदेशी-दासता की समाप्ति) की प्राप्ति में बाधक बन सकती थी। अतः वर्ग-संघर्ष को भड़काने वाली कविताएँ मंचीय-श्रोताओं के आकर्षण का केन्द्र नहीं बन सकीं।

(4) प्रगतिशील तथा प्रयोगवादी शैली के अधिकांश कवि साम्यवादी-विचार-धारा से प्रेरित अथवा उस भारतीय साम्यवादी दल के सदस्य या भक्त थे, जो मुख्यतः 'रूसी साम्यवादी दल' से प्रेरणा ग्रहण करता था। स्वतन्त्रता-पूर्व द्वितीय विश्वयुद्ध के समय भारतीय साम्यवादी दल ने गांधीजी तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की विचारधारा के विरुद्ध भारतवासियों से अंग्रेजी-शासन की सहायता करने का आह्वान भी किया था तथा 'साम्राज्यवादी-युद्ध' को "जन-युद्ध" की संज्ञा दे डाली थी। अतः ऐसे दल से सहानुभूति रखने वाले हिन्दी कवियों की लेखनी अथवा उनके मुख से निकले हुए किसी भी शब्द को सुनने के लिए तत्कालीन भारतीय-जन-मानस तैयार नहीं था। इसी कारण उस समय के प्रगतिवादी एवं प्रयोगवादी हिन्दी-कवि मंच पर असफल सिद्ध हुए।

(5) प्रगतिवादी एवं प्रयोगवादी कवियों की काव्य-पाठ शैली अनाकर्षक थी, इस कारण भी वे कवि-सम्मेलनों के मंच पर अपना कोई स्थान नहीं बना सके।

3. स्वातन्त्र्योत्तर-कालीन मंचीय हिन्दी-कविताओं का स्वरूप

15 अगस्त, 1947 को अंग्रेजों के चले जाने पर भारत स्वतन्त्र हुआ तथा उसके कुछ समय बाद ही हिन्दी 'राष्ट्र-भाषा' के गौरव पूर्ण पद पर प्रतिष्ठित हुई, फलस्वरूप हिन्दी पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन में अभिवृद्धि होने के साथ ही आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से भी हिन्दी कविताओं के प्रसारण तथा कवि-सम्मेलनों के आयोजनों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि होने लगी। हिन्दी-काव्य-जगत् में नवीन प्रतिभाओं के प्रस्फुटन के साथ ही हिन्दी काव्य-मंच पर अनेक नये कवियों का पदार्पण होने लगा। इन सब के परिणाम स्वरूप मंचीय-काव्य के क्षेत्र में अनेक परिवर्तन दृष्टिगोचर हुए।

परिवर्तन का युग—स्वतन्त्रता-प्राप्ति से पूर्व तक "राष्ट्रीय" कही जाने वाली अधिकांश कविताएँ स्वाधीनता के बाद केवल "ऐतिहासिक-महत्त्व" की बन कर ही रह गईं। सामयिक-परिवर्तन ने उनकी मंचीय-उपयोगिता को समाप्त कर दिया, जिसके परिणाम स्वरूप किसी समय 'राष्ट्रीय-कवि' के रूप में प्रख्यात रहे अनेक ऐसे कवि, जो अपने काव्य-सृजन में समयानुकूल परिवर्तन नहीं ला सके, शनैः-शनैः काव्य-मंच से तिरोहित होने लगे। कुछ कवि अपनी वृद्धावस्था के कारण तो कुछ पूर्णतः राजनीतिक-क्षेत्र में कार्यरत हो जाने के कारण भी मंच से हट गये। ऐसे मंचीय-कवियों में (स्व.) माखनलाल चतुर्वेदी, (स्व.) बालकृष्ण शर्मा "नवीन", (स्व.) गजराजसिंह "सरोज", स्व. रामभरोसे लाल पाण्डेय 'पंकज' एवं सर्वश्री सोहनलाल द्विवेदी, रामचरण हयारण "मित्र", सुनहरी लाल "पराग", श्यामनारायण पाण्डेय तथा तन्मय बुखारिया के नामों का उल्लेख किया जा सकता है।

स्वातन्त्र्योत्तर-काल में भी जो राष्ट्रीय-रचनाकार समय के साथ अपने क़दम मिला कर चले, वे मंच पर यथास्थान बने रहे। ऐसे कवियों में (स्व.) रामधारी सिंह "दिनकर", (स्व.) डा. आनन्द. (स्व.) शिशु पाल सिंह "शिशु", श्री शिवमंगल सिंह "सुमन" एवं श्री राजेश दीक्षित के नाम उल्लेखनीय हैं।

स्वातन्त्र्योत्तर कालीन मंचीय हिन्दी-काव्य—स्वातन्त्र्योत्तर कालीन मंचीय हिन्दी-काव्य को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है—

(क) सन् 1947 से 1950 ई. तक की कविताएँ।

(ख) सन् 1950 से 1962 ई. तक की कविताएँ।

(ग) सन् 1962 से 1971 ई. तक की कविताएँ।

(घ) सन् 1971 से 1975 ई. तक की कविताएँ।

(ङ) सन् 1975 से 1977 ई. तक की कविताएँ।

(च) सन् 1977 से अब तक की कविताएँ।

स्वातन्त्र्योत्तर कालीन मंचीय हिन्दी-कविताओं का उक्त वर्गीकरण देश की राजनीतिक परिस्थितियों में आये सामयिक-परिवर्तनों के आधार पर किया गया है, जिनके कारण मंचीय हिन्दी-काव्य प्रभावित होता रहा है। साथ ही, यह भी ज्ञातव्य है कि उक्त परिवर्तन केवल राष्ट्रीय-विषयों से सम्बन्धित कविताओं में मुख्य रूप से परिलक्षित हुआ है। कुछ परिवर्तन सामयिक सन्दर्भों में लिखी गई व्यंग्य-रचनाओं में भी आया है, परन्तु शृंगारी-कविताएँ अभी तक अपने पुराने ढर्रे पर ही चल रही हैं; उनका इस परिवर्तन से कोई सम्बन्ध नहीं रहा।

सन् 1947 ई. से 1950 ई. तक राष्ट्रीय मंचीय-काव्य के प्रमुख वर्ण्य-विषय नवागत-स्वतन्त्रता का अभिनन्दन, स्वतन्त्रता-संग्राम काल के सेनानियों तथा शहीदों को श्रद्धांजलि एव प्रशस्ति-गायन तथा राष्ट्र-वन्दन आदि रहे।

सन् 1950 ई. तक स्वदेशी-शासन के तीन वर्ष बीत जाने पर भी जब देशवासियों को "सुराज्य" की झलक देखने को नहीं मिली तथा जन-साधारण की कठिनाइयाँ घटने की बजाय और अधिक बढ़ने लगीं तो जन-मानस के साथ ही मंचीय-कवि के हृदय में भी स्वदेशी-शासन के प्रति विद्रोह की भावना घर करने लगी। ऐसी स्थिति में स्वदेशी-शासन के अनुचित क्रिया-कलापों के विरुद्ध आलोचनात्मक कविताएँ लिखने का युग प्रारंभ हुआ। हिन्दी काव्य-मंच पर ऐसी कविताएँ लिखने-पढ़ने का सर्वप्रथम सूत्रपात किया, तब के अपेक्षाकृत तरुण-कवि श्री राजेश दीक्षित ने। राजेशजी ने हिन्दी वीर-काव्य को पौराणिक तथा ऐतिहासिक विषयों की सीमा से बाहर निकालकर, उसे सामयिक, राजनीतिक, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय तथा सामाजिक समस्याओं के साथ सम्बद्ध कर दिया। इस प्रकार श्री राजेश दीक्षित हिन्दी वीर-काव्य का आधुनिकीकरण करने वाले प्रथम ख्याति-प्राप्त मंचीय-कवि के रूप में प्रतिष्ठित हुए। बाद में इसी दिशा में (स्व.) शिशुपाल सिंह "शिशु", (स्व.)डा. आनन्द तथा (स्व.) बंशीधर शुक्ल आदि उनसे बड़ी आयु वाले कवि भी अग्रसर हुए। यह धारा सन् 1962 ई. तक तीव्रगति से प्रवहमान रही।

सन् 1962 ई. में 'भारत-चीन युद्ध' के समय हिन्दी-कवि-सम्मेलनों के इतिहास में एक बड़ा परिवर्तन दृष्टिगोचर हुआ। सैकड़ों वर्षों की गुलामी से छुटकारा पाने के बाद देश के समक्ष यह पहला अवसर था, जब उस पर एक तथाकथित-मित्र तथा शक्तिशाली पड़ोसी देश ने अकल्पित-आक्रमण किया था। उस संकट-काल में सभी देशवासी अपने वैचारिक-मतभेदों को भुलाकर, राष्ट्र-रक्षार्थ एकजुट हो गए। जो लोग शासन के विरोधी थे, उन्होंने भी शासकों के कंधे के साथ अपना कंधा लगा दिया। ऐसे अवसर पर मंचीय-हिन्दी-कवियों ने भी अपने राष्ट्रीय-कर्तव्य का

यथोचित पालन किया और वे देश की जनता का मनोबल ऊँचा बनाये रखने हेतु अपनी लेखनी में अंगार भरकर, शत्रु को ललकारते हुए, कवि-सम्मेलनों के मंच पर ओजस्वी काव्य-पाठ रूपी हुंकारें भरने लगे। उस युद्ध के समय देशभर में पहली बार "वीररस के कवि-सम्मेलन" विपुल संख्या में आयोजित किए गये, जिनमें वीररस के अखिल भारतीय ख्याति प्राप्त कवियों—(स्व.) शिशुपाल सिंह "शिशु", (स्व.) डा. आनन्द तथा श्री राजेश दीक्षित आदि के अतिरिक्त कुछ अन्य रसों के कवियों ने भी ओजस्वी-रचनाओं का पाठ किया।

इस अवधि में तरुण-पीढ़ी के कुछ ऐसे ओजस्वी-कवि भी उभरकर मंच पर आये, जिन्होंने बाद में अल्प समय में ही अखिल भारतीय ख्याति अर्जित करली। ऐसे कवियों में (स्व०) आनन्द मिश्र, ब्रजेन्द्र अवस्थी, रामकुमार चतुर्वेदी "चंचल", राजबहादुर "विकल", दामोदर स्वरूप "विद्रोही", राधेश्याम "प्रगल्भ" तथा बालकवि बैरागी के नाम उल्लेखनीय हैं।

इसी अवधि में जिन श्रृंगार तथा हास्य-व्यंग्य के ख्यातनामा कवियों ने कतिपय ओजस्वी रचनाएँ भी लिखीं-पढ़ीं उनमें सर्वश्री नीरज, देवराज "दिनेश",तथा वीरेन्द्र मिश्र के नाम प्रमुख हैं। अन्य मंचीय कवियों में से अधिकांश लोग अपना पुराना राग ही अलापते रहे।

सन् 1965 ई. से 1971 ई. तक की अवधि में दो बार 'भारत-पाक युद्ध' हुए। अत: इस काल में भी कवि-सम्मेलनों के मंच पर वीररस के कवियों का ही प्राधान्य रहा। श्रृंगारी कवि द्वितीय तथा हास्य-व्यंग्य के कवि तृतीय स्थान पर बने रहे।

सन् 1971 ई. से 1975 ई. तक मंचीय हिन्दी-काव्य व्यावसायिकता एवं गुटबन्दी (जिनके विषय में आगे लिखा जाएगा) के कारण साहित्यिक-दृष्टि से शोचनीय तथा निम्न-स्तर की रचनाओं का रहा। यद्यपि इन (व्यावसायिकता एवं गुटबन्दी) का हिन्दी काव्य-मंच पर प्रवेश सन् 1947 ई. से ही आरम्भ हो गया था, परन्तु सन् 1970 ई. के बाद ये बुराइयाँ अपने कुत्सित रूप में प्रकट होने लगीं। सन् 1962 ई. के बाद मंच पर प्रसिद्धि प्राप्त करने वाले अधिकांश रचनाकारों ने अपनी साहित्यिक-दरिद्रता पर पर्दा डालने के उद्देश्य से फूहड़-चुटकुलेबाजी, फिल्मी-धुनों पर आधारित तुकबन्दियों तथा अश्लीलता की सीमा को भी पार कर जाने वाली तथाकथित-रचनाओं को मंचीय-काव्य के रूप में प्रस्तुत कर, काव्य-श्रोताओं की सा[illegible] को विकृत करना आरंभ कर दिया। अपने दन्द-फन्दों के बल पर ऐसे तथाकथित-कवि सच्चे-कवियों की तुलना में आर्थिक-दृष्टि से लाभान्वित भी खूब हुए, क्योंकि भौंड़ेपन के अधिकाधिक प्रदर्शन के कारण असाहित्यिक एवं बौद्धिक दृष्टि से दरिद्र श्रोताओं में उनकी माँग बहुत बढ़ गई; जिसके कारण उन्हें यथार्थ-कवियों की

तुलना में कहीं अधिक पारिश्रमिक देकर, अधिक स्थानों पर आमन्त्रित किया जाने लगा। ऐसे कवियों के कारण जिस अनुपात में असाहित्यिक एवं निम्न-बौद्धिक स्तरीय श्रोताओं की संख्या में वृद्धि हुई, उससे भी अधिक अनुपात में साहित्यिक-रुचि के श्रोता कवि-सम्मेलन से दूर हटते चले गए। इस प्रकार उक्त अवधि में हिन्दी कवि-सम्मेलन अपनी साहित्यिक-प्रतिष्ठा को खोकर, असाहित्यिक एवं सस्ते मनोरंजन के केन्द्र बन कर रह गये।

सन् 1975 ई. से 1977 ई. तक देश में "आपात-कालीन कानून" लागू रहे। अतः इस अवधि में हिन्दी काव्य-मंच के राष्ट्रीय-रचनाकार सर्वाधिक संत्रस्त रहे। कारण, अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता को प्रतिबन्धित कर दिये जाने से वे अपने राष्ट्र तथा समाज में जो कुछ देख-सुन तथा अनुभव कर रहे थे, उसे अपनी लेखनी तथा वाणी द्वारा व्यक्त न करने को बाध्य कर दिए गये थे। अतः इस अवधि में जो कवि-सम्मेलन आयोजित हुए, उनमें अधिकांश मंचीय-कवियों ने या तो शासन की प्रशंसा में काव्य-पाठ किया अथवा फिर राजनीति से भिन्न विषयों की कविताएँ पढ़ी जाती रहीं। सर्वश्री नागार्जुन तथा राजेश दीक्षित जैसे एकाध निर्भीक कवि ही ऐसे थे, जिन्होंने उक्त समय में भी जन-भावनाओं को प्रकट करने वाली रचनाओं का पाठ कर, अपने कवि-धर्म का यथोचित पालन किया तथा इसी कारण इन्हें विभिन्न प्रकार की कठिनाइयों का शिकार भी बनना पड़ा। इसके विपरीत, स्वयं को "राष्ट्रीय-कवि" घोषित करने वाले अधिकांश मंचीय-कवियों की वाणी पर उक्त अवधि में या तो ताला लगा रहा अथवा वे "कवि क्या होता है?", "कवि क्या कर सकता है?" आदि शीर्षकों वाली "तथाकथित-राष्ट्रीय-कविताएँ" सुनाकर, स्वयं को निर्भीक-कवि सिद्ध करने का ढोंग रचते रहे। इसी अवधि में कुछ ऐसे बहुरूपिये कवि भी प्रकट हुए, जो आपात स्थिति की घोषणा से पूर्व तक तो बड़े जोर-शोर से शासन की आलोचना किया करते थे, परन्तु फिर रातों-रात बदल कर "बीस सूत्रीय रचनाकार" अथवा शासन के घोर प्रशंसक बन गए।

सन् 1977 ई. से बाद का समय राजनीतिक उथल-पुथल के कारण एक संक्रान्ति-काल जैसा रहा। इस अवधि में विगत तीस वर्षों से चले आ रहे कांग्रेसी-शासन की समाप्ति हुई तथा लगभग ढाई वर्ष तक विपक्षी-दल सत्ता के आसन पर आरूढ़ रहे। इस सत्ता-परिवर्तन के समय हिन्दी-काव्य-मंच के राष्ट्रीय-रचनाकारों ने देश के जन-जीवन में सुखद-परिवर्तन आने की जो आशाएँ की थीं, वे फलीभूत नहीं हो सकीं तथा सन् 1980 ई. में कांग्रेस पुनः सत्तारूढ़ हो गई।

वर्तमान समय में हिन्दी काव्य-मंच का राष्ट्रीय-रचनाकार जैसे किंकर्तव्य-विमूढ़ता की स्थिति में दिखाई दे रहा है और यह निर्णय ही नहीं कर पा रहा है कि अब उसे क्या लिखना चाहिए। इसके विपरीत शृंगारी कवि अपने पुराने ढर्रे पर ही चल रहे हैं तथा हास्यरस के कवि अधिकाधिक फूहड़ता फैलाने में प्रयत्नशील हैं।

4. मंचीय-हिन्दी-कविताओं का प्रकाशन

साहित्य-प्रकाशन के दो प्रमुख माध्यम हैं—(1) पुस्तकें तथा (2) पत्र-पत्रिकाएँ। मंचीय-कविताओं का प्रकाशन भी इन्हीं दोनों माध्यमों से हुआ है।

पुस्तक रूप में प्रकाशित कवि—स्वतन्त्रता-पूर्व पुरानी पीढ़ी के प्रायः सभी ख्याति-प्राप्त मंचीय कवियों-सर्वश्री पं. गया प्रसाद शुक्ल "सनेही", पं. अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध", पं. माखनलाल चतुर्वेदी, गुरुभक्तसिंह "भक्त", बालकृष्ण शर्मा "नवीन", अनूप शर्मा, रामधारी सिंह "दिनकर", हरिवंशराय "बच्चन", पं. हरिशंकर शर्मा, रामचरण हयारण "मित्र", रामेश्वर शुक्ल "अंचल", कुं. हरिश्चन्द्र देव वर्मा "चातक", श्याम नारायण पाण्डेय, सोहनलाल द्विवेदी आदि के काव्य-ग्रंथ प्रकाशित हैं तथा उनमें वे कविताएँ भी संकलित हैं, जिनका मंचीय-पाठ किया जाता रहा है।

सन् 1942 ई. के बाद अखिल भारतीय ख्याति प्राप्त मंचीय-कवियों की पीढ़ी में सर्वश्री रघुवीरशरण "मित्र", शिवमंगल सिंह "सुमन", (स्व.) शिशुपालसिंह "शिशु", गोपाल प्रसाद व्यास, बलवीर सिंह "रंग", गोपाल दास "नीरज", रामावतार त्यागी, देवराज दिनेश तथा राजेश दीक्षित आदि के अनेक काव्य-संकलन प्रकाशित हो चुके हैं।

स्वातन्त्र्योत्तर कालीन अखिल भारतीय ख्याति प्राप्त मंचीय-कवियों में डा. रवीन्द्र भ्रमर, (स्व.) पद्मसिंह शर्मा "कमलेश" 'वीरेन्द्र मिश्र, रामकुमार चतुर्वेदी "चंचल", मुकुट बिहारी "सरोज", भारतभूषण, "विमलेश", काका हाथरसी, देवीदास "निर्भय", ओमप्रकाश आदित्य, रमेश रंजक, बालकवि बैरागी, दामोदर स्वरूप "विद्रोही", तथा मधुरशास्त्री आदि के कविता-संग्रह भी प्रकाशित हैं।

(**टिप्पणी**—ब्रजक्षेत्र से सम्बन्धित जिन अन्य मंचीय-कवियों के काव्य-संकलन अब तक पुस्तकाकार प्रकाशित हो चुके हैं, उनका उल्लेख आगे प्रकरण 5, 6 और 7 में किया जाएगा।)

अप्रकाशित कवि—सन् 1962 ई. के बाद अखिल भारतीय ख्याति प्राप्त करने वाले मंचीय-कवियों में अनेक नाम ऐसे भी हैं, जिनका अभी तक एक भी काव्य-संकलन प्रकाशित नहीं हुआ है। ऐसे कवियों में प्रमुख हैं—सर्वश्री सोमठाकुर, ब्रजेन्द्र अवस्थी, किशन सरोज, आत्मप्रकाश शुक्ल, उदयप्रताप सिंह तथा शिशुपाल सिंह 'निर्धन' आदि।

साहित्यिक और असाहित्यिक—स्वतन्त्रता पूर्व के ख्याति प्राप्त मंचीय-कवियों का काव्य साहित्यिक-दृष्टि से भी मूल्यवान् था, अतः उनके काव्य-संकलन काव्य-रसिकों द्वारा आज भी बड़े चाव से पढ़े जाते हैं, परन्तु स्वातन्त्र्योत्तर-काल के

अधिकांश मंचीय-कवियों का काव्य ऐसा है, तो कवि-मुख से सुनने में तो आकर्षक लगता है; परन्तु वही जब मुद्रित रूप में पाठकों की दृष्टि के समक्ष पहुँचता है तो अनाकर्षक, अरुचिकर एवं असाहित्यिक अनुभव होने लगता है। ऐसे मंचीय-कवियों के काव्य-संकलन लोक-प्रियता प्राप्त करने में असफल सिद्ध हुए हैं।

जो मंचीय-कवि केवल सामयिक-विषयों पर ही रचनाएँ लिखते हैं उनके काव्य-संकलन भी सामयिक-परिस्थितियों के बदल जाने पर मूल्यहीन तथा अनाकर्षक हो जाते हैं।

सारांश—पुरानी तथा नई पीढ़ी के अधिकांश मंचीय-कवियों की कविताएँ पुस्तकाकार प्रकाशित हो चुकी हैं, परन्तु नई पीढ़ी के कवियों के साहित्यिक-मूल्य सम्पन्न काव्य-संकलन बहुत ही कम हैं। नई पीढ़ी में साहित्यिक-दृष्टि से महत्वपूर्ण कविताएँ लिखने वाले कुछ मंचीय-कवि ऐसे भी हैं, जिनकी रचनाओं का एक भी संकलन अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है, जबकि असाहित्यिक काव्य-संकलन बड़ी मात्रा में प्रकाशित हैं। स्वातन्त्र्योत्तर पीढ़ी के कुछ मंचीय-कवियों ने अपने काव्य-संकलनों का प्रकाशन स्वयं भी किया है।

पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन—स्वतन्त्रता-पूर्व देश में ऐसी अनेक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन होता था, जिनके द्वारा हिन्दी-साहित्य की उन्नति में किए गये योगदान का ऐतिहासिक-महत्व रहा। उनमें सरस्वती, विशाल भारत, माधुरी, चाँद, सुकवि आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन पत्र-पत्रिकाओं ने समकालीन अनेक कवियों की रचनाओं को प्रकाशित कर, उन्हें प्रसिद्धि के चरम-शिखर तक पहुँचाया था; परन्तु हिन्दी के दुर्भाग्य से स्वतन्त्र-भारत में ये पत्रिकाएँ अधिक समय तक जीवित नहीं रह सकीं तथा एक-एक करके सभी बन्द हो गईं।

स्वातन्त्र्योत्तर-भारत में जिन नवीन साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारंभ हुआ, उनमें भी ज्ञानोदय, पाटल आदि स्तरीय पत्रिकाओं को कुछ समय चलने के बाद बन्द हो जाना पड़ा। आधुनिक काल में हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं की प्रकाशन-संख्या मे तो वृद्धि हुई है, परन्तु उनका मुख्य लक्ष्य साहित्य-सेवा न होकर, अर्थोपार्जन करना ही अधिक लगता है। इन पत्र-पत्रिकाओं में ऐसी सामग्री की भरमार रहती है, जिसका कोई स्थायी साहित्यिक-महत्व नहीं कहा जा सकता।

वर्तमान भारत की साहित्यिक-पत्रिकाओं में—"साप्ताहिक हिन्दुस्तान", "धर्मयुग", "कादम्बिनी", "नवनीत", "सरिता" तथा "मुक्ता" आदि की गणना प्रमुख रूप से की जाती है। इनमें "साप्ताहिक हिन्दुस्तान" तथा "धर्मयुग" की प्रसार-संख्या सबसे अधिक है। इन पत्र-पत्रिकाओं में वीररस की कविताओं का प्रकाशन तो प्रायः किया ही नहीं जाता, शृंगारी-गीत भी अब बहुत ही कम प्रकाशित किए जाते है। अलबत्ता, इनके सम्पादक नवगीत, अगीत, प्रयोगवादी अथवा छन्द-मुक्त रचनाओं के प्रकाशन में विशेष रुचि ले रहे हैं।

जब तक श्रीसत्यकाम विद्यालंकार "धर्मयुग" के तथा श्री बाँके बिहारी भटनागर "साप्ताहिक हिन्दुस्तान" के सम्पादक रहे, तब तक इन पत्रों में मंचीय-ख्याति के गीतकारों तथा अन्य कवियों की रचनायें भी प्रमुखता से प्रकाशित होती रहती थीं, परन्तु अब स्थिति में परिवर्तन आ गया है तथा इनमें एक वर्ग-विशेष के उन प्रयोगधर्मा कवियों की कविताओं का प्रकाशन ही अधिक किया जाता है, जो अधिकांश पाठकों को न तो अपनी ओर आकर्षित ही कर पाती हैं और न जिन्हें साहित्यिक-दृष्टि से ही मूल्यवान् कहा जा सकता है।

"कादम्बिनी" आदि अन्य पत्रिकाओं में यदा-कदा ऐसी कविताओं का प्रकाशन होता रहता है, जिनमें से कुछ के सर्जक मंचीय-कवि भी होते हैं, परन्तु वास्तविकता यह है कि वर्तमान काल में अधिकांश मंचीय हिन्दी कवियों की कविताओं का प्रकाशन "उच्चस्तरीय" कही जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं में प्रायः नहीं हो रहा है। कुछ क्षेत्रीय-स्तर की पत्र-पत्रिकाएँ ही उन्हें प्रकाश में ला रही हैं। दैनिक पत्रों के 'रविवासरीय-परिशिष्ट' अथवा विशिष्ट अवसरों पर प्रकाशित होने वाले पत्र-पत्रिकाओं के विशेषांकों में भी कभी-कभी मंचीय-कवियों की रचनाओं के दर्शन हो जाते हैं, परन्तु कुल मिला कर, पत्र-पत्रिकाओं में मंचीय-कविताओं के प्रकाशन की वर्तमान स्थिति सन्तोषप्रद नहीं कही जा सकती।

5. मंचीय हिन्दी-कविताओं का प्रसारण

स्वतंत्रता-पूर्व देश में आकाशवाणी के गिने-चुने केन्द्र ही थे, जिन्हें "आलइण्डिया रेडियो स्टेशन" कहा जाता था। उनमें से दिल्ली, लखनऊ आदि स्थानों के कुछ केन्द्र ही हिन्दी-कार्यक्रमों का अधिक प्रसारण करते थे; शेष केन्द्रों पर क्षेत्रीय भाषाओं अथवा अंग्रेजी का ही बोलबाला था। दिल्ली का केन्द्रीय-स्टेशन भी हिन्दी की तुलना में उर्दू-कार्यक्रमों को अधिक महत्व देता था।

स्वतन्त्रता के सूर्योदय के पश्चात् "आलइण्डिया रेडियो" की न केवल हिन्दी-नीति में परिवर्तन हुआ, अपितु उसे 'आकाशवाणी' रूप में एक नया नाम भी मिला है और हिन्दी के राष्ट्रभाषा-पद पर प्रतिष्ठित होने के बाद से हिन्दी-कार्यक्रमों के प्रसारण में भी कुछ वृद्धि हुई है। देश के विभिन्न भागों में नये-नये केन्द्रों की स्थापना से क्षेत्रीय-साहित्यकारों को "आकाशवाणी" पर बोलने के अधिक अवसर भी प्राप्त होने लगे हैं।

रेडियो के माध्यम से हिन्दी-कविताओं का प्रसारण पहले भी हुआ करता था, परन्तु स्वातन्त्र्योत्तर-काल में उसे अधिक बढ़ावा मिला है। हिन्दी कवि-सम्मेलनों की लोक-प्रियता में वृद्धि होने के कारण विभिन्न स्थानों पर आयोजित कवि-सम्मेलनों के कार्यक्रमों को आकाशवाणी द्वारा न केवल अधिक संख्या में प्रसारित किया ही जाने लगा है, अपितु वह स्वयं भी समय-समय पर अपने केन्द्रों पर कवि-गोष्ठी तथा

कवि-सम्मेलनों का आयोजन भी करने लगी है। दूरदर्शन केन्द्रों की भी लगभग यही स्थिति है। (आकाशवाणी तथा दूरदर्शन केन्द्रों पर आयोजित होने वाले कवि-सम्मेलन के लिए कवियों के चुनाव में भी पक्षपात का बोलबाला रहता है—इसमें भी सन्देह नहीं है)।

वर्तमान काल के अधिकांश मंचीय हिन्दी कवि आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के विभिन्न केन्द्रों से भी सम्बन्धित हैं, अतः इन दोनों माध्यमों से उनकी रचनाओं का प्रसारण भी होता रहता है।

भारतीय आकाशवाणी तथा दूरदर्शन केन्द्र चूंकि सरकारी-संस्थान के रूप में कार्यरत हैं, अतः इनके द्वारा शासन-विरोधी, राजनीतिक, आलोचनात्मक अथवा किन्हीं विवादों को जन्म देने वाली कविताओं का प्रसारण नहीं किया जाता; परन्तु इनसे भिन्न विषयक रचनाएँ सम्पूर्ण अथवा सम्पादित रूप में प्रसारित की जाती हैं। इस प्रकार मंचीय हिन्दी कविताओं के प्रचार-प्रसार में आकाशवाणी तथा दूर-दर्शन केन्द्र भी अपना यत्किंचित् सहयोग दे रहे हैं।



प्रकरण 5

ब्रजक्षेत्र के प्रमुख मंचीय हिन्दी-कवि और उनका साहित्यिक-योगदान

1. ब्रजभाषा-भाषी क्षेत्र की सीमाएँ।
2. स्वतन्त्रता-पूर्व के ब्रजक्षेत्रीय प्रमुख मंचीय हिन्दी-कवि और उनक साहित्यिक-योगदान।
3. स्वातन्त्र्योत्तर कालीन ब्रजक्षेत्रीय प्रमुख मंचीय हिन्दी-कवि और उनका साहित्यिक-योगदान।

ब्रजक्षेत्र से संबंधित कवियों के साहित्यिक-योगदान का उल्लेख करने से पूर्व ब्रजभाषा-भाषी-क्षेत्र की सीमाओं का स्पष्टीकरण आवश्यक है ।

1. ब्रजभाषा-भाषी-क्षेत्र की सीमाएं

ब्रज—प्रदेश अथवा जनपद के रूप में "ब्रज" अथवा "व्रज" शब्द अधिक प्राचीन नहीं है । वैदिक-साहित्य में इसका प्रयोग प्रायः पशु-समूह, गोचर-भूमि अथवा पशुओं के रहने के स्थान के अर्थ में मिलता है ।"[1]

रामायण, महाभारत[2] तथा परवर्ती संस्कृत-साहित्य में भी "व्रज" शब्द प्रायः इन्हीं अर्थों में प्रयुक्त हुआ है ।

पुराणों में कहीं-कहीं "स्थान" के अर्थ में "व्रज" शब्द का प्रयोग हुआ है, और वह भी संभवतः "गोकुल" के लिये है । हरिवंश पुराण तथा भागवत्पुराण में "ब्रज" को गोप-बस्ती के अर्थ में प्रयुक्त किया गया है ।[3]

"ऐसा प्रतीत होता है कि जनपद अथवा प्रदेश के अर्थ में "ब्रज" शब्द का व्यापक प्रयोग चौदहवीं शताब्दी के बाद से प्रारम्भ हुआ । उस समय मथुरा प्रदेश में कृष्ण-भक्ति की एक नई लहर उठी, जिसे जन-साधारण तक पहुंचाने के लिए यहाँ की "शौरसेनी प्राकृत" से एक कोमल-कान्त भाषा का आविर्भाव हुआ । इसी समय

---

1. अथर्ववेद (2-38-8, 5-35-4, 7-27-1, 7-32-10, 8-46-9, 8-51-5, 10-4-2, 10-26-3), अथर्ववेद (3-2-5, 4-38-7), शांखायन आरण्यक (2-16) ।
2. महाभारत (1-40-17, 1-41-15 आदि) ।
3. ब्रज का इतिहास (1), सं. कृष्णदत्त वाजपेयी, पृष्ठ 1.

के लगभग मथुरा जनपद की, जिसमें अनेक वन-उपवन एवं पशुओं के लिए बड़े "ब्रज" अर्थात् चरागाह थे, "व्रज" (भाषा में "ब्रज") संज्ञा प्रचलित हुई। इस ब्रजदेश में आविर्भूत नई भाषा का नाम भी स्वभावतः "ब्रजभाषा" रक्खा गया। इस कोमल भाषा के माध्यम से ब्रज ने उस साहित्य की सृष्टि की, जिसने अपने माधुर्य-रस से भारत के एक बड़े भाग को आप्लावित कर दिया।"[1]

ब्रजक्षेत्र—"वर्तमान मथुरा तथा उसके आस-पास का प्रदेश जिसे "ब्रजक्षेत्र" कहा जाता है, प्राचीन काल में "शूरसेन" जनपद के नाम से विख्यात था। शूरसेन की सीमाएँ समय-समय पर बदलती रहीं। कालान्तर में यह जनपद "मथुरा" नाम से भी प्रसिद्ध हुआ। ईस्वी सातवीं शती में चीनी-यात्री हुएन-सांग जब यहाँ आया था, तब उसने लिखा कि मथुरा राज्य का विस्तार 5,000 ली. (लगभग 833 मील) था। इससे पता चलता है कि सातवीं शती में मथुरा-राज्य के अन्तर्गत वर्तमान मथुरा और आगरा जिलों के अतिरिक्त वर्तमान भरतपुर तथा धौलपुर के जिले एवं ऊपरी मध्यभारत का उत्तरी लगभग आधा भाग रहा होगा एवं दक्षिण-पूर्व में मथुरा राज्य की सीमा "जेजाकभुक्ति" (जिझौती) की पश्चिमी सीमा से तथा दक्षिण-पश्चिम में मालव-राज्य की उत्तरी सीमा से मिलती रही होगी।"[2]

प्राचीन शूरसेन अथवा मथुरा जनपद का प्रारम्भ में जितना विस्तार था, उसमें हुएन-सांग के समय तक कितने परिवर्तन हुए, इस सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता; क्योंकि प्राचीन साहित्य में ऐसे प्रमाण नहीं मिलते, जिनके आधार पर इस जनपद की लम्बाई-चौड़ाई का ठीक पता लग सके। यथा—

"प्राचीन साहित्यिक उल्लेखों से केवल इतना ही ज्ञात होता है कि शूरसेन अथवा मथुरा प्रदेश के उत्तर में कुरुदेश (आधुनिक दिल्ली और आस-पास का क्षेत्र) था, जिसकी राजधानी इन्द्रप्रस्थ तथा हस्तिनापुर थी। दक्षिण में "चेदि"—राज्य (आधुनिक बुन्देलखण्ड तथा उसके समीप का कुछ भाग) था, जिसकी राजधानी "सूक्तिमती" नगर था। पूर्व में पांचाल राज्य (आधुनिक रुहेलखण्ड) था, जो उत्तर पांचाल तथा दक्षिण पांचाल—इन दो भागों में बँटा हुआ था तथा उत्तर पांचाल की राजधानी 'अहिच्छत्रा' (वर्तमान में बरेली जिले का रामनगर) तथा दक्षिण पांचाल की राजधानी "कौपिल्य" (आधुनिक फर्रुखाबाद जिले का "कंपिल") थी। पश्चिम में मत्स्य राज्य (आधुनिक अलवर तथा जयपुर जिलों का पूर्वी भाग) था, जिसकी राजधानी "विराट नगर" (आधुनिक जयपुर जिले का "वैराट" नामक स्थान) था।"[3]

---

1. "तद्व्रजस्थानमधिकम् सुशुभे काननावृतम्"–हरिवंशपुराण (विष्णुपर्व, 9—30)
2. ब्रज का इतिहास (1), सं कृष्णदत्त वाजपेयी, पृष्ठ 2.
3. वही, पृष्ठ 2.

ब्रजमण्डल का भौगोलिक स्वरूप—आधुनिक ब्रज के सम्बन्ध में उसका भौगोलिक स्वरूप "मण्डलाकृति" अथवा "गोलाकार" कहा जाता है, परन्तु ब्रजभाषा-भाषी क्षेत्रों की दृष्टि से वर्तमान ब्रज का आकार न तो ठीक गोल है और न प्रचलित चौरासी कोस वाली बड़ी वन-यात्रा की दृष्टि से ही वह "मण्डलाकार" बैठता है। यह वन-यात्रा आज भी जिस रूप में चलती है, उसमें तथा उसके प्राचीन स्वरूप में कोई बड़ा परिवर्तन हुआ हो—ऐसा प्रतीत नहीं होता। संभव है कि चौदहवीं से सोलहवीं शताब्दी के बीच कभी ब्रज का आकार गोल रहा हो और तभी उसे "ब्रजमण्डल" की संज्ञा दे दी गई हो। और यह भी संभव है कि "मण्डल" शब्द का अभिप्राय गोलाकार न होकर "प्रदेश" रहा हो।

सन् 1560 ई. के लगभग रचित श्री नारायण भट्ट के "ब्रजभक्ति-विलास" नामक ग्रन्थ के एक श्लोक में कहा गया है—

"पूर्वं हास्यवनंनीय पश्चिमस्योपहारिक।
दक्षिणे जह्नुसंज्ञाकं भुवनाख्यं तथोत्तरे॥"[1]

अर्थात्—"पूर्व में 'हास्यवन' (अलीगढ़ जिले का बरहद गाँव), पश्चिम में 'उपहार-वन' (गुड़गाँवा जिले में सोन नदी के किनारे तक का क्षेत्र), दक्षिण में 'जह्नु-वन' (जिला आगरा का "बटेश्वर" नामक गाँव) तथा उत्तर में 'भुवन-वन' (मथुरा जिले के शेरगढ़ परगना का भूषण-वन)—ये 'ब्रज-मण्डल' की सीमाएँ हैं।

उक्त श्लोक के अभिप्राय को निम्नलिखित दोहे में भी प्रकट किया गया है। इस दोहे के लेखक के नाम का पता नहीं चलता, परन्तु यह अत्यन्त प्राचीन काल से प्रचलित है तथा सर हेनरी एम. इलियट ने भी इसे उद्धृत किया है। दोहा इस प्रकार है—

"इत बरहद उत सोनहद, सूरसेन को गाम।
ब्रज चौरासी कोस में मथुरा मंडल धाम॥"

उक्त दोहे में 'मथुरा मण्डल' के एक ओर की सीमा वर्तमान अलीगढ़ जिले का बरहद गाँव दूसरी ओर की सीमा वर्तमान गुड़गांवा जिले की सोन नदी का क्षेत्र, तीसरी ओर की सीमा सूरसेन का गाँव, अर्थात् शौरिवन (वर्तमान में आगरा जिले का "बटेश्वर" नामक गाँव) बताया गया है। चौथी ओर की सीमा का इसमें कोई उल्लेख नहीं है।

पुराणों में 'मथुरा-मण्डल' का विस्तार 20 योजन कहा गया है। यथा—

---

1. उक्त श्लोक में वर्णित स्थानों की पहिचान के लिए देखें—ग्राउज़ मेमोअर (द्वि. सं.); पृ. 84.

"विंशतिर्योजनानां च माथुरं मम मंडलं ।
यत्र यत्र नरः स्नातो मुच्यते सर्वपातकैः ।।"[1]

सूरदासजी ने चौरासी कोस वाले ब्रज का उल्लेख इस प्रकार किया है—

"चौरासी ब्रज कोस निरंतर खेलत हैं बल-मोहन ।"

डा. सत्येन्द्र का मत है—"यथार्थ में यह सीमा-निर्धारण उस काल में हुआ था, जबकि ऐतिहासिक दृष्टि से शूरसेन अथवा ब्रजप्रदेश अपने प्रादेशिक अस्तित्व को खो चुका था तथा मथुरा ही 'ब्रज' नाम का पर्यायवाची बन कर रह गया था ।"[2]

सीमा-सम्बन्धी पूर्वोक्त श्लोक तथा दोहे में आये हुए नामों के सम्बन्ध में कुछ विद्वानों में मतभेद भी हैं । गर्ग संहिता में बरहद को पूर्वोत्तर दिशा में स्थित बताया गया है । बाबा कृष्णदास के अनुसार ब्रजमण्डल की उत्तरी सीमा के वन को "सोनहद" माना गया है । जबकि ग्राउज् के अनुसार इसका नाम "भुवन-वन" है । "ब्रजभक्ति विलास" में 'सोनहद-वन' तथा 'सूर्यपत्तन-वन'—ये दोनों ही नाम दिये हैं ।

डा. दीनदयाल गुप्त ने उक्त श्लोक एवं दोहे में प्रयुक्त नामों के अर्थ के सम्बन्ध में सन्देह व्यक्त किया है । उनके मत से पूर्वी सीमा का "हास्य वन" बरहद गाँव न होकर, वर्तमान अलीगढ़ जिले का "हसायन" नामक गाँव है । उत्तर के 'भुवन वन' अथवा 'भूषण वन' को उन्होंने गुड़गावाँ जिले की सीमा पर स्थित 'कोट वन' माना है । पश्चिम के 'उपहार वन' को वे गुड़गावाँ जिले में सोन नदी के तट का क्षेत्र न मान कर भरतपुर के काम वन (आधुनिक नाम—"कामा") के निकट का क्षेत्र मानते हैं तथा दक्षिण के 'जह्नुवन' को 'बटेश्वर' न मानकर, इस सीमा को आगरा तक ही स्वीकार करते हैं ।

उक्त विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि भौगोलिक-दृष्टि से ब्रजक्षेत्र की सीमाएँ समय-समय पर बदलती रही हैं ।

भाषायी-ब्रजक्षेत्र—ब्रजक्षेत्र की भाषा "ब्रजभाषा" के नाम से अभिहित की गई है । पूर्व में ब्रजभाषा के अनेक नाम—पिंगल, मध्यदेसी, अन्तर्वेदी, ग्वालियरी, ग्वालेरी आदि उपलब्ध होते हैं । सर्वप्रथम सन् 1644 ई. में गोपाल नामक कवि ने अपने "रसिक विलास" नामक ग्रंथ मे ब्रजक्षेत्र में बोली जाने वाली बोली को "ब्रज-भाषा" का नाम दिया था ।

---

1. वाराह पुराण—मथुरा माहात्म्य ।
2. ब्रजलोक साहित्य का अध्ययन—डा. सत्येन्द्र, पृ. 17

डा. सत्येन्द्र भी गोपाल कवि द्वारा प्रयुक्त "ब्रजभाषा" शब्द को सबसे प्राचीन मानते हैं। उनके मतानुसार 'ब्रजभाषा' अथवा 'भाखा' ही इसका सामान्य नाम था। चौदहवीं एवं सोलहवीं शताब्दी में प्रायः सभी क्षेत्रीय भाषायें "भाषा" अथवा "भाखा" ही कही जाती थीं। देश के मध्य भाग में बोली जाने के कारण ब्रजक्षेत्र की भाषा को 'मध्यदेसी' कहा जाता था। "ग्वालियरी" या "ग्वालेरी' नाम ग्वालियर के ऐश्वर्य काल में प्रचलित हुआ तथा "अन्तर्वेदी" नाम अन्तर्वेद-क्षेत्र के कारण पड़ा।"[1]

वृहत्तर ब्रजक्षेत्र—वर्तमान काल में, लिंग्विस्टिक सर्वे तथा इससे सम्बन्धित अन्य अन्वेषणों के आधार पर ब्रजभाषा-भाषी क्षेत्र निम्नलिखित माना जाता है—

"उत्तर प्रदेश का सम्पूर्ण मथुरा जिला, राजस्थान का सम्पूर्ण भरतपुर जिला, करौली जिले का उत्तरी अंश (जो भरतपुर तथा धौलपुर की सीमाओं से मिला-जुला है), सम्पूर्ण धौलपुर जिला; वर्तमान मध्य प्रदेश के मुरैना तथा भिण्ड जिले (सम्पूर्ण) तथा ग्वालियर जिले का लगभग 26 अक्षांश से ऊपर का उत्तरी भाग (यहाँ की ब्रजभाषा में 'बुन्देली' की झलक मिलती है); उत्तर प्रदेश का सम्पूर्ण आगरा जिला, इटावा जिले का पश्चिमी भाग (लगभग इटावा नगर की सीध देशां. 79 तक), मैनपुरी जिला तथा एटा जिला (इनके उस थोड़े से अंश को छोड़कर, जो फर्रुखाबाद जिले की सीमा से मिले-जुले हैं), बुलन्दशहर जिले का दक्षिणी लगभग आधा भाग (पूर्व में अनूपशहर की सीध से लेकर), वर्तमान हरियाणा राज्य की पलवल तहसील (गुड़गावाँ जिले का दक्षिणी अंश) तथा अलवर जिले का पूर्वी भाग (जो गुड़गावाँ-पलवल तथा भरतपुर की पश्चिमी-सीमा से मिला-जुला है)।"[2]

उपर्युक्त सभी विवरण ब्रजभाषा-भाषी क्षेत्र का निर्धारण करने में सहायक है, परन्तु लिंग्विस्टिक सर्वे के आधार पर श्रीकृष्णदत्त वाजपेयी द्वारा सम्पादित ब्रज का इतिहास खण्ड—1 में वर्तमान ब्रजभाषा-भाषी क्षेत्र की जो सीमाएँ निर्धारित की गई हैं, व्यावहारिक दृष्टि से वे ही सर्वाधिक उपयुक्त प्रतीत होती हैं; क्योंकि आज भी उक्त सीमा-क्षेत्र के निवासी अपने दैनिक जीवन में ब्रजभाषा का ही सर्वाधिक प्रयोग करते दिखाई देते हैं।

यदि भारत के मानचित्र में पूर्वोक्त ब्रजभाषा-भाषी भू-भाग के चारों ओर एक वर्तुलाकार रेखा खींची जाय तो उससे "ब्रजमण्डल" का लगभग गोलाकार स्वरूप भी स्पष्ट हो जाता है। "ब्रज का इतिहास" खण्ड—1 में "आधुनिक

---

1. ब्रज साहित्य का इतिहास, पृ. 11, 162, 164 (डा. सत्येन्द्र—लेखक)
2. ब्रज का इतिहास खण्ड 1 श्रीकृष्णदत्त वाजपेयी, पृ. 3-4.

ब्रजभाषा-भाषी क्षेत्र" अर्थात् "वृहत्तर ब्रजक्षेत्र" का एक मानचित्र देकर इसे अधिक स्पष्ट किया गया है।"[1]

संक्षेप में, उक्त भू-भाग अर्थात् "मथुरा, आगरा, अलीगढ़, एटा, मैनपुरी, बुलन्दशहर तथा इटावा" (वर्तमान उत्तर प्रदेश में), मुरैना तथा भिण्ड (वर्तमान मध्य प्रदेश में) तथा भरतपुर, धौलपुर एवं अलवर जिले और सवाई माधोपुर जिले का करौली क्षेत्र (वर्तमान राजस्थान में) तथा पलवल क्षेत्र (वर्तमान हरियाणा राज्य में)—इन चौदह क्षेत्रों को ही ब्रजभाषा-भाषी "वृहत्तर ब्रजक्षेत्र" मानकर इन क्षेत्रों से सम्बन्धित मंचीय हिन्दी कवियों के साहित्यिक-योगदान का प्रस्तुत शोध-प्रबंध में उल्लेख किया गया है।

2. स्वतन्त्रता पूर्व के ब्रज-क्षेत्रीय प्रमुख मंचीय हिन्दी-कवि और उनका साहित्यिक योगदान

ब्रजक्षेत्र के निवासी जिन कवियों ने कवि-गोष्ठियों के युग से आरंभ कर कवि-सम्मेलनों के युग तक मंचीय-कवि के रूप में विशेष ख्याति अर्जित की, उन्हें निम्न-लिखित दो वर्गों में बांटा जा सकता है—

(क) सन् 1850 ई. से 1900 ई. तक की अवधि में जन्म लेने वाले कवि।

(ख) सन् 1901 से 1920 ई. तक की अवधि में जन्म लेने वाले कवि।

उक्त "क" तथा "ख" वर्ग के कवि भी दो भागों में विभक्त किए जा सकते हैं—

1. वे कवि, जिनकी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।
2. वे कवि, जिनकी पुस्तकें प्रकाशित नहीं हुई।

"क" वर्ग के "प्रकाशित-कवि"

इनमें निम्नलिखित नाम प्रमुख हैं—

(1) श्री नवनीत चतुर्वेदी (मथुरा)।
(2) श्री नाथूरामशंकर शर्मा "शंकर" (हरदुआगंज, अलीगढ़)।
(3) पं० श्रीधर पाठक (जौंधरी—आगरा)।
(4) श्री सत्यनारायण कविरत्न (आगरा)।
(5) श्री श्यामलाल शुक्ल "शंठ कवि" (आगरा)।
(6) पं० हरिशंकर शर्मा "कविरत्न" (आगरा)।
(7) पं० देवीप्रसाद "देवी द्विज" (गोकुल, मथुरा)।

---

1. ब्रज का इतिहास खण्ड—1, सं. श्रीकृष्णदत्त वाजपेयी, पृ. 238 के सामने।

(8) श्री भगवानदत्त चतुर्वेदी (मथुरा)
(9) पं. अमृतलाल चतुर्वेदी (आगरा)।
(10) ठा. उल्फतसिंह चौहान "निर्भय" (आगरा)।

उक्त कवियों में अब सभी काल-कवलित हो चुके हैं। इन कवियों के संबंध में ज्ञातव्य-विवरण आगे प्रस्तुत हैं।

(स्व.) श्री नवनीत चतुर्वेदी

पूरा नाम—नवनीत लाल चौबे। पिता—मूलचन्द्र चौबे उर्फ बूलाजी चौबे। जन्मतिथि—मार्गशीर्ष शुक्ला 5, सं. 1915 वि. (सन् 1858 ई.)। जन्मस्थान—मथुरा। शिक्षा—घर पर ही। व्यवसाय—यजमानी। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—1874 ई.। प्रथम-बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1878 ई., मथुरा में। ब्रज क्षेत्र से सम्पर्क की अवधि-आजीवन। पता—मारूगली, मथुरा। निधन तिथि—सन् 1932 ई.।

अन्य—ढाई वर्ष की आयु मे मातृ-वियोग तथा 16 वर्ष की आयु में पितृ-वियोग। पितामह द्वारा पालन-पोषण। बाल्यकाल में दण्डी स्वामी विरजानन्दजी से अष्टाध्यायी का अध्ययन किया, तदुपरान्त पं. गंगादत्तजी से शिक्षा प्राप्त की। हिन्दी, संस्कृत तथा ब्रजभाषा के श्रेष्ठ विद्वान होने के अतिरिक्त ये उर्दू तथा फारसी के भी जानकार थे। सम्पूर्ण जीवन मुख्यतः साहित्य-साधना मे ही बीता।

साहित्य-सेवा—पहली रचना सन् 1895 ई. में प्रकाशित हुई। सैकड़ों पढ़न्त-गोष्ठियों एवं कवि-सम्मेलनों में भाग लिया।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) प्रेम रत्न, (2) गोपी प्रेम पियूष प्रवाह, (3) मूर्ख शतक, (4) रहिमन शतक, (5) कुब्जा पचीसी तथा, (6) हरिहराष्टक (सभी काव्य)।

अप्रकाशित कृतियां—(1) सनेह शतक, (2) छन्द नवनीत, (3) काव्य नवनीत, (4) षट ऋतु नवनीत, (5) मनोरथ मुक्तावली (6) प्रेम पच्चीसी, (7) पावस पच्चीसी (8) श्यामांगावयवभूषण, (9) नवीनोत्सव संग्रह (10) वैष्णव धर्म प्रश्नोत्तर, (11) मनोरथ मुक्तावली, तथा (12) हरिदास वंशानुचरित्र।

विशेष—ब्रजभाषा के 'आचार्य-कवि' के रूप में प्रतिष्ठित रहे। सभी रचनाएँ भाषा, भाव तथा शिल्प की दृष्टि से स्थायी-साहित्य की कोटि में रक्खी जाने योग्य। इनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर शोध-कार्य हो चुका है। मंचीय-कवि के रूप में अखिल भारतीय ख्याति लब्ध।

काव्योदाहरण—

"तब तौ अँखियान निहारत हे, अब जे अँखियान तें रोयौ करैं।
"नवनीत जू" चाह करी न तबै, अब चाह की चाह न जोयौ करैं।।

तब तो मुख-सिंधु हिलोरें हुतीं, अब आह की दाह समोयी करें।
हम प्यारे कों अंक निसंक भरें, वे कलंक के धोमने धोयी करें ॥"[1]

(स्व.) श्री नाथूराम शंकर शर्मा "शंकर"

पिता—पं. रूपराम शर्मा। जन्मतिथि—चैत्र शुक्ला 5, सं. 1916 वि. (सन् 1859 ई.)। जन्म-स्थान हरदुआगंज (जि. अलीगढ़)। शिक्षा—माध्यमिक। व्यवसाय—चिकित्सा। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1872 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1875 ई.। पता—हरदुआगंज (अलीगढ़)। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—आजीवन। निधन तिथि—भाद्रपद कृष्णा 5, सं. 1989 वि.।

अन्य—आपको हिन्दी के अतिरिक्त ब्रजभाषा, उर्दू, फारसी तथा संस्कृत का भी अच्छा ज्ञान था। सामान्य अंग्रेजी भी जानते थे। आरम्भ में आपने कानपुर के नहर विभाग में नौकरी की। वहां लगभग 7 वर्ष तक कार्य करने के बाद त्यागपत्र देकर, हरदुआगंज चले आये तथा आयुर्वेद का अध्ययन कर, चिकित्सा-कार्य कर उठे। राष्ट्रीय-आन्दोलन तथा आर्य-समाज के क्षेत्र में भी आजीवन कार्य-रत रहे। "भारत प्रज्ञेन्द्र", 'साहित्य सुधांशु' आदि दर्जनों सम्मानोपाधियाँ तथा सैकड़ों पुरस्कार प्राप्त किए।

साहित्य-सेवा—सैकड़ों कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ। "सरस्वती" आदि अनेक पत्र-पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशन। खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा में काव्य-सृजन तथा संस्कृत, उर्दू एवं फारसी से हिन्दी—अनुवाद। आशुकवि। समस्या-पूर्ति करने में बेजोड़।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) अनुराग-रत्न तथा (2) गर्भ रण्डा-रहस्य (ये दोनों कविता संग्रह कवि के जीवन-काल में ही प्रकाशित हो गए थे)। सन्1951 में इनकी स्फुट-कविताओं के 5 संग्रह और प्रकाशित हुए—(1) गीतावली, (2) कविता कुंज, (3) दोहावली (4) समस्या पूर्तियाँ, तथा (5) विविध रचनाएँ। इन सबका एकत्र संकलन "शंकर सर्वस्व" नामक ग्रन्थ में प्रकाशित।

अप्रकाशित कृतियाँ—बताया जाता है कि इन्होंने "कलित-कलेवर" नामक नख-शिख सम्बन्धी एक रीति कालीन-परम्परा का काव्य-ग्रंथ भी लिखा था, जिसे फिर स्वयं ही नष्ट कर दिया। इनका "शंकर-सतसई" नामक एक अन्य ग्रन्थ भी जल कर नष्ट हो गया था। इन विलुप्त कृतियों के अतिरिक्त अन्य कोई रचना अप्रकाशित नहीं है।

विशेष—"शंकर" जी अपने युग के सर्वश्रेष्ठ मंचीय कवियों में से एक माने जाते थे। सम्प्रदायवाद, गुरुडम, धार्मिक-पाखण्ड, सामाजिक-अनाचार, कूप-मण्डूकता

---

1. ब्रज का इतिहास, पृ. 164.

तथा धूर्तता आदि विषयों पर इन्होंने अपनी कविता के माध्यम से बड़े तीखे प्रहार किए हैं। देश की पराधीनता पर मार्मिक वेदना व्यक्त करने वाली रचनाएँ भी इन्होंने लिखीं। रिश्वतखोर-अफसरों तथा सूदखोर-महाजनों को भी खूब डाँट पिलाई। अपने युग की समस्त नैतिक, धार्मिक एवं सामाजिक समस्याओं पर इन्होंने काव्य के माध्यम से विचार-किया तथा युग की प्रकृति के अनुकूल सुधार एवं संघर्षों का समर्थन किया। इन्होंने पुराने विषयों को भी नवीन शैली में प्रस्तुत कर अपनी चमत्कारी-प्रतिभा का प्रदर्शन किया। अपने हास्य एवं व्यंग्य काव्य में इन्होंने जिस सचोट-भाषा का प्रयोग किया है, उसके कारण इन पर परुष-शब्दावली के प्रयोग का दोष लगाया जाता है, परन्तु यह वास्तविकता नहीं है। इनके शृंगार, करुण तथा शान्त रस सम्बन्धी छन्दों की भाषा अत्यन्त कोमल तथा श्रुति-मधुर है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है, कि इन्होंने अपने काव्य में विषयानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। छन्द, शिल्प आदि की दृष्टि से इनकी सभी रचनाएँ उच्च कोटि की हैं। नीचे इनके द्वारा रचित एक शृंगारी छन्द को उद्धृत किया जा रहा है।

काव्योदाहरण—

"संकर नदी नद नदीसन के नीरन की,
भाप बनि अंबर तें ऊँची चढ़ि जाइगी।।
दोनों ध्रुव छोरन सों पल में पिघल कर,
घूम-घूम धरनी-धुरी-सी बढ़ि जाइगी।।
झारेंगे अंगारे ये तरनि तारे तारापति,
जारेंगे खमंडल में आग मढ़ि जाइगी।।
काहू बिध बिधि की बनावट बचैगी नाहिं,
जो पै वा वियोगिनी की आह कढ़ि जाइगी।।[1]

(स्व.) पं. श्रीधर पाठक

पिता—पं. लीलाधर पाठक। जन्मतिथि—अज्ञात, सन् 1859 ई.। जन्मस्थान—जौंधरी (जि. आगरा)। शिक्षा—माध्यमिक। व्यवसाय—सरकारी-नौकरी। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—1878 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1880 ई.। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—आजीवन। निधन तिथि—संवत् 1985 वि.।

अन्य—हिन्दी, ब्रजभाषा तथा अंग्रेजी का ज्ञान।

साहित्य-सेवा—पहली रचना सन् 1882 ई. में प्रकाशित हुई। आपने मुख्यतः ब्रजभाषा में काव्य-रचना की तथा खड़ी बोली में भी लिखा। मौलिक

---

1. ब्रज का इतिहास, पृ. 161.

रचनाओं के अतिरिक्त आपने अंग्रेजी से हिन्दी में काव्यानुवाद भी किए। कुछ गद्य-रचनाएँ भी लिखीं। आरंभ में कवि-गोष्ठियों तथा बाद में अनेक कवि-सम्मेलनों में भाग लिया। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बन्धित रहे।" "भारतेन्दु मण्डल" के ये प्रमुख कवि थे। आपने काव्य-भाषा के लिए खड़ी बोली का प्रयोग संभवतः पहली बार मुक्तरूप से किया। सम्पूर्ण कृतित्व का मूल्यांकन करते हुए यह कहा जा सकता है कि इन्होंने अपनी अनूदित तथा मौलिक कृतियों द्वारा हिन्दी (खड़ी बोली) कविता का पथ निर्मित और प्रशस्त किया। स्वच्छन्दतावाद के दर्शन इनकी रचनाओं में पहली बार हुए हैं। खड़ीबोली के काव्य-सृजन के साथ ही इन्होंने परवर्ती छायावाद के लिए भी एक जमीन तैयार की।"[1]

प्रकाशित पुस्तकें—(1) जगत सचाई सार, (2) कांश्मीर सुषमा, (3) भारत-गीत, (4) मनोविनोद, (भाग 1, 2, 3), (5) घन विनय, (6) गुणवन्त हेमन्त (7) वनाष्टक, (8) देहरादून, (9) गोखले गुणाष्टक, (10) गोखले प्रशस्ति, (11) गोपिका गीत, (12) स्वर्गीय वीणा, (13) तिलिस्माती सुन्दरी, (14) हरमिट, (15) ट्रेवलर, (16) ऊजड़ग्राम (अन्तिम तीन गोल्डस्मिथ की पुस्तकों के काव्यानुवाद) तथा (17) ऋतुसंहार (कालिदास कृत 'ऋतुसंहार' का काव्यानुवाद)।

विशेष—पाठकजी प्राकृतिक-सौन्दर्य, स्वदेश-प्रेम तथा समाज-सुधार की भावना के कवि थे। इनकी रचनाओं में छायावादी-काव्य के पूर्व-रूप के दर्शन होते हैं। इन्होंने प्रकृति को उसके समग्र रूप में वर्णन करने का मुख्य विषय बनाकर प्रस्तुत किया है। प्रकृति के स्वच्छन्दतावादी चित्रण के अतिरिक्त इन्होंने भारत तथा भारती के गौरव का मान करते हुए विधवा-व्यथा एवं शिक्षा-प्रसार जैसे सामाजिक विषयों पर भी लिखा है। भाषा, भाव तथा शिल्प की दृष्टि से इनकी रचनाएँ महत्वपूर्ण हैं। मंचीय-कवि के रूप में विशिष्ट ख्याति लब्ध।

काव्योदाहरण—

"कहीं पै स्वर्गीय कोई बाला, सुमंजु वीणा बजा रही है।
सुरों के संगीत की सी कैसी सुरीली गुंजार आ रही है।
कोई पुरंदर की किंकरी है, या कि किसी सुर की सुन्दरी है।
वियोग-तप्ता सी भोग-भुक्ता, हृदय के उद्गार गा रही है।
कभी नयी तान प्रेममय है, कभी प्रकोपन, कभी विनय है।
दया है, दाक्षिण्य का हृदय है, अनेकों बानक बना रही है।
भरे गगन में हैं जितने तारे, हुए हैं गत पै मदमस्त सारे।
समस्त ब्रह्माण्ड भर को मानो दो उंगलियों पर नचा रही है।"[1]

---

1. हिन्दी साहित्य कोश, खण्ड 2, पृ. 572
2. फ़ीरोजाबाद परिचय, पृ. 21.

(स्व.) श्री सत्यनारायण, कविरत्न

पिता—श्री गोबिन्द राम दुबे। पालक—बाबा राघवदास। जन्म तिथि—24 फरवरी, सन् 1880 ई.। **जन्म स्थान**—ग्राम-सराय (जि. अलीगढ़)। शिक्षा—बी ए. (अनुत्तीर्ण)। व्यवसाय—अध्यापक। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—1895 ई.। प्रथमबार मंचीय काव्य-पाठ—1901 ई., आगरा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—आजीवन। निधन तिथि—16 अप्रेल, 1918 ई.।

अन्य—पिता की मृत्यु इनके जन्म से पूर्व ही हो गई थी। माता तलफी उर्फ सरदार कुँवरि ने इन्हें बड़े संकटों में पाला। वैधव्योपरान्त उन्होंने कोटला (जि. आगरा) के राजा कुशलपालसिंह की रानियों को पढ़ाने का कार्य किया। फिर बाबा राघवदास ने उन्हें आगरा के समीप 'धांधूपुरा' गाँव में आश्रय दिया। जीवनान्त तक सत्यनारायणजी वहीं रहे। सम्पूर्ण जीवन अभाव, संघर्ष एवं संकटपूर्ण बना रहा। पत्नी विरुद्ध-स्वभाव की थीं, अतः इन्हें गार्हस्थ्य-सुख भी नहीं मिला। संभवतः इसी कारण, ये अल्पायु में ही स्वर्गवासी हो गए। इन्हें "ब्रज-कोकिल" तथा "कविरत्न" की सम्मानोपाधियाँ एवं अनेक पुरस्कार भी मिले थे।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1903 ई. में प्रकाशित हुई। अनेक मंचों से काव्य-पाठ। ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली में काव्य-सृजन तथा अंग्रेजी एवं बंगला से हिन्दी में काव्यानुवाद। "स्वदेश बान्धव" नामक पत्र के पद्य-विभाग का सम्पादन भी किया।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) भ्रमर दूत (दूत काव्य) तथा (2) प्रेमकली (स्फुट कविताओं का संकलन)—इन दोनों पुस्तकों को सम्पादित करके "हृदय-तरंग" नाम से प्रकाशित किया गया है। (3) देशभक्त होरेशस (अंग्रेजी से काव्यानुवाद) (4) उत्तर रामचरित (5) मालती-माधव (संस्कृत से काव्यानुवाद)।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक मौलिक तथा अनूदित कविताएँ।

विशेष—सत्यनारायण जी की गणना आधुनिक ब्रजभाषा काव्य की "वृहत्त्रयी" (भारतेन्दु, रत्नाकर तथा सत्यनारायण कविरत्न) के कवियों में की जाती है। इनकी अनेक रचनाएँ राष्ट्रीय तथा देशप्रेम की भावनाओं से ओतप्रोत हैं। रसिया, पद, छप्पय, कुण्डलियाँ, दोहा, ग़ज़ल, स्तवन आदि काव्य की अनेक प्राचीन तथा नवीन शैलियों का प्रयोग इन्होंने अपनी रचनाओं में किया है। छन्द, भाषा, भाव तथ शिल्प-सभी दृष्टियों से इनकी कविताएँ उच्च कोटि की तथा महत्वपूर्ण हैं। इन पर एक शोध-कार्य भी हो चुका है। मंचीय-कवि के रूप में विशेष ख्याति-लब्ध।

काव्योदाहरण—

"क्यों जासों मन फिर्यौ कृपा करि कछुक जतावौ।
बृथा आतमा या ब्रजभाषा कौ न सतावौ।।
जिनके तुम बस परे, अहहिं ते सकल विमाता।
ब्रजभाषा ही शुद्ध संस्कृत सांची माता।।
मातृ-हृदय कौ प्रेम मातृ-उर ही में आवै।
ताकौ पावन स्वाद विमाता कबहुँ न पावै।।"

(पं. सत्यनारायण स्मृति ग्रन्थ, पृ. 71)

(स्व.) पं. श्यामलाल शुक्ल "शंठ कवि"

पिता—श्री द्वारिका प्रसाद शुक्ल। जन्म तिथि—पौष शुक्ला 4, सं. 1942 वि., सन् 1886 ई.। जन्मस्थान—आगरा। शिक्षा—सामान्य। काव्य-सृजन का प्रारंभ—15 वर्ष की आयु से। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—आजीवन। निवास-स्थान—बेलनगंज, आगरा। निधन तिथि—21 जनवरी 1964 ई.।

अन्य—प्राचीन दरबारी-कवियों जैसी बेष-भूषा में रहे। सम्पूर्ण जीवन संघर्ष पूर्ण बना रहा। सामयिक विषयों पर आशु-कवितायें लिखने के लिये विख्यात रहे। अनेक सामान्य-पुरस्कार प्राप्त।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1916 ई. में प्रकाशित, तदुपरांत स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं में सैकड़ों कवितायें प्रकाशित हुई। ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली—दोनों में काव्य-सृजन। अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ। आजीवन काव्य-सृजन तथा काव्य-पाठ में ही लगे रहे। यही आजीविकोपार्जन का माध्यम भी रहा।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) पीयूष घट (कविता-संग्रह)।

अप्रकाशित पुस्तकें—हजारों की संख्या में स्फुट कवितायें।

विशेष—साहित्यिक-दृष्टि से सभी रचनायें सामान्य। मंचीय-कवि के रूप में क्षेत्रीय-ख्याति लब्ध।

काव्योदाहरण—

"बेलन सुगंज आगरे का मैं निवासी कवि,
"शंठ" उपनाम काव्यकोष का न ज्ञाता हूँ।
चाय का हूँ प्रेमी, उसे दूध और शक्कर से,
पत्तियां मिलाकर नित्य, विधिवत् बनाता हूँ।।
अप-कप से तो मेरी तृप्ति नहीं होती कभी,
चार-चार लोटे दिन भर में चढ़ा जाता हूँ।

उठते हैं भाव फिर चाय की तरंग ही में,
शारदा लिखाती छन्द, और मैं सुनाता हूँ ।।
(आगरा एक सांस्कृतिक परिचय, पृ. 57)

(स्व.) पं. हरिशंकर शर्मा, कविरत्न

पिता—श्री नाथूराम शंकर शर्मा "शंकर"। जन्म तिथि—भाद्रपद कृष्णा 9, रविवार सं. 1947 वि. (सन् 1891 ई.)। जन्मस्थान—हरदुआगंज (अलीगढ़)। शिक्षा—सामान्य। व्यवसाय—लेखन, पत्रकारिता। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—8 वर्ष की आयु से। प्रथम वार मंचीय काव्य-पाठ—1920 ई., लखनऊ में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—आजीवन। निवास-स्थल—शंकर सदन, लोहामण्डी, आगरा। निधन तिथि—8 मार्च, सन् 1968 ई.।

अन्य—सन् 1918 ई. में एक वर्ष तक आगरा रह कर हरदुआगंज चले गए। पुन: 1923 ई. में आगरा आकर स्थायी-निवास। सर्वप्रथम आर्य-प्रतिनिधि सभा, बुलन्दशहर में वैतनिक उपमन्त्री रहे। फिर 1915 ई. में "आर्यमित्र", 1920 ई. में "भारतोदय", 1939 ई. में "साधना" तथा 1948 ई. में "निराला" के सम्पादक रहे। इनके अतिरिक्त "प्रभाकर", "आर्य सन्देश", "कर्मयोग", तथा "ज्ञानगंगा" आदि पत्रों का सम्पादन भी किया।

सन् 1942-43 ई. के स्वातन्त्र्य-आदोलन में कारावास। आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष; नागरी प्रचारिणी सभा, आगरा के संस्थापक तथा पदाधिकारी एवं संयुक्त प्रान्तीय हिन्दी पत्रकार सम्मेलन के अध्यक्ष रहे। 1963 ई. में गुरुकुल विश्व विद्यालय, वृन्दावन के उपकुलपति रहे। "मंगलाप्रसाद-पुरस्कार" के निर्णायकों में से एक रहे।

हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू, फारसी आदि अनेक भाषाओं का स्वोपार्जित ज्ञान। विभिन्न संस्थाओं द्वारा "काव्य-भूषण", "विद्या-वाचस्पति", 'कवि-रत्न", "साहित्य वारिधि", "साहित्य शास्त्री" आदि अनेक सम्मानोपाधियाँ प्राप्त।

सन् 1949 ई. में आगरा विश्वविद्यालय द्वारा "डी. लिट्." तथा 1966 में भारत-सरकार द्वारा "पद्मश्री" की सम्मानोपाधि एवं "देवपुरस्कार" तथा 'विक्रम पुरस्कार" प्राप्त। अनेक स्वर्ण-रजत तथा अन्य पुरस्कार प्राप्त। साहित्य, राष्ट्र, समाज एवं आर्य-समाज की सेवा में विशेष रुचि रही।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1920 ई. में प्रकाशित, तत्पश्चात् देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। सैकड़ों मंचों से काव्य-पाठ तथा कवि-सम्मेलनों की अध्यक्षता। आकाशवाणी-केन्द्रों से रचनाओं का प्रसारण। खड़ी बोली तथा ब्रज-भाषा में काव्य-सृजन के अतिरिक्त निबन्ध, कहानी, व्यंग्य आदि का लेखन, अनुवाद कार्य तथा सम्पादन। पाठ्य-पुस्तकों का लेखन, कोश-निर्माण।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) भजन भास्कर, (2) शिवा बावनी, (3) श्री छत्रसाल दशक; (4) केसरी कीर्तन, (5) प्रतापी प्रताप, (6) पद्य पराग, (7) घासपात, (8) पद्यांजलि (सभी काव्य), (9) धर्म का आदि स्रोत, (10) विदुषी विद्यावती, (11) शिक्षा सोपान, (12) शिव संकल्प, (13) गौरव गाथा (भाग 1, 2, 3, 4,), (14) पद्य प्रभा, (15) चिड़ियाघर, (16) जीवन ज्योति, (17) ठाकुर माधवसिंह का जीवन चरित्र, (18) महकते मोती, (19) हिन्दी गद्य विहार, (20) सुदामा चरित्र, (21) मेवाड़ महिमा, (22) स्वर्गीय सुमन, (23) मणिमाल, (24) पिंजरापोल, (25) वीरांगनाएँ, (26) रस रत्नाकर, (27) सूक्ति सरोवर, (28 उर्दू साहित्य परिचय, (29) विदेशी वीर विद्वान, (30) हिन्दुस्तानी कोष, (31) अभिनव हिन्दी कोश, (32) महर्षि महिमा, (33) कृष्ण सन्देश, (34) रामराज्य, (35) जीवन झांकी, (36) छन्द विज्ञान की व्यापकता, (37) पद्मसिंह शर्मा के पत्र, (38) मन की मौज, (39) गड़बड़ गोष्ठी, (40) मटकाराम मिश्र, (41) चरित्र-चन्द्रिका, (42) विज्ञानचर्चा, (43) चमकते-महकते मोती (44) विद्यार्थी-विनोद (चार भाग) (45) महाभारत महिमा (गद्य, पद्य, कोष, जीवनी विविध विषय), (46) शंकर सर्वस्व (सम्पादित)।

(1) शिक्षा सोपान, (2) हिन्दी गद्य विहार तथा (3) विद्यार्थी-विनोद (कई भाग)—इन पाठ्य पुस्तकों के सम्पादक।

(1) लक्ष्मी देवी अभिनन्दन ग्रन्थ, (2) रत्नमुनि अभिनन्दन ग्रंथ (3) बजाज अभिनन्दन ग्रन्थ तथा (4) गंगा प्रसाद अभिनन्दन ग्रन्थ—आदि के सम्पादक-मण्डल के सदस्य।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) मानव मन्दिर (निबन्ध संग्रह) तथा अनेक स्फुट रचनाएँ।

विशेष—पंडितजी ने हास्य-व्यंग्य के कवि तथा निबंध-लेखक के रूप में पर्याप्त ख्याति अर्जित की थी। आपकी कविताओं के विषय प्रमुखतः देश, धर्म, समाज तथा राष्ट्रभक्ति रहे। सामाजिक विषयों पर चुटीले व्यंग्य भी लिखे हैं। कविता की भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण तथा प्रभावोत्पादक है। सभी पद्य-रचनाएँ छन्दोबद्ध एवं प्राचीन शैली की हैं जिनमें यमक-श्लेषादि अलंकारों की प्रचुरता पाई जाती है। मंचीय-कवि के रूप में सामान्य ख्याति लब्ध।

आपने अपना साहित्यिक गुरु पं. पद्मसिंह शर्मा को स्वीकार किया है। आपके पिता नाथूराम शंकर "शर्मा" की गणना अपने समय के महाकवियों में की जाती थी। आपके ऊपर दो शोध-कार्य भी हो चुके हैं।

काव्योदाहरण—

"यह भ्रान्त भावमय भौतिकता,
अस्थिर मोहकला-ममता है।
जीवन निष्काम कर्म्म-साधन,
जीवन निर्ममता—समता है।

जीवन का लक्ष्य लोक-सेवा
तप त्याग आत्म-निर्भरता है।
संघर्ष-विजय उत्कट विराग,
मृत्युंजय उच्च अमरता है।"

(मयूरवन, पृष्ठ 3)

(स्व.) पं. देवी प्रसाद "देवीद्विज"

पिता—सालिगरामजी। जन्मतिथि—भाद्रपद कृष्णा 6, सं. 1951 वि. (सन् 1895 ई.)। जन्मस्थान—गोकुल (जि. मथुरा)। शिक्षा—सामान्य। काव्य-सृजन का प्रारंभ सं. 1965 वि.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सं. 1967 वि., मथुरा में। व्यवसाय—गुसांइयों के आश्रित रहे। निवासी—गोकुल (जि. मथुरा)। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—आजीवन। निधन तिथि—श्रावण कृष्णा 10, सं. 2037 वि. (5 अगस्त 1980 ई.)।

अन्य—युवावस्था में "गोकुल प्रकाश" नामक एक नाटक कम्पनी की स्थापना की तथा देश के विभिन्न नगरों में नाटकों के प्रदर्शन किए। नाटकों में स्वयं भी अभिनय करते थे। स्वाध्याय के बल पर हिन्दी, उर्दू, संस्कृत तथा ब्रजभाषा का ज्ञान प्राप्त किया। सितार, पखावज, मृदंग, उपंग आदि वाद्य-यन्त्रों को बजाने में दक्ष। युवावस्था का अधिकांश भाग—जूनागढ़ तथा जामनगर में व्यतीत हुआ। जीवन का अन्तिम भाग मथुरा तथा गोकुल में बीता। मृत्यु गोकुल में हुई।

साहित्य-सेवा—पहली पुस्तक "मोढ़ाष्टक" सं. 1971 वि. में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित। सैकड़ों पढ़ंत-गोष्ठियों से लेकर कवि-सम्मेलनों तक में काव्य-पाठ। आकाशवाणी मथुरा तथा दिल्ली केन्द्रों से कविताओं का अनेक बार प्रसारण। ब्रजभाषा, उर्दू तथा खड़ी बोली में कवित्त, सवैया आदि प्राचीन शैली के विभिन्न छन्दों की रचना में सिद्ध-हस्त। द्विवेदी-युग के कवियों में से एक।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) मोढ़ाष्टक, (2) गोपालाष्टक, (3) गुसाई गोकुलनाथ चरित (सभी-काव्य)।

अप्रकाशित कृतियाँ—2000 से अधिक ब्रजभाषा, खड़ी बोली तथा उर्दू की स्फुट कविताएँ।

विशेष—आपने ब्रजभाषा की रचनाओं में भी उर्दू शब्दों का भरपूर प्रयोग किया है। भाषा भावानुकूल होने के कारण हृदयस्पर्शी। भाव गम्भीर, शिल्प उत्तम; परन्तु कहीं-कहीं परुष-शब्दावली का प्रयोग तथा शब्दों की तोड़-मरोड़ भी पाई जाती है। मंचीय-कवि के रूप में क्षेत्रीय ख्याति लब्ध।

काव्योदाहरण—

"कारे कारे घूमत से भालू, गज, कोल, जान,
गरज नहीं पै सिंह केसरी दुकाना है।
चातक, चकोर, मोर, कोयल, कपोत, कीर,
चोंच हाट पंछिन की जात बेप्रमाना है॥
मरकट अनेक रंग नक्र, ऋक्ष, कूरम हैं,
"देवीद्विज" छटा देख जग्त ही लुभाना है।
आठ मास बन्द रहै, खुले चार मास पै तौ,
पावस-नरेस का अजाब चिरीखाना है॥

(स्व.) श्री भगवानदत्त चतुर्वेदी

पिता—श्री झींगन बौहरे। **जन्म तिथि**—आश्विन शुक्ला त्रयोदशी, सं. 1952 वि. (सन् 1896 ई.)। **जन्म स्थान**—मथुरा। **शिक्षा**—सामान्य। **व्यवसाय**—पौरोहित्य, सामाजिक क्षेत्र में कार्य। **काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष**—18 वर्ष की आयु से। **प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ**—सन् 1937 ई.। **ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि**—आजीवन। **निधन तिथि**—1 अगस्त सन् 1977 ई.।

अन्य—7 वर्ष की आयु में पितृ-हीन तथा 20 वर्ष की आयु में मातृ-विहीन। 15 वर्ष की आयु में विवाह हुआ तथा विवाह के 10 महीने बाद ही पत्नी की मृत्यु। दुबारा विवाह नहीं किया। आजीवन कांग्रेस के सदस्य रहे। स्वातन्त्र्य-आन्दोलनों में जेल-यात्रा। सामाजिक तथा साहित्यिक सेवा-कार्यों के लिए सदैव समर्पित रहे। आजीवन मथुरा निवासी रहे।

साहित्य-सेवा—पहली कविता प्रथम महयुद्ध के समय "ब्रिटिश विजय-कामना" के सम्बन्ध में लिखी, जो "मथुरा गजट" में सन् 1941 ई. में प्रकाशित हुई। तत्पश्चात् कांग्रेस में प्रविष्ट होकर ब्रिटिश-शासन के विरोध में पर्याप्त लिखा। अनेक साहित्यिक एवं सामाजिक संस्थाओं से सम्बद्ध तथा अनेक साहित्यिक कार्य-क्रमों के आयोजक रहे। सैकड़ों कवि-सम्मेलनों, कवि-गोष्ठियों तथा "पढ़ंत-गोष्ठियों" में काव्य-पाठ किया। आकाशवाणी केन्द्र मथुरा तथा दिल्ली से

रचनाओं का प्रसारण। खड़ी बोली तथा ब्रज भाषा—दोनों में काव्य-सृजन। कुछ समय तक "माथुर हितैषी" नामक पत्र के सम्पादक भी रहे।

प्रकाशित-पुस्तकें—(1) सुपर्णा (कविता-संग्रह), (2) सप्तस्रोत, (3) बालक श्रीकृष्ण, (4) कृष्णावतार (सभी काव्य), (5) होली की हलचल (निबन्ध-संग्रह), (6) गोझा (ब्रजभाषा में नाटक) तथा (7) पश्चात्ताप (उपन्यासिका)।

अप्रकाशित कृतियाँ—खड़ी बोली तथा ब्रज-भाषा की सैकड़ों स्फुट रचनाएँ तथा निबन्ध।

विशेष—मंचीय-कवि के रूप में श्री चतुर्वेदीजी ने क्षेत्रीय, परन्तु पर्याप्त ख्याति अर्जित की थी। आपकी कविताएँ विषयानुकूल भाषा, भाव-गांभीर्य एवं सम्प्रेषणीयता की दृष्टि से उत्तम हैं। आपके सम्बन्ध में एक अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्रकाशित हो चुका है।

काव्योदाहरण—

"चाहूँ तो उड़ा दूँ फूँक मारते ही पर्वतों को,
उँगली दिखा के नभ मण्डल गिरा दूँ मैं।
पल में समुद्र को उलाँघ फेर लौट आऊँ,
लात ही से भूमि को पताल में पठा दूँ मैं।
सूर्य को समीप लाके सेवकी करालूँ और,
चाहूँ चन्द्रमा के चार चपत लगा दूँ मैं।
बातन का वीर हूँ, कहो तो तुम्हें आज निज,
वीरता को बात ही की बात में बता दूँ मैं।।"

(स्व.) पं. अमृतलाल चतुर्वेदी

पिता—श्री माधुरी प्रसाद चतुर्वेदी। जन्म तिथि—शरद पूर्णिमा, सं. 1955 वि. (सन् 1899 ई.)। जन्म स्थान—फीरोज़ाबाद, (आगरा)। शिक्षा—एम. ए., एल-एल. बी.। व्यवसाय—वकालत। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सभा, आगरा बाल्यकाल से। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1925 ई, नागरी प्रचारिणी में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—आजीवन। पता—शीतला गली, आगरा। निधन तिथि—20 अप्रैल 1984 ई.।

अन्य—बाल्यावस्था में ही पिता का स्वर्गवास। आगरा में शिक्षा। आरम्भ में नायब-तहसीलदार के पद पर कार्य किया। 25 वर्ष की आयु में नगरपालिका, फ़ीरोज़ाबाद के चेयरमैन बने। 13 वर्षों तक आगरा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के उपसभापति रहे। कुछ समय तक स्वतन्त्र रूप से तहसील एत्मादपुर में वकालत की, फिर आगरा चले आये और यहीं वकालत करने लगे। जीवन के अन्तिम 10 वर्षों में वकालत

छोड़कर घर पर ही अध्ययन, मनन, चिन्तन एवं लेखन में व्यस्त रहे। अनेक संस्थाओं द्वारा अभिनन्दित। संगीत में विशेष रुचि। सस्वर काव्य-पाठ के लिए प्रसिद्ध रहे। अनेक शिक्षा-संस्थाओं से भी सम्बद्ध रहे। साहित्य-वारिधि, साहित्य-महारथी, ब्रजकोकिल आदि अनेक सम्मानोपाधियाँ प्राप्त।

साहित्य-सेवा—"विकल कली" शीर्षक पहली रचना सन् 1928 ई. में "विशाल भारत" में प्रकाशित हुई। फिर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में स्फुट-रचनाओं का प्रकाशन तथा आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण। सैकड़ों मंचों से काव्य-पाठ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) विकल कली, (2) देश दर्पण, (3) श्याम सदेसौ तथा (4) गालिब-अमृत (सभी काव्य)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) बिहारी सतसई की टीका (प्रेस में), (2) उमर ख़य्याम की रूबाइयों का ब्रजभाषा में पद्यानुवाद, (3) लगभग 2000 स्फुट रचनाएँ।

विशेष—ब्रजभाषा के लब्ध-प्रतिष्ठित सुमधुर कवि। कवित्त, सवैया, रोला, दोहा, सोरठा, घनाक्षरी, कुण्डलियाँ आदि छन्दों तथा पदों की रचना में दक्षता प्राप्त। शुद्ध टकसाली बजभाषा के प्रयोग में कुशल। शिल्प, भाव तथा भाषा के धनी। कृष्ण-काव्य के प्रति विशेष रुचि। सामाजिक तथा राजनीति विषयों पर भी व्यंग्य-प्रधान रचनाएँ लिखीं। "स्याम सदेसौ" उद्धव-गोपी सम्वाद विषयक ब्रजभाषा की उत्तम कृति। "देश दर्पण" में तत्कालीन राजनीतिक-परिस्थितियों पर व्यग्य तथा कटाक्ष। "गालिब-अमृत" में गालिब की रचनाओं का पद्यानुवाद। विविध विषयों पर अनेक स्फुट रचनाएँ। मंचीय-कवि के रूप में क्षेत्रीय ख्याति लब्ध।

काव्योदाहरण—

"आयौ हौं भिखारी आस बाँधतु तिहारी भारी,
बारी का हमारी ही बिसारी हरि जायगी ?
ह्वै कै दुखहारी सुखकारी अघतारी तोहि,
छूटयै पिछारी कहौ कैसें सरि जायगी।
मैं तौ ब्रजबारौ और तू ब्रज-रखबारौ (प्यारौ)
याही एक नाते का न पार परि जायगी।
पातक-पुजारी दुरदंड अधिकारी, तऊ
तोरी कृपा कोरी मोरी झोरी भरि जायगी।।"

("स्याम संदेसौ" से)

(स्व.) ठा. उल्फ़तसिंह चौहान "निर्भय"

पिता—ठा. हेतसिंह चौहान। जन्म तिथि—22 जून सन् 1899 ई.। जन्म स्थान—ग्राम-हसनपुर, तहसील-एत्मादपुर (जिला आगरा)। शिक्षा—सामान्य।

व्यवसाय—कृषि तथा समाज-सेवा। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1913 ई. प्रथमबार मंचीय काव्य-पाठ सन् 1917 ई. आगरा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि–आजीवन। पता—3, सूर्य नगर, आगरा। निधन तिथि—17 सितम्बर, 1980 ई.।

अन्य—स्वतंत्रता-आन्दोलन के सेनानी। सन् 1932 ई. में फरार रहे। सन् 1941 से 1945 तक कारावास। सन् 1948 मे जिला कांग्रेस कमेटी के मंत्री। सन् 1948 से सन् 1952 तक जिला बोर्ड, आगरा के अध्यक्ष। सन् 1952 से 1957 तक उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्या। बीच में कुछ समय तक कांग्रेस से त्यागपत्र देकर साम्यवादी दल के सदस्य रहे, फिर सन् 1968 में भारतीय क्रांतिदल के जिला-अध्यक्ष बने। जिला स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी कल्याण परिषद्, आगरा के अध्यक्ष तथा अन्य अनेक संस्थाओं से भी सम्बद्ध रहे।

साहित्य-सेवा—प्रथम कविता "किसानों की पुकार" सन् 1921 में प्रकाशित हुई, तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक मचों से काव्य-पाठ। खड़ी बोली तथा ब्रज-भाषा में काव्य-सृजन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) किसानों की पुकार, (2) किसानों का बिगुल, (3) चुनाव चालीसा, (4) चीन कमीन ने धोकौ कियौ, (5) निर्भय नीति, (6) निर्भय किसान दोहावली (सभी काव्य)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) निर्भय दोहा सतसई, (2) आध्यात्मिक सतसई (3) सत्य हरिश्चन्द्र लीला (4) ईषोपनिषद् (हिन्दी-काव्यानुवाद)। इनके अतिरिक्त सैकड़ों कविताएँ तथा निबन्ध।

विशेष—निर्भयजी की अधिकांश कविताएँ ब्रजभाषा में हैं। कुछ खड़ी बोली में भी हैं। इन्होने अपनी कविताओं में दोहा, सोरठा, कवित्त तथा सवैया छन्दों का अधिक प्रयोग किया है। छन्द, भाव तथा भाषा की दृष्टि से सभी रचनाएँ टकसाली हैं। देश-प्रेम, किसान, श्रमिक, नीति, आध्यात्म तथा सामाजिकता—ये आपकी रचनाओं के मुख्य वर्ण्य-विषय हैं। सामयिक तथा राजनीतिक घटनाओं पर भी आपने खूब लिखा है। मंचीय-कवि के रूप में क्षेत्रीय-ख्याति लब्ध।

काव्योदाहरण—

"कौन ने सेस के सीस धर्‌यौ पग, सिंह की खोह में को धसि आयौ,
रुद्र की भंग समाधि करी किन, कौन ततैयनु छेड़ि जगायौ।
कौन ने नौतौ दियौ जमराज कौं, कौन ने ज्वालामुखी धधकायौ,
तुंग हिमालय श्रंगनु पै मरिबे "निरभै" कहु को चढ़ि आयौ।।"

(चीन कमीन ने धोकौ कियौ, पृष्ठ 7)

अन्य कविगण—

इस वर्ग के अन्य कवियों का संक्षिप्त परिचय निम्नानुसार है—इनके

छोड़कर घर पर ही अध्ययन, मनन, चिन्तन एवं लेखन में व्यस्त रहे। अनेक संस्थाओं द्वारा अभिनन्दित। संगीत में विशेष रुचि। सस्वर काव्य-पाठ के लिए प्रसिद्ध रहे। अनेक शिक्षा-संस्थाओं से भी सम्बद्ध रहे। साहित्य-वारिधि, साहित्य-महारथी, ब्रजकोकिल आदि अनेक सम्मानोपाधियाँ प्राप्त।

साहित्य-सेवा—"विकल कली" शीर्षक पहली रचना सन् 1928 ई. में "विशाल भारत" में प्रकाशित हुई। फिर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में स्फुट-रचनाओं का प्रकाशन तथा आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण। सैकड़ों मंचों से काव्य-पाठ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) विकल कली, (2) देश दर्पण, (3) श्याम सदेसौ तथा (4) गालिब-अमृत (सभी काव्य)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) बिहारी सतसई की टीका (प्रेस में), (2) उमर ख़य्याम की रूबाइयों का ब्रजभाषा में पद्यानुवाद, (3) लगभग 2000 स्फुट रचनाएँ।

विशेष—ब्रजभाषा के लब्ध-प्रतिष्ठित सुमधुर कवि। कवित्त, सवैया, रोला, दोहा, सोरठा, घनाक्षरी, कुण्डलियाँ आदि छन्दों तथा पदों की रचना में दक्षता प्राप्त। शुद्ध टकसाली ब्रजभाषा के प्रयोग में कुशल। शिल्प, भाव तथा भाषा के धनी। कृष्ण-काव्य के प्रति विशेष रुचि। सामाजिक तथा राजनीति विषयों पर भी व्यंग्य-प्रधान रचनाएँ लिखीं। "स्याम सदेसौ" उद्धव-गोपी सम्वाद विषयक ब्रजभाषा की उत्तम कृति। "देश दर्पण" में तत्कालीन राजनीतिक-परिस्थितियों पर व्यंग्य तथा कटाक्ष। "गालिब-अमृत" में गालिब की रचनाओं का पद्यानुवाद। विविध विषयों पर अनेक स्फुट रचनाएँ। मंचीय-कवि के रूप में क्षेत्रीय ख्याति लब्ध।

काव्योदाहरण—

"आयौ हौं भिखारी आस बाँधतु तिहारी भारी,
बारी का हमारी ही बिसारी हरि जायगी?
ह्वै कै दुखहारी सुखकारी अघतारी तोहि,
छुटयैं पिछारी कहौ कैसैं सरि जायगी।
मैं तौ ब्रजबारौ और तू ब्रज-रखबारौ (प्यारौ)
याही एक नाते का न पार परि जायगी।
पातक-पुजारी दुरदंड अधिकारी, तऊ
तोरी कृपा कोरी मोरी झोरी भरि जायगी।।"

("स्याम संदेसौ" से)

(स्व.) ठा. उल्फ़तसिंह चौहान "निर्भय"

पिता—ठा. हेतसिंह चौहान। जन्म तिथि—22 जून सन् 1899 ई.। जन्म स्थान—ग्राम-हसनपुर, तहसील-एत्मादपुर (जिला आगरा)। शिक्षा—सामान्य।

व्यवमाय—कृषि तथा समाज-सेवा। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1913 ई. प्रथमबार मंचीय काव्य-पाठ सन् 1917 ई. आगरा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—आजीवन। पता—3, सूर्य नगर, आगरा। निधन तिथि—17 सितम्बर, 1980 ई.।

अन्य—स्वतंत्रता-आन्दोलन के सेनानी। सन् 1932 ई. में फरार रहे। सन् 1941 से 1945 तक कारावास। सन् 1948 मे जिला कांग्रेस कमेटी के मंत्री। सन् 1948 से सन् 1952 तक जिला बोर्ड, आगरा के अध्यक्ष। सन् 1952 से 1957 तक उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्या। बीच में कुछ समय तक कांग्रेस से त्यागपत्र देकर साम्यवादी दल के सदस्य रहे, फिर सन् 1968 में भारतीय क्रांतिदल के जिला-अध्यक्ष बने। जिला स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी कल्याण परिषद्, आगरा के अध्यक्ष तथा अन्य अनेक संस्थाओं से भी सम्बद्ध रहे।

साहित्य-सेवा—प्रथम कविता "किसानों की पुकार" सन् 1921 में प्रकाशित हुई, तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक मचों से काव्य-पाठ। खड़ी बोली तथा ब्रज-भाषा में काव्य-सृजन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) किसानों की पुकार, (2) किसानों का बिगुल, (3) चुनाव चालीसा, (4) चीन कमीन ने धौको कियौ, (5) निर्भय नीति, (6) निर्भय किसान दोहावली (सभी काव्य)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) निर्भय दोहा सतसई, (2) आध्यात्मिक सतसई (3) सत्य हरिश्चन्द्र लीला (4) ईषोपनिषद् (हिन्दी-काव्यानुवाद)। इनके अतिरिक्त सैकड़ों कविताएँ तथा निबन्ध।

विशेष—निर्भयजी की अधिकांश कविताएँ ब्रजभाषा मे हैं। कुछ खड़ी बोली में भी हैं। इन्होने अपनी कविताओं में दोहा, सोरठा, कवित्त तथा सवैया छन्दों का अधिक प्रयोग किया है। छन्द, भाव तथा भाषा की दृष्टि से सभी रचनाएँ टकसाली हैं। देश-प्रेम, किसान, श्रमिक, नीति, आध्यात्म तथा सामाजिकता—ये आपकी रचनाओं के मुख्य वर्ण्य-विषय हैं। सामयिक तथा राजनीतिक घटनाओं पर भी आपने खूब लिखा है। मंचीय-कवि के रूप में क्षेत्रीय-ख्याति लब्ध।

काव्योदाहरण—

"कौन ने सेस के सीस धर्‌यौ पग, सिंह की खोह में को धसि आयौ,
रुद्र की भंग समाधि करी किन, कौन ततैयनु छेड़ि जगायौ।
कौन ने नौतौ दियौ जमराज कों, कौन ने ज्वालामुखी धधकायौ,
तुंग हिमालय श्रृंगनु पै मरिबे "निरभै" कहु को चढ़ि आयौ।।"

(चीन कमीन ने धौको कियौ, पृष्ठ 7)

अन्य कविगण—

इस वर्ग के अन्य कवियों का संक्षिप्त परिचय निम्नानुसार है—इनके

द्वारा लिखित पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं, परन्तु मंचीय-कवि के रूप में ये सभी सामान्य ख्याति ही अर्जित कर पाये हैं—

(1) **स्व. मुंशी पन्नालाल 'प्रेमपुंज'**—आप आगरा के निवासी थे। आपके द्वारा लिखित (1) स्वतन्त्र वनिता विनाश, (2) मही महिमा, (3) सत्य दर्पण तथा (4) हंसदूत शीर्षक छोटी-छोटी काव्य-पुस्तकें प्रकाशित है। आप ब्रज भाषा के कवि थे।

(2) **स्व. भागीरथ भास्कर**—आप कैथावा (जिला इटावा) के निवासी थे। आप खड़ी-बोली तथा ब्रजभाषा दोनों में कविता लिखते थे। आपके द्वारा लिखित कुछ काव्य पुस्तकें प्रकाशित हैं।

(3) **स्व. रामदयाल "दयाल कवि"**—आपका जन्म लोहवन (जिला मथुरा) में हुआ था। आप ब्रजभाषा के कवि थे। मरणोपरान्त आपकी कविताओं का एक संकलन प्रकाशित हुआ है।

(4) **श्री उमेश जोशी**—आप फीरोजाबाद निवासी है। आपके द्वारा लिखित कुछ गद्य-पुस्तकें प्रकाशित हैं। आप ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली दोनों में काव्य-रचना करते हैं।

(5) **श्री हजारी लाल जैन "प्रेमी"**—आप आगरा निवासी है। आपके द्वारा लिखित "जैन संगीत सुधा" नामक एक काव्य-पुस्तिका तथा "काया-पलट" शीर्षक एक उपन्यास प्रकाशित हैं। आजकल आप लक्ष्मणगढ़, (जि. अलवर) में निवास कर रहे है।

(6) **पं. देवी प्रसाद शर्मा "दिव्य"**—आप बसईकलां, ताजगंज, आगरा में निवास करते हैं। आपने ब्रजभाषा तथा खड़ी बोड़ी—दोनों में काव्य-रचना की है। आपके द्वारा लिखित गद्य-पद्य की कुछ पुस्तकें प्रकाशित हैं।

(7) **स्व. भगवत् स्वरूप जैन**—आप एत्मादपुर जिला आगरा के निवासी थे। आपके द्वारा लिखित कुछ नाटक तथा अन्य पुस्तकें प्रकाशित हैं। हिन्दी तथा उर्दू में कविता लिखते थे।

(8) **पं. रामचन्द्र मुंगा**—आप छत्ता बाजार, मथुरा में निवास करते हैं। आपके द्वारा लिखित एक काव्य पुस्तक प्रकाशित है।

(9) **प्रो. तेजभान संगीताचार्य**—आप तिलकद्वार, मथुरा में निवास करते हैं तथा संगीत-शिक्षक हैं। आपके द्वारा लिखित "भारत गौरव" शीर्षक एक काव्य-पुस्तक प्रकाशित है।

"क" वर्ग के "अप्रकाशित कवि"

इनमें निम्नलिखित नाम प्रमुख हैं—

(1) स्व. श्री पुरुषोत्तम दास "सैंया" (1885-1960 ई.) मथुरा।

(2) श्री गोपाल शरण शर्मा (1897 ई.) भरतपुर।

इनका संक्षिप्त परिचय निम्नानुसार है—

(1) स्व. श्री पुरुषोत्तम दास "सैंया" (मथुरा)—आप 'उत्तम' उपनाम से कविताएँ लिखते थे। मथुरा के विश्राम बाजार में इनकी कंठी-माला की दूकान थी, जहाँ कवियों का जमघट लगा रहता था। इनकी काव्य-रचना का एक उदाहरण इस प्रकार है—

"कंकन करन कटि किंकिनी बिराज रही,
धीरता बिराज रही मन की उमंग में।
"उत्तम" निहार बैनी. मैनी मृगनैनी रही,
जस की नसैनी बान सोहत निखंग में॥
बीरी पान हार जापै बाँधि रखी तरवार,
रथ के अगारी बैठ्यो केसरी उमंग में।
हीजरा के ढंग में, सुबीरता के रंग रंग्यौ,
उत्तर के संग जाइ पारथ यों जंग में॥"

(ब्रज का इतिहास, भाग 2, पृ. 376)

(2) **श्री गोपाल शरण शर्मा** (भरतपुर)—आप राजकीय सेवा में रहे। अब सेवा-निवृत्त होकर विश्राम तथा अध्ययन में समय बिताते हैं। इनकी काव्य-रचना का एक उदाहरण इस प्रकार है—

"ग्रीषम में मुरब्बा, गुलकंद है न ठंडाई,
मंजन है मिस्सी दस्तयाब हुई दंत की।
वर्षा में छप्पर सब टपकता है चूल्हे पै,
छत्तें सब चुचातीं हुई कोठरी गलंत की॥
शरद निकाली टाली शिशिर हेमंत ताप,
लाई परदेस सौं न पतियां वा कंत की।
भामिनी लिखै है परदेस जाइ बैठे कंत,
चूहे करें ग्यारस, कछु खबर है बसंत की॥"

"ख" वर्ग के प्रकाशित कवि—

इस वर्ग के प्रमुख कवि निम्नलिखित हैं—

(1) स्व. श्री हाकिमसिंह राठौर "कौशलेन्द्र",

(2) ज्यो. राधेश्याम द्विवेदी,

(3) स्व. श्री रामचन्द्र सैनी,

(4) श्री मुंशी लाल गोस्वामी,

(5) श्री सुनहरी लाल "पराग",
(6) श्री खूबीराम लवानियां,
(7) श्री प्रभुलाल गर्ग "काका हाथरसी",
(8) स्व. पं. हृषीकेश चतुर्वेदी,
(9) श्री बालमुकुन्द चतुर्वेदी "मुकुन्द",
(10) स्व. श्री रामलला "ललाकवि",
(11) स्व. ठा. नवाबसिंह चौहान "कंज",
(12) स्व. श्री गजराजसिंह "सरोज",
(13) स्व. श्री शिशुपाल सिंह "शिशु",
(14) श्री वेदव्रत शास्त्री,
(15) श्री गोविन्द दत्त चतुर्वेदी "गोबिन्द कवि "
(16) श्री कृष्णलाल "कुसुमाकर"
(17) स्व. डा. पद्मसिंह शर्मा "कमलेश"
(18) स्व. श्री प्रियतमदत्त चतुर्वेदी "चच्चन"
(19) डा. मथुरा प्रसाद "मानव"
(20) श्री हरिपालसिंह चौहान "दग्ध"
(21) श्री ओंकार मिश्र "प्रणव"
(22) स्व. श्री बलवीर सिंह "रंग"
(23) स्व. श्री गणेशलाल शर्मा "प्राणेश"

उक्त कवियों के सम्बन्ध में ज्ञातव्य-विवरण आगे प्रस्तुत है ।

(स्व.) श्री हाकिम सिंह राठौर "कौशलेन्द्र"

पिता—श्री खूबसिंह राठौर । जन्म तिथि—20 सितम्बर 1901 ई. । जन्म-स्थान—डालूपुर (फर्रुखाबाद) । शिक्षा—माध्यमिक । व्यवसाय—राज्याश्रित । निवास-स्थल—राज सदन, मैनपुरी । काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1916 ई. । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ सन् 1921 ई., मैनपुरी में । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—बाल्यकाल से जीवनान्त तक । निधन-तिथि—28 अप्रैल 1930 ई. ।

अन्य—राजा साहब मैनपुरी के आश्रित रहे । 28 अप्रैल सन् 1930 ई. को घर में आग लग जाने से भाई, भाभी, भतीजों—कुल 8 व्यक्तियों सहित प्रचण्ड अग्नि में भस्म हो गए ।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1921 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त समकालीन अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन । मुख्यतः खड़ी बोली में काव्य-सृजन ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) काकली (कविता संग्रह) ।

अप्रकाशित कृतियाँ—अज्ञात ।

विशेष—ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली के श्रेष्ठ कवि कौशलेन्द्रजी ने अपने सुललित-काव्य तथा सुमधुर-पाठ हेतु अल्पकाल मे ही अत्यधिक मंचीय ख्याति अर्जित करली थी। आपकी रचनाओं मे करुण-रस का परिपाक बड़े मार्मिक ढंग से हुआ है। आपके कवित्त, सवैया तथा घनाक्षरी हिन्दी-साहित्य की अमूल्य निधि हैं। इस प्रतिभाशाली युवा-कवि का अग्नि-दाह में असामयिक-देहावसान हो गया; साथ ही उनकी अन्य काव्य-कृतियाँ भी भस्मीभूत हो गईं।

काव्योदाहरण—

"मरते सभी हैं, हमें डर मरने का नहीं,
मार कर हमको न आप कुछ पाएँगे।
होगा अपकार, रम जायगा कुरंग कुल,
जग में कभी न तुम्हें भोले पतिआएँगे।
"कौशलेन्द्र" हमें बस शोक इतना है, जब—
प्यारे मृग खोज में हमारी यहाँ आएँगे।
सूनी विपिन-स्थली बिलोकि दूनो होगी व्यथा,
उर भर आएँगे, नयन झर लाएँगे।"

(काकली, पृ. 16)

ज्यो. राधेश्याम द्विवेदी

पिता—ज्यो. माधवलालजी द्विवेदी। जन्म-तिथि—कार्तिक कृष्णा 4, सं. 1957 वि. (सन् 1901 ई.)। जन्म स्थान—मथुरा। शिक्षा—बी. ए.। पूर्व व्यवसाय—जागीरदारी। वर्तमान कार्य—देश, साहित्य, समाज-सेवा। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1925 ई०। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1928 ई०, मथुरा में। ब्रज क्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—स्वामी घाट, मथुरा।

अन्य—मथुरा के प्रसिद्ध धनी तथा विद्वान् ज्योतिषी घराने में जन्म। स्वतंत्रता-संग्राम-सेनानी। कारावास में रहे। विद्या-वारिधि एवं साहित्य भूषण आदि अनेक सम्मानोपाधियाँ प्राप्त। राष्ट्रीय, सामाजिक एवं साहित्य-सेवा के क्षेत्र में विविध कार्य। "भारती अनुसंधान भवन" के संस्थापक। हिन्दी के अतिरिक्त ब्रजभाषा, गुजराती, संस्कृत, अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओं का ज्ञान। अध्ययन एवं प्राचीन साहित्य के अनुसंधान तथा संकलन में विशेष रुचि। जनार्दन, औदीच्यबन्धु, ब्रज भारती, ज्ञानदा आदि पत्रों के सम्पादक रहे। सार्वजनिक रूप से अभिनन्दित। 'सेवक-साधक' शीर्षक अभिनन्दन ग्रंथ आपके सम्मान में प्रकाशित हो चुका है। उत्तर प्रदेश राज्य सरकार द्वारा अभिनन्दित।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1926 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कविता, लेखादि का प्रकाशन। ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली में स्फुका-

सृजन एवं गद्य-लेखन। अनेक मंचों से काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी से रचनाओं का प्रसारण।

प्रकाशित-पुस्तकें—(1) वीर अभिमन्यु (खण्ड-काव्य), (2) श्याम तरंगिणी (कविता-संग्रह) (3) औदीच्य ब्राह्मणों का इतिहास, (4) समाजवादी शासन की रूप रेखा, (5) समाजवाद की विचारधारा, (6) मथुरा जिले के किसानों की समस्याएँ और उनके उपाय, (7) महात्मा गांधी जीवन और दर्शन, (8) श्री यमुना महिमा, (9) श्रीराम और श्रीकृष्ण (सभी गद्य), (10) निर्मला, (11) स्त्री जीवन (दोनों गुजराती से हिन्दी में अनुवाद) तथा (12) रुद्राष्टाध्यायी (संस्कृत से अनुवाद)।

इनके अतिरिक्त निम्नलिखित पुस्तकें सम्पादित हैं—(1) यज्ञोपवीत तत्वांक (2) पूर्णिमा, (3) ब्रजभाषा के अल्पज्ञात कविरत्न, (4) दम्पति-द्युति भूषण, (5) ब्रजवैभव, (6) श्रीकृष्ण पदावली।

अप्रकाशित कृतियां—आठ-दस पुस्तकें तथा अनेक कविताएँ और निबन्ध।

विशेष—साहित्यिक-दृष्टि से काव्य-कृतियाँ सामान्य, परन्तु शोध-विषयक कार्य महत्वपूर्ण। मंचीय-कवि के रूप में सामान्य ख्याति लब्ध। साहित्य-सेवा हेतु आजीवन समर्पित व्यक्तित्व।

काव्योदाहरण—

"कुंजन कदम्बन में कोकिल कुहुक करें,
केकी कपोत कीर कपि किलकिलाये री।
सीतल समीर सने सघन सुहाने बन,
सरस सरोजन तें सरवर सुहाये री॥
बरसा के बरसे तें बागन बहार बढ़ी,
बन और उपवन के बिरवा बौराये री।
घेरि घेरि घोर घने, घुमड़ाते घुमड़ाते,
आये घनस्याम, घनस्याम नहीं आये री॥"

(श्यामतरंगिणी, पृ. 17,)

स्व. श्री रामचन्द्र सैनी

पिता—श्री जमुना प्रसादजी। जन्म-तिथि—16 अक्टूबर,1903 ई.। जन्म-स्थान—आगरा। शिक्षा—हाईस्कूल। व्यवसाय—पुष्प-विक्रेता। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—12 वर्ष की आयु से। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1922 ई.। पता—भैंरों बाजार, बेलनगंज, आगरा। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—आजीवन। निधन-तिथि—8 अगस्त सन् 1971 ई.।

अन्य—संस्कृत, उर्दू तथा फ़ारसी का विशेष अध्ययन। समाज-सेवा के क्षेत्र में अग्रणी तथा सेवा-समिति, आगरा से आजीवन सम्बद्ध रहे।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1922 ई. में प्रकाशित हुई। आरंभ में लावनी तथा ख़याल लिखे; फिर ब्रजभाषा में कवित्त, सवैया, छन्द आदि लिखने के बाद खड़ी बोली में लिखा तथा उर्दू एवं फ़ारसी काव्य का हिन्दी-पद्यानुवाद किया। उर्दू में भी कविताएँ लिखीं। अनेक साहित्यिक संस्थाओं तथा आयोजनों से सम्बद्ध रहे। "रुबाइयात उमर ख़ैयाम", "शेख़सादी का करीमा" तथा "हाफ़िज़ का दीवान" का हिन्दी-पद्यानुवाद आपकी हिन्दी-जगत् को महत्वपूर्ण देन हैं। आरंभ में अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ किया, बाद में मंच से विरत होकर आजीवन साहित्य-साधना में संलग्न रहे।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) पैग़ामे मुहम्मद, (2) मज़ाके शाइरी, (3) हाफ़िज़ की रुबाइयाँ, (4) रुबाइयात उमर ख़ैयाम (सभी काव्य)।

अप्रकाशित कृतियाँ—"दीवाने हाफ़िज़" का हिन्दी काव्यानुवाद तथा हिन्दी-उर्दू की 500 से अधिक स्फुट-कविताएँ।

विशेष—सैनीजी आजीवन प्रचार तथा आत्म-विज्ञापन से दूर, साहित्य के मौन-साधक बने रहे, अतः उनका समुचित साहित्यिक-मूल्यांकन नहीं हो सका; परन्तु उन्होंने मौलिक तथा अनुवाद के रूप में जो कुछ सृजन किया, वह हिन्दी-साहित्य की अमूल्य निधि है। भाषा, भाव, शिल्प आदि सभी दृष्टियों से इनका काव्य अनुपम है।

काव्योदाहरण—

"प्रियवर ! तेरी प्रेमगली है, पुण्यवान को पुण्य-सदन,
जितने भाग्यवान हैं सबका, तेरी ओर लगा है मन.
आज विमुख होकर जो प्राणी, तुझसे मोड़ रहा है मुख,
वह भविष्य में किन आँखों से, कर सकता तेरा दर्शन ?"

(हाफ़िज़ की रुबाइयाँ, पृष्ठ 3)

श्री मुंशीलाल गोस्वामी

पिता—श्री बुद्ध देवगिरि गोस्वामी। जन्म तिथि—14 फरवरी, सन् 1904 ई.। जन्म-स्थान—गाँव-सेवला, पोस्ट-नारिखी (जि. आगरा)। शिक्षा—हिन्दी मिडिल पास तथा उर्दू कक्षा 6 तक। पी. टी. सी. ट्रेण्ड, वैद्य-रत्न। पूर्व व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1923 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1924 ई., ओखरा (फीरोजाबाद) में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान [illegible]—[illegible], महावीर नगर, फीरोजाबाद (जि. आगरा)।

अन्य—इलाहाबाद से "ग्राम-सेवक" की ट्रेनिंग प्राप्त। स्वतन्त्रता-संग्राम-सेनानी। अनेक बार के कारावास-भोगी। जिला बोर्ड में अध्यापक रहे। सम्प्रतिः शिक्षा-विभाग की सेवा से निवृत्त होकर समाज-सेवा के क्षेत्र में कार्यरत।

साहित्य-सेवा—पहली कविता "राष्ट्रीय आल्हा" सन् 1932 ई. में "सैनिक" में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ। खड़ी बोली के अतिरिक्त ब्रजभाषा में काव्य-सृजन। लोक-काव्य के प्रमुख सर्जक।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) किसानों का 99 का फेर, (2) राष्ट्रीय आल्हा, (3) गांधी चरित मानस, (4) बुद्धायण, (5) भीम चरित मानस तथा (6) गोस्वामी कवितावली (सभी काव्य)।

अप्रकाशित कृतियाँ—सैकड़ों स्फुट कविताएँ।

विशेष—लोक-कवि के रूप मे ख्याति लब्ध। साहित्यिक-दृष्टि से रचनाएँ सामान्य, परन्तु जन-साधारण के हेतु हृदयग्राही। मंचीय-कवि के रूप में क्षेत्रीय ख्याति लब्ध।

काव्योदाहरण—

ताले पड़े थे जीभ पर, झंडा उठाना था कठिन।
घर-बार तज कर, बेहड़ों में घूमता था रात-दिन॥
बालक बिछुड़कर मर गए, घरबार सारा लुट गया।
छुट गये रिश्ते सभी, ऐसा दिवाना बन गया॥
बेड़ियां हंसकर बजाई थीं समझ कर झुनझुना।
स्वतन्त्रता के सैनिकों की, कर रहा हूँ बंदना॥

(गोस्वामी कवितावली, पृष्ठ 6)'

(स्व.) साँवल प्रसाद चतुर्वेदी 'श्याम'

पिता—पं. अजयराम चतुर्वेदी। जन्म तिथि—आश्विन शुक्ला 5, सं. 1960 वि., सन् 1904 ई.। जन्म-स्थान, गाँव—अभौर्रा, तहसील—कुम्हेर, जिला भरतपुर। शिक्षा—सामान्य। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1921 ई.। प्रथमबार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1925 ई. भरतपुर में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—आजीवन। पता—पुरोहित मुहल्ला, वासनगेट, भरतपुर। निधन तिथि—26 दिसम्बर, 1972 ई.।

अन्य—ऐश्वर्यपूर्ण परिवार में जन्म, परन्तु कालगति से 8 वर्ष की आयु में पितामह एवं 15 वर्ष की आयु में पिता के निधनोपरान्त घोर विपन्नावस्था में जीवन-यापन। प्रथम विवाह 1912 ई. में।

सन् 1923 ई. में पत्नी का निधन, तदुपरान्त 1929 ई. में द्वितीय विवाह श्रीमती यमुना चतुर्वेदी के साथ। बाल्यावस्था एवं युवावस्था में अनेक प्रकार के संघर्षों में पलते हुए विभिन्न कार्य किये। रामलीला तथा नाटक मण्डलियों में अभिनय से लेकर कथावाचकी तक की। 1925 ई. से 1932 ई. तक रिवोल्यूशनरी पार्टी के कार्यकर्ता रहे। सन् 1931 ई. से श्रीविजय सिंह 'पंथिक' से सम्पर्क में आकर

गांधीजी के अनुयायी बन गये। कुछ दिनों बापू के आश्रम में रहकर सेवा कार्य किया। फिर स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक तथा संगठक के रूप में देशव्यापी भ्रमण एवं विभिन्न कार्य किये। पहली बार सन् 1939 ई. में तदुपरान्त 1942 ई. तथा 1945 ई. में जेल यात्राएँ कीं। भरतपुर राज्य प्रजा परिषद् के सक्रिय कार्यकर्ता एवं जन-नेता के रूप में अपने क्रियाकलापों द्वारा पर्याप्त लोक-प्रियता अर्जित की। सन् 1947 ई. में भी भरतपुर राज्य द्वारा कारावास भोगी।

स्वतन्त्रता के बाद अपने गाँव के सरपंच, मत्स्य राज्य के प्रचार-अधिकारी तथा जेल-बोर्ड के सैक्रेटरी पद पर भी कुछ समय तक कार्य किया। चिकित्सक भी रहे।

साहित्य-सेवा—समय-समय पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशन, अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ, हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर से निकट सम्बद्धता। सन् 1926 ई. में 'दैनिक राजस्थान सन्देश' (अजमेर), सन् 1935 से 38 तक 'साप्ताहिक मध्यभारत सन्देश' (इन्दौर), तत्पश्चात् 'नवयुग सन्देश' तथा 'कर्मभूमि' साप्ताहिक (भरतपुर) के सम्पादक रहे। अनेक साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन किया तथा अनेक साहित्यिक-संस्थाओं के सहयोगी रहे।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) रण बांकुरा सूरजमल तथा (2) कृष्ण श्याम गायन (काव्य) एवं (3) समाज के शिकार (कथा-संग्रह)।

अप्रकाशित रचनाएं—(1) समाज के शिकार भाग 2 (कथा-संग्रह), (2) महावीर स्वामी का जीवन चरित्र (जीवनी), (3) परिवर्तन (उपन्यास), (4) भरतपुर के स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास (संस्मरणात्मक) तथा अनेक स्फुट कविताएँ।

विशेष—हिन्दी साहित्य सम्मेलन, झांसी द्वारा 'कविवर' की सम्मानोपाधि प्राप्त श्री चतुर्वेदीजी को ओरछा तथा बडवानी दरबारों से स्वर्ण-पदक तथा अन्य स्थानों से अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए थे। सन् 1965 ई. में हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर द्वारा आपका सार्वजनिक अभिनन्दन करते हुए सम्मान-पत्र भेंट किया गया तथा 2 अक्टूबर सन् 1970 ई. को भरतपुर से प्रकाशित 'नवयुग सन्देश' (साप्ताहिक) ने आपके विषय में एक विशेषांक भी प्रकाशित किया, जिसमें चतुर्वेदीजी की राष्ट्रीय, सामाजिक तथा साहित्यिक-सेवाओं का विशद् उल्लेख है। श्री चतुर्वेदी ने अपनी प्रतिभा का सर्वाधिक उपयोग विदेशी-शासन की दासता से मुक्ति पाने हेतु जन-मानस में प्रेरणा भरने के लिए किया। कथावाचकी तथा काव्य-पाठ के माध्यम से आप स्वतन्त्रता-संग्राम के सेनानियों का मार्ग-दर्शन किया करते थे। जीवन के अन्त तक आपने स्वाभिमान पूर्ण जीवन बिताया तथा स्वातन्त्र्योत्तर भारत में अवसर-वादियों द्वारा अधिकांश सच्चे स्वतन्त्रता-संग्राम सेनानियों के साथ जिस उपेक्षा का व्यवहार किया गया, उसका भी पर्याप्त अनुभव प्राप्त किया।

काव्योदाहरण—

"गिरि कौं उठाइ ब्रजधाम कौं बचाइ लियौ,
अग्नि तें उबार्‌यौ प्रहलाद दुखियारी कौ।
राखे गज-घण्ट तले अण्डा बिहंग हू के,
राख्यौ पन भारत में भीष्म ब्रह्मचारी कौ ॥
गज की पुकार सुनि ग्राह सौ बचाइ लियौ,
राख्यौ ब्रत नेम धर्म पाण्डव की नारी कौ।
तापहारी संतन सुखकारी बनवारी 'श्याम',
मोहि तौ भरोसौ एकु पीतपट धारी कौ ॥"

श्री सुनहरीलाल "पराग"

पिता—श्री द्वारिका प्रसाद कुलश्रेष्ठ। जन्म तिथि—चैत्र कृष्णा अष्टमी, सं. 1961 वि. (सन् 1905 ई.)। जन्म स्थान—गाँव-काँतौर, पो. कासगंज (जि. एटा)। शिक्षा—बी. टी. सी., साहित्य विशारद। पूर्व व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1925 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—जुलाई सन् 1925 ई., नागरी प्राचारिणी सभा, आगरा में। ब्रजक्षेत्र सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता : 160, परागपुरी, (सराय मिश्र) एटा।

अन्य—सम्पूर्ण जीवन संघर्ष युक्त। सम्प्रति—शेरवानी इन्टर कालिज, न्यौली (एटा) से सन् 1966 ई. में सेवा-निवृत्त होकर घर रहते हुए ही साहित्य-साधना। "साहित्याचार्य" की सम्मानोपाधि तथा अनेक पुरस्कार प्राप्त।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सं. 2014 वि. में प्रकाशित, तदुपरांत अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। सैकड़ों कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से संबंधित रहे। खड़ी बोली के अतिरिक्त ब्रजभाषा एवं उर्दू में भी काव्य-सृजन तथा गद्य-लेखन।

प्रकाशित-पुस्तकें—(1) अतीत के आलोक में, (2) पराग, (3) अमीर खुसरो, तथा (4) आँख और आँसू (सभी काव्य-संग्रह)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) देश के दुश्मनों से (2) हास्य-व्यंग्य (कविताएँ), (3) अकबर का सिर दर्द सकीट : एटा (शोध-विषयक), (4) आध्यात्म-ज्ञान-प्रवेशिका, (5) बच्चों के बापू, (6) दीपक और तूफान (काव्य)। इनके अतिरिक्त अनेक स्फुट-कविताएँ।

विशेष—"पराग" जी ने वीर रस के ओजस्वी-कवि के रूप में पर्याप्त ख्याति अर्जित की है। आपकी कविताएँ, छन्द, भाव, भाषा तथा शिल्प की दृष्टि से आकर्षक एवं हृदयग्राही हैं। वृद्धावस्था के कारण अब मंच से सन्यस्त।

काव्योदाहरण—

"जवानी राष्ट्र-गौरव स्वत्व सब को ढाल होती है,
अनैतिक-आचरण के प्रति बड़ी विकराल होती है,
धुरी है धर्म की सच्ची जवानी जिसको कहते हैं।
सुरों की साधना वीरों का पानी इसको कहते हैं।"

(पराग, पृष्ठ 81)

श्री खूबीराम लवानियाँ

पिता—श्री रामचंद्र लवानियाँ। जन्म तिथि—चैत्र कृष्णा एकादशी, सं. 1963 वि. (सन् 1906 ई.)। जन्म-स्थान—बेरी चाहर (जिला—आगरा)। शिक्षा—मिडिल। पूर्व व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1930 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1961 ई., आगरा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—बेरी चाहर (जिला—आगरा)।

अन्य—स्वतन्त्रता-संग्राम सेनानी तथा कर्मठ समाज-सेवी।

साहित्य-सेवा—प्रथम रचना सन् 1946 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कविताओं तथा लेखादि का प्रकाशन। हिन्दी तथा ब्रजभाषा में समान रूप से काव्य-सृजन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) विनय पत्रिका तथा (2) विनयवृत्तावली (काव्य)
अप्रकाशित कृतियाँ—250 से अधिक स्फुट पद, कवित्त, सवैया आदि।

काव्योदाहरण—

"जीवन की कितनी ही बाजियाँ लगायीं मैंने,
बार-बार जीता और बार-बार हारा हूँ।
जीतने में हर बार हार ही लगी है हाथ,
हार ने न भूल पाऊँ, ऐसी मार मारा हूँ।
अब जो हुआ है होश, यही जान पाया हूँ कि,
मेरे एक तुम हो, मैं केवल तुम्हारा हूँ।
जैसे बने तैसे लेलो, अपनी शरण प्रभो!
होकर विवश करबद्ध हो पुकारा हूँ॥"

("विनय वृत्तावली" : पृ. 17)

श्री प्रभूलाल गर्ग "काका हाथरसी"

पिता—श्री शिव लाल गर्ग। जन्म तिथि—18 सितम्बर, सन् 1906 ई.। जन्म-स्थान—हाथरस। शिक्षा—सामान्य। व्यवसाय—मुद्रण, प्रकाशन एवं मंचीय काव्य-पाठ। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन 1930 ई.। प्रथम-बार मंचीय काव्य-

पाठ—सन 1936 ई., हाथरस मेला में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—संगीत कार्यालय, हाथरस (जि. अलीगढ़)।

अन्य—हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, गुजराती तथा मराठी भाषाओं का काम चलाऊ ज्ञान। दो मास की अवस्था में ही पिता का स्वर्गवास। मामा के संरक्षण में पालन-पोषण। बाल्यावस्था में नाटक तथा नौटंकियों में अभिनय। 16 वर्ष की आयु में 6 रुपया मासिक पर नौकरी की। 1928 ई. में विवाह के कुछ समय बाद नौकरी छूट जाने पर साइन बोर्ड तथा चित्र बनाने का कार्य किया। सन् 1929 ई. में पुस्तक-प्रकाशन का कार्यारम्भ। 1935 ई. में संगीत कार्यालय से "संगीत" (मासिक-पत्रिका) का प्रकाशन। संगीत तथा चित्रकारी में विशेष रुचि। अब तक 150 तैल-चित्रों के निर्माता। (1) जयश्री, (2) ठिठोली पुरस्कार (1976) तथा (3) "कला-रत्न" आदि सम्मानोपाधियों से विभूषित। अनेक स्थानों पर अभिनन्दित।

साहित्य-सेवा—सन् 1933 ई. में पहली कविता "गुलदस्ता" (मासिक) में प्रकाशित हुई, तदुपरान्त देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रचुर परिमाण में कविताओं का प्रकाशन। हास्य-व्यंग्य के कवि के रूप में अखिल-भारतीय ख्याति प्राप्त। देश के कोने-कोने में सैकड़ों मंचों से काव्य-पाठ। आकाशवाणी के विविध केन्द्रों से रचनाओं का प्रसारण। खड़ी बोली के अतिरिक्त ब्रजभाषा तथा उर्दू में भी काव्य-सृजन। "कवि-सम्मेलन" तथा 'जमुना किनारे' फिल्म में तथा टेलिविजन पर काव्य-पाठ एवं अभिनय। अनेक कविताओं के ग्रामोफोन रिकार्ड्स बने। ब्रज साहित्य मण्डल के भूतपूर्व अध्यक्ष। "काका हाथरसी पुरस्कार" के संस्थापक।

प्रकाशित-काव्य पुस्तकें—(1) काका की कचहरी, (2) पिल्ला, (3) म्याऊँ, (4) दुलत्ती, (5) काका के कहकहे, (6) महामूर्ख-सम्मेलन, (7) काका की फुलझड़ियाँ, (8) काका के घड़ाके (9) कहँ काका कविराय, (10) चकल्लस, (11) हँसगुल्ले, (12) काका की काकटेल, (13) फिल्मी सरकार, (14) जय बोलो बेईमान की, (15) काकदूत (सभी काव्य संग्रह) (16) काका के प्रहसन, (17) काका हाथरसी, (18) तुकान्त कोश, (19) राग कोश (सभी गद्य)।

इनके अतिरिक्त संगीत-कला पर 4 तथा विभिन्न विषयों पर अनेक संपादित पुस्तकें भी हैं। कुल मिलाकर आपके द्वारा लिखित, अनूदित, संकलित एवं सम्पादित पुस्तकों की संख्या लगभग 40 है। "काका हाथरसी अभिनन्दन ग्रन्थ" (सन् 1976) भी प्रकाशित हो चुका है, जिसमें आपकी सैकड़ों रचनाएँ संकलित हैं।

विशेष—मंचीय-कवि के रूप में "काका हाथरसी" के नाम से अखिल भारतीय प्रसिद्धि प्राप्त श्री गर्ग को मंचीय-ख्याति सन् 1962 ई. के बाद प्रौढ़ावस्था में (लगभग 56 वर्ष की आयु में) प्राप्त हुई, तब से आप दिनों-दिनों लोक-प्रियता प्राप्त करते चले गए। प्रसिद्धि-लाभ के हेतु आपने व्यावसायिक-बुद्धि का प्रयोग भी खूब

किया है। साहित्यिक-दृष्टि से आपकी अधिकांश रचनाएँ सामान्य-स्तर की हैं और उनमें से कुछ अश्लीलता एवं विद्रूप की श्रेणी में भी रखी जा सकती हैं। बहुप्रचलित चुटकुलों को छन्दबद्ध कर मंच पर सुनाने में इन्हें महारत हासिल हैं। विभिन्न प्रकार की भाव-भंगिमाओं के प्रदर्शन से श्रोताओं को आकर्षित करने में भी ये पटु हैं। आर्थिकलाभ के लिए ये विवाहादि के आयोजनों में भी काव्य-पाठ करते हैं। आपने 'काका हाथरसी प्रोडक्शन' नाम से एक फिल्म-निर्मात्री संस्था भी स्थापित की है, जिसके तत्त्वावधान में 'जमुना किनारे' शीर्षक वाली एक तथाकथित 'ब्रजभाषा फिल्म' का निर्माण भी हुआ है।

काव्योदाहरण—

"तंग-चुस्त परिधान पर क्यों सिकोड़ते नाक ?
चल निकली इंगलैंड में "टाप-लैस" पोशाक।
टाप-लैस पोशाक, देखिए इसको साहब,
अग्रभाग-आवरण हो गया बिल्कुल गायब।
कहँ "काका" यह कलियुगजी का चमत्कार है,
ले पाश्चात्य ! सुन्दरी ! तुम को नमस्कार है ॥"

(काका अभिनदंन ग्रन्थ, पृ. 235)

स्व. पं. हृषीकेश चतुर्वेदी

पिता—पं. हरिशंकर चतुर्वेदी। जन्मतिथि—22 दिसम्बर, सन् 1907 ई.। जन्मस्थान—आगरा। शिक्षा—बी. ए. (अनुत्तीर्ण)। व्यवसाय—पैतृक भवन-सम्पत्ति। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—1922 ई., प्रथमबार मंचीय काव्य पाठ—1924 ई. आगरा में। पता—चौबेजी का कटरा, किनारी बाजार, आगरा। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—आजीवन। निधन-तिथि—23 सितम्बर 1970 ई.।

अन्य—अनेक संस्थाओं से सम्बन्धित रहे तथा अनेक बार सम्मानित एवं अभिनन्दित हुए। "रत्न दीप" गोष्ठी के संस्थापक।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1921 ई. में "चतुर्वेदी" (मासिक) में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ। अनेक साहित्यिक-संस्थाओं से सम्बद्ध रहे। हिन्दी तथा ब्रजभाषा के अतिरिक्त संस्कृत, उर्दू तथा अंग्रेजी में भी काव्य-सृजन। संस्कृत तथा अंग्रेजी से अनुवाद। विलोम-काव्य, यमक-श्लेष-काव्य, चित्र-काव्य, चुटकियाँ, चुटकुले, लिपि-विज्ञान तथा गद्य आदि अनेक विधाओं के लेखक।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) हृषीकेश गीतांजलि, (2) विजय वाटिका (3) रस-रंग, (4) छेड़-छाड़ (सभी काव्य-संग्रह) (5) वृद्ध नाविक, (6) गीता, (7) समश्लोकी मेघदूत, (8) श्री सत्यनारायण व्रतकथा (सभी काव्यानुवाद) तथा (9) श्री राम

कृष्ण काव्य (विलोम-काव्य) (10) श्री रामकृष्णायन (यमक-श्लेषमय-काव्य), (11) संयुक्त वर्ण विज्ञान, (12) श्री कृष्ण ताण्डव स्तोत्र (संस्कृत-काव्य)।

उक्त सभी छोटी-छोटी पुस्तकें तथा विविध विषयों पर लिखित सम्पूर्ण गद्य-पद्य, चित्र, अनुवाद, पत्र आदि कृतित्व एवं व्यक्तित्व का एकत्र संकलन "हृषीकेश रचनावली" के रूप में निधनोपरान्त प्रकाशित।

विशेष—श्री चतुर्वेदीजी ने मुख्यतः हास्य-व्यंग्य के कवि रूप में ख्याति अर्जित की। आप प्राचीन-परम्परा के चमत्कारी-काव्य के श्रेष्ठ कवि थे। भाषा परिमार्जित, छन्द सुगठित तथा शिल्प-सौन्दर्य की दृष्टि से सभी रचनाएँ उत्तम। आप जब तक जीवित रहे, आपका निवास एक साहित्यिक तीर्थ-स्थल जैसा बना रहा। आपके असामयिक-निधन को सम्पूर्ण ब्रजक्षेत्र की एक अपूरणीय साहित्यिक-क्षति के रूप में अनुभव किया जाता है। हाजिर-जबाबी में आपका जवाब नहीं था। आप छोटे से छोटे व्यक्ति को बड़े से बड़े के बराबर सम्मान देते थे। मंचीय-कवि के रूप में क्षेत्रीय-ख्याति लब्ध रहे।

काव्योदाहरण—

त्यागीजी के भवन, विरागी जी के कन्या-पुत्र,
साधुजी के हाथी-घोड़े खाते नित्य खीर हैं,
सुरा-सुन्दरी के सेवी प्रमुख सुधारक हैं,
ब्याज-ब्लैक वाले सेठ बड़े दानवीर हैं।
ब्याह पढ़ा करते निरक्षर पुरोहित जी,
काव्य-चोर कवि, बने जा रहे कबीर हैं,
अचरज क्या है, जो कि अकर्मण्य, मतिमन्द—
तन्द्रिल-जनों के नेता तुन्दिल-शरीर हैं॥"

(हृषीकेशजी की लोकप्रिय कविताएँ, पृ. 13)

श्री बालमुकुन्द चतुर्वेदी "मुकुन्द"

पिता—श्री अनंतरामजी। जन्मतिथि—कार्तिक शुक्ला 11, संवत् 1964 वि. (सन् 1908 ई.)। जन्मस्थान—मथुरा। शिक्षा—सामान्य। व्यवसाय—यजमानी। **काव्य-सृजन** का प्रारंभिक वर्ष—सं. 1980 वि.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सं. 1985 वि., मथुरा में। ब्रज-क्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता श्री यमुना निकुंज, गोलपाड़ा, मथुरा।

अन्य—"विद्यावारिधि" आदि अनेक सम्मानोपाधियाँ प्राप्त। अनेक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं से सम्बद्ध। "ब्रज कवि मण्डल" के अध्यक्ष रहे। ब्रजक्षेत्र तथा ब्रजसाहित्य सम्बन्धी विभिन्न शोध-कार्य। अनेक संस्थाओं द्वारा अभिनन्दित।

साहित्य-सेवा—प्रथम कविता सन् 1930 में प्रकाशित, तत्पश्चात् विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कविताओं तथा शोधपरक लेखों का प्रकाशन। ब्रजभाषा के प्रमुख

कवि। कुछ रचनाओं का खडी बोली में भी प्रणयन। अनेक मंचों से काव्य-पाठ। पढ़न्त-गोष्ठियों के प्रमुख कवि। आकाशवाणी केन्द्रों से रचनाओं का प्रसारण।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) यमुना लहरी, (2) मुकुन्द भक्तमाल, (3) ब्रह्मानन्द भजन माला, (4) हनुमत् चिन्तामणि स्तोत्र (सभी भजन, भक्ति एवं स्तोत्रात्मक काव्य-संकलन), (5) विप्लव गान (राष्ट्रीय कविताओं का संकलन), (6) नित्य पाठ ब्रजयात्रा (यात्रा-काव्य), (7) रसिया भागवत तथा, (8) आध्यात्म भागवत—(आध्यात्मिक-काव्य) (9) कवित्त जवाहर (विविध विषयों पर ब्रजभाषा के छन्द), (10) छेड़छाड़ (हास्य-व्यंगात्मक छन्द), (11) मजेदार पहेलियां (काव्यात्मक), (12) सप्त तरंगात्मक सूर सागर तथा (13) श्री कृष्ण कौस्तुभ ("**ब्रजभागवत**" महाकाव्य का एक अंश), (14) सुख सागर, (15) सती सावित्री, (16) विल्वमंगल (17) सती शांति देवी (18) वैद्य जीवन, (19) हिन्दू व्रत और त्यौहार एवं (20) सन्तोषी माता की कथा (सभी गद्य)।

इनके अतिरिक्त "ब्रजयात्रा" सम्बन्धी चार अन्य पुस्तकें भी प्रकाशित हैं।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) ब्रज भागवत—(16000 छन्दों में रचित महाकाव्य), (2) हास्य-सतसई (3) उद्धव-गर्जना, (4) मथुरा-मकरंद, (5) ब्रज-काव्य कौमुदी, (6) ब्रज-काव्य सुधा, (7) बलराम-वैभव, (8) ब्रज-रज, (9) मुरलिया बोल उठी, (10) वात्सल्य रस मंजरी, (11) युगल छन्द माला (12) मथुरा और यमुनाजी के रसिया, (13) राधा रानी की कुण्डलियाँ, (14) होली बसन्त विनोद; (सभी ब्रज-कविता संग्रह), (15) मूँछ महा-सम्मेलन, (16) चाचा की कहानी, (17) हास्यरसावतार जी, (18) झींगुर पंचमी, (19) भंग-रंग (सभी हास्य-व्यंग्य की कविताओं के संग्रह), (20) भारत का प्राचीनतम इतिहास (पौराणिक वंशावली), (21) मैं मानव हूँ (हिन्दी गद्य), (22) भारत के ताजी-बासी लोग (गद्य) तथा अन्य रचनाएँ।

विशेष—"मुकुन्दजी" के ब्रजभाषा काव्य में भाषा की सरलता, भावों की गंभीरता एवं सम्प्रेषणीयता पाई जाती है। इनकी अन्य रचनाएँ भी गंभीर अध्ययन एवं अन्वेषक-प्रवृत्ति की परिचायक हैं। मंचीय-कवि के रूप में क्षेत्रीय ख्याति लब्ध।

काव्योदाहरण—

"कैंची कला जंग कूच कमचीं कमर पेटी,
खैंचा गलगट्ट गल कोड़ा गरदान हैं।
इकटंगी इकलंगी गिरह गरदन तोड़,
चरखी चाँद तोड़ गधालोट ढकेलान हैं॥
धोबीपाट टंगड़ जमफांस पट्टे चपरास,
बगली बालसांकड़ा सवारी पछेलान है।

रूदस्त डुबकी झकोरा बत्तीसा दाव,
ऐते तीस दाव मल्ह-युद्ध में प्रधान हैं ॥"

(श्रीकृष्ण कौस्तुभ, पृष्ठ 115)

स्व. श्री रामलला "ललाकवि"

पिता—पं. हनुमान जी। जन्मतिथि—मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी सं. 1964 वि. (सन् 1908 ई.)। जन्मस्थान—मथुरा। शिक्षा—सामान्य। व्यवसाय—पुरोहिताई। पता—सतीघाट, मथुरा। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—7 वर्ष की आयु से। प्रथम बार मंचीय-काव्य-पाठ—15 वर्ष की आयु में, मथुरा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—आजीवन। निधनतिथि—27 नवम्बर 1975 ई.।

अन्य—जीवन भर संघर्ष-रत रहे। ब्रज साहित्य मण्डल आदि अनेक साहित्यिक संस्थाओं से संबंधित रहे। वेष-भूषा से भी पूर्ण ब्रजवासी। बोलचाल तथा लेखन कार्य में आजीवन ब्रजभाषा का ही प्रयोग किया।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1925 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। हजारों मंचों से काव्य-पाठ। आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से प्रसारण। ब्रजभाषा की प्रत्येक विधा एवं शैली में काव्य-सृजन। 'अमृतध्वनि' छन्द के प्रख्यात-सर्जक।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) द्रोपदी दुकूल तथा (2) वीर विक्रम वैभव (काव्य)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) मीरा द्वादशी, (2) वृन्दावन वैभव तथा हजारों छन्द, सवैया, कवित्त, घनाक्षरी, छप्पय आदि।

विशेष—बीसवीं शताब्दी में ब्रजभाषा के अन्यतम श्रेष्ठ कवि। भाषा, भाव, छन्द तथा शिल्प सभी दृष्टियों से सभी कृतियाँ अनुपम, निर्दोष तथा मर्मस्पर्शी। अपने काव्य-पाठ द्वारा श्रोताओं को रस-विभोर कर देने की अद्भुत् क्षमता रखने वाले लोकप्रिय कवि। मंचीय-कवि के रूप में अखिल भारतीय ख्याति लब्ध।

काव्योदाहरण—

सक सकपक ह्वैबे लगे, लख लख अनी प्रचण्ड।
सुकवि लला कहिबे लगे, भज्ज ज्जिय रन चंड ॥
भज्जज्जिय रन चंडड्डगडग गज्जिय गड़गड़।
बज्जिय बेग न लज्जिय रंच भिरज्जिय बढ़बढ़ ॥
जंघ्घ ज्जुर जुर रंगिय रंग न लग्गिय धकपक।
बुद्धिद्दरन अबुद्धिब्बरन न रक्खिय सक सक ॥

(वीर विक्रम वैभव, पृष्ठ 8)

(स्व.) ठा. नवाबसिंह चौहान 'कंज'

पिता—श्री बलवंत सिंह चौहान । जन्मतिथि—16 दिसम्बर, 1909 ई. । जन्मस्थान—ग्राम-जवां (जि. अलीगढ़) । शिक्षा—इण्टरमीडिएट । व्यवसाय—राजनीतिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में कार्य । काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1920 ई. । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—1930 ई. । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—आजीवन । पता—मथुरा नगर, अलीगढ़ । निधन तिथि—5 अप्रेल, 1981 ई. ।

अन्य—युवावस्था के आरंभ में ही राजनीतिक-कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेना आरंभ कर दिया । राष्ट्रीय-आन्दोलनों में तीन बार जेल-यात्रायें कीं । फिर 11 वर्ष तक अलीगढ़ जिला बोर्ड तथा जिला परिषद् के अध्यक्ष, तीन वर्ष तक एम. एल. ए., 11 वर्षों तक राज्य सभा के सदस्य तथा ढाई वर्ष तक लोक-सभा के सदस्य रहे । पहले कांग्रेस, फिर पुरानी कांग्रेस तथा बाद मे जनता पार्टी के सदस्य रहे । फिर सभी राजनीतिक दलों से त्याग-पत्र देकर निर्दलीय जीवन बिताया तथा जीवनान्त तक साहित्य-साधना में तल्लीन रहे ।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1931 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन । युवावस्था में अनेक कवि-सम्मेलनों में भाग लिया, परन्तु बाद में राजनीतिक-क्षेत्र में चले जाने के कारण काव्य-मंच से विरत हो गए । स्फुट रचनाएँ अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित तथा आकाशवाणी दिल्ली केन्द्र से प्रसारित । ब्रजभाषा तथा उर्दू में भी काव्य-सृजन । अनेक साहित्यिक-संस्थाओं से सम्बद्ध रहे ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) बुझा न दीप प्यार का (कविता-संग्रह) ।

अप्रकाशित कृतियाँ—दो काव्य-संकलन, कुछ स्फुट कविताएँ तथा ब्रजभाषा के संगीत-रूपक ।

विशेष—श्री चौहान की अधिकांश रचनाएं देश-भक्ति परक हैं । कुछ कविताएँ ऐतिहासिक तथा सामाजिक विषयों पर हैं तथा कुछ प्रकृति-परक भी हैं । आपकी रचनाओं में भाषा की सादगी तथा भावों की गंभीरता दृष्टिगोचर होती है । शिल्प-विधान की दृष्टि से भी वे उत्तम हैं ।

काव्योदाहरण—

"आँख में बिलोकी कैसी बिधि की बिचित्रता है,
कटुता में कूट भरी मौन—मधुराई है ।
भोली भंगिमा में क्रूर कुटिल कठोरता है,
और कभी दुख से, दया से भर आई है ।
सृष्टि का स्वरूप सभी इंगित के आसरे है,
देखती इसी से अपने को प्रभुताई है ।

लूट ले न लाज कोई लालची इसी से यह,
दृग-पल्लवों के बीच विधि ने छिपाई है ।।"
(बुझा न दीप प्यार का, पृ. 30)

(स्व.) श्री गजराजसिंह "सरोज"

पिता—ठा. पूरनसिंह यादव । जन्मतिथि—अज्ञात, सन् 1910 ई. । जन्म स्थान—अमौसी (तहसील सिकन्दराराऊ, जिला, अलीगढ़) । शिक्षा—इण्टरमीडियेट, आयुर्वेद विशारद । व्यवसाय—चिकित्सा । काव्य-सृजन का प्रारम्भ—15 वर्ष की आयु से । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—18 वर्ष की आयु में । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—आजीवन । निधन तिथि—17 जून 1973 ई. ।

अन्य—आजीवन कांग्रेस के सक्रिय-कार्यकर्ता रहे । स्वतन्त्रता-आन्दोलनों में अनेक बार जेल-यात्राएँ कीं । सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रमों में निरन्तर भाग लेते रहे । चिकित्सा-क्षेत्र में भी ख्याति प्राप्त की ।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1929 ई. में प्रकाशित हुई, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं मे प्रकाशन । सैकड़ों मंचों से काव्य-पाठ । अनेक साहित्यिक-संस्थाओं से सम्बद्ध रहे । खड़ी बोली के अतिरिक्त उर्दू तथा ब्रजभाषा में भी काव्य-सृजन ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) अहिंसा तथा (2) उद्‌बोधन (कविता-संग्रह) ।

अप्रकाशित पुस्तकें—अनेक स्फुट रचनाएँ ।

विशेष—भाषा, भाव तथा शिल्प की दृष्टि से सभी रचनाएँ सरल तथा हृदयग्राही । मंचीय कवि के रूप में प्रादेशिक ख्याति-लब्ध ।

काव्योदाहरण—

"हम आग बुझाने आये हैं, हम आग लगाना क्या जानें ?
बोले हरिणों के युगल-नयन, उस दुष्ट-बधिक से यों बोले—
'मेरे आंसू की सरिता में, तू अपने पापों को धो ले ।।
तेरा इसमें कुछ दोष नहीं, हम तो स्वर पर दीवाने हैं ।
है आजादी जिन की प्रेयसि, हम वे मजनूँ मस्ताने हैं ।।
मृदु तानों पर मरने वाले हम बीन बजाना क्या जानें ?'
हम आग बुझाने आये हैं, हम आग लगाना क्या जानें ?
(अहिंसा : पृष्ठ 9)

(स्व.) श्री शिशुपालसिंह "शिशु"

पिता—ठा. बिहारी सिंह भदौरिया । जन्मतिथि—1 सितम्बर 1912 ई. । जन्मस्थान—उदी (इटावा) । शिक्षा—मिडिल पास । व्यवसाय—अध्यापक, पोस्ट-मास्टर, किसान । पता—उदी (जि. इटावा) । काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—

सन् 1925 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1927 ई., इटावा-प्रदर्शनी में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—आजीवन। निधन तिथि—28 अगस्त, 1964 ई.।

अन्य—जीवन भर अनेक प्रकार के संघर्षों से जूझते रहे। हिन्दी केअतिरिक्त संस्कृत, उर्दू तथा अंग्रेजी का भी अच्छा ज्ञान था। सन् 1961 ई. में राष्ट्रपति द्वारा "श्रेष्ठ-शिक्षक" के पुरस्कार से सम्मानित किये गये। थियोसोफिकल स्कूल से लेकर जिला बोर्ड के विद्यालय तक में अध्यापन कार्य किया। अनेक पुरस्कार प्राप्त। अनेक स्थानों पर अभिनन्दित।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1930 ई. मे प्रकाशित हुई, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। हजारों मंचों से काव्य-पाठ। आकाशवाणी के अनेक केन्द्रों से प्रसारण। हिन्दी,उर्दू तथा ब्रजभाषा की अनेक विधाओं तथा अनेक रसों में प्रभूत मात्रा में काव्य-सृजन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) यमुना, (2) वीरजा, (3) परीक्षा, (4) हल्दी घाटी की एक रात, (5) अपने पथ पर, (6) छोड़ो हिन्दुस्तान, (7) तीन आहुतियाँ, (8) दो चित्र, (9) नदी किनारे, (10) पूर्णिमा तथा (11) चतुर्दशी (सभी काव्य)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) अशोक, (2) मुंज और भोजन, (3) विषपायी, (4) जौहर, (5) चम्बल घाटी, (सभी काव्य)। इनके अतिरिक्त सैकड़ों ग़ज़लें, सानेट्स, मुक्तक, गीत घनाक्षरी तथा अन्य रचनाएँ।

विशेष—"शिशुजी" अपने समय में हिन्दी काव्य-मंच के सर्वश्रेष्ठ कवि के रूप में प्रतिष्ठित रहे। अपने सुमधुर काव्य-पाठ से लाखों श्रोताओं को प्रभावित करने की इनमें अद्भुत क्षमता थी। हिन्दी-घनाक्षरी के तो ये महान् कवि ही थे। शायद ही कोई विषय ऐसा बचा होगा, जिस पर इन्होंने काव्य-रचना न की हो। भाषा, भाव तथा शिल्प—सभी दृष्टियों से इनकी रचनाएँ अनुपम तथा हिन्दी-साहित्य की बहुमूल्य निधि हैं। काव्य-शास्त्र के पण्डित तथा आचार्य के रूप में इनकी अद्भुत प्रतिभा सर्वत्र परिलक्षित होती है। खेद है कि सर्प-दंश के कारण ऐसा चमत्कारी-कवि असमय में ही काल-कवलित हो गया। इनके ऊपर शोध-कार्य भी हो रहा है। मंचीय-कवि के रूप में इन्होंने अखिल भारतीय ख्याति अर्जित की थी।

काव्योदाहरण—

"वन-वन भटका-थका पवन जब आंचल तक आता है,
जन-गन-मन के सहज गीत की सरगम पा जाता है,
इन्हें प्रफुल्लित देख-देख कर कलियाँ भी पुलकाई',
लेकिन तिरछे मुसकानों की नकल नहीं कर पाई।
कहाँ मालिनी; कहाँ कण्व का आश्रम; कौन बताए ?

किन्तु यहाँ कोई शकुन्तला के दर्शन कर जाए ।
रही बात मृगछौने की, मृगछौना बन में होगा ।
बन में नहीं, भवन में होगा, या फिर मन में होगा ।"

("पनघट" कविता का एक अंश)

श्री वेदव्रत शास्त्री

पिता—पं. राम सहाय शर्मा । जन्मतिथि—19 जनवरी, सन् 1912 ई. । जन्म-स्थान—सोरों (जि. एटा) शिक्षा—आचार्य, तीर्थ, शास्त्री । पूर्व व्यवसाय—चिकित्सा । काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1924 ई. । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1932 ई. । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से । वर्तमान पता—नदरई द्वार, कासगंज, (जि. एटा) ।

अन्य—चिकित्सा एवं साहित्य में विशेष रुचि ।

साहित्य-सेवा—प्रथम कविता सन् 1935 ई. में प्रकाशित; तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन । अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ । अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) गांधी की नंगी तलवार, (2) राष्ट्रीय श्रद्धा, (3) भीषण पथ, (4) स्वराज्य, (सभी काव्य-संग्रह) ।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक कविताएँ तथा निबन्ध आदि ।

विशेष—भाव, भाषा, शिल्प तथा छन्द-योजना की दृष्टि से सभी रचनाएँ सामान्य, परन्तु हृदयग्राही ।

काव्योदाहरण—

"धर्म को मिटाने हेतु भारतीय राजवंश,
राजधर्म भूल, जब रक्त चाटता रहा ।
वेद का प्रवक्ता और यज्ञ का सुकर्ता मुनि,
राजवंशियों के तीर से कराहता रहा ।।
बाल ब्रह्मचारी सम लेकर परशुदण्ड,
मार के महीप, तब धर्म थापता रहा ।
चूकता नहीं था राम, भागते भगोड़े सब,
राष्ट्र के विरोधियों के सिर काटता रहा ।।"

श्री गोबिन्ददत्त चतुर्वेदी "गोबिन्द कवि"

पिता—श्री नवनीत चतुर्वेदी । जन्मतिथि— 28 सितम्बर, सन् 1912 ई. आश्विन कृष्णा चतुर्दशी सं. 1969 वि. । जन्म-स्थान—मथुरा । शिक्षा—आचार्य । व्यवसाय—यजमानी । काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1923 ई. । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ सन् 1925 ई., आगरा में । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से । वर्तमान पता—दण्डी घाट, मथुरा ।

अन्य—8 वर्ष की आयु में मातृ-वियोग तथा 18 वर्ष की आयु में पितृ-वियोग। तीन विवाह हुए। आयुर्वेदाचार्य परीक्षा के दो खण्ड उत्तीर्ण। शुद्धाद्वैत तथा न्याय-मामांसादि का गम्भीर अध्ययन। बाल्यावस्था में कांकरौली-महाराज गो. ब्रजभूषण लालजी का आश्रय प्राप्त। विद्या-विभाग, कांकरौली में आयोजित अ. भा. काव्य-प्रतियोगिता में विजयी। अनेक संस्थाओं द्वारा अभिनन्दित। जगद्गुरु शंकराचार्य द्वारा सम्मानित। हिन्दी, संस्कृत, उर्दू तथा फारसी भाषाओं का ज्ञान। ज्योतिष, कर्मकाण्ड तथा तन्त्र शास्त्र में अभिरुचि। आशुकवि। विगत अनेक वर्षों से पक्षाघात से पीड़ित, संज्ञाहीन जैसी स्थिति में।

साहित्य-सेवा—8 वर्ष की आयु से ब्रजभाषा में, 13 वर्ष की आयु से संस्कृत में तथा 20 वर्ष की आयु से हिन्दी तथा उर्दू में पद्य रचनाएँ आरम्भ कीं। तभी से निरन्तर काव्य-साधना में संलग्न। सैकड़ों कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ। आकाशवाणी केन्द्रों से रचनाओं का प्रसारण। पढ़न्त-गोष्ठियों के सिरमौर। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) ब्रजबानी, (ब्रज भाषा की कविताओं का संग्रह), (2) ध्वन्यालोक (ब्रज भाषा काव्यानुवाद)।

अप्रकाशित कृतियां—(1) महारास, (2) भारत-भारती (दोनों महाकाव्य), (3) कमल सतसई, (4) जानकी-स्वप्न तथा (5) दानलीला (काव्य)। खड़ी बोली, संस्कृत तथा ब्रजभाषा की सहस्राधिक स्फुट रचनाएँ, गीत एवं लोक-गीत।

विशेष—वर्तमान-काल में ब्रजभाषा के सर्वश्रेष्ठ आचार्य कवि। प्राचीन कवियों के सहस्रों छन्द कण्ठस्थ। आपकी ब्रजभाषा की सभी कविताएँ रूपक, अलंकार, उपमा, उत्प्रेक्षा तथा शिल्प की विशेषताओं से युक्त है। भाषा टकसाली तथा पाण्डित्यपूर्ण। मंचीय-कवि के रूप में अन्तर्राज्यीय ख्याति लब्ध।

काव्योदाहरण—

"राधिका नागरी औ घनस्याम के,
    मेहरा मंजु मयूर की पाँखें।
"गोबिन्द" दीनता बाल विनोद,
    वियोग सँयोग सरूर की साँखें॥
वे हरिमूरि गरूरि गसी रस—
    सागर के पनपूर की भाँखें।
प्रीतम प्रीति प्रपूर भरी,
    बड़ी दूर की देखत सूर की आँखें॥"

श्री कृष्णलाल "कुसुमाकर"

पिता—श्री झण्डूलाल श्रीवास्तव। जन्मतिथि—1 अक्टूबर, 1912 ई.। जन्मस्थान—ग्राम ढोलपुरा, पो. फीरोजाबाद (जि. आगरा)। शिक्षा—साहित्य

रत्न, साहित्यालंकार, शि. शास्त्री, आयुर्वेद-भास्कर । व्यवसाय— अध्यापन । काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1934 ई. । प्रथमबार मंचीय काव्य पाठ—सन् 1936 ई., नागरी प्रचारिणी सभा, आगरा में । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से । वर्तमान पता—301 आर्यनगर, फ़ीरोज़ाबाद (जि. आगरा) ।

अन्य—सन् 1921 ई. में कालिज [illegible] में सम्मिलित । स्वराज्य-आन्दोलन तथा आर्यसमाज के आन्दोलनों में भागीदार रहे । हिन्दी-आन्दोलन तथा गो-रक्षा-आन्दोलन में भी जेल-यात्रायें कीं। आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश तथा सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा, दिल्ली की कार्य-समिति के वर्षों तक प्रतिष्ठित सभासद रहे । सन् 1974-75 में वृन्दावन गुरुकुल के मुख्य-प्रबन्धक के रूप में कार्य किया । फ़ीरोजाबाद में डी. ए. वी. कालिज की स्थापना की । वर्षों तक जिला कांग्रेस कमेटी के कर्मठ तथा कार्यसमिति के सदस्य रहे । "ग्राम प्रधान" तथा 'अदालती पंच' भी रहे । आर्य-समाज, लोक-सेवा तथा साहित्य-सेवा के क्षेत्र में निरन्तर संलग्न । फ़ीरोज़ाबाद में 'हिन्दी साहित्य विद्यालय' की स्थापना की तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन एवं प्रयाग महिला विद्यापीठ के परीक्षा केन्द्र स्थापित किए । सम्प्रति : सेवा-निवृत्त । अब साहित्याराधन तथा समाज-सेवा में संलग्न ।

साहित्य सेवा—प्रथम रचना सन् 1936 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त "सुकवि" तथा अन्य पत्र-पत्रिकाओं में कविताएँ प्रकाशित होती रहीं । साहित्यिक-पत्रिकाओं के अतिरिक्त धार्मिक पत्र-पत्रिकाओं में भी कविताओं तथा लेखों का प्रकाशन । अब तक सैकड़ों मंचों से काव्य-पाठ । खड़ी बोली के अतिरिक्त ब्रजभाषा में भी काव्य-सृजन तथा निबन्ध-लेखन ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) नवबाला, (2) चिता की चिनगारी (यह पुस्तक जब्त हो गई थी), (3) धारणा, (4) आलोक, (5) ग्राम्य गीताञ्जलि, (6) भयंकर भूल तथा (7) सुमंगली (सभी काव्य) ।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक पुस्तकें तथा कविताएँ ।

विशेष—काव्य की भाषा भावानुकूल, छन्द-योजना सफल तथा शिल्प-सौन्दर्य अनुपम । साहित्यिक दृष्टि से सभी रचनाएँ परिपुष्ट । मंचीय कवि के रूप में क्षेत्रीय ख्याति लब्ध ।

काव्योदाहरण—

"प्रगति की सुगति के मधुर गीत गाये,
मगर जिन्दगी के नहीं दीप जागे ।
युगों से रहा विश्व चलता निरन्तर,
किसी लक्ष्य पर क्या कभी पहुँच पाया ?
किसी लक्ष्य पर यदि पहुँच भी गया तो—
जगत को नहीं भेद अपना बताया ।।

प्रगति पर चले सूर्य-शशि जन्म से ही,
प्रगति पर अहर्निश सभी चल रहे हैं।
रुके विश्व के कार्य उनसे कभी क्या—
बताओ किसी को कभी खल रहे हैं?
पवन की पयस्विन् बही शीत सन-सन
प्रकृति प्राण पुलकित हुए प्रेम पागे ॥"

("धारणा"—पृष्ठ 12)

(स्व.) डा. पद्मसिंह शर्मा "कमलेश"

पिता—श्री किशन लाल शर्मा। जन्मतिथि—22 जनवरी, सन् 1915 ई.। जन्मस्थान—बरी का नगला (जि. आगरा)। शिक्षा—एम. ए., पी-एच. डी., साहित्य रत्न, प्रभाकर आदि। व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1930 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ सन् 1943 ई. आगरा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—आजीवन। निवास स्थान—16 सूर्य नगर, आगरा निधन तिथि—5 फरवरी सन् 1974 ई.।

अन्य—बाल्यावस्था में ही पितृ-हीन। माँ ने घोर दरिद्रता में पलते हुए पालन पोषण किया। तत्पश्चात् हाँकरी (अखबार-विक्रेता) से लेकर अध्यापन तक विभिन्न कार्य किये। सन् 1937 से 1939 ई. तक आगरा म्युनिसिपल बोर्ड में प्राइमरी तथा मिडिल स्कूलों के अध्यापक रहे। सन् 1939-40 ई. में राष्ट्र भाषा प्रचारक मण्डल, सूरत में एक वर्ष तक अध्यापन कार्य किया। 1940-41 ई. में बम्बई हिन्दी विद्यापीठ में प्रधानाचार्य रहे। सन् 1942 से 1949 ई. तक नागरी प्रचारिणी सभा आगरा में हिन्दी के शिक्षक रहे। सन् 1948 ई. में आगरा विश्वविद्यालय से एम. ए. में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। 1949 से 1962 ई. तक आगरा कालिज, आगरा में हिन्दी के प्राध्यापक तथा सन् 1962 ई. से 1974 ई. तक कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग में रीडर पद कर कार्य-रत। अनेक साहित्यिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे। हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत, अंग्रेजी तथा गुजराती भाषाओं का विशेष अध्ययन।

साहित्य सेवा—पहली कविता सन् 1932 ई. में स्थानीय पत्र में प्रकाशित हुई, तत्पश्चात् देश की लब्ध-प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में अनेक कविताओं तथा लेखों का प्रकाशन। सैकड़ों कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ। आकाशवाणी केन्द्रों द्वारा कविताओं तथा वार्ताओं का प्रसारण। खड़ी बोली में काव्य-सृजन के अतिरिक्त अनेक शैक्षणिक तथा समीक्षात्मक पुस्तकों एवं निबन्धों का लेखन। गुजरती से हिन्दी में अनुवाद-कार्य। अनेक साहित्यिक कार्यक्रमों के आयोजक तथा

अनेक साहित्यिक संस्थाओं के अध्यक्ष, मंत्री आदि रहे। हिन्दी-साहित्य में "इण्टरव्यू" विधा के प्रथम लेखक।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) मैं सुखी हूँ, (2) तू युवक है, (3) दूब के आँसू, (4) धरती पर उतरो, (5) एक युग बीत गया (कविता-संग्रह), (6) दिग्विजय (खण्ड-काव्य), (7) हिन्दी गद्य-काव्य, (शोध-प्रबन्ध), (8) प्रेमचन्द और उनकी साहित्य-साधना, (9) वृन्दावन लाल वर्मा : व्यक्तित्व और कृतित्व, (10) राजाराधिकारमण प्रसाद सिंह : व्यक्तित्व और कृतित्व, (11) हिन्दी गद्य : विधाएँ और विकास, (12) हिन्दी गद्य : विकास और परम्परा, (13) हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास (14) साहित्य-निबन्धमणि, (15) समीक्षा, सन्दर्भ और दिशायें, (16) "निराला" काव्य-समीक्षा, (17) गुजराती और उसका साहित्य (सभी समीक्षात्मक), (18) मैं इनसे मिला भाग—1 और भाग—2 (इन्टरव्यू), (19) हिन्दी गुजराती शिक्षा (शैक्षणिक) (20) आधुनिक परिप्रेक्ष्य में लेखकीय दायित्व (भाषणों का संग्रह), (21) "हिन्दी वाङ्मय बीसवीं शती" का नौवाँ अध्याय तथा (22) "हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास" के चौदहवें भाग का गद्य—काव्य अंश (ये दोनों सहयोगी-लेखन), (23) एक व्यक्ति : एक संस्था ("सुमन" अभिनन्दन ग्रन्थ) (24) लोकप्रिय कवि रामेश्वर शुक्ल "अंचल" (25) निराला (26) गद्य-सरिता (27) काव्य-कुसुम, (28) गद्य प्रसून, (29) जीवनी संकलन; (30) गर्जना, (31) अयोध्याकाण्ड और उत्तर काण्ड तथा (32) घनानन्द-विहार (ये सभी पुस्तकें सम्पादित)। (33) आधे रास्ते, (34) जय सोमनाथ, (35) तपस्विनी भाग 1, 2, और 3, (36) जो है सो ठीक, (37) भग्न-पादुका, (38) वाह रे मैं, वाह, (39) काका की शशि, (40) चित्राधार, (41) जीवी, (42) सरस्वती चन्द्र, (43) बाहुबल, (44) "भारतीय कविता : सन् 58-59" का गुजराती अंश, (45) गुजराती साहित्य में रस-विवेचन, (45) शिक्षा का माध्यम (47) मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, (48) एक विश्व और भारत तथा (49) शहरों की संस्कृति (ये सभी पुस्तकें गुजराती तथा अंग्रेजी से हिन्दी में अनूदित)।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक स्फुट कविताएँ, निबन्ध आदि।

विशेष—स्व. कमलेशजी का मंचीय काव्य-पाठ श्रोताओं को मन्त्र-मुग्ध कर देता था। भावानुकूल भाषा, छन्द-योजना, शिल्प तथा सम्प्रेषणीयता—इन सभी दृष्टियों से कमलेशजी की कविताएँ उच्चकोटि की, हृदयग्राही हैं। दुःख है कि ऐसी उत्कृष्ट साहित्यिक-प्रतिभा "हार्टफेल" के कारण अकाल में ही काल-कवलित हो गई। मंचीय-कवि के रूप में आपने अन्तर्राज्यीय ख्याति अर्जित की थी।

काव्योदाहरण—

"बहुत उड़ लिए अम्बर में, अब धरती पर उतरो,
युग-युग तक तुम अमरबेलि बन सुख से लहराए हो,

विश्व-विटप की डाल-डाल पर संकट वन छाए हो;
हरियाली पी गए, बसा दी वस्ती कंकालों की,
पर उनके हाहाकारों से तनिक न हिल पाए हो;
देख तुम्हारी क्रूर स्वार्थिनी वृत्ति, क्रोध में भर कर,
जन-मन का माली चढ़ता है तुम्हें काटने ऊपर,
शोषण की तलवारों पर तुम अब मत धार धरो।
बहुत उड़ लिए अम्बर में, अब धरती पर उतरो।"

("धरती पर उतरो", कविता का एक अंश; 'युवक' क. स्मृ. अं. 1977 ई., पृष्ठ 132)

(स्व.) श्री प्रियतमदत्त चतुर्वेदी "चच्चन"

पिता—पं. लड़ैती चौबे (जिनके दत्तक-पुत्र बने)। जन्मदाता पिता का नाम—पं. नारायणदत्त चतुर्वेदी। जन्मतिथि—भाद्रपद कृष्णा पंचमी, सन् 1916 ई.। जन्मस्थान—रायबरेली। शिक्षा—साहित्यरत्न, साहित्यालंकार। व्यवसाय—अध्यापन, काव्य-पाठ, ग्रंथ-लेखन। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—12 वर्ष की आयु से। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—आजीवन। निवास—स्थान—महोली की पौर, मथुरा। निधन तिथि—26 अगस्त, सन् 1970 ई.।

अन्य—बाल्यावस्था सीवान (बिहार) में बीती। जन्मदाता पिता राज-ज्योतिषी थे। माता-पिता की मृत्यु 5 वर्ष की आयु में ही हो गई, तब इन्हें लड़ैती चौबे ने गोद ले लिया, जो यजमानी (पण्डागीरी) करते थे। चच्चनजी जातीय एवं सामाजिक बुराइयों के प्रवल विरोधी रहे, फलतः उन्हें जीवन भर कठिन संघर्ष करने पड़े। परिवार के मथुरा में ही रहते हुए भी स्वयं विभिन्न स्थानों पर निवास करते रहे। श्रेष्ठ हिन्दी अध्यापक रहे। देश भर में सैकड़ों स्त्री-पुरुष आपके शिष्य हैं।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1930 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। सैकड़ों कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ। आकाशवाणी के अनेक केन्द्रों से रचनाओं का प्रसारण। खड़ी बोली, ब्रजभाषा तथा उर्दू में सभी रसों, छन्दों तथा विधाओं में प्रचुर परिमाण में काव्य-सृजन। अनेक साहित्यिक संस्थाओं तथा आयोजनों से सम्बन्धित रहे। कहानी, उपन्यास तथा निबन्ध भी लिखे।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) मधुशाला तथा (2) अजन्ता (काव्य-संग्रह)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) वैशाख नन्दन (काव्य-संग्रह) तथा अनेक अपन्यास, कहानियाँ, अनुवाद। ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली की सैकड़ों कविताएँ।

विशेष—चच्चनजी के खड़ी बोली में लिखित काव्य की भाषा सरल, प्रवाहमयी तथा हृदयग्राही है, उसमें यत्र-तत्र उर्दू शब्दों का प्रयोग भी पाया जाता है।

ये काव्य-मंच पर वीर-रस तथा हास्य-व्यंग्य के कवि—दोनों रूपों में प्रसिद्ध रहे; परन्तु इनकी खड़ी बोली की वे रचनाएँ, जो अधिकतर सामयिक एवं राजनीतिक विषयों पर आधारित हैं सामान्य-साहित्य की कोटि में ही रखी जा सकती हैं, जबकि इनके गीत तथा ब्रजभाषा के छन्द शुद्ध-साहित्य की परिधि में आते हैं।

ब्रजभाषा-काव्य में चच्चनजी के आचार्यरूप के दर्शन होते हैं। उन की भाषा टकसाली है तथा छन्दों में सांगरूपक, अलंकारों आदि की भरमार पाई जाती है। शिल्प की दृष्टि से भी चच्चनजी की ब्रजभाषा की कविताएँ स्थायी महत्व तथा उच्च कोटि की है। मंचीय-कवि के रूप में आपने अन्तर्राज्यीय ख्याति अर्जित की थी।

काव्योदाहरण—

"कारी कारी कूर कजरारी घुंघरारी घटा।
करि छिरकाव हाव भाव भरी गमकी॥
खमक खमंडल की तमक तरेरौ खाय।
दौरि-दौरि दपट दरेरौ देत दमकी॥
रूमरूम झूमझूम धूमसी मचावतसी।
घूमघूम अम्बर के कम्बर तै लमकी॥
ईतभरीं, भीतभरी, प्रबल प्रतीत भरी।
प्रीतभरी सीत की सवारी आय धमकी॥

(अजन्ता, पृ. 27)

डा. मथुरा प्रसाद "मानव"

पिता—श्री रामस्वरूप उर्फ नन्हेंलाल सक्सैना। जन्मतिथि—17 सितम्बर, सन् 1916 ई.। जन्मस्थान—मथुरा। शिक्षा—एम. ए., एल. टी., पी-एच. डी., विशारद, साहित्यरत्न, हिन्दी विशेष योग्यता। पूर्व व्यवसाय—वकील की मुंशीगिरी, कृषि-विभाग में कामदार तथा अध्यापन। वर्तमान व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1935 ई.। प्रथमबार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1942 ई., प्रदर्शनी कवि-सम्मेलन, मैनपुरी में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—85, महावीर नगर, फ़ीरोजाबाद (जि. आगरा)।

अन्य—हाईस्कूल से एम. ए, एल. टी. तक की परीक्षाएँ व्यक्तिगत परीक्षार्थी से रूप में, सेवा-काल में उत्तीर्ण कीं। अध्यापकीय सेवा-निवृत्ति के उपरान्त "छायावादोत्तर हिन्दी काव्य में रस" विषय पर शोध-कार्य द्वारा आगरा विश्वविद्यालय से 'डाक्टरेट' की डिग्री प्राप्त की। जीवनभर विभिन्न प्रकार के संघर्षों से जूझते रहे हैं।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1945 ई. में प्रकाशित, तत्पश्चात् अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। कई वर्षों तक अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ

किया, परन्तु अब मंचीय काव्य-पाठ से सन्यस्त । अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) साधना शतक, (2) जीवन के गीत, (3) अहम् विसर्जन, (4) आलोकनद, (5) आर्शीवाद, (सभी-काव्य-संकलन) । (6) इनको भूल नहीं पाता, (गद्य-पद्यात्मक-संस्मरण) । इनके अतिरिक्त—(1) संघर्ष का सुकवि तथा (2) 'एक संघर्षशील व्यक्तित्व' में मानवजी के जीवन-वृत्त तथा रचनाओं के विभिन्न रूप संकलित हैं ।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) ओज की गंगा, (2) कड़वे घूंट, (3) राष्ट्र-अर्चना (सभी काव्य), (4) छायावादोत्तर हिन्दी काव्य में रस (शोध-प्रबन्ध), (5) समीक्षा सुमन, (6) देवीदास, (7) मैं कैसे इन्हें भूल जाऊँ, (8) मैं सौभाग्यशाली हूँ, (9) बालिका-बिछोह, (10) देवी नगर परिचय (विविध विषयों से संबंधित गद्य-संकलन) एवं स्फुट रचनाएँ

विशेष—साहित्यिक-दृष्टि से सभी कविताएँ सामान्य, परन्तु हृदयस्पर्शी । मंचीय-कवि के रूप में क्षेत्रीय-ख्याति लब्ध ।

काव्योदाहरण—

"भावना खिलाती है फबीले फूल मानस में,
भावना बनाती जग जीवन लुभावना ।
भावना-विहीन जन-मानस मरुस्थल है,
भावना बसन्त पतझार में सुहावना ।।
भावना बयारि है मलय मृदु गन्धयुक्त,
भावना पयोद प्यार-वारि बरसावना ।
भावना है सुखद अधार जग जीवन का,
भावना सितार भारती का मन-भावना ।।

(साधना शतक : पृ. 12)

श्री हरिपाल सिंह चौहान "दग्ध"

पिता—श्री झम्मनसिंह चौहान । **जन्मतिथि**—1 अक्टूबार सन् 1916 ई. । **जन्मस्थान**—नगला फौंदा (जि. मथुरा) । **शिक्षा**—इण्टर, साहित्यरत्न, हिन्दी-उर्दू, बी. टी. सी. । **पूर्व-व्यवसाय**—अध्यापन । **वर्तमान-व्यवसाय**—कृषि । **काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष**—सन् 1935 ई. । **प्रथम बार मंचीय काव्यपाठ**—सन् 1945 ई., नागरी प्रचारिणी सभा, आगरा में । **ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि**—जन्म से । **वर्तमान पता**—नगला फौंदा, पो. सुरीर (जि. मथुरा) ।

अन्य—सम्पूर्ण जीवन संघर्षमय रहा । ब्रजसाहित्य मण्डल, मथुरा में भी कुछ दिनों तक कार्य किया । अब सेवा—निवृत्त होकर कृषि, अध्ययन एवं साहित्य-सृजन में

संलग्न। "काव्यभूषण" तथा "हिन्दी-रत्न" की सम्मानोपाधियाँ प्राप्त। गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन द्वारा सम्मान-पत्र प्राप्त।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1935 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त हिन्दुस्तान, सैनिक, आर्यमित्र आदि अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक मंचों से काव्य-पाठ। अनेक साहित्यिक-संस्थाओं से सम्बद्ध रहे। हिन्दी तथा ब्रजभाषा में काव्य-सृजन के अतिरिक्त लोकगीत तथा कहानियों के लेखक।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) कवि और आशा (खण्डकाव्य), (2) हिमालय की हुंकार, (ओजस्वी-कविताओं का संग्रह) एवं (3) चण्डी सुरीरगढ़ वाली (छद्मनाम से प्रकाशित काव्य)। इनके अतिरिक्त 13 सामूहिक-काव्य-संकलनों में कविताएँ संकलित।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) तेरी याद (गीत-संग्रह), (2) राष्ट्र काकली (राष्ट्रगीत)।, (3) विप्लव-बीन (क्रान्तिकारी कविताएँ), (4) नोआखालीकाण्ड (काव्य), (5) बिखरे मोती (मुक्तक-काव्य) तथा अन्तिम मिलन (कहानी-संग्रह)। इनके अतिरिक्त अनेक गीत, गजल, छन्द आदि स्फुट रचनाएँ।

विशेष—भाषा, भाव तथा शिल्प की दृष्टि से सभी रचनाएँ उत्तम तथा हृदयस्पर्शी। मंचीय-कवि के रूप में क्षेत्रीय ख्याति लब्ध।

काव्योदाहरण—

"उषा-सुन्दरी प्राची-गृह से मधुर-मधुर मुस्काई,
मादक-मृदु सपनों की शैया पर लेकर अँगड़ाई।
आँधी-ओले प्रवल प्रभंजन चुप-चुप सभी लुकाने,
आई आशाकिरण थिरकती कवि को प्यार लुटाने।"

(कवि और आशा, पृष्ठ—41)

श्री ओंकार मिश्र "प्रणव"

उपनाम—प्रणव शास्त्री। पिता—पं प्यारेलाल मिश्र। जन्म तिथि—8 अगस्त, 1919 ई.। जन्मस्थान—अलीगढ़। शिक्षा—एम. ए., साहित्यरत्न, सिद्धान्त बाचस्पति, विद्याभूषण, शास्त्री (आनर्स), सांख्याचार्य। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—1931 ई., प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1932 ई.; अलीगढ़ में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—300 आर्यनगर, फीरोजाबाद (जिला—आगरा)।

अन्य—अनेक गुरुकुलों में अध्यापक रहे। विविध समाजों में व्याख्यान आदि के माध्यम से वैदिक धर्म का प्रचार किया। हिन्दी-सत्याग्रह में कारावास। डी. ए. वी. इण्टर कालिज, फीरोजाबाद में संस्कृत के प्राध्यापक रहे। सम्प्रति—उपाचार्य पद से अवकाश-प्राप्त। विद्याभूषण, व्याख्यान वाचस्पति आदि सम्मानोपाधियाँ प्राप्त।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1938 ई. में 'आर्य मित्र' में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक मंचों से काव्य-पाठ। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध। खड़ी बोली के अतिरिक्त ब्रजभाषा में भी काव्य-सृजन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) बीस बावनी, (2) अमर ज्योति, (3) ज्वाला, (4) बहादुर बावनी, (5) विजय बावनी, (6) पुरुष सूक्तम् तथा (7) मधुमती (सभी काव्य-ग्रन्थ)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) अमरदीप, (2) कवित्त-कानन, (3) दयानन्द-लहरी (काव्य), अनेक स्फुट रचनाएँ।

विशेष—साहित्यिक-दृष्टि से रचनाएँ सामान्य, परन्तु भावों की दृष्टि से मर्मस्पर्शी। मंचीय-कवि के रूप में क्षेत्रीय ख्याति लब्ध।

काव्योदाहरण—

"नहीं प्यार तुमको धरा दे सकेगी,
यहाँ मेघ लाये न जो वारि-धारा।
वृथा गर्जना है, वृथा तर्जना है, पिलाया धरा को न दो बूँद पानी,
दिया शुभ्र जीवन सदा नम्रता से, उसी भूमि की जो महत्ता न जानी।
कृतघ्नी तुम्हारे सदृश कौन होगा,
कि पाला उसी को न दे जो सहारा।

(मधुमती, पृ.—32)

(स्व.) श्री बलवीरसिंह "रंग"

पिता—श्री गुलाबसिंह चौहान। **जन्मतिथि**—14 नवम्बर, सन् 1919 ई.। **जन्मस्थान**—नगला कटीला (एटा)। **शिक्षा**—सामान्य। **व्यवसाय**—कृषि। **काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष**—सन् 1937 ई.। **प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ**-सन् 1940 ई., एटा में। **ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि**—आजीवन। **पता**—नगला कटीला (जि. एटा) **निधन तिथि**—8 जुलाई 1984 ई.।

अन्य—साहित्य-सृजन के अतिरिक्त अध्ययन एवं समाज-सेवा में अभिरुचि। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे। अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित तथा अनेक पुरस्कार प्राप्त। बाल्यावस्था विपन्नता में बीती। फरिहा (जिला—मैनपुरी) निवासी पं. गंगाधर शर्मा 'गंग' के सानिध्य में 15 वर्ष रह कर कथावाचकी की। उन्हीं से कविता लिखने की प्रेरणा प्राप्त हुई। यों, आजीवन संघर्ष-रत बने रहे।

साहित्य-सेवा—प्रथम कविता सन् 1944 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में निरन्तर प्रकाशन। हजारों मंचों से काव्य-पाठ। आकाशवाणी के अनेक केन्द्रों से रचनाओं का प्रसारण। खड़ी बोली के अतिरिक्त ब्रजभाषा एवं उर्दू में भी काव्य-सृजन।

प्रकाशित-पुस्तकें—(1) प्रवेश-गीत, (2) साँझ-सकारे, (3) संगम तथा (4) सिंहासन (सभी काव्य-संकलन)। (5) गंध रचती छन्द (इसमें पूर्व पुस्तकों में प्रकाशित प्रायः सभी रचनाएँ संकलित हैं।

अप्रकाशित-कृतियाँ—अनेक गीत, ग़ज़ल, मुक्तक आदि।

विशेष—"रंगजी" अपने युग के एक विशिष्ट मंचीय-कवि रहे सुमधुर गीतकर के रूप में इन्होंने अखिल भारतीय ख्याति अर्जित की। इनकी गीत-शैली इतनी आकर्षक रही कि उसके अनुकरण में अनेक कवियों ने रचनाएँ की, जिसके कारण हिन्दी काव्य-जगत् में एक "रंग-स्कूल" ही स्थापित हो गया। परवर्ती अनेक गीतकारों पर "रंग" जी का प्रभाव परिलक्षित होता है। अपने "उत्थान-काल" में "रंग" जी ने हिन्दी-काव्य-मंच पर जितने अल्प-समय में जितनी अधिक ख्याति अर्जित की, वह अन्यों को मिलना कठिन है। रंग जी की अधिकांश कविताएँ प्रणय, प्रकृति एवं श्रृंगार विषयक हैं। इन्हें हिन्दी गीतों का सम्राट भी कहा जाता है। कुछ रचनाएँ देश-प्रेम, राजनीतिक, सामाजिक तथा सामयिक विषयों पर भी हैं। सभी रचनाएँ गेय हैं। भाषा की सरलता, भावों की गम्भीरता, अनुपम छन्द-योजना जीवन्त उपमाएँ, अलंकार, बिम्ब-विधान तथा अभिनव शिल्प-सौन्दर्य के कारण रंग जी की अधिकांश हिन्दी कविताएँ प्रसादगुण सम्पन्न, अत्यन्त हृदयस्पर्शी तथा साहित्य की अमूल्य-निधि हैं। मौलिकता तथा सम्प्रेषणीयता रंगजी के गीतों का विशेष गुण है।

"रंग" जी की ब्रजभाषा की कविताएँ तथा लोक-गीत भी उच्च कोटि के हैं, परन्तु उन्होंने हिन्दी-उर्दू मिश्रित तथा उर्दू ग़ज़लों के जो प्रयोग किए हैं, वे सामान्य-कोटि के हैं। मंचीय कवि के रूप में इन्होंने अखिल भारतीय ख्याति अर्जित की थी।

काव्योदाहरण—

"अभी तो निर्माण की दिशा में, सुझाव है, साधना नहीं है।
अभी भी क्षति-पूर्ति में कमी क्यों?
अभी गरीबी की जड़ जमी क्यों?
अभी भी मजबूर आदमी क्यों?
ये प्रश्न है, याचना नहीं है।
न भय से पीड़ित समाज, सम्भव,
जो कल नहीं था, वो आज सम्भव,
"स्वराज्य" जिसदिन "सुराज" संभव,
अभी वो बानक बना नहीं है।"

(अभिव्यक्ति, पृष्ठ—35)

(स्व.) श्री गणेशलाल शर्मा "प्राणेश"

पिता—श्री सिद्धेश्वर प्रसाद शर्मा। जन्मतिथि—अज्ञात, 1920 ई.। जन्मस्थान—सैलाना (जिला—रतलाम), म. प्र.। शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी, राजनीति, इतिहास), साहित्यरत्न। व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—1935 ई.। प्रथमवार मंचीय काव्य पाठ—सन् 1947 ई. उदयपुर में। ब्रजक्षेत्र के सम्पर्क की अवधि सन् 1947 ई. से जीवनान्त तक। पता—शारदासदन, हनुमानगंज, फ़ीरोजाबाद (जि. आगरा)। निधनतिथि—27 जनवरी 1976 ई.।

अन्य—आरम्भ में 1933 से 1939 ई. तक बम्बई, अजमेर, उदयपुर तथा बांसवाड़ा में रहकर विभिन्न कार्य किए। 1940 ई. में ग्वालियर स्टेट में अध्यापक रहे। सैलाना राज्य प्रजामण्डल के अध्यक्ष तथा बम्बई में कांग्रेस के स्वयं सेवक रहे। 1951 से 1961 तक भूमिदान-यज्ञ के फीरोजाबाद तहसील के संयोजक तथा सर्वोदय के सक्रिय कार्यकर्ता रहे। गोशाला कमेटी, फीरोजाबाद के सदस्य भी रहे। 14 जुलाई 1947 ई. से डी. ए वी. इण्टर कालिज, फीरोजाबाद (आगरा) में अध्यापन कार्य किया और वहीं से सेवा निवृत्त हुए।

साहित्य-सेवा—सैलाना में 'साहित्य-सदन' की स्थापना की। रामजस कालिज, दिल्ली में अध्ययन करते समय साप्ताहिक "श्री कृष्णसन्देश" का सम्पादन किया। वनस्थली में "वीरबाला" पत्रिका के सम्पादक रहे। फ़ीरोज़ाबाद में "हिन्दी विद्यापीठ" की स्थापना की तथा "जनवाणी" एवं 'ज्योत्स्ना" नामक पत्रिकाओं के सम्पादक रहे। अनेक कवि-सम्मेलनों में भाग लिया तथा अनेक साहित्यक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे। खड़ी बोली में काव्य-सृजन के अतिरिक्त कहानी तथा निबन्ध लिखे। हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा ब्रज साहित्य मण्डल की कार्य कारिणी के सदस्य रहे। सर्वोदय स्वाध्याय मण्डल के संस्थापक तथा पत्रकार क्लब के मंत्री पद पर भी कार्य किया।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) फ़ीरोजाबाद परिचय (क्षेत्रीय इतिहास) (2) प्राणेश पुष्पांजलि तथा (3) पंचपात्र (काव्य)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) काव्य-पराग, (2) तरंगिणी, (3) राजस्थान गौरव (काव्य), (4) सविता (कहानी संग्रह), (5) सुमन-संचय (निबन्ध) तथा अनेक स्फुट रचनाएँ।

विशेष—भाषा, भाव तथा शिल्प की दृष्टि से सभी रचनाएँ सामान्य, परन्तु हृदयग्राही। मंचीय-कवि के रूप में क्षेत्रीय ख्याति लब्ध।

काव्योदाहरण—

"रुक न सकेगी मेरी वाणी।
जब तक विषम वित्त का वितरण,

श्रम-विभाग का विषमय प्रकरण।
जब तक दीन-हीन का शोषण—
जब तक भू-पर यही रवानी।
रुक न सकेगी मेरी वाणी।

(फीरोजाबाद परिचय, पृष्ठ—8)

अन्य कविगण—

इस वर्ग के जिन अन्य कवियों की पुस्तकें तो प्रकाशित हैं, परन्तु मंचीय कवि के रूप में जिन्हें सामान्य ख्याति ही उपलब्ध हो सकी, उनका संक्षिप्त परिचय निम्नानुसार है—

(1) **श्री बल्लभ जी दीक्षित**—आपका जन्म सन् 1909 ई. में इटावा में हुआ था। आपकी कुछ छोटी-छोटी पुस्तिकाएँ प्रकाशित हैं। आप ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली—दोनों में काव्य-रचना करते हैं। सम्प्रति : इटावा में ही निवास कर रहे हैं।

(2) **श्री शारदाचरण दीक्षित "कवि गणपति"**—आपका जन्म 31 मार्च, सन् 1912 ई. को आगरा में हुआ। आप संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान हैं तथा ख़यालबाजी में कलंगी अखाड़े के उस्ताद रहे हैं। आप हिन्दी ब्रजभाषा, उर्दू तथा संस्कृत में काव्य-रचना करते हैं। आपके द्वारा लिखित (1) 'मेघदूतोत्तरार्द्धम्' नामक संस्कृत का खण्ड-काव्य प्रकाशित है। आपका वर्तमान पता है—मोती कटरा, आगरा।

(3) (**स्व.**) **श्री मोहनलाल मिश्र "मच्छर भगवान"**—आपका जन्म सन् 1913 ई. में मथुरा में हुआ था। आप हास्य-व्यंग्य प्रधान कविताओं का पाठ किया करते थे। आपके द्वारा लिखित दोहा-चौपाइयों में किया गया श्री भगवतगीता का काव्यानुवाद "मोहन गीता" के नाम से प्रकाशित है।

(4) **श्री दाऊदयाल गुप्ता**—आपका जन्म 19 नवम्बर, सन् 1915 ई. को कुम्हेर (जिला—भरतपुर) में हुआ था। आप अब मथुरा में मुद्रण तथा पुस्तक-लेखन का व्यवसाय करते हैं। आपके द्वारा लिखित (1) राधा (महाकाव्य), (2) श्री कृष्ण चरित मानस (महाकाव्य) तथा विभिन्न विषयों की लगभग 200 पुस्तकें प्रकाशित हैं। आपका वर्तमान पता है—सस्ता साहित्य प्रेस, गुड़हाई बाजार, मथुरा।

(5) **श्रीराम रतन शर्मा**—आपका जन्म सन् 1916 ई. को मथुरा में हुआ था। आप वकील तथा पब्लिक-नोटरी हैं। आपके द्वारा लिखित हिन्दी तथा उर्दू की कविताओं के अंग्रेजी-अनुवाद "एलीगेन्स अनडिफीटेड" नामक पुस्तक में प्रकाशित हैं। अनुवादक हैं—श्री भुवनेश्वर शर्मा। आपका वर्तमान पता है—दलपतराय की खिड़की, तिलकद्वार, मथुरा। आप हिन्दी, उर्दू तथा ब्रजभाषा—तीनों में काव्य-रचना करते हैं।

(6) पं. **शिवदत्त चतुर्वेदी**—आपका जन्म सन् 1916 ई. में गाँव-हथकांथ (तहसील—बाह, जिला—आगरा) मे हुआ था। आप राजकीय इण्टर कालिज के प्रधानाचार्य पद से अवकाश प्राप्त कर अब छपैटी, इटावा में निवास करते हैं तथा साहित्य-साधना में लगे हैं। आपके द्वारा लिखित (1) चन्दबरदाई तथा (2) ब्रज की क्षेत्रीय बोलियाँ—शीर्षक दो पुस्तकें प्रकाशित है। आपने प्रायः ब्रजभाषा में ही काव्य-रचना की है।

(7) **(स्व.) श्री घूरेलाल गुप्त "लाल कवि"**—आपका जन्म सन् 1917 ई. में हाथरस में हुआ था। आप लोक-कवि थे। आपके द्वारा लिखित वाल्मीकि रामायण का दोहा-चौपाइयों में अनुवाद तथा लोक-काव्य विषयक 12 पुस्तकें प्रकाशित हैं। सन् 1978 ई. में आप स्वर्गवासी हुए।

(8) **पं. राम भरोसे लाल शर्मा "राम"**,—आपका जन्म 1917 ई. में ग्वालियर में हुआ था। आपके द्वारा लिखित (1) "राष्ट्रभारती" तथा (2) "गीतांजलि" शीर्षक दो काव्य-संग्रह प्रकाशित हैं। आप पहले मुद्रण एवं पत्रकारिता का कार्य करते थे। अब वर्षों मे रुग्ण होने के कारण घर पर ही विश्राम कर रहे हैं। आप खड़ी बोली के कवि है। आपका वर्तमान पता है—मानपाड़ा, आगरा।

इनके अतिरिक्त स्व. डा. गोवर्धन नाथ शुक्ल तथा डा. अम्बाप्रसाद "सुमन" (अलीगढ़), आचार्य रघुवीर प्रसाद त्रिवेदी (हाथरस, जि.—अलीगढ़) तथा श्री रूपनारायण 'चन्द्रुल' (अलवर) के नाम भी उल्लेखनीय हैं। इन सबके द्वारा विविध विषयों पर लिखित पुस्तकें भी प्रकाशित हैं।

"ख" वर्ग के अप्रकाशित कवि—इस वर्ग के कवियों में प्रमुख नाम निम्न-लिखित हैं।

(1) स्व. श्री उमरावसिंह पाण्डेय(जन्म 1902 ई.), मैनपुरी।

(2) श्री श्यामाचरण 'श्याम' (जन्म 1907 ई.) हाथरस जि. अलीगढ़।

(3) (स्व.) श्री रतनलाल जैन "रत्नेन्दु" (1914-1946 ई.) फरिहा, जि. मैनपुरी।

(4) (स्व.) श्री थानसिंह शर्मा "सुभाषी" (1915-1975 ई.) आगरा।

(5) श्री सत्यव्रत मिश्र (जन्म 1920 ई.) आगरा।

उक्त कवियों के संक्षिप्त-परिचय तथा रचनाओं के उद्धरण निम्नानुसार हैं—

(1) **श्री उमराव सिंह पाण्डेय (मैनपुरी)**—आप ब्रजभाषा में काव्य-रचना करते थे। आपकी रचना का एक उदाहरण इस प्रकार हैं—

"मोरपखा राजत इत विराजै उत चन्द्रकला,
बेसरि सुहाई, उत बाँसुरी बजाई है।
बानिक बनायौ इतै कृष्ण जदुनंद आज,
उतै चन्द्र-चन्द्रिका सुनैनी चारु छाई है॥

पीत-पट अंग फहरात झहरात उत,
चूनरी सुचारु चारु चित्रित जुन्हाई है।
गात की गुराई, 'उमराव' कविताई गाई,
उतै मुख मधुराई, इत ललित लुनाई है।

(2) **श्री श्यामाचरण "श्याम"** (हाथरस, जि.—अलीगढ़)—ये एक मन्दिर के महंत हैं। ब्रजभाषा के सुमधुर काव्य-पाठ के लिए विशेष प्रसिद्ध हैं। आपकी रचनाओं का प्रसारण आकाशवाणी—केन्द्रों से भी होता रहता है। मंचीय-कवि के रूप में अन्तर्राज्यीय ख्याति लब्ध। इनकी काव्य-रचना का एक उदाहरण निम्न-लिखित है—

"दासन की अरदासन पै,
बरदासन बीन बजावति आओ।
माधुरी मानस मन्दिर में,
मुद मोद मराल नचावति आओ॥
"श्याम" गिरा बस के रस के,
सुचि रोचक राग घुरावति आओ।
आज बिराज समाज कबीन,
सु काव्य-सुधा बरसावति आओ॥"

(3) (स्व.) **पं. रतनलाल जैन "रत्नेन्दु"** (फरिहा, जि.—मैनपुरी)—आप कपड़े की दूकान करते थे। जैन-समाज के प्रतिष्ठित विद्वान् माने जाते थे। गद्य-पद्य दोनों पर आपकी लेखनी का निर्बाध-अधिकार था। हिन्दी के अतिरिक्त उर्दू तथा ब्रजभाषा में भी कविताएँ लिखते थे। आपकी गणना क्षेत्र के प्रमुख समाज-सेवियों में की जाती थी। खेद है कि इस अपरिमित प्रतिभाशाली विद्वान् का क्षयरोग के कारण मात्र 32 वर्ष की आयु में ही निधन हो गया। इनकी काव्य-रचना का एक उदाहरण निम्न लिखित है—

"कुंकुम की मंगल लाली से आलोकित हैं दिशि-दिशि अंबर,
उत्साह-मंजरी पर कोयल आलाप रही स्वागत का स्वर,
झर उठे मोद के झरने हैं, इस क्षण, इस पल, शुभ अवसर पर,
स्तंभित हैं हर्षानुरक्त खग-मृग, अग-जग, चर और अचर,
चल रही पवन उर-प्रांगण में जिसमें स्वागत की है सुगंध।
मानो स्वागत के सावन की, लग रही झड़ी है अधाधुंध।"

('स्वागत गान' कविता का एक अंश)

(4) (स्व.) **श्रीथानसिंह शर्मा "सुभाषी" (आगरा)**—आपने नौकरी से लेकर पत्रकारिता तक के अनेक कार्य किए थे तथा हास्य-व्यंग्य के कवि के रूप में क्षेत्रीय-ख्याति भी अर्जित की थी। यों आपने भक्ति, शृंगार तथा अन्य विषयों पर भी श्रेष्ठ छन्दों की रचना की है। आपकी काव्य-रचना का एक उदाहरण निम्नलिखित है—

"प्रीति की डोरि जुरी जु रही, ताइ मान मरोर सौं तोरिबौ चाहौ।
बीसबिसे बिसबास की नाव कौं, सिन्धु अगाध में बोरिबौ चाहौ।
जोरिबौ चाहौ अकास में दीप, चितौनि सौं चन्द निचोरिबौ चाहौ,
छोरिबौ चाहौ सनेह के बंधन, चौं रस में विसु घोरिबौ चाहौ।"

(गूँजते स्वर पृष्ठ 75)

(5) **श्री सत्यव्रत मिश्र** (आगरा)—आप सैनिटरी इन्सपैक्टर के पद पर कार्यरत रहे। अब सेवा-निवृत्त होकर अध्ययन में समय बिता रहे हैं। इनकी काव्य-रचना का एक उदाहरण निम्नलिखित है—

"मुग्ध शिखी के सघन श्यामघन,
उलझे घुंघराले बल खा कर,
अंबर से पृथ्वी के तल तक,
गुह डाली मोती की झालर,
अणुभा उलट-पुलट झालर को,
सुरुचि दिखाती नित्य मनोहर,
जगत ठगा सा पर्व देखता, घने घनों का बहना निर्झर;
हरे वेष में खिली पड़ रही, मदमाती सी जग की रानी।
यौवन-रस के प्याले भर-भर, आज बाँटती सी मस्तानी।।"

("वर्षा" कविता का एक अंश)

अन्य कविगण :—

इस वर्ग के अन्य कवि निम्नलिखित हैं—

(1) **आगरा नगर एवं जिला**—सर्वश्री पन्नालाल "सरल", रणवीर सिंह "वीर", राजनारायण शुक्ल, नवलसिंह भदौरिया, सूबेदारसिंह चौहान "चातक" तथा राजेन्द्र रघुवंशी।

(2) **मथुरा नगर एवं जिला**—सर्वश्री नवनीत लाल नागर, राजाबाबू बर्मन, ताराचंद शर्मा, बाबूराम सारस्वत "घण्टा कवि", (स्व.) चुन्नी लाल "शेष" एवं (स्व.) धनीराम शर्मा "प्रेम"।

(3) **अलीगढ़ नगर एवं जिला**—बा. शिव कुमार वार्ष्णेय (अतरौली) तथा श्री हरि प्रसाद पाठक "निराश"।

(4) **एटा नगर एवं जिला**—पं. रामसहाय शर्मा "मलय"।

(5) **मैनपुरी नगर एवं जिला**—स्व. श्री भगवद् स्वरूप जैन (फरिहा)।

(6) **भरतपुर नगर एवं जिला**—श्री छोटेलाल पाठक "द्विजलाल"।

(7) **बुलन्दशहर नगर एवं जिला**—श्री सीताराम "सरोज"।

(8) **अलवर नगर एवं जिला**—सर्वश्री शिवनारायण गुप्त महाशय तथा गोपालराम गर्ग।



3. स्वातन्त्र्योत्तर कालीन ब्रजक्षेत्रीय प्रमुख हिन्दी-कवि और उनका साहित्यिक-योगदान

ब्रजक्षेत्र के जिन कवियों ने स्वातन्त्र्योत्तर-काल अर्थात् सन् 1947 ई. के बाद मंचीय-कवि के रूप में विशेष ख्याति अर्जित की, उन्हें निम्नलिखित दो वर्गों में रखा जा सकता है—

(1) "क" वर्ग—सन् 1921 से 1930 ई. की अवधि में जन्म लेने वाले कवि।

(2) "ख" वर्ग—सन् 1931 से 1940 ई. की अवधि में जन्म लेने वाले कवि।

उक्त दोनों वर्गों के कवियों को निम्नानुसार दो अलग-अलग उप-वर्गों में भी विभक्त किया जा सकता है—

(1) वे कवि, जिनकी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

(2) वे कवि, जिनकी पुस्तकें प्रकाशित नहीं हुई हैं।

"क" वर्ग के प्रकाशित कवि—बीसवीं शताब्दी की तृतीय दशाब्दी में जन्मे इस वर्ग के कवियों में से जिन्होंने मंचीय-कवि के रूप में अखिल भारतीय ख्याति अर्जित की है, उनके नाम के आगे 'गुणक-चिह्न' लगाया गया है। इस सूची के शेष कवि अन्तर्प्रान्तीय अथवा प्रान्तीय ख्याति के हैं। मंचीय-कवियों की दृष्टि से यह अवधि ब्रजक्षेत्र के लिए विशेष रूप से गर्व करने योग्य कही जा सकती है। नामावली निम्नानुसार है—

(1) श्री भोजराज चतुर्वेदी
(2) डा. शिवशंकर शर्मा "राकेश"
(3) श्री जगनसिंह चौहान
(4) श्री जनार्दन शर्मा "अवनीन्द्र"
(5) डा. मलखान सिंह सिसौदिया
(6) श्री दुर्गाप्रसाद "विशारद"
(7) श्री रामनारायण अग्रवाल,
(8) श्री कृपाशंकर शर्मा
(9) स्व. डा. मथुरा प्रसाद दुबे "कुलदीप"

(10) श्री गोपालदास "नीरज" ×
(11) श्री देवीदास शर्मा "निर्भय" ×
(12) श्री चन्द्रशेखर मिश्र "प्रभात किरन"
(13) श्री उत्तमचन्द्र जैन "प्रेमी"
(14) श्री लाखनसिंह भदौरिया "सौमित्र"
(15) श्री राजेश दीक्षित ×
(16) डा. तपेशकुमार चतुर्वेदी
(17) डा. घनश्याम अस्थाना

उक्त कवियों के सम्बन्ध में ज्ञातव्य-विवरण आगे लिखे अनुसार हैं—

श्री भोजराज चतुर्वेदी

पिता—श्री गुलजारीलाल चतुर्वेदी। जन्मतिथि—14 फरवरी सन् 1921 ई.। जन्मस्थान—फतेपुर—करवी। शिक्षा—इण्टरमीडिएट। व्यवसाय—नौकरी। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1940 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—जनवरी सन् 1948 ई., ए. के. कालेज, शिकोहाबाद में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—द्वारा : हिन्द लैम्प्स, शिकोहाबाद (जि. मैनपुरी)।

अन्य—विभिन्न साहित्यिक-संस्थाओं से सम्बद्ध रहे। जीवन में अनेक संघर्षों से जूझे। अब सेवा से अवकाश-प्राप्त कर, साहित्याराधन में संलग्न।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1943 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त सरस्वती, माधुरी, कल्पना आदि अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक काव्य-मंचों से काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी-केन्द्रों से प्रसारण। "फीरोजाबाद संदेश" नामक साप्ताहिक पत्र का एक अंक "भोजराज चतुर्वेदी अभिनन्दन अंक" के रूप में जनवरी सन् 1967 ई. को प्रकाशित हुआ है, जिसमें अनेक कवितायें भी संकलित हैं। खड़ी बोली के अतिरिक्त ब्रजभाषा में भी काव्य-सृजन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) बनवासी तथा (2) शिला और लहरें, (दोनों काव्य-संग्रह)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) जीवन-संध्या (2) अभिमानी (दोनों प्रबन्ध-काव्य)। इनके अतिरिक्त अनेक स्फुट रचनायें।

विशेष—चतुर्वेदीजी की रचनायें मुख्यतः भक्ति, दर्शन, शृंगार एवं प्रकृति-प्रेम प्रधान हैं। राष्ट्रीय, सामयिक तथा सामाजिक समस्याओं पर भी कुछ रचनायें लिखी हैं। भाव, भाषा, छन्द-योजना तथा शिल्प—सभी दृष्टियों से आपकी कवितायें उच्च कोटि की तथा स्थायी महत्व की हैं। आप स-स्वर काव्य-पाठ के लिये भी प्रसिद्ध रहे हैं।

काव्योदाहरण—

"तुम कौन अहल्या-सी सोयीं, इस निर्जन में ले व्यथा-भार ?
शापों से मर्माहत तुमको कर गया शक्ति का अहंकार।
तुम अचल तपस्विनि-सी सहतीं, वर्षा तप हिम की वक्र-दृष्टि,
कितने युग बीते इसी भाँति, छूतीं न समय की सिद्ध-यष्टि,
पाने को केवल पदाघात, कोई न चरण सकते उबार।"

("शिला", शिला और लहरें, पृष्ठ 1)

डा. शिवशंकर शर्मा "राकेश"

पिता—आचार्य पं. रामस्वरूप शास्त्री। **जन्मतिथि**—16 दिसम्बर 1921 ई.। **जन्मस्थान**—जयगंज, अलीगढ़। **शिक्षा**—एम. ए. (हिन्दी-संस्कृत), बी. टी., पी-एच. डी., डी. लिट्.। **व्यवसाय**—अध्यापन। **काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष**—1936 ई.। **प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ** सन् 1936 ई., अलीगढ़-प्रदर्शनी में। **वर्तमान पता**—"कविता", भारती नगर, मैरिस रोड, अलीगढ़—202001।

अन्य—काव्य एवं ललित कलाओं के प्रति किशोरावस्था से ही विशेष अनुराग। विगत 40 वर्षों से अध्यापन कार्य। सम्प्रति—मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ के हिन्दी-विभाग में वरिष्ठ-रीडर के पद पर कार्य-रत।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1940 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक मंचों से काव्य-पाठ। अनेक साहित्यिक-संस्थाओं से सम्बद्ध। काव्य के अतिरिक्त बालोपयोगी, प्रौढ़ोपयोगी, ललित-कला विषयक एवं शोध-परक साहित्य के सर्जक।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) जागरण के गीत (भाग 1 और 2), (2) जय एवं जवान, (3) कविता-सिता (तीनों काव्य-संग्रह), (4) पंखों के सेतु (ललित-निबंध), (5) शिक्षा (अनूदित), (6) रामचरितमानस में योग के स्रोत, (7) रसवल्ली, (8) प्रसाद काव्य (तीनों पुस्तकें सम्पादित) तथा (9) भक्तिकालीन हिन्दी साहित्य में योग-भावना (शोध-प्रबंध)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) धूप के दायरे तथा (2) भींगी पलकें (काव्य-संग्रह), (3) चौर-पंचाशिका (पद्यानुवाद), (4) शोध प्रक्रिया के मानबिन्दु (शोध-विषयक) एवं (5) औचित्य सिद्धान्त का मनोवैज्ञानिक परिशीलन (समीक्षात्मक शोध-विषयक)। इनके अतिरिक्त अनेक स्फुट कविताएँ तथा गद्य-कृतियाँ।

विशेष—भाषा, भाव, शैली आदि की दृष्टि से कविताएँ उत्तम तथा हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"निर्झर कभी न उलटे बहते,
तुम भी राह न अपनी बदलो।
वीर बदल देते दुनियाँ को,
स्वयं न टाले से टलते हैं;
यश लेने में सब से पीछे,
काँटों पर आगे चलते हैं;
तुम भारत मां के बेटे हो,
अपना गौरव आप समझलो।"

(जागरण के गीत, भाग—1)

श्री जगनसिंह चौहान

पिता—ठा. भूपालसिंह जी। जन्मतिथि—26 जनवरी, सन 1922 ई.॥ जन्मस्थान—मथुरा। शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी-अंग्रेजी)। व्यवसाय—प्रवक्ता काव्य-सृजन का प्रारंभिक-वर्ष—सन् 1935 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1945 ई.। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—छगनपुरा, मथुरा।

अन्य—सन 1945 में मध्य भारत में शिक्षक-पद पर कार्य। "श्रीमती पर्लबक" के उपन्यासों पर शोध-कार्य किया, किन्तु कुछ कारणों से डिग्री नहीं मिली। चित्रकला में विशेष अभिरुचि। "कालिज पत्रिका" का सम्पादन। सम्प्रति—किशोरी रमण महाविद्यालय, मथुरा के अंग्रेजी-विभाग में प्राध्यापक।

साहित्य-सेवा—प्रथम रचना सन 1946 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक काव्य-मंचों से काव्य-पाठ तथा रेडियो से प्रसारण। खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा दोनों में काव्य-सृजन तथा आलोचनात्मक निबन्धों का लेखन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) सान्ध्य-घन तथा (2) रिमझिम (काव्य-संकलन)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) सुकरात (खण्ड-काव्य) तथा (2) श्रीमती तारा पाण्डेय : एक अध्ययन (आलोचनात्मक)। लगभग 500 स्फुट कविताएँ।

विशेष—रचनाओं की भाषा सरल एवं भाव गम्भीर। आपने शृंगार, भक्ति, वीर, करुण आदि विभिन्न रसों में कविताएँ लिखी हैं। सामाजिक, राजनीतिक तथा सामयिक विषयों पर भी अनेक कविताओं का सृजन। साहित्यिक-शिल्प की दृष्टि से रचनाएँ सामान्य, परन्तु हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"तुम रश्मि सी सुन्दर,
सजल हो सीप सी।

मैं आरती की धूप,
  तुम हो दीप सी।
तुम कनक सी कामिनी रस वल्लरी,
स्वर्ग से उतरी कोई रम्भापरी,
मैं लिये हूँ आरती का थाल,
कामना छू लूँ शुभे ! वह भाल।"
(सान्ध्यघन, पृ. 41)

श्री जनार्दन शर्मा "अवनीन्द्र"

पिता—श्री महेन्द्र सिंह शर्मा। जन्म-तिथि—4 जनवरी, सन् 1923 ई.। जन्मस्थान—हाथरस (जि. अलीगढ़)। शिक्षा—एम. ए. (संस्कृत), नव्यव्याकरण शास्त्री, प्रभाकर। व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1945 ई.। प्रथमबार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1946 ई., राधाकृष्ण संस्कृत महाविद्यालय, खुर्जा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—संस्कृत प्रवक्ता—जनता इण्टर कालेज, फतेहाबाद (जि. आगरा)। स्थायी पता—राजरानी भवन, इगलास (अलीगढ़)।

अन्य—अलीगढ़ जनपद के सुप्रसिद्ध कनेटपुर राजघराने में जन्म। चिकित्सा-कार्य एवं प्राचीन-मुद्राओं के संकलन में विशेष रुचि। काव्य-मंचों पर काव्य-पाठ हेतु 2 शील्ड, 3 रजत थाल, 160 रजत पदक तथा अनेक नकद पुरस्कार प्राप्त। हाथरस मेला कवि-सम्मेलन में प्रथम पुरस्कार प्राप्त। सन् 1946 से 1960 ई. तक 14 वर्षीय चिकित्सा-क्षेत्र में लब्धकीर्ति। सन् 1961 ई. से अब तक 20 अध्यापन-क्षेत्रों में 80 प्रतिशत से अधिक परीक्षा-फल देने में 38 प्रशस्ति-पत्र प्राप्त। हिन्दी तथा ब्रज भाषा के काव्य-सर्जक। तुकान्त कविता के प्रबल समर्थक।

साहित्य-सेवा—प्रथम रचना सन् 1945 ई. में प्रकाशित, तत्पश्चात् अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। सैकड़ों कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध तथा अनेक साहित्यिक-कार्यक्रमों के आयोजक रहे। कालिज-पत्रिका के प्रधान सम्पादक। सम्प्रतिः कवि-सम्मेलनों से सन्यास लेकर काव्य-सृजन में संलग्न।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) ज्वाला (काव्य)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) बन्दा वैरागी (प्रबन्ध-काव्य) तथा अनेक स्फुट रचनाएँ।

विशेष—कवि-सम्मेलनी कवि के रूप में ओजपूर्ण काव्य-पाठ तथा मधुर गीतों के गायक के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की। वीर तथा श्रृंगार—दोनों रसों के श्रेष्ठ कवि।

भाषा, भाव, छन्द-योजना तथा शिल्प की दृष्टि से सभी कृतियाँ अत्युत्तम। कुछ कविताएँ आध्यात्मिक विषयों पर भी लिखी है।

काव्योदाहरण—

"सुयश-सूर्य की एक किरण, सारा तम हर सकती है,
आँगन-आँगन गली-गली में, कंचन भर सकती है,
एक-एक जुड़ कड़ी खड़ी, शृंखला बड़ी होती है,
मिलती वह सम्पदा धूल में, जोकि गढ़ी होती है,
इस वैज्ञानिक युग में चिन्तित बहुत हमारा मन है।
जो इतिहास वीर-रस-युत है, वही हमारा धन है॥"

("बंदा बैरागी" काव्य का एक अंश)

डा. मलखानसिंह सिसौदिया

पिता—श्री चित्तरसिंह जी। जन्मतिथि—7 जनवरी, सन् 1923 ई.। जन्मस्थान—मारीपत । शिक्षा—एम. ए., पी-एच. डी.। व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1936 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ-सन् 1945 ई., कानपुर में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—सन् 1951 ई. से। वर्तमान पता—कल्पना कुटीर (करबला के निकट), एटा।

अन्य—सन् 1942 ई. में आगरा में अध्ययन करते समय पढाई में व्यवधान पड़ा तथा फरारी का जीवन बिताया। सन् 1944 से अध्यापकीय जीवन का प्रारम्भ। अनेक अभावों तथा कठिनाइयों से संघर्ष। दीर्घकालीन अस्वस्थता। मैनपुरी, इटावा तथा आगरा जनपदों में समाज-सेवा कार्य। सम्प्रति—ए. एस. इण्टर कालिज, एटा के प्रधानाचार्य पद पर कार्यरत। केन्द्रीय सरकार द्वारा "राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार" तथा उ. प्र. शासन द्वारा "बाल कृष्ण शर्मा नवीन पुरस्कार" से सम्मानित। उ. प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा "साहित्य वारिधि", अ. भा. सं. सा. परिषद् द्वारा "साहित्य मार्तण्ड" तथा तुलसीपीठ, कासगंज द्वारा "विद्या वारिधि" की उपाधियों से अलंकृत। अनेक स्थानों पर अभिनन्दित।

साहित्य-सेवा—पहली कविता 1944 ई. में "हंस" में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। कविता के अतिरिक्त कहानी एवं निबन्ध-लेखन। अनेक काव्य-मंचों से काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध तथा अनेक साहित्यिक-कार्यक्रमों के आयोजक।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) बंगाल के प्रति और अन्य कविताएँ, (2) दीवारों के पार (कविता-संग्रह), (3) सूली और शान्ति (प्रबन्ध-काव्य), (4) आधुनिक हिन्दी नाटकों में नायक एवं नायिका की परिकल्पना (शोध-प्रबन्ध)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) सम्पाति-चिन्ता (खण्ड-काव्य), (2) देवता का दर्द, (3) समय के चरण (कविता-संग्रह), (4) पुनरारंभ (कहानी-संग्रह)। (5) गहरे पानी पैठ (निबन्ध-संग्रह) एवं (6) चिन्तनक्षण (विचार-संग्रह)। इनके अतिरिक्त अनेक स्फुट रचनाएँ।

विशेष—सिसौदिया जी की कविताएँ भाषा, भाव तथा शिल्प सभी दृष्टियों से उत्तम कोटि की हैं तथा उनकी सम्प्रेषणीयता अनुपम है।

काव्योदाहरण—

"मैं चाह रहा हूँ धरा-गगन में परिवर्तन।
बदलें युग-युग के देव, स्वर्ग-अलका बदलें,
बदलें मिथिला-साकेत, स्वर्ण-लंका बदलें,
वदलें कैलाश कूट, ब्रह्मा का पद्मासन,
बदलें भाग्यों का भाग्य, मृत्यु का सिंहासन,
मैं चाह रहा देना भूतल को ज्वाला-कण।"

(दीवारों के पार, पृष्ठ 14)

श्री दुर्गा प्रसाद "विशारद"

पिता—पं. प्राणसुखजी। जन्मतिथि—30 जुलाई सन् 1924 ई.। जन्म स्थान—ग्राम-अरुआखास, किरावली (जिला-आगरा)। शिक्षा—एम. ए., एल. टी, साहित्यरत्न। व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1942 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1943 ई. नागरी प्रचारिणी सभा, आगरा में। ब्रज-क्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान [illegible]— [illegible] अछनेरा (जि. आगरा)।

अन्य—जन्म के एक वर्ष बाद ही पिता की मृत्यु। विधवा माता ने अत्यन्त दरिद्रावस्था में भरण-पोषण किया। बाल्यावस्था में मजदूरी का कार्य करते हुए अपना अध्ययन चालू रखा। जीवन में अनेक प्रकार के कष्टों तथा संघर्षों का सामना किया। सर्वप्रथम सन् 1943 में प्राइमरी पाठशाला में अध्यापक फिर सन् 1948 ई. से शिवप्रसाद राष्ट्रीय इण्टर कालेज, अछनेरा (आगरा) में हिन्दी के प्रवक्ता पद पर कार्यरत। सन् 1984 ई. में सेवा-निवृत्त होकर कृषि तथा लेखन-कार्य में संलग्न।

साहित्य-सेवा—'युवको उठो' शीर्षक पहली रचना सन् 1946 ई. में प्रकाशित तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। सैकड़ों कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ। आकाशवाणी से रचनाओं का प्रसारण। अनेक साहित्यिक-कार्यक्रमों के आयोजक तथा संस्थाओं से सम्बद्ध। खड़ी बोली के अतिरिक्त ब्रजभाषा में भी काव्य-सृजन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) युवको उठो (काव्य-संग्रह)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) धरती की बात, (2) मुक्तक-शतक, (3) व्रजवाणी (सभी काव्य-संग्रह) तथा अन्य स्फुट कविताएँ।

विशेष—मंच पर अपने ओजस्वी काव्य-पाठ के लिए प्रसिद्ध विशारद जी की कविताओं में भाषा की सादगी तथा भावों की तरलता देखते ही बनती है। उनकी सम्प्रेषणीयता इतनी प्रखर होती है कि श्रोतागण मुग्ध होकर 'वाह-वाह' कर उठते हैं। छन्द-योजना त्रुटि पूर्ण तथा भाषा ग्राम्य-दोष युक्त रहते हुए भी भाव मर्मस्पर्शी होते हैं। आपका जीवन संघर्षों में बीता है, अतः रचनाओं में भी सामाजिक विषमताओं के प्रति विद्रोह का तीखा अह्वान है। वीररस के अतिरिक्त आपने कुछ श्रृंगार एवं भक्ति परक रचनाएँ लिखी हैं तथा सामयिक समस्याओं पर तीखे व्यंग्य भी किए हैं।

काव्योदाहरण—

"गीध युद्ध करै, अश्व दौरि दौरि लरै यहाँ
सारी धरती कौं नाग सर पै रखैया हैं।
कपि की हुँकार सुनि राक्षस अधम कापैं,
धरती कौं नापैं ऐसे मूषक चढ़ैया हैं॥
बैल मतवारौ यहाँ, गरुड़ गतिवारौ यहाँ,
कच्छ बलवारौ यहाँ, गैया सी मैया हैं।
मानुस की दूरि बात, मेरे या देस माहिं,
शुक और काग तक वेद के पढ़ैया हैं॥
("युवको उठो", पृष्ठ 28)

श्री राम नारायण अग्रवाल

पिता—श्री मंगीलाल जी। जन्मतिथि—भाद्रपद, ओक द्वादशी, संवत् 1980 वि., सन् 1924 ई.। जन्मस्थान—मथुरा। शिक्षा—प्रभाकर, साहित्यरत्न। व्यवसाय—लेखन तथा ब्रजलोक-मंच सम्बन्धी कार्य। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1935 ई.। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—गली रावलिया, कच्ची सड़क, मथुरा।

अन्य—ब्रज साहित्य मण्डल के सदस्य एवं प्रधान मन्त्री, ब्रज कला केन्द्र के मन्त्री तथा प्रादेशिक एवं केन्द्रीय सूरपंचशती समिति तथा उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी के सदस्य रहे। लोक मंचों की स्थापना, अभिनय—प्रदर्शन, साहित्य के अध्ययन एवं संगीत में विशेष रुचि। अनेक वर्षों तक आकाशवाणी, दिल्ली के 'ब्रजमाधुरी' विभाग में 'उद्घोषक' पद पर कार्य किया। अब सेवानिवृत्त होकर घर पर ही साहित्य-सृजन तथा लोक-मंच के उत्थान हेतु कार्य-रत।

साहित्य-सेवा— पहली कविता सन् 1937 ई. में स्कूल-मैगजीन में प्रकाशित तत्पश्चात् अनेक पत्र-पत्रिकाओं में कविता तथा निबन्धों का प्रकाशन। ब्रजभाषा में काव्य-सृजन के अतिरिक्त लोक-साहित्य तथा शोध-निबन्धों का लेखन, अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध। आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण। अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य पाठ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) कूबरी (खण्ड-काव्य), (2) सूरदास (नाटक) (3) कित गयौ मथुरावासी (लोक-गीत संग्रह), (4) ऐतिहासिक कहानियाँ, (5) कवि नाट्यम् (ब्रज-कवियों की जीवनी पर आधारित नाटक), (6) ब्रज की लोक कहानियाँ, (7) ब्रज और ब्रजयात्रा तथा (8) राजा महेन्द्र प्रताप अभिन्दन ग्रंथ (संपादित)।

इनके अतिरिक्त 'काका की कचहरी' शीर्षक संकलन में "सुदामा चरित्र" प्रकाशित तथा (1) रास-लीला : एक परिचय, (2) सांगीत : एक लोक-नाट्य परम्परा एवं (3) ब्रज का रास रंग-मंच—इन तीन पुस्तकों के सेठ गोविन्ददास के साथ सहयोगी-लेखक।

अप्रकाशित कृतियाँ—ब्रजभाषा के लगभग 500 स्फुट छन्द, लोक-साहित्य तथा शोध-निबन्ध आदि।

विशेष—ब्रजभाषा के श्रेष्ठ कवि। छन्द-योजना, भाव, भाषा तथा शिल्प की दृष्टि से सभी रचनाएँ उत्तम।

काव्योदाहरण—

"जन्मी ब्रजभूमि में, पली है तू मलाई पाय,
गोपिन कौ माखन सरस सद खायौ है।
तुलसी के वन में सुछंद गेंद सूरज की,
खूब खुल खेलिकैं अनूप रूप पायौ है॥
एहो रसखानि घन आनंद सुवन वारी,
दास मतिराम तोय भूषन सजायौ है।
धन्य ब्रजभाषा, तोसी दूसरी न भाषा, तैंनें
बानी के विधाता कूँ बोलिबौ सिखायौ है॥"

(पाण्डुलिपि से)

श्री कृपाशंकर शर्मा

पिता—पं. हरि शंकरशर्मा, कविरत्न। **जन्मतिथि**—वसंत पंचमी, सन् 1924 ई.। **जन्मस्थान**—हरदुआगंज (अलीगढ़)। **शिक्षा**—एम. ए., एल. टी.। **व्यवसाय**—अध्यापन। **काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष**—सन् 1937 ई.। **प्रथम बार मंचीय**

काव्य-पाठ—सन् 1937 ई., अछनेरा, (आगरा) में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—शंकर सदन, मयूरवन, मुरैना (म. प्र.)।

अन्य—राजनीतिक-आन्दोलनों में भाग। सन् 1942 ई. के "भारत छोड़ो" आन्दोलन में 8 मास का कारावास। सन् 1952 ई. तक प्रेस तथा प्रकाशन सम्बन्धी कार्य। सन् 1933 से शिक्षा विभाग—मध्य प्रदेश में कार्यरत। सम्प्रति—मुरैना में प्राध्यापक।

साहित्य-सेवा—प्रथम कविता "मुरलिका" सन् 1939 में प्रकाशित, तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में स्फुट-रचनाओं का प्रकाशन। 1958 में "मयूरवन साहित्य समिति" की स्थापना। 1967 में "मयूरवन" नामक वार्षिक-पत्रिका का प्रकाशन। अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ तथा अनेक साहित्यिक-कार्यक्रमों के आयोजक।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) मुरलिका, (2) बापू के गीत, (3) जब राम राज्य आयेगा, (सभी काव्य) तथा (4) हिन्दी साहित्य परिचय एवं (5) मयूरवन" (7 भागों में) सम्पादित।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) रामदूत, (2) वैष्णवी, (3) कलयुगी (तीनों काव्य) तथा 300 से अधिक स्फुट रचनाएँ।

विशेष—हिन्दी-साहित्य में सम्वाद-शैली में व्यंग्य-रचना तथा गीतों के माध्यम से व्यंग्य-विधा के प्रवर्तक। कविताएँ सरल, सामान्य तथा हृदयस्पर्शी।

काव्योदाहरण—

"नगर-नगर पिट गया कनस्तर।
दल-बदलू बन गया मिनिस्टर।
हैवी बौडी, हैपी लाइफ।
पी. ए. बदलू हाउस वाइफ।
पति बदलू मैडम मिडवाइफ।
महबूबा दर्जनों तवाइफ।
जेठा बेटा घूस-कलक्टर।
मझला रोजगार-कंट्रक्टर।
छोटा छन्द-फन्द-कंडक्टर।
साला ब्लैक-मेल-इंस्ट्रक्टर।

पूरा कुनबा सिन्डीकेटर।
मंत्री केवल इन्डीकेटर।
नगर-नगर पिट गया कनस्तर।
दल-बदलू बन गया मिनिस्टर।"

(पाण्डुलिपि से)

(स्व.) डा. मथुराप्रसाद दुबे "कुलदीप"

पिता—श्री रामनाथ दुबे। जन्मतिथि—5 फरवरी, सन् 1925 ई.। जन्मस्थान—मथुरा। शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी), पी-एच. डी.। व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1938 ई.। प्रथम-बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1945 ई, आगरा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—आजीवन। पता—बी. 51, लाजपत कुंज, आगरा। निधन तिथि—1 नवम्बर 1982 ई.।

अन्य—युवावस्था तक अनेक संघर्षों में रत। आरंभ में राशनिंग विभाग में नौकरी की। फिर "दैनिक सन्देश" तथा "दैनिक प्रभात" पत्रों के सम्पादक रहे। "मतवाला" (दैनिक), "हमराही", तथा "कालेज टाइम्स" (पाक्षिक), "नोक-झोंक" तथा "युवक" (मासिक), "साहित्यिकी" (त्रैमासिक), तथा "सेंट जॉन्स कालेज पत्रिका", आदि के सम्पादक अथवा सम्पादक-मण्डलों के सदस्य रहे। सन् 1950 ई. से 1953 ई तक "आगरा जिला पत्रकार संघ" के महामंत्री, "आगरा प्रेस क्लब" के उपाध्यक्ष रहे। फिर प्रदेश समाज सेवा, आगरा विश्वविद्यालय; रचनात्मक-कार्यक्रम तथा प्रदेश एजूकेशनल कोर के प्रभारी अधिकारी; भारत सेवक समाज के प्रादेशिक संगठन मंत्री; भारत-नेपाल मंत्री संघ, उत्तर प्रदेश-शाखा के अध्यक्ष; जिला नागरिक परिषद के प्रचार एवं संयुक्त मंत्री; आगरा सिटीजन्स फोरम के महामंत्री; कालेज अध्यापक संघ तथा आगरा विश्वविद्यालय हिन्दी-प्राध्यापक परिषद के अध्यक्ष; इण्टरनेशनल सर्विस एण्ड स्टडी एक्सचेंज के मंत्री; जिला स्वास्थ्य समिति तथा जिला सेवा योजन विभाग के सदस्य; नगर कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष तथा कार्यवाहक-अध्यक्ष एवं हिन्दी प्रचारिणी सभा आगरा के वरिष्ठाध्यक्ष आदि पदों पर रहे। सेन्ट जॉन्स कालिज, आगरा में हिन्दी विभागाध्यक्ष के पद पर कार्यरत रहे। अभिनय तथा अध्ययन-अध्यापन में विशेष रुचि। हिन्दी काव्य-कला परिषद, साहित्य-समाज एवं अ. भा. ब्रज साहित्य संगम आदि संस्थाओं के संस्थापक-सदस्य तथा पदाधिकारी रहे। "यूनेस्को" के तत्वावधान में भेजे गए शिष्ट मण्डलीय सदस्य के रूप में यूरोप के 18 देशों की यात्रायें कीं। अनेक विश्वविद्यालयों के प्रधान परीक्षक, चयन समितियों के सदस्य, विशेषज्ञ आदि रहे।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1939 ई. में 'अर्जुन' में प्रकाशित हुई, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक मंचों से काव्य-पाठ। अनेक साहित्यिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं से सम्बद्ध। सन् 1950 ई. से आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों द्वारा रचनाओं का प्रसारण। लन्दन तथा बर्लिन रेडियो एवं टेलीविजन से कविताएँ प्रसारित। खड़ी बोली के अतिरिक्त ब्रज-भाषा एवं उर्दू में भी काव्य-सृजन। नाटक, कहानी तथा समीक्षात्मक ग्रंथों का लेखन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) लोक गीतों का विकासात्मक अध्ययन (शोध-प्रबन्ध), (2) हेर फेर (नाटक), (3) हम एक हैं (एकांकी-संग्रह), (4) प्रेरणा के दीप, (जीवनियाँ), (5) धरती के बोल, (राष्ट्रीय-गीत) (6) मृगनयनी—एक अध्ययन, (7) यशोधरा—एक अध्ययन, (8) आचार्य चाणक्य दर्शन, (9) ललित विक्रम अनुशीलन, (10) झांसी की रानी लक्ष्मीबाई : एक विवेचन, (11) यशपाल और उनका झूठा-सच, (12) कवि नरेन्द्र शर्मा और द्रौपदी, (13) प्रसाद और उनकी तितली (समीक्षात्मक), (14) काव्य कालिन्दी, तथा (15) नयी अनुभूति (सम्पादित पाठ्य पुस्तकें), (16) कृष्णमुग्धा मीरा (खण्ड-काव्य) तथा (17) महक गया आँगन (कविता-संग्रह)।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक गीत, ग़ज़लें, कहानियाँ, निबन्ध आदि।

विशेष—कुलदीपजी की कविताओं की भाषा सरल तथा हृदयग्राही है। ये अपने स-स्वर काव्य-पाठ से श्रोताओं को मन्त्र-मुग्ध करने में सक्षम थे। कविताओं का मुख्य रस श्रृंगार। प्रणय-गीतों में गहरी मादकता। कुछ रचनाएँ देश-भक्ति परक तथा राजनीतिक विषयों से भी संबंधित। कुछ मुक्तक भी लिखे। छन्द, शिल्प तथा साहित्यिक दृष्टि से रचनाएँ सामान्य।

काव्योदाहरण—

"सँभालो मुझे, मैं गिरा जा रहा हूँ।
कहाँ जा रहा था, कहाँ जा रहा हूँ।
× × × ×
भरी भीड़ में आज अनजान हूँ मैं,
बुलाये न कोई वो मेहमान हूँ मैं,
अहंकारियों की जमातों में चल कर,
गलत-लक्ष्य का एक संधान हूँ मैं,
मुझे हर दिशा आज लगती अपरिचित,
भ्रमित-क्रांति के गीत मैं गा रहा हूँ।

(महक गया आँगन, पृष्ठ 17)

श्री गोपालदास "नीरज"

पिता—श्री ब्रजकिशोर सक्सेना। जन्म-तिथि—4 जून, 1925 ई.। जन्म-स्थान—पुरावली (जिला-इटावा)। शिक्षा—एम. ए.। व्यवसाय—लेखन। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1940 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1940 ई. एटा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—47, मेरिस रोड, अलीगढ़।

अन्य—प्रारम्भिक जीवन अत्यन्त संघर्ष पूर्ण रहा। बेकारी, मजदूरी क्लर्की, आफीसरी से लेकर संपादकी तथा कालिज में प्राध्यापकी तक के कार्य किए। फिल्मों में लगभग 135 गीत लिखे। अनेक गीतों के रिकार्ड्स भी बने। ज्योतिष, सामुद्रिक तथा दर्शन-शास्त्र में विशेष रुचि। कई स्थानों पर अभिनंदित। अनेक पुरस्कार प्राप्त।

साहित्य-सेवा—सन् 1940 ई. में प्रथम रचना प्रकाशित, तदुपरान्त देश की प्रायः सभी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओ में प्रकाशन। देश के सभी भागों में आयोजित सहस्रों कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ। आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों द्वारा सैकड़ों बार रचनाओं का प्रसारण। हिन्दी, उर्दू, ब्रजभाषा तथा अंग्रेजी में काव्य-सृजन के अतिरिक्त अनेक साहित्यिक-निबन्धों का लेखन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) संघर्ष, (2) अन्तर्ध्यान, (3) विभावरी, (4) प्राणगीत (भाग—1), (5) प्राणगीत भाग—2, (6) प्राणगीत भाग—3, (7) दर्द दिया है, (8) बादल बरस गयो, (9) आसावरी, (10) दो गीत, (11) मुक्तकी, (12) गीत भी अगीत भी एव (13) नीरज की पाती (सभी काव्य)। इनके अतिरिक्त (1) कारवां गुजर गया, (2) तुम्हारे लिए, (3) फिर दीप जलेगा आदि कई पुस्तकें "पाकिट बुक्स" के रूप में प्रकाशित।

क्षेमचन्द्र "सुमन" द्वारा सम्पादित 'आधुनिक कवि नीरज" तथा प्रगति प्रकाशन, आगरा से प्रकाशित "नीरज" शीर्षक पुस्तकों में भी अनेक रचनाएँ संकलित।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक स्फुट कविताएँ तथा निबन्ध आदि।

विशेष—हिन्दी काव्य-मंच के सर्वाधिक लोकप्रिय गीतकार के रूप में प्रसिद्ध मूलतः शृंगारी कवि; परन्तु राजनीतिक, सामाजिक, सामयिक तथा दार्शनिक विषयों पर भी लिखा है। भाषा, भाव, शिल्प, अलंकार—योजना आदि सभी दृष्टियों से कविताएँ अत्यधिक समृद्ध। आधुनिक गीतकारों की रचनाओं में जहाँ अभिधा एवं व्यंजना का प्राचुर्य पाया जाता है, वहाँ आपके गीतों में लक्षणा का बाहुल्य है, जो उच्च कोटि के काव्य का एक विशिष्ट गुण है।

श्री नीरज पर भावापहरण का दोषारोपण किया जाता है, परन्तु भाव-साम्य प्रायः सभी कवियों में कहीं-न-कहीं परिलक्षित होता है, अतः केवल उसी के कारण कवि की मौलिकता को चुनौती नहीं दी जा सकती; प्रस्तुतीकरण की मौलिकता ही कवि की निजी विशेषता है और वह नीरज की रचनाओं में प्रभूत मात्रा में विद्य-मान है।

श्री नीरज एक श्रेष्ठ रचनाकार होने के साथ ही सुमधुर गायक भी हैं, अतः कवि-सम्मेलनों में इनके काव्य-पाठ की धूम मचती है। तीन-चार घण्टे तक निरन्तर काव्य-पाठ करते रहना और श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध सा बनाए रखना, इनके लिए सामान्य-सी बात है।

इनके दार्शनिक-गीत उच्च कोटि के हैं, श्रृंगार-गीत हृदयग्राही है, मुक्तक प्रभावोत्पादक है तथा छन्द-मुक्त रचनाएँ भी उत्तम हैं; परन्तु राजनीतिक अथवा सामयिक परिप्रेक्ष्य में जो रचनाएँ यदा कदा लिखी गई है, वे शिल्प की दृष्टि से श्रेष्ठ होते हुए भी दूरदर्शिता पूर्ण नहीं रहीं। उदाहरण के लिए-जब इन्होंने "युद्ध नहीं होगा" शीर्षक कविता लिखी तो उसके दो वर्ष बाद ही 'भारत-चीन' तथा बाद में 'भारत-पाक युद्ध' हुए।

श्री नीरज ने उर्दू तथा हिन्दी में कुछ ग़ज़लें भी लिखी है, परन्तु वे सामान्य-कोटि की हैं। इन्होंने मंचीय-दृष्टि से कुछ ऐसी चालू कविताएँ भी लिखी है, जो वितृष्णाजनक है। इनके काव्य-संकलनों में जहाँ अधिकांश-रचनाएँ उच्चकोटि की हैं, वहाँ कुछ भरती की भी दिखाई देती हैं।

श्री नीरज की हिन्दी कविताओं मे उर्दू शब्दों का प्रयोग धड़ल्ले से हुआ है और कहीं-कहीं अंग्रेजी शब्दों का भी; परन्तु ऐसे सभी प्रयोग सार्थक प्रतीत होते है। यों प्रांजल-भाषा लिखने में भी आप पटु हैं। "गीतों के राजकुमार" में रूप में प्रसिद्धि-प्राप्त श्री नीरज हिन्दी काव्य-मंच के श्रेष्ठ गीतकार हैं।

काव्योदाहरण—

"जब तक कुछ अपनी कहूँ, सुनूँ जग के मन की,
तब तक ले डोली द्वार, विदा-क्षण आ पहुँचा।
फूटे भी तो थे बोल न श्वास-कुमारी के,
गीतों वाला इकतारा गिरकर टूट गया,
हो भी न सका था परिचय दृग का दर्पण से
सपना आँसू बन कर छलका और छूट गया,
तन भींगा, मन भींगा, कण-कण, तृण-तृण भींगा,
देहरी, द्वार, आँगन, उपवन, त्रिभुवन भींगा,
जब तक मैं दीप जलाऊँ कुटिया के द्वारे
तब तक बरसात मचाता सावन आ पहुँचा।"

('मंगलदीप' 1978 में प्रकाशित "साधों का गौना" शीर्षक कविता का एक अंश)

श्री देवीदास शर्मा "निर्भय हाथरसी"

पिता—पं. गनेशीलाल शर्मा। जन्म तिथि—देवोत्थान एकादशी, सं. 1983 वि., सन् 1926 ई.। जन्म-स्थान—गाँव एदलपुर (जिला मथुरा)। व्यवसाय—अनेक। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1933 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1938 ई., हाथरस में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—नाऊ का नगला, हाथरस (जि. अलीगढ़)।

अन्य—जीवन में अनेक दन्द-फन्द करने के उपरान्त सम्प्रतिः सन्यासी-वेष धारण। धोखा धड़ी के अपराध में कारावास के भी अनुभवी।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1940 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। "निर्भय", "नमस्ते" तथा "जनता की आवाज" (दैनिक) एवं "शारदा", "अतीत" तथा "गायत्री" (मासिक) पत्रों के पूर्व-सम्पादक। वर्तमान में "जुगनू" (पाक्षिक) तथा "हा हा ही ही हू हू" (मासिक) के सम्पादक-प्रकाशक। कुछ समय तक "दैनिक नागरिक" (हाथरस) का सम्पादन भी किया। सैकड़ों कवि-सम्मेलन में काव्य-पाठ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) मीना बाजार, (2) सिंहगढ़ विजय, (3) शिवा-पत्र, (4) कारागार, (5) गुरु गोविन्दसिंह (जो सन् 1948 ई. में जब्त भी हुई) तथा (6) सन् 712 (ये सभी खण्डकाव्य "अतीत" नामक मासिक पत्रिका के विशेषांक के रूप में प्रकाशित), (7) दिल्ली के दंगल में, (8) साला बनाम जीजाजी, (9) जीजीजी, (10) त्रियाराज तथा (11) जमाना चमचों का (ये सभी काव्य-संकलन पाकेट-बुक्स के रूप में प्रकाशित) तथा (12) शारदा सेवक एवं (13) कवि-सम्मेलन निर्देशिका (सम्पादित, परिचयात्मक-ग्रंथ)। इसके अतिरिक्त छोटे-छोटे ट्रैक्ट के रूप में कविताओं के अनेक संकलन।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक।

विशेष—निर्भयजी हिन्दी काव्य-मंच पर हास्य-व्यंगकार के रूप में विशेष ख्याति लब्ध हैं; परन्तु इन्होंने राजनीतिक, सामाजिक तथा सामयिक विषयों पर भी बहुत लिखा है। खड़ी बोली, ब्रजभाषा तथा उर्दू में विविध रसों की कविताएँ लिखने के अतिरिक्त आपने लोक-काव्य का सृजन भी किया है। मंच पर काव्य-पाठ के समय श्रोताओं को अभिभूत कर देने की कला में ये दक्ष हैं; परन्तु इनकी कविताएँ इन्हीं के मुख से सुनने में जितनी आकर्षक लगती हैं, मुद्रित रूप में पढ़ने पर वे उतनी ही अनाकर्षक अनुभव होती हैं। अधिकांश कविताओं में छन्द, शिल्पादि के दोष भी पाये जाते हैं। इनकी सामयिक तथा राजनीतिक विषयों पर लिखी गई रचनाओं में वैचारिक-विरोधाभास तथा अवसर का लाभ उठाने की प्रवृत्ति भी दिखाई देती हैं। कुल मिलाकर इनकी अधिकांश कविताएँ साहित्यिक-दृष्टि से मूल्य-हीन तथा तुकबन्दी की कोटि में रखी जाने योग्य ही हैं। कवि-सम्मेलनों के मंच पर ये अपनी किताबें भी बेचते हैं।

काव्योदाहरण—

"नारी होकर भी रखती थी क्षमतामय समता नर की,
स्वीकृति-अस्वीकृति सबमें ही अद्‌भुत कृति थी ईश्वर की,
बाहर वालों के चिन्तन में, भूल गई चिन्ता घर की,
मोती की उज्ज्वलता थी तो लाली लाल जवाहर की,

तन मन हिन्दुस्तानी, धन अमरीकी, रूसी वानी थी।
जन गण मन के कण-कण के मुँह पर बस यही कहानी थी।
झाँसी वाली नहीं रही, वह झाँसे वाली रानी थी॥"

(कौन रखे याद राजघाट की कसम, पृष्ठ 10)

श्री चन्द्रशेखर "प्रभात किरन"

पिता—पं. जुगल किशोर जी। जन्मतिथि—1 जुलाई, 1927 ई.। जन्म-स्थान—कासगंज (एटा)। शिक्षा—इण्टरमीडिएट, साहित्यरत्न। व्यवसाय—लिपिक। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1943 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1944, प्राइमरी पाठशाला, सराय खिग्नी (अलीगढ़) में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—विनय-वाटिका, लीलावती नगर, एटा।

अन्य—7 वर्ष की अवस्था में ही माता-पिता एवं कुटुम्बीजनों का स्वर्गवास। प्रारम्भिक-शिक्षा ननिहाल अलीगढ़ में हुई। 14 वर्ष की आयु से विभिन्न स्थानों पर सेवा-कार्य। "प्रेस गिल्ड आफ इण्डिया" बम्बई, द्वारा सम्मानित। सन् 1955-56 में बम्बई रहे तथा "पुलिस स्टेशन", "भूल भुलैया", "लोक लाज" आदि फिल्मों में गीत लिखे। सम्प्रति-सर्वोदय विद्यापीठ इण्टर कालिज, एटा में प्रधान-लिपिक के पद पर कार्यरत।

साहित्य-सेवा—पहली रचना सन् 1954 ई. में प्रकाशित, तत्पश्चात् विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक कवि-सम्मेलनों तथा साहित्यिक कार्यक्रमों के आयोजक। अनेक कवियों को (जो अब अखिल भारतीय ख्याति प्राप्त हैं) काव्य-मंच पर प्रतिष्ठित करने में सहयोगी रहे। सैकड़ों कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी के अनेक केन्द्रों से रचनाओं का प्रसारण। हिन्दी के अतिरिक्त उर्दू तथा ब्रजभाषा में भी काव्य-सृजन।

प्रकाशित पुस्तकें—प्रभात किरन के फिल्मी भजन (4 भागों में)।

अप्रकाशित पुस्तकें—(1) पीर, (2) कसक, (3) टीस—तीनों काव्य-संकलन तथा अनेक स्फुट रचनाएँ।

विशेष—सुमधुर कण्ठ-स्वर के धनी प्रभात किरन कवि-सम्मेलनों में श्रोताओं के आकर्षण-केन्द्र रहे हैं, परन्तु अनेक वर्षों से शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहने के कारण अब कवि-सम्मेलनों में बहुत कम भाग ले पाते हैं।

भाव, भाषा तथा शिल्प की दृष्टि से आपकी रचनाएँ उत्तम हैं। शृंगार एवं भक्ति परक रचनाओं के अतिरिक्त सामाजिक, राजनीतिक तथा सामयिक विषयों पर इन्होंने उत्कृष्ट रचनाएँ लिखी हैं, जो सभी गेय-गीतों के रूप में हैं। इनकी उर्दू

की ग़ज़लें तथा ब्रजभाषा के छन्द एव पद भी हृदयग्राही हैं। बाल्यावस्था से ही संघर्ष पूर्ण जीवन बिताने के कारण इनकी रचनाओं में करुण-रस की प्रधानता पाई जाती है।

काव्योदाहरण—

"जन्म और मृत्यु तो हैं देह के धरम,
जी है, और जिए जा रही है जिन्दगी।
जितने कि दिन देखें, उतनी ही रात,
जितने हैं मुँह, सुनी उतनी ही बात,
पुण्य और पाप तो है मन के भरम,
किए और किए जा रही है जिन्दगी।"
(गीतांश)

श्री उत्तमचन्द जैन "प्रेमी"

पिता—श्री मंसाराम जैन। जन्मतिथि—1 अगस्त, 1928 ई.। जन्मस्थान कैलास (आगरा)। शिक्षा—एम ए. (अंग्रेजी तथा राजनीतिशास्त्र) तथा साहित्य-रत्न। व्यवसाय—प्राध्यापक। काव्य-सृजन का प्रारम्भ सन् 1945 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1946 ई., आगरा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। स्थायी पता—43/225, सिकन्दरा, आगरा। वर्तमान पता—22 काजीवाड़ा, पलवल (जि. फरीदाबाद) हरियाणा।

अन्य—समाज-सेवा, सांस्कृतिक, दार्शनिक एवं धार्मिक विषयों में विशेष अभिरुचि। हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी, गुजराती तथा संस्कृत का ज्ञान। जीवन में अनेक संघर्ष रहे। पूर्व में बिड़ला इजीनियरिंग कालेज, पिलानी में 7 वर्षों तक कार्य-रत रहे। सम्प्रति-श्री सनातन धर्म कालिज, पलवल (हरियाणा) में अंग्रेजी के प्राध्यापक। स्थानीय संस्थाओं द्वारा अनेक बार पुरस्कृत। अनेक सामाजिक तथा साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध। "मैत्री ग्राम समाज" के संस्थापक।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1946 ई. में बी.आर. हाईस्कूल, आगरा की मैगजीन में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक मचों से काव्य-पाठ। आकाशवाणी के रोहतक केन्द्र से अनेक बार कविताओं तथा वार्ताओं का प्रसारण। हिन्दी तथा ब्रजभाषा मे काव्य-सृजन के अतिरिक्त निबन्ध, रेडियो-वार्ता आदि तथा अंग्रेजी में भी लेखन-कार्य।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) मैं और मेरा देवता, (2) मिट्टी के स्वर, (3) गीत और सरगम, (4) गीतायन तथा (5) शंख ध्वनि (सभी काव्य-संग्रह) (6) इमोर्टल्स आफ इंग्लिश लिटरेचर (अंग्रेजी में) तथा अनेक काव्य-संकलनों में रचनाएँ सम्मिलित।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) मैं और मेरी देवी (गद्य-काव्य), (2) मेरे देवता के स्वर (काव्य-संग्रह) इनके अतिरिक्त अनेक स्फुट रचनाएँ।

विशेष—साहित्यिक-दृष्टि से कविताएँ सामान्य, परन्तु हृदयस्पर्शी !

काव्योदाहरण—

मुसकान और आँसू की आँख-मिचौनी सा,
यह विरह मिलन के तारों पर ही बुना हुआ,
यह सुख-दुख के दो हारों वाला भव्य-भवन,
यह बलिवेदी पर इच्छाओं का नया हवन—
क्या जीवन है ?"

(मिट्टी के स्वर, पृष्ठ—53)

श्री लाखनसिंह भदौरिया "सौमित्र"

पिता—श्री सूबासिंह भदौरिया। जन्मतिथि—3 अगस्त, सन् 1928 ई.। जन्म स्थान—ग्रा. पो. बरौलीपार (इटावा)। शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी-संस्कृत), साहित्यरत्न, साहित्यालंकार। पूर्व व्यवसाय—कृषि। वर्तमान व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1947 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1950 ई., आगरा कालेज, आगरा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—भोजपुरा, मैनपुरी।

अन्य—"मुक्तक-सम्राट" आदि अनेक सम्मानोपाधियाँ प्राप्त। संघर्षशील-जीवन। 'हिन्दी-आन्दोलन, पंजाब, में भाग लेने के कारण 6 मास का कारावास। सामाजिक-कार्य तथा आर्य-समाज के क्षेत्र में निरन्तर सेवारत।

साहित्य-सेवा—पहली कविता "माटी और मुक्तक" सन् 1964 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ। आकाशवाणी से प्रसारण। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध। खड़ी बोली के अतिरिक्त ब्रजभाषा में भी काव्य-सृजन। लोक-साहित्य-सर्जक। मुक्तक-लेखन में विशेष ख्याति प्राप्त।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) माटी और मुक्तक, (2) अपना दीप जलाओ तथा (3) ज्योति के फूल (सभी काव्य-संकलन)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) मुक्तांजलि (500 मुक्तकों का संग्रह) (2) अतुकान्तिनी (अतुकान्त-कविताओं का संकलन)। इनके अतिरिक्त अनेक स्फुट कविताएँ।

विशेष—सौमित्र जी अपने मुक्तकों के लिए हिन्दी-जगत् में विशेष प्रसिद्ध हैं। सभी रचनाओं की भाषा टकसाली है। छन्द-योजना, भाव तथा शिल्प की दृष्टि से कविताएँ उत्तम तथा हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"खुली चुनौती देता, हमको, बढ़ता हुआ अंधेरा,
पल-पल दूर जा रहा हम से, उगता हुआ सबेरा,
निशा नाचती दसों दिशाओं, उड़ी तिमिर की धूल।
अपना दीप जलाना होगा, झंझा के प्रतिकूल॥
आत्मा की चिर दीप्त वर्तिका को थोड़ा उकसा दो,
माँगो नहीं ज्योति जगती से, लौ बन कर मुसका दो,
जगमग जगती के उपवन में, खिलें ज्योति के फूल,
माथे से फिर विश्व लगाये, इस धरती की धूल।"

(ज्योति के फूल, पृ.—15)

श्री राजेश दीक्षित

पिता—पं. गोविन्द प्रसाद दीक्षित। जन्म-तिथि—द्वितीय श्रावण कृष्णा, पंचमी, गुरुवार सं. 1985 वि., दिनांक 10 अगस्त, 1928 ई.। जन्म स्थान—कलकत्ता। शिक्षा—सामान्य। व्यवसाय—ग्रंथ-लेखन। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1935 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—1939 ई. कलकत्ता में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—बाल्यकाल से। वर्तमान पता—अहीरपाड़ा, आगरा-2 स्थायी पता—एम. आई जी., महाविद्या आवासीय योजना, मथुरा।

अन्य—पूर्वज हिरनगऊ (जि. आगरा) के निवासी। फरिहा (जि. मैनपुरी) में भी पिता का स्थायी-आवास रहा। बाल्यावस्था परिवारीजनों के साथ कलकत्ते में बीती। सन् 1941-42 ई. में फरिहा तथा 1943 ई. से आगरा में निवास। बीच-बीच में अनेक वर्षों तक मथुरा में भी रहे। सम्प्रति पुनः आगरा-निवासी।

सन् 1942 ई. के स्वातन्त्र्य-आन्दोलन में सक्रिय-कार्य। सन् 1947 ई. में शरणार्थी-शिविरों में सहायता-कार्य। सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक क्षेत्रों से सम्बद्ध रहे। अनेक राजनेताओं तथा राजा-महाराजाओं के सैक्रेटरी के रूप में भी कार्य किया। सन् 1943 से 1946 ई. तक प्रूफ रीडर, प्रेस मैनेजर, समाचार-पत्र सम्पादक तथा अनुवादक के रूप में सेवा-रत। सन् 1946 ई. से ही पत्रकारिता एवं स्वतन्त्र-लेखन पर निर्भर। सामाजिक सेवा-कार्यों में अपनी आय का अर्धांश से भी अधिक व्यय करते हुए, स्वयं संघर्षपूर्ण एवं विपन्न-जीवन बिताने के कठोर-अभ्यासी। अनेक निराश्रितों के आश्रयदाता तथा उन्हें स्वावलम्बी बनाने में सहायक।

हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी, संस्कृत, बंगला, गुजराती, मराठी तथा उर्दू आदि अनेक भाषाओं का ज्ञान। सैकड़ों क्षेत्रीय बोलियों से सुपरिचित। सम्पूर्ण देश

का अनेक बार भ्रमण। साहित्य-सृजन तथा पत्रकारिता के अतिरिक्त ज्योतिष, सामुद्रिक, तन्त्र, चिकित्सा-विज्ञान, संगीत, चित्रकला एवं समाज-सेवा के क्षेत्र में विशेष रुचि। मुद्रण, प्रकाशन एवं सम्पादन-कला विशेषज्ञ।

मन्दिर श्री द्वारिकाधीश महाराज की प्रबन्ध-समिति के भू. पू. वरिष्ठ सदस्य। अनेक सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक संस्थाओं से विभिन्न रूपों में सम्बद्ध रहे। अनेक पत्रों के प्रतिनिधि रहे। अनेक संस्थाओं के संस्थापक। विद्या-वारिधि, दैवज्ञ-बृहस्पति, कविरत्न आदि अनेकानेक सम्मानोपाधियाँ प्राप्त। अनेक पुस्तकें पुरस्कृत। अनेक बार अभिनन्दित। भारत-चीन तथा भारत-पाक युद्धों के समय देशभर में आयोजित सैकड़ों कवि-सम्मेलनों में निःशुल्क काव्य-पाठ।

"ताजातार", "आगरा साप्ताहिक", "स्वतन्त्र-विचार", अपराधी" तथा "सप्तदिवा" (साप्ताहिक) एवं "गौरव", "रूपमहल" (मासिक) पत्र-पत्रिकाओं के प्रधान सम्पादक; "सैनिक", "सन्देश", "छायालोक" आदि पत्रों के सम्पादक-मण्डल के सदस्य. श्रमजीवी पत्रकार संघ के सदस्य एवं आगरा प्रेस क्लब के संस्थापक तथा मन्त्री भी रहे।

साहित्य-सेवा—प्रथम कविता सन् 1941 ई. में तथा प्रथम खण्ड-काव्य 'वीर बादल' सन् 1943 ई. में प्रकाशित। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में सैकड़ों रचनाओं का प्रकाशन। हिन्दी काव्य-कला परिषद आगरा के संस्थापकों में से एक। अ. भा. ब्रज साहित्य मण्डल की स्थायी समिति के सदस्य रहे। भारती अनुसंधान भवन, मथुरा के आजीवन सदस्य। इनके अतिरिक्त देश की अनेक साहित्यिक संस्थाओं से विभिन्न रूपों में सम्बद्ध। अ. भा. ब्रज-साहित्य संगम के संस्थापक।

विगत 40 वर्षों से देशभर में, हजारों कवि-सम्मेलनों के मंच से काव्य-पाठ। आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से सैकड़ों बार कविताओं तथा वार्ताओं आदि का प्रसारण। अनेक भाषाओं के प्रामाणिक तथा सफल हिन्दी-अनुवादक। खड़ी बोली के अतिरिक्त ब्रजभाषा तथा उर्दू में भी काव्य-सृजन। विभिन्न रसों, छन्दों तथा विधाओं में पद्य तथा गद्य की अनेक शैलियों में साहित्य-सृजन। "कलम के जादूगर" नाम से प्रसिद्ध. अद्भुत प्रतिभाशाली, चमत्कारी-लेखक। 1500 से भी अधिक प्रकाशित पुस्तकों के "विश्व-कीर्तिमान संस्थापक" देश के प्रथम लेखक।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) श्री सीताराम कथा (महाकाव्य), (2) "वीर बादल तथा (3) राधा का मान (खण्ड-काव्य), (4) गीत गोदावरी, (5) अलसाई आँखें तथा (6) राजहंस (गीत-संग्रह) (7) माधव मोहिनी (भक्ति-गीत) (8) पापी परिवार तथा (9) वाजिद अलीशाह (उपन्यास), (10) यात्राएँ और यात्राएँ (यात्रा-संस्मरण) (11) गीत और गज़लें (कविता-संग्रह), (12) श्रीमद्भागवत, (13) शिव पुराण, (14) वाल्मीकि रामायण (संस्कृत से अनूदित) (15) रामचरित मानस की टीका

तथा (16) तन्त्र महाविज्ञान आदि। इनके अतिरिक्त धर्म, उपासना, संस्कृति, दर्शन, कर्मकाण्ड, स्मृति, इतिहास, पुराण, ज्योतिष, सामुद्रिक, तन्त्र, चिकित्सा, कृषि, उद्योग, शिल्प, कला, काम-विज्ञान, लोक-काव्य, बाल-साहित्य, नारी-साहित्य, प्रौढ़-साहित्य आदि विभिन्न विषयों पर एक हजार से अधिक मौलिक पुस्तकें। रवीन्द्रनाथ ठाकुर, शरद्चन्द्र चट्टोपाध्याय तथा स्वामी विवेकानन्द साहित्य की लगभग 100 पुस्तकें मूल बंगला से अनूदित। इनके अतिरिक्त संस्कृत, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं से अनूदित एवं सम्पादित सैकड़ों पुस्तकें। सभी पुस्तकों की नामावली का उल्लेख कर पाना यहाँ असम्भव। संक्षेप में, राजेश जी द्वारा विभिन्न विषयों पर लिखित, अनूदित एवं सम्पादित 200 के लगभग पुस्तकें अब तक प्रकाशित हैं, जो लेखन के क्षेत्र में एक विश्व-कीर्तिमान है।

अप्रकाशित कृतियाँ—विभिन्न विषयों पर लिखित अनेक गद्य पुस्तकें तथा सैकड़ों कविताएँ।

विशेष—राजेशजी ने वीररस के ओजस्वी-कवि के रूप में अखिल भारतीय ख्याति अर्जित की है। आपका मंचीय काव्य-पाठ लाखों श्रोताओं को रोमांचित कर देता है। स्वतन्त्रता से पूर्व हिन्दी वीर-काव्य के वर्ण्य-विषय मुख्यतः ऐतिहासिक तथा पौराणिक पात्र एवं कथानक ही हुआ करते थे, राजेशजी ने उसे राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय, सामाजिक, राजनीतिक तथा सामयिक घटनाक्रमों से सम्बद्ध कर, विशेषतः हिन्दी मंचीय-वीर-काव्य को एक ऐसा नवीन तथा आकर्षक स्वरूप प्रदान किया, जो काव्य रसिकों को अत्यधिक प्रभावित करने में तो सक्षम सिद्ध हुआ ही, परवर्ती अनेक मंचीय-कवियों ने भी उसी का अनुसरण किया, जिसके फलस्वरूप हिन्दी के मंचीय काव्य में एक "राजेश स्कूल" ही स्थापित हो गया।

वीर-काव्य के अतिरिक्त राजेश जी द्वारा प्रणीत शृंगारी-गीत हिन्दी-साहित्य की अनुपम निधि हैं। भक्ति, करुण, हास्य तथा अन्य रसों में भी आपने पर्याप्त काव्य-सृजन किया है। स्वरचित उर्दू गजलों का तदनुसारी छन्द में ही संस्कृतनिष्ठ हिन्दी-काव्यानुवाद, जो कि ज्यों-का-त्यों सरस शब्दानुवाद होने के साथ ही भावानुवाद एवं सांस्कृतिक अनुवाद भी है—इनकी अद्भुत काव्य-प्रतिभा, प्रकाण्ड शब्द-सामर्थ्य एवं चामत्कारिक रचना-कौशल का आश्चर्यजनक उदाहरण है। हिन्दी काव्य-साहित्य में यह एक सर्वथा नवीन प्रयोग है, जिसमें राजेश जी को पूर्ण सफलता मिली है।

राजेशजी की कविताओं के मुख्य विषय देश-भक्ति, राष्ट्रीयता, सामाजिक समस्यायें तथा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय घटना-चक्र हैं। प्रकृति, प्रणय करुणा तथा भक्ति परक गीतों में भी इनकी अद्भुत-प्रतिभा के दर्शन होते हैं। सूक्ष्म-दृष्टि, अनुभूति की गहराई, भाव-गांभीर्य, विषयानुकूल भाषा, निर्दोष छन्द-रचना तथा शिल्प-सौन्दर्य सभी दृष्टियों से आपकी रचनाएँ अप्रतिम हैं एवं उनमें अलंकार, अनुप्रास तथा

रूपकों का प्रयोग अधिकता से पाया जाता है। कविताओं की सम्प्रेषणीयता ऐसी ग़जब की है कि श्रोतागण मुग्ध हो जाते हैं। आपके सभी गीत प्रसादगुण-सम्पन्न तथा रस-विभोर कर देने वाले हैं। आपकी ओजस्वी काव्य-पाठ शैली भी अपने ढंग की अनूठी है।

राजेशजी भविष्य-दृष्टा एवं भविष्य-वक्ता कवि के रूप में भी प्रसिद्ध हैं। वर्षों पूर्व इन्होंने अपनी मंचीय-कविताओं के माध्यम से जो-जो भविष्य वाणियाँ कीं, वे कालान्तर में सत्य सिद्ध होती रही हैं; यही कारण है कि देशभर में काव्य-श्रोताओं का एक बहुसंख्यक वर्ग ऐसा भी है, जो कवि-सम्मेलनों में केवल इन्हीं की कविताएँ सुनने के लिए पहुँचता है।

व्यावसायिकता, गुटबन्दी तथा आत्म-विज्ञापन से सर्वथा दूर राजेश जी हिन्दी-काव्य तथा गद्य-साहित्य के एक तपोनिष्ठ साधक है, जो विगत 40 वर्षों से नित्य निरन्तर 14-15 घण्टे लेखन-कार्य करते हुए माँ-भारती के भाण्डार को अबाधगति से भरते चले जा रहे हैं। इन्होंने साहित्य की जितनी विधाओं, शैलियों तथा विभिन्न विषयों पर अब तक जितना लिखा है, उतना सम्भवतः संसार की किसी भी भाषा का कोई भी कवि अथवा लेखक अपने सम्पूर्ण जीवन-काल में भी नहीं लिख पाया। संक्षेप में, राजेश जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व अनेक शोध-ग्रंथों का विषय है।

काव्योदाहरण--

"तमसावृत उर के उपवन में शतदल से विकसित ज्योति-सुमन !
अनिमन्त्रित स्वप्न-कथानक के ओ, अनियन्त्रित-मंगलाचरण !
अवतरित रंगशाला में तुम, स्वर-ताल-क्वणन की आकृति-से,
अभिमन्त्रित-चषक-वारुणी के, सम्मोहन हो या वशीकरण ?
साकार तपस्या के प्रतिफल, प्यासे अधरों को गंगाजल,
अवगुंठन मेरा है, उसमें गुम्फित संसार तुम्हारा है।
सागर मेरा है, पर उसमें आन्दोलित-ज्वार तुम्हारा है।"

(गीतांश)

डा. तपेश कुमार चतुर्वेदी

पिता—श्री मोहन लाल चतुर्वेदी। जन्मतिथि—1 फरवरी सन् 1929 ई। जन्मस्थान—मझौली (गोरखपुर)। शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी, समाज शास्त्र तथा अंग्रेजी), पी-एच. डी.। व्यवसाय—शिक्षण। काव्य सृजन का प्रारम्भिक-वर्ष—सन् 1948 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य पाठ—सन् 1958 ई., आगरा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—सन् 1936 ई. से। वर्तमान पता—प्राध्यापक; हिन्दी-विभाग, किशोरी रमण कालिज, मथुरा।

अन्य--आगरा, रेणुकूट आदि विभिन्न स्थानों पर अध्यापन-कार्य। कालिज-पत्रिका के प्रधान सम्पादक। अनेक पुरस्कार प्राप्त।

साहित्य-सेवा—प्रथम कविता "बापू के प्रति" दैनिक "हिन्दुस्तान" में सन् 1948 ई. में प्रकाशित, तत्पश्चात् अनेक पत्र-पत्रिकाओं में कविता, निबन्ध आदि का प्रकाशन। अब तक अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी केन्द्रों से रचनाओं का प्रसारण। खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा में काव्य-सृजन एवं छात्रोपयोगी तथा समीक्षात्मक ग्रन्थों का लेखन। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध। कुछ पुस्तकें अंग्रेजी में भी लिखी हैं।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) विनय पत्रिका दर्शन, (2) सुगम भाषा विज्ञान, (3) हिन्दी भाषा का इतिहास, (4) अजातशत्रु में प्रसाद की नाट्य-साधना, (5) झांसी की रानी और वृन्दावन लाल वर्मा, (6) यशपाल और झूठा सच, (7) हिन्दी साहित्य (सभी समीक्षा एवं आलोचनात्मक)। (8) ए. बी. सी. आफ जनरल इंग्लिश, (2) न्यू कोर्स आफ जनरल इंग्लिश (अंग्रेजी में, छात्रोपयोगी)।

अप्रकाशित कृतियाँ—दो काव्य-संकलन, कुछ स्फुट कविताएँ, निबन्ध तथा संस्मरण आदि।

विशेष—कविताएँ मुख्यतः शृंगार-रस प्रधान। कुछ रचनाएँ सामाजिक, राष्ट्रीय तथा सामयिक विषयों पर भी। भाषा सरल तथा हृदयग्राही। छन्द-योजना तथा शिल्प की दृष्टि से रचनाएँ आकर्षक। काव्य-मंच पर शृंगारी गीतों के मधुर गायक के रूप में विशेष ख्याति लब्ध।

काव्योदाहरण—

"माथे काजल टीका देकर, सुघर दिठौना आँकले,
नजर कहीं लग जाय न गोरी, तेरे रूप सिंगार को।
भोला भाला चन्दा जैसे उगता पूनम-रात में,
किसलय छायीं कलियाँ जैसे खिलतीं नवल प्रभात में,
झीना-झीना घूँघट, भीतर भीना मुखड़ा झाँकता,
तन्द्रिल गंधा मकरन्दी है, तेरे लौनी-गात में,
ऐसा कोई जंतर-मंतर, अपनी बाँह संवार ले,
कभी न पतझर लागे गोरी, तेरी उमर-बहार को।"

(गीतांश)

डा. घनश्याम अस्थाना

पिता—वा. माताप्रसाद अस्थाना। जन्मतिथि—1 नवम्बर, 1929 ई.। जन्मस्थान—आगरा। शिक्षा—एम. ए., पी-एच. डी.। व्यवसाय—अध्यापक। **काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1936 ई.**। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—

सन् 1945 ई., झाँसी में । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से । स्थायी पता—28/489 गोकुलपुरा, आगरा । वर्तमान पता—10, हण्टले हाउस, गाँधी मार्ग, आगरा ।

अन्य—विभिन्न संघर्षों में पले । साहित्य-सृजन के अतिरिक्त चित्र-कला में विशेष रुचि । सम्प्रति: आगरा कालिज के अंग्रेजी-विभाग में प्राध्यापक । हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी, उर्दू तथा बंगला का ज्ञान ।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1946 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त प्रायः सभी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन । अनेक मंचों से काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण । अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे । खड़ी बोली के अतिरिक्त उर्दू तथा ब्रजभाषा में भी काव्य-सृजन । निबन्ध तथा कहानी लेखन । अर्नेस्ट हेमिंग्वे के उपन्यासों तथा कहानियों की अंग्रेजी में भाव-मज्जा ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) भोर के सपने (गीत-सग्रह) तथा अंग्रेजी एवं अमेरिकी साहित्य पर दो पुस्तकें ।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक स्फुट कविताएँ, कहानियाँ तथा निबन्ध आदि ।

विशेष—अपनी युवावस्था में मंचीय काव्य-पाठ के लिए विशेष प्रसिद्धि प्राप्त । राष्ट्रीय विषयों पर भी कविताएँ लिखीं । मुख्यतः शृंगार, प्रकृति एवं प्रणय-भावना के गीतकार । सम्प्रति : कवि-सम्मेलनों से विरक्त । भाषा, भाव तथा शिल्प की दृष्टि से रचनाएँ उत्तम तथा हृदयस्पर्शी ।

काव्योदाहरण—

"मत लौटो मेरे पास, दूर तुम मीत रहो ।
जब घिरी पीर की छाँह, प्यार की आहट में,
जब लहरें खोले बाँह विलय होतीं तट में,
मैं दूर खड़ा अनजान निहारा करता हूँ,
मेरी रानी हँसती किरनों के घूँघट में,
कहता अपनी बिखरी रागिनियों से छिपकर—
मत गूँजो मेरे पास, दूर संगीत रहो ।"

(भोर के सपने, पृष्ठ—71)

अन्य कविगण—

इस वर्ग के जिन अन्य कवियों की पुस्तकें तो प्रकाशित हैं; परन्तु मंचीय-कवि के रूप में जिन्हें केवल क्षेत्रीय-ख्याति ही उपलब्ध हो सकी है, उनका संक्षिप्त परिचय निम्नानुसार है—

(1) **श्री कौशल किशोर बर्मन "कौकिब"**—आपका जन्म 29 अगस्त सन् 1921 ई. को हाथरस (जि. अलीगढ़) में हुआ था । आप न्यू किशोर टाकीज,

हाथरस के स्वामी हैं। आपके द्वारा लिखित "चन्दा ! तुझे कसम है मेरी" नामक गीत-संग्रह प्रकाशित है। आप खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा—दोनों में काव्य-सृजन करते हैं तथा शृंगार एवं वीर-दोनों रसों में लिखते हैं। वर्तमान पता है—कौशल सदन, मुरसान गेट, हाथरस (जिला अलीगढ़)।

(2) **डा. बनवारी लाल मिश्र**—आपका जन्म 13 मार्च, सन् 1922 ई. को मथुरा में हुआ। आप चिकित्सा-कार्य करते हैं। आपका "गीत प्रीत के" शीर्षक कविता-संग्रह प्रकाशित है। आप खड़ी बोली की विभिन्न विधाओं में काव्य-सृजन करते हैं। वर्तमान पता है—आरोग्य निकेतन, घिया मण्डी, मथुरा।

(3) **डा. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ**—आपका जन्म 4 मार्च, सन् 1923 ई. को ग्राम दघेंटा (जि. मथुरा) में हुआ था। सम्प्रति: किशोरी रमण महिला महाविद्यालय, मथुरा की प्राचार्या पद से अवकाश ग्रहण कर, अब एक मान्टेसरी स्कूल का संचालन कर रही हैं। आपका एक शोध प्रबन्ध तथा चार काव्य-संकलन (1) साधना, (2) गीले नयना, भीगी पलकें (3) "बाँसुरी हूँ मैं तुम्हारी" तथा (4) आजदी निंदिया प्रकाशित हो चुके हैं। आप विभिन्न विधाओं में हृदयग्राही कविताओं का सृजन करती हैं। वर्तमान पता है—डैम्पियर नगर, मथुरा।

(4) **श्री शिव शंकर प्रसाद मिश्र**—आपका जन्म वैशाख शुक्ल पंचमी सं. 1980 वि. सन् 1923 ई.) को कुरावली (जि. मैनपुरी) में हुआ था। इन दिनों आप ज्योतिष सम्बन्धी कार्य करते हैं। आपके द्वारा लिखित 'रणगीत' शीर्षक काव्य-संग्रह प्रकाशित है। आप नई तथा पुरानी—दोनों शैलियों में काव्य-रचना करते हैं। आपका वर्तमान पता है—सुन्दर भवन, गाँधी मार्केट, एटा।

(5) **श्री जय प्रकाश मुद्गल "जयेश"**—आपका जन्म 25 दिसम्बर सन् 1923 ई. को आगरा में हुआ था। सम्प्रति—बी. एस. ए. कालिज, मथुरा के हिन्दी विभागाध्यक्ष हैं। आपके द्वारा लिखित "त्रिधारा" (काव्य-संग्रह) तथा पालि-साहित्य संबंधी दो पुस्तकें प्रकाशित हैं। वर्तमान पता है—डैम्पियर नगर, मथुरा।

(6) **श्री सुरेन्द्र भारद्वाज**—आपका जन्म 6 फरवरी, सन् 1924 ई. को आगरा में हुआ था। आप पत्रकार हैं। आपके द्वारा लिखित "समग्र-क्रान्ति" शीर्षक कविता संग्रह प्रकाशित है। आप राष्ट्रीय तथा सामयिक विषयों पर खड़ी बोलो में काव्य-सृजन करते हैं तथा श्रेष्ठ निबन्ध लेखक भी हैं। पता है—बल्केश्वर कालोनी, आगरा।

(7) **(स्व.) डा. हरिश्चन्द्र अग्रवाल**—आपका जन्म 31 जुलाई सन् 1924 ई. को लैन गऊशाला, पथवारी, आगरा में हुआ था। आप मशीनरी व्यवसाय करते थे। कलाकारों, साहित्यकारों तथा संगीतकारों के संरक्षक के रूप में आजीवन प्रसिद्ध रहे। आपकी (1) कला और जीवन तथा (2) लहरें—शीर्षक दो पुस्तकें

प्रकाशित हैं। आप प्रायः गेय-गीत लिखते थे। सन् 1983 ई. में अपने आवास पर ही हृदयगति रुकजाने से आपका आकस्मिक निधन हो गया।

(8) **पं. वनमाली भारद्वाज**—आपका जन्म आषाढ़ शुक्ला दशमी, सन् 1911 वि. (1925 ई.) मे फरह के समीप ग्राम गढाया (जि. मथुरा) में हुआ था। आप अध्यापन—कार्य करते हैं। आपका वर्तमान पता है—सदर बाजार, मथुरा। आपके द्वारा लिखित "मिलिन्द मित्रम्" शीर्षक संस्कृत प्रबन्ध-काव्य-प्रकाशित है। आप खड़ी बोली, ब्रजभाषा तथा संस्कृत में काव्य-रचना करते हैं।

(9) **डा. भगवानसहाय पचौरी "मवेश"**—आपका जन्म 26 जनवरी सन् 1926 ई. को गाँव-बीरपुरा (जिला अलीगढ) में हुआ था। आप शिक्षा-विभाग में कार्य-रत रहे हैं। आपके द्वारा लिखित कुछ पद्य तथा गद्य-पुस्तकें प्रकाशित हैं। मंचीय-कवि के रूप में सामान्य ख्याति। आपका वर्तमान पता है। 25, कृष्णापुरी, मथुरा।

(10) **श्रीमती सरोज कुमारी गौरिहार**—आपका जन्म 4 नवम्बर 1929 ई. को आगरा में हुआ था। आप भूतपूर्व 'गौरिहार-स्टेट' (मध्य प्रदेश) की स्वामिनी तथा विधायिका भी रही हैं। आपकी दो कविता पुस्तकें—(1) माण्डवी : एक विस्मृता (खण्ड-काव्य) तथा (2) आनन्द छलिया (लोक-गीत संग्रह) प्रकाशित हैं। आप खडी बोली के अतिरिक्त बुन्देली तथा ब्रजभाषा में भी काव्य-सृजन करती हैं। वर्तमान पता है—एफ 62, सरस्वती कुंज, कमला नगर, आगरा-5।

(11) **डा शरण बिहारी गोस्वामी**—आपका जन्म 15 फरवरी सन् 1930 ई. को वृन्दावन (मथुरा) में हुआ था। सम्प्रति प्राच्य-दर्शन महाविद्यालय, वृन्दावन में प्राचार्य हैं। आपके द्वारा लिखित (1) जन्म भूमि (खण्ड-काव्य) (2) स्वामी हरिदास (महाकाव्य) (3) पाषाणी (खण्ड-काव्य) तथा चार अन्य काव्य-पुस्तकें एवं गद्य-साहित्य की लगभग 15 पुस्तकें प्रकाशित हैं। आप खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा—दोनों में काव्य-सृजन करते हैं।

(12) **डा. ब्रजवल्लभ मिश्र**—आपका जन्म 30 दिसम्बर, सन् 1930 ई. को लखनऊ में हुआ था। आप मूलत मथुरा के निवासी हैं। सम्प्रतिः किशोरी रमण महाविद्यालय, मथुरा के हिन्दी-विभाग में प्रवक्ता हैं। आपका वर्तमान पता है—रंगकुटी, विश्राम बाजार, मथुरा। आपके द्वारा लिखित (1) चट्टान, (2) सहयोग, (3) रूपसज्जा, (4) तीसरा नेत्र तथा (5) 'एकांकी-संग्रह"—शीर्षक पांच नाट्य-पुस्तकें तथा 14 बाल-साहित्य की पुस्तकें प्रकाशित हैं। आप खड़ी बोली में काव्य-सृजन करते हैं।

"क" वर्ग के अप्रकाशित कवि—इसमें निम्नलिखित नाम प्रमुख हैं—

(1) श्री दीनानाथ चतुर्वेदी "सुमनेश" (सन् 1921 ई)।

(2) श्री राम प्रकाश जैन (सन् 1926 ई.),

(3) श्री श्याम सुन्दर पारौलिया "सहचर" (सन् 1926 ई.),
(4) श्री मकरध्वज शास्त्री (सन् 1926 ई.)
(5) श्री हरिश्चन्द्र दीक्षित (सन् (1928 ई.),
(6) डा. मक्खन लाल पाराशर (सन् 1928 ई.)
(7) पं. भूपलाल शर्मा "तस्कीन" (सन् 1928 ई.)
(8) श्री प्रेम नारायण शर्मा "जनकवि" (सन् 1928 ई.)
(9) श्री कृष्ण कान्त देव गर्ग (1929 ई.)
(10) श्री घूरे लाल शर्मा "प्रेमी" हाथरसी (सन् 1930 ई.),
(11) श्री जगदीश मृदुल (सन् 1930 ई.)।

(1) **प. दीनानाथ चतुर्वेदी "सुमनेश" (विश्रान्त टीला—मथुरा)**—आप एक माध्यमिक विद्यालय में अध्यापक थे तथा कथा-वाचन कार्य भी करते हैं। आप ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली—दोनों में श्रेष्ठ काव्य-रचना करते है। आपकी काव्य-रचना का एक उदाहरण निम्नलिखित है—

"गुन धुन भूषन समेत वृत्ति रीति सक्ति,
रस के विभेदन के भव्य-भेद खोलै है।
कवि 'सुमनेस' तार वीन के सुधारै, सार-
सून मतिमानन कौ चित्त सीस डोलै है।।
भर अनुराग तै स्वकीय जन-जान, रम्य
भाव-मुक्तान कौं सुमानस में तोलै है।
साज हंस वाहन, निबाहन सनेह, मेरी
बैठ रसना पै जगदंब छन्द बोलै है।।"

(2) **श्री राम प्रकाश जैन (शिकोहाबाद—जि. मैनपुरी)**—आप ए. के. कालिज में दर्शन-विभाग के अध्यक्ष हैं। आपकी कुछ काव्येतर पुस्तकें प्रकाशित भी हैं। आपकी काव्य-रचना का एक उदाहरण निम्नलिखित है—

"अमराई में उतरा अनंग, भर उठे स्नेह-घन रस अमंद।
काँपी सशंक भयभीत लता, तरु की फैली बाँहें मदंध
तुम सिहर शिराओं में सुनतीं, टकराता एक प्रभंजन सा।
तोड़ता नियम के जीर्ण-द्वार, गर्जता प्रलय के गर्जन सा।।"

(3) **श्री श्यामसुन्दर पारौलिया "सहचर" (मोतीगंज, आगरा)**—आप गुड़-दाल आदि का व्यापार करते हैं। आपकी काव्य-रचना का एक उदाहरण निम्नलिखित है—

"अरे, हिमालय नहीं जानते,
शुभ्र भाल भारत का प्रहरी ?

गूँज रही हैं जहाँ गिराएँ,
वेद मंत्र की, ऋषि-मुनियों की,
तपोभूमि वह, सृजन भूमि वह,
अनुप्राणित करती आई है.
सतति और युगों को अब तक,
सदा निरंतर वही जहाँ से,
विशद ज्ञान की गगा गहरी ।"

(काव्यांश)

(4) **श्री मकरध्वज शास्त्री** (जलेसर, एटा)—आप अध्यापक है । आपकी काव्य-रचना का एक उदाहरण निम्नलिखित है—

"मेरे प्राण वरदान चाहते कभी नहीं है,
किन्तु मेरी साधना को कुछ चलने तो दो ।
नीर लोचनों मे बहे, गदगद् कण्ठ होवे,
करुणा के अंचल को थोड़ा ढँकने तो दो ।।
निराशा की रजनी मे मन्द मुस्कान वाले,
आशा निशानाथ की किरण झरने तो दो !
वज्र भी गिराओ, सब कुछ सह लूँगा सखे,
मुझे मेरी भावना में थोड़ा बहने तो दो ।"

(5) **श्री हरिश्चन्द्र दीक्षित** (लक्ष्मणगढ़—अलवर)—आप शिक्षा-विभाग में कार्यरत हैं । व्यंग्य-रचनाओं के लिए विशेष प्रसिद्ध है परन्तु अन्य रसों में भी उत्तम कविताएँ लिखते है । आपकी काव्य-रचना का एक उदाहरण निम्नलिखित है—

मेहनतकश की मुट्ठीखाली, जिन्दा लाशे तड़प रही हैं,
तिलतिल कर कट रही जवानी, मौतें उनको हड़प रही हैं,
जीवन की गंगा के आगे, ऐरावत मदमस्त खड़े हैं,
मानवता मर रही देखलो, उसके आगे शिखर अड़े है,
प्रजातन्त्र के इस स्वराज को, मैं सौगात नही मानूँगा ।
गंगा-यमुना उमड़ रही हों, मैं बरसात नहीं मानूँगा ।।

(6) **डा. मक्खन लाल पाराशर** (फीरोजाबाद-आगरा)—आप एस. आर. के. कालिज, फीरोजाबाद में हिन्दी-विभागाध्यक्ष है । आप ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली—दोनों में काव्य-सृजन करते हैं । आपकी काव्य-रचना का एक उदाहरण निम्नलिखित है—

"नीर-छीर कौ विवेकु मातु हंसवाहिनी दै,
हंस के से पंख कल्पना के हू पसारि दै ।

बीन-धारिनी, नवीन तान तुक ताल दै, औ
कंठ में बिराजि सुर सातऊ सँभारि दै ।।
पुस्तक कौ खोल, गुरु-ज्ञान के अमोल बोल,
भाव तुला तौलि पाऊँ ऐसी मति धारि दै ।
अम्ब ! अवलम्ब एक तेरौ ही रह्यौ है मोहि
आजु अविलम्ब कृपा-कोर सौं निहारि दै ।।"

(7) **पं. भूपलाल शर्मा "तस्कीन"** (180, **नार्थ विजयनगर, आगरा**)—आप प्रमुख ज्योतिषी हैं तथा उर्दू-हिन्दी दोनों में काव्य-रचना करते है, आपकी हिन्दी कविता का एक अंश यहां उद्घृत है—

"कल-कल करती कलित कूल पर किलक कलिन्द सुधा बसुधा ।
विधि बसुन्धरा के वैभव में सरसाती सुरलोक सुधा ।।
आतुर अन्तर की तरंग में रंग-मुक्त मुक्ताफल-सा ।
फलित हो रहा क्षितिज-क्षितिज में चिबुक चूम अलसा-अलसा ।।"

(8) **श्री प्रेम नारायण शर्मा "जनकवि"** (**वजीरपुरा, आगरा**)—आप पौरोहित्य-कार्य करते हैं । आपकी काव्य-रचना का एक उदाहरण निम्नलिखित है—

"क्रूर युद्ध अथवा हिंसा से दानवता ही चेतेगी ।
और परस्पर झगड़े होंगे, मानवता को मेटेगी ।।
युद्ध-अनल से कभी कहीं, मानव को शान्ति नहीं होती ।
आतंक, आक्रमण, हिंसा से, जनमन म क्रान्ति नहीं होती ।।

(9) **श्री कृष्णकान्त देव गर्ग** (**सिकन्दराराऊ, जि. अलीगढ़**) – आप एक इन्टर कालिज में अध्यापक हैं । हिन्दी तथा उर्दू—दोनों में हृदयग्राही काव्य-सृजन करते है । आपकी रचना का एक उदाहरण निम्नलिखित है—

"ये तुम्हारे किसलयों से मृदु अधरपुट,
प्राण की पाहुन-पिपासा में रंगे से,
तुंग हिमगिरि से सलोने कुच-युगल ये
स्नेह-पारावार पी-पी कर उगे से,
सस्य श्यामलगात पर झीना-तुहिन पट
चन्द्रिका में स्नान करतीं तुम लजीली,
सिन्धु के ज्यों-नील सर में खिल उठी हो,
कुमुदिनी लावण्य की मधु-गंध गीली ।।"

(10) **श्री घूरे लाल शर्मा "प्रेमी"** (**हाथरस—अलीगढ़**)—आप एक विद्यालय में अध्यापन कार्य करते हैं । आपकी काव्य-रचना का एक उदाहरण निम्नलिखित है—

राजनीति है ऐसी लड़की, जो कभी तड़की तो कभी भड़की,
सभी, आकर्षित होते हैं उसे देख कर, कुछ रह जाते है सिर्फ आँखें सेक कर;
वैसे वह अभी तक कुमारी है, तुम समझते हो तुम्हारी है,
हम समझते हैं हमारी है, लाइलाज बीमारी है।

(11) **श्री जगदीश "मृदुल (फीरोजाबाद-आगरा)**—आप एक पत्र के सम्पादक तथा सामाजिक-कार्यकर्ता है। आपकी काव्य-रचना का एक उदाहरण निम्नलिखित है—

"यह प्रजातन्त्र की परिभाषा ?
थी रामराज्य से यह आशा ?
आहों को सुन्दर गीतमान, झूठे सपनों को सत्य जान,
ले साँस रहा इस धरती पर, मानव हो कुत्तों के समान,
ले जीने की झूठी आशा !
यह प्रजातन्त्र की परिभाषा ?

अन्य कविगण—

"क" वर्ग के अप्रकाशित कवियों में कुछ अन्य प्रमुख नाम निम्नलिखित है—

(1) **आगरा नगर एवं जिला**—सर्वश्री उमाचरण दीक्षित, मदनगोपाल सारस्वत, (स्व.) ब्रजराजसिंह, दयाशंकर शर्मा, विद्याशंकर शर्मा, रमेशचन्द्र दुबे, सन्त कुमार मीतल, प्रेम प्रदीप 'शीलंकर" तथा कुन्दन लाल उप्रैति।

(2) **अलीगढ़ नगर एवं जिला**—सर्वश्री डा. नजीर मोहम्मद, डा. गोपाल बाबू शर्मा, श्रीमती डा किरण, गंग, बेदिल, (स्व.) भगवानसिंह "विमल", स्व. विकल, गगासहाय 'प्रेमी', बिहारी लाल शर्मा, चरनलाल "चंचरीक", मुन्नीलाल शर्मा तथा श्रीकृष्ण 'मौजी'।

(3) **भरतपुर नगर एवं जिला**—सर्वश्री मोहनलाल 'मधुकर' तथा हीरालाल शर्मा।

(4) **मथुरा नगर एवं जिल**—सर्वश्री प्रो. श्रीकृष्ण चैतन्य भट्ट "राकेश", हरिप्रसाद चतुर्वेदी, चकलेश्वर सिंह, राम प्रसाद "कमल", श्री हुकुमचन्द्र तिवारी तथा श्याम सुन्दर "सुमन"।

(5) **मैनपुरी नगर एवं जिला**—सर्वश्री अभयमल जैन तथा कंचनसिंह चौहान।

(6) **इटावा नगर एवं जिला**—श्रीमती सावित्री जायसवाल तथा श्री ध्रुव नारायण सिंह।

(7) **एटा नगर एवं जिला**—डा. नरेश बंसल।

(8) **मुरैना नगर एवं जिला**—श्री मुन्नीलाल शर्मा।

(9) **अलवर नगर एवं जिला**—सर्वश्री जगनप्रसाद स्वामी, जुगमन्दिर तायल तथा डा. जयसिंह 'नीरज'।

उक्त सभी कवि मचीय-कवि के रूप में केवल क्षेत्रीय-ख्याति ही अर्जित कर पाये हैं।

"ख" वर्ग के प्रकाशित कवि—

इस वर्ग के प्रमुख "प्रकाशित-कवि" निम्नलिखित है—

1. डा. श्री मोहन "प्रदीप"
2. श्री यमुना प्रसाद चतुर्वेदी "प्रीतम"
3. डा. रवीन्द्र "भ्रमर" × ×
4. श्री गोपाल प्रसाद मुद्गल ×
5. श्री कैलाश चन्द्र "कृष्ण"
6. डा. त्रिलोकी नाथ "ब्रजवाल" ×
7. श्री देवकीनन्दन कुम्हेरिया
8. श्री श्यामसुन्दर गोस्वामी
9. श्री उदय प्रताप सिंह × ×
10. श्री सोम ठाकुर × ×
11. डा. राजेश्वर प्रसाद सक्सेना
12. श्री गोपेश शरण शर्मा "आतुर"
13. श्री रामगोपाल परदेसी
14. श्री राजेन्द्र "मिलन"
15. श्री मूलचन्द्र शर्मा "नादान" ×
16. श्री निखिल सन्यासी ×
17. श्री राधेश्याम अग्रवाल
18. श्री ओम् प्रकाश सारस्वत "द्रोणाचार्य"
19. श्री राधेश्याम कौशिक
20. (तपस्विनी) कृष्णा माँ।
21. डा. सुरेश पाण्डेय।
22. श्री रामावतार सिंह चौहान "शशि"

इन कवियों के सम्बन्ध में ज्ञातव्य-विवरण आगे प्रस्तुत किया जा रहा है। इनमें से जो मंचीय-कवि के रूप में अन्तर्प्रान्तीय ख्याति अर्जित कर चुके हैं, उनके नाम के आगे एक गुणकचिह्न लगा हुआ है तथा जो अखिल भारतीय ख्याति प्राप्त हैं, उनके नाम के आगे दो गुणक चिह्न लगे हैं।

डा. श्री मोहन प्रदीप

पिता—पं. लक्ष्मीनारायण जी । जन्मतिथि—21 फरवरी, सन् 1931 ई. । जन्मस्थान—खैर, (अलीगढ़) । शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी-समाजशास्त्र), एल. टी., पी-एच. डी. । व्यवसाय—अध्यापन । काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1943 ई. । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1943 ई. हाथरस में । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से । वर्तमान पता—हिन्दी-विभाग, पी. सी. बागला कालेज, हाथरस (जि. अलीगढ़) ।

अन्य—सम्प्रति : पी. सी. बागला महाविद्यालय, हाथरस के हिन्दी-विभाग में प्राध्यापक ।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1945 ई. में प्रकाशित, तत्पश्चात् अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन । अनेक मंचों से काव्य-पाठ। खड़ी बोली, उर्दू तथा ब्रजभाषा में काव्य-सृजन । कविता के अतिरिक्त उपन्यास, एकांकी एवं समीक्षात्मक निबन्धों के रचयिता । अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध । कुछ गीत फिल्मों के लिए भी लिखे हैं ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) नया भारत, (2) मंजिल एक राहें अनेक (एकांकी संग्रह), (3) पालकी से अर्थी तक तथा (4) मन्दिर और गिरजा (उपन्यास), (5) पुरवाई (गीत-संग्रह) । इनके अतिरिक्त हिन्दी साहित्य एवं समीक्षा विषयक विश्व विद्यालय स्तर की अनेक पुस्तकें ।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) सुजाता (खण्ड-काव्य) । इसके अतिरिक्त अनेक स्फुट कविताएँ, एकांकी, निबन्ध आदि ।

विशेष—सभी कविताएँ भाव एवं शिल्प की दृष्टि से सामान्यतः उत्तम । भाषा हिन्दी-उर्दू मिश्रित, तथापि हृदयग्राही ।

"हसीन जुल्मों को हम उम्र भर भुला न सके,
नया चिराग मोहब्बत का हम जला न सके,
हमें तो उनकी नज़र ने तबाह कर डाला
तमाम उम्र किसी से नज़र मिला न सके ।"

(पुरवाई, पृष्ठ 15)

श्री यमुनाप्रसाद चतुर्वेदी 'प्रीतम'

पिता—श्री सर्राजी चतुर्वेदी । जन्मतिथि—11 मई, सन् 1931 ई., (ज्येष्ठ कृष्णा 9 सोमवार, संवत् 1988 वि.) । जन्मस्थान—मथुरा । शिक्षा—सामान्य । व्यवसाय—यजमानी । काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सं. 2008 वि. । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सं. 2008 वि. मथुरा में । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से । वर्तमान पता—बंगालीघाट, मथुरा ।

साहित्य-सेवा—प्रथम कविता सं. 2008 वि. में प्रकाशित, तदनन्तर अन्य रचनाएँ प्रकाशित। "ब्रजकवि मण्डल" के वर्तमान अध्यक्ष। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध। खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा दोनों में काव्य-सृजन। अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी केन्द्र से प्रसारण।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) पंकज-दूत (काव्य)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) महादानी बलि, (2) पुरंजनोपाख्यान, (3) राधिका अष्टोत्तरशत नाम, (4) छद्मानुराग पच्चीसी, (5) दान चालीसा, (6) अष्टाष्टक, (7) षड्ऋतु अष्टक एवं (8) गणेश अष्टक। इसके अतिरिक्त सैकड़ों स्फुट छन्द तथा चौपाइयाँ।

विशेष—साहित्यिक दृष्टि से कविताएँ सामान्य, परन्तु हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"जो तन परसत दिव्य करत जन जनम सुधारत।
जा कन-कन पै सुकवि कोटि चिन्तामनि बारत॥
ललित लहर सी लसत मनों तन पुलक प्रसारत।
सतत स्वच्छ ही रहत, जाइ नित पवन बुहारत॥

(पंकज-दूत, पृष्ठ—49)

डा. रवीन्द्र भ्रमर

पिता—पं. सुन्दरी प्रसाद शर्मा। जन्मतिथि—6 जून सन् 1931 ई.। जन्मस्थान—जौनपुर। शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी), पी-एच. डी.। व्यवसाय—लेखन, अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1951 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—काशी नागरीप्रचारिणी सभा में, सन् 1954 ई.। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—विगत 25 वर्षों से। वर्तमान पता—शाकुन्तलम्, मैरिस रोड, अलीगढ़।

अन्य—वाराणसी विश्वविद्यालय में अध्ययन किया। सम्प्रति—मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ के हिन्दी-विभाग में प्राध्यापक। अनेक साहित्यिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं से सम्बद्ध।

साहित्य-सेवा—प्रथम रचना सन् 1955 ई. में प्रकाशित, तदनन्तर अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी केन्द्रों से रचनाओं का प्रसारण। काव्य-सृजन के अतिरिक्त आलोचना तथा समीक्षा के क्षेत्र में विशेष कार्य एवं ग्रन्थ-लेखन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) कविता-सविता, (2) रवीन्द्र भ्रमर के गीत, (3) प्रक्रिया (सभी काव्य-संग्रह)। (4) छायावाद, (5) समकालीन हिन्दी कविता (समीक्षात्मक)। इनके अतिरिक्त लगभग 1 दर्जन आलोचनात्मक एवं सर्जनात्मक पुस्तकें प्रकाशित।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) धूप दिखाए आरसी (काव्य)। इसके अतिरिक्त समीक्षात्मक एवं आलोचनात्मक निवन्ध तथा स्फुट कविताएं।

विशेष—समकालीन काव्य-धारा के प्रख्यात कवि। स-स्वर काव्य-पाठ के लिए विख्यात। नवगीत के उन्नायक। "सहज-कविता" के प्रवर्तक—कवि तथा आलोचक। भाषा एवं शिल्प की दृष्टि से कविताएँ समृद्ध एवं हृदयस्पर्शी।

काव्योदाहरण—

"मैं बनाऊँ घर यहीं मझधार में,
अगम जल की सोनमछरी मन बसी !
गढ़ा इसको किसी-चतुर सुनार ने
नये साँचे मे ढली यह कामिनी,
रंग ऐसा भर दिया करतार ने
दिपे सोना अंग जैसे दामिनी,
प्राण की हर पोर में इसकी चुभन
ज्यों अँगूठी अंगुली में हो कसी।"

श्री गोपाल प्रसाद मुद्गल

पिता—श्री रघुनाथप्रसाद शर्मा। जन्म-तिथि 2 जुलाई 1931 ई.। **जन्म स्थान**—डीग (भरतपुर)। शिक्षा—एम. ए., बी. एड.। व्यवसाय—शिक्षा-विभाग में सेवारत। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1946 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—15 अगस्त, सन् 1947 ई.। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—पाण्डेय मुहल्ला, डीग (भरतपुर)।

अन्य—साहित्य अकादमी राजस्थान के सदस्य। सम्प्रति—उप जिला शिक्षा अधिकारी के पद पर कार्य-रत। सन् 1978 में राजस्थान सरकार द्वारा श्रेष्ठ अध्यापक का राज्य-स्तरीय पुरस्कार प्राप्त। "साहित्य अकादमी" राजस्थान द्वारा "साहित्य और लोकरुचि" तथा "साहित्य और नैतिकता" निवन्धों पर पुरस्कृत। अनेक शैक्षणिक तथा साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध।

साहित्य-सेवा—सन् 1948 ई. में प्रथम रचना प्रकाशित, तत्पश्चात विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक मंचों से काव्य-पाठ तथा मथुरा, दिल्ली एवं जयपुर के आकाशवाणी केन्द्रों से रचनाओं का प्रसारण। खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा में काव्य-सृजन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) उगता सूरज, (2) अच्छा बालक (दोनों काव्य-संकलन) तथा (3) वक्त की आवाज़ (एकांकी संग्रह)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) दादी का कारज (मुक्त-छन्द काव्य) एवं (2) अन्त्योदय (नाटक)। इनके अतिरिक्त अनेक कविताएँ, रेखाचित्र, रेडियो-रूपक, संस्मरण आदि।

विशेष—कवि-सम्मेलनों में ब्रजभाषा के लोक-गीत, शृंगार-गीत तथा वीररस की रचनाओं के स-स्वर पाठ के लिए प्रसिद्ध। भाषा, भाव तथा शिल्प की दृष्टि से रचनाएँ सामान्य, परन्तु हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"रसिया फागुन के गीत गवन लागे ।।
चंग चंग में उठीं उमंगे धमाचौकड़ी माचै,
झूम झूम कै रसिया नाचै, संग में गोरी नाचै,
बिछुआ बाजे के संग बजन लागे ।।
("फागुन" शीर्षक गीत का अंश)

श्री कैलाशचन्द्र "कृष्ण"

पिता—पं. मथुरा प्रसाद जी। जन्मतिथि—24 सितम्बर, सन् 1931 ई.। जन्मस्थान—मथुरा। शिक्षा—साहित्यरत्न, साहित्यालंकार, उर्दू मिडिल, ब्रज-भाषा रत्न। व्यवसाय—अध्यापन तथा पौरोहित्य। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1944 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1952 ई., मथुरा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—कुशक गली, मथुरा।

अन्य—प्रथम कविता सन् 1952 ई. में स्थानीय पत्रिका में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। आकाशवाणी के मथुरा तथा दिल्ली केन्द्रों से कविताओं का प्रसारण। अनेक मंचों से काव्य-पाठ। ब्रजभाषा के विशिष्ट कवि। खड़ी बोली में भी काव्य-सृजन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) ब्रज वसुन्धरा (गद्य)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) मार्कण्डेय वृत्त (हिन्दी महाकाव्य) (2) बाँका बसन्त, (3) पावस प्रमोद, (4) सरद सौरभ, (5) हेमन्त हुलास, (6) सिसिर सयोग (7) ग्रीष्म गरिमा, तथा (8) गिरिराज महिमा-ये सभी ब्रजभाषा के शतक रूप में हैं। (9) राधा जन्मोत्सव पच्चीसी, (10) श्यामा श्याम पच्चीसी, (11) भ्रमर गीत तथा 24 से अधिक अष्टक (सभी काव्य), कतिपय निबन्ध भी एवं (12) गोचारण (ब्रजभाषा-नाटक)।

विशेष—भाव, शिल्प एवं छन्द-योजना की दृष्टि से रचनायें उत्तम तथा हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"काबुल कौ, कंधार कौ कि टर्की ईरान कौ कि,
सिन्ध कासमीर अर्ब व्यापी देस-देस कौ ।
पौन गति मौन गहें दुरकी मैदान चाल
बारिधारा टाप धीर धरत न लेस कौ ॥
"कृष्णकवि" इन्द्रधनु भाँतिन कलंगी धरें,
प्रबलप्रतापी तापी—सुत बर बेस कौ
जोर भरौ, सोर भरौ, अजब मरोर भरौ,
दौर परौ घोरा मेघ पावस-नरेस कौ ॥"

(पाण्डुलिपि से)

डा. त्रिलोकीनाथ "ब्रजबाल"

पिता—पं. गंगा प्रसाद शास्त्री। जन्मतिथि—13 नवम्बर, 1932 ई.। **जन्मस्थान—मथुरा** । शिक्षा—एम. ए., पी-एच. डी., एल. टी., एच. डी. ई., आई. जी. डी. । **व्यवसाय—अध्यापन** । काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1949 ई.। प्रथम बार मंचीय-काव्य-पाठ—सन् 1952 ई. । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से । वर्तमान पता—गली कसेरान, मण्डी रामदास, मथुरा ।

अन्य—उ. प्र. शासन द्वारा पुरस्कृत । अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित । साहित्याचार्य, साहित्य-मनीषी, ब्रज-साहित्याचार्य तथा बाल-शिक्षाविद् की मानद-उपाधियाँ प्राप्त । हिन्दी प्रचार सभा मथुरा के अध्यक्ष; अ. भा. गौड़ महामण्डल, मथुरा के उपाध्यक्ष; अ. भा. ब्रजसाहित्य मण्डल, मथुरा के शोध-मन्त्री तथा उ. प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद की कार्यकारिणी समिति के सदस्य रहे । इसके अतिरिक्त नगर तथा बाहर की अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी । आपकी अनेक कृतियों का गुजराती, कन्नड़, नेपाली, अंग्रेजी, बंगला, मराठी, उड़िया, तेलुगु आदि भाषाओं में अनुवाद हुआ है ।

साहित्य-सेवा—पहली रचना सन् 1953 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन । अनेक मंचों से काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी केन्द्रों से कविता, नाटक, रूपक, वार्ता आदि का प्रसारण । हिन्दी तथा ब्रजभाषा में काव्य सृजन के अतिरिक्त उपन्यास, कहानी, शोध, समीक्षा तथा शिक्षा सम्बन्धी विषयों पर लेखन । "ज्ञानदा" (त्रैमासिक शोध-पत्रिका) के सम्पादक तथा अन्य अनेक पत्र-पत्रिकाओं से सम्बद्ध रहे ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) मीत मेरे, गीत तेरे, (2) गेया (गीत-संग्रह) (3) इन्दु एक, बिन्दु दो (नवकाव्य), (4) कल्पना के चित्र (नवगीत संग्रह) (5)

एक डाल तीन फूल (आत्मकथन), (6) अपरिभाषित सत्यांश (चिन्तन प्रधान रचनाएँ) (7) अन्तहीन कथा, (9) पानी के प्राचीर (उपन्यास), तथा (10) अगम सिन्धु के तट पर (लघु कथाएँ)। इनके अतिरिक्त अनेक सम्पादित पुस्तकें।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) हिन्दी आत्मकथा—साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन (शोध-प्रबंध), (2) हिन्दी महाकाव्यों की कथावस्तु (समीक्षा), (3) भावी बाल-शिक्षा की परिकल्पना, एवं (4) वर्तमान बाल-शिक्षा और उसके उद्देश्य (शिक्षा सम्बन्धी)। इनके अतिरिक्त अनेक स्फुट रचनाएँ, गीत, छन्द, नाटक, रूपक, संस्मरण आदि।

विशेष—भाषा तथा भाव की दृष्टि से सभी कविताएँ हृदयग्राही, साहित्यिक दृष्टि से भी उत्तम।

काव्योदाहरण—

"आज बताओ साथी मुझको,
मेरा क्या नाता इस जग से ?
खिची हुई हैं इसमें रेखा,
जिसमें निश्चित-सा है लेखा,
कैसे मैं निज जीवन सौंपूँ
इसका हर पथ है अनदेखा,
किसके लिए इसे अपनाऊँ,
क्यों मैं प्रेम बढ़ाऊँ ठग से ?
मेरा क्या नाता इस जग से ?

(एक डाल, तीन फूल : पृष्ठ 29)

श्री देवकीनन्दन कुम्हेरिया

पिता—पं. राम सिंह जी। जन्म-तिथि—आश्विन (क्वार) कृष्णा द्वितीया, संवत् 1990 वि., (दिनांक 6 सितम्बर सन् 1933 ई.)। जन्मस्थान—गोवर्धन (जिला-मथुरा)। शिक्षा—स्नातक-समकक्ष। व्यवसाय—पुस्तक-प्रकाशन एवं विक्रय। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1946 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1947 ई., में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—हाथी दरवाजा, गोवर्धन (जिला मथुरा)।

अन्य—समाज-सेवा, साहित्य एवं साहित्यकारों की सेवा तथा साहित्य के अध्ययन में विशेष रुचि। अनेक जनान्दोलनों में भाग लिया तथा आपात-स्थिति में कारावास-भोगी।

साहित्य-सेवा—पहली रचना सन् 1948 ई. में प्रकाशित, तत्पश्चात् अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक कवि-सम्मेलनों तथा गोष्ठियों में काव्य-पाठ।

आकाशवाणी केन्द्रों से रचनाओं का प्रसारण । ब्रजक्षेत्र की अनेक साहित्यिक-संस्थाओं से सम्बद्ध । खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा दोनों में काव्य-सृजन ।

प्रकाशित पुस्तकें--(1) पत्नी पुराण (काव्य), (2) गोवर्धन दर्शन (गद्य), (3) ब्रज के सवैया, तथा (4) कवि-सम्मेलन (सम्पादित) । इसके अतिरिक्त धार्मिक तथा लोक-साहित्य विषयक अनेक पुस्तकें ।

अप्रकाशित कृतियाँ—खड़ी बोली, ब्रजभाषा-काव्य तथा लोक-साहित्य की अनेक रचनाएँ ।

विशेष—कुम्हेरियाजी मूलतः लोक-कवि तथा लोक-काव्य के प्रणेता हैं, अतः आप की रचनाओं में तदनुकूल भाषा, भाव, छन्द तथा शिल्प का प्रयोग हुआ है । सरलता एवं सम्प्रेषणीयता आपकी रचनाओं का विशिष्ट गुण है ।

काव्योदाहरण—

"बदरा बरसै हियरा हरसै;
    पिक बैन पियूष सुनान लगे ।
ददुरा अति सोर मचान लगे,
    झिंगुरा सगरे झननान लगे ।।
सखी, मोरन नाचिबौ नीकौ लगै,
    कवि "नन्दन" कीरत गान लगे ।
चले छोड़ हटी, गिरिराज तटी,
    नर नारि सबै मिल जान लगे ।।

(ब्रज के सवैया, पृष्ठ 5)

श्री श्यामसुन्दर गोस्वामी

पिता—पं. विद्याधर गोस्वामी । जन्मतिथि—10 सितम्बर, 1933 ई. । जन्मस्थान—राधाकुण्ड (जि.—मथुरा) । व्यवसाय—सरकारी-सेवा । शिक्षा—बी. ए. । काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1950 ई. । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1953 ई., मथुरा में । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से । पता—राधाकुण्ड (जि. मथुरा) ।

अन्य—लोक-काव्य एवं लोक-संगीत के ज्ञाता । समाज-सेवा एवं साहित्यिक कार्य में विशेष रुचि ।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1954 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन । हिन्दी के अतिरिक्त ब्रजभाषा में भी काव्य-सृजन । अनेक मंचों से काव्य-पाठ ।

प्रकाशित पुस्तकें—राग चापलूसी (काव्य) ।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक स्फुट कविताएँ ।

विशेष—हास्य-व्यंग्य के कवि के रूप में लोक-प्रिय । साहित्यिक दृष्टि से रचनाएँ सामान्य ।

काव्योदाहरण—

"शादी, ब्याह, बरात हो, कथा, भोज, ज्यौनार,
दावत, इंगलिश-पार्टी, है चमचा तैयार ।।
है चमचा तैयार, बिना न्यौतेही हाजिर ।
जबरन लोगे बाबू, मिस्टर, मीयाँ, नाजिर ।।
कहै "श्याम" अब करैं, हाथ से भोजन बादी ।
चमचा से चमचा खटके बिन फबै न शादी ।।

(राग चापलूसी, पृष्ठ 3)

श्री उदयप्रताप सिंह

पिता—श्री हरिहरसिंह चौधरी । जन्मतिथि—18 मई, सन् 1934 ई. । जन्मस्थान—गढ़िया (जि. मैनपुरी) । शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी तथा अंग्रेजी), एल. टी. । व्यवसाय—अध्यापन । काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1949 ई. । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1955 ई. (मैनपुरी प्रदर्शनी में) । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से । वर्तमान पता—राजेन्द्र मार्ग, शिकोहाबाद (जिला—मैनपुरी) ।

अन्य—सन् 1956 ई. में पालीवाल इण्टर कालेज, शिकोहाबाद से अध्यापन कार्य प्रारंभ किया । सन् 1958 से 1974 तक जैन इण्टर कालिज, करहल में रहे । सन् 1975 से 1983 तक भोगांव (मैनपुरी) के मदन इण्टर कालेज में प्रधानाचार्य पद पर कार्य किया । सम्प्रति—नारायण इन्टर कालिज, शिकोहाबाद के प्राचार्य पद पर कार्य-रत । पद्य-रचना के अतिरिक्त निबन्ध-लेखन एवं क्रीड़ा-क्षेत्र में रुचि ।

साहित्य-सेवा—'नव वर्ष अभिनन्दन" शीर्षक, प्रथम रचना सन् 1956 ई. में "सैनिक" (आगरा) में प्रकाशित, तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन । सैकड़ों कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ । आकाशवाणी केन्द्रो से प्रसारण । अनेक साहित्यिक-संस्थाओं से सम्बद्ध ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) रोशनी के बीज (कविता-संग्रह) ।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक स्फुट रचनाएँ ।

विशेष—श्री उदय प्रताप सिंह वीररस के ओजस्वी-कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं । इनकी अधिकांश कविताएँ सामयिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय विषयों से सम्बन्धित होती हैं । काव्य की भाषा सरल, हृदयग्राही, तथा प्रवाहमयी । इनकी

कविताओं में उपमाओं, रूपकों तथा अलंकारों का प्रयोग भी हुआ है, परन्तु छन्द-योजना तथा शब्द-शिल्प में कहीं-कहीं विसंगतियाँ एवं ग्राम्य-दोष भी परिलक्षित होते हैं। अपने काव्य-पाठ द्वारा श्रोताओं को प्रभावित करने में सक्षम।

काव्योदाहरण—

"कलम का काम यह भी है कि वह साहित्य दे ऐसा
कि जिसमें सूर और रसखान तन्मय बह सकें दोनों।
कलम का काम यह भी है, बहाये ऐसी रसगंगा
कि जिसमें खानखाना और तुलसी रह सकें दोनों।।"
("पाकिस्तान के शायरों से' कविता का एक अंश)

श्री सोम ठाकुर

पिता—श्री दीपचन्द ठाकुर। जन्मतिथि—25 मार्च 1935 ई.। जन्मस्थान—आगरा। शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी)। पूर्व व्यवसाय—अध्यापन। वर्तमान कार्य—मंचीय काव्य-पाठ। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1951 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ--सन् 1951 ई., आगरा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—26/73 अहीरपाड़ा (राजा की मण्डी), आगरा-2।

अन्य—सन् 1960-62 ई. तक आगरा कालिज में, 1962-65 ई. तक सेण्ट जान्स कालिज, आगरा में तथा सन् 1965-66 ई. में नेशनल कालिज, भौगांव (जिला—मैनपुरी) में हिन्दी के प्राध्यापक रहे। तत्पश्चात् नौकरी छोड़कर स्वतन्त्र काव्य-पाठ पर निर्भरता।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1956 ई. में "धर्मयुग" में प्रकाशित, तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। सैकड़ों मंचों से काव्य-पाठ। आकाशवाणी तथा दूर-दर्शन के विविध केन्द्रों से प्रसारण। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध। अ. भा. ब्रजसाहित्य संगम के मंत्री। अनेक साहित्यिक-कार्यक्रमों के आयोजक। कुछ फिल्मों के लिए भी गीत लिखे हैं।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) गीत-दशक तथा (2) ताज की छाया में (ये दोनों काव्य-संकलन हैं, जिनमें अन्य कवियों की रचनाएँ भी संग्रहीत हैं। स्वतंत्र-संकलन अभी तक नहीं छपा।)

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) एक ऋचा पाटल को (2) चंदन और अबीर तथा (3) ब्रज तरंगिनी (सभी कविता-संग्रह)।

विशेष—वर्तमान समय में हिन्दी काव्य-मंच के सर्वाधिक लोकप्रिय सुमधुर गीतकार। बच्चन, रंग तथा नीरज के बाद देशभर में सबसे अधिक बुलाये जाने तथा

सुने जाने वाले गीतकारों में अग्रगण्य । आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के विविध केन्द्रों से रचनाओं का निरन्तर प्रसारण ।

श्री सोम ठाकुर ने अपने अत्यधिक सुमधुर कण्ठ के कारण मंचीय लोक-प्रियता प्रारंभ से ही अर्जित करना आरम्भ कर दिया था, तदुपरान्त ज्यों-ज्यों इनकी रचनाओं में प्रौढ़ता आती चली गई, त्यों-त्यों इन्हें मंच द्वारा अधिकाधिक समादृत किया जाने लगा ।

भावानुकूल टकसाली भाषा, सुगठित छन्द, निर्दोष काव्य-शिल्प तथा सम्प्रे-षणीयता—ये सब सोम ठाकुर की रचनाओं के विशिष्ट गुण हैं, जो श्रोता को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं ।

इन्होंने पत्र-पत्रिकाओं में छपने तथा नवगीतकारों में स्थान पाने हेतु कुछ नवगीत भी लिखे हैं । अपनी विधा तथा नवगीत-प्रेमियों के बीच वे कितने भी समादृत क्यों न हुए हों, परन्तु जब-जब उन्हें मंच पर सुनाया गया है, तब-तब बहुसंख्यक श्रोताओं को वे दुरूह तथा अनाकर्षक ही प्रतीत हुए हैं, फलतः सफलता उन नवगीतों को मंचीय-सफलता प्राप्त नहीं हो सकी ।

श्री सोम ठाकुर ने ब्रजभाषा की प्राचीन शैली में, मुख्यतः राधा-कृष्ण विषयक कुछ छन्दों की रचना भी की है, और वे मंच पर भी खूब सराहे गये हैं । 'भारत मां की वन्दना' से सम्बन्धित इनका एक गीत अत्यधिक लोक-प्रिय हुआ है । श्री सोम के श्रृंगारी गीत हृदयस्पर्शी एवं ब्रजभाषा के छन्द आकर्षक हैं, परन्तु इन्होंने हिन्दी-उर्दू मिश्रित अथवा उर्दू भाषा में जो ग़ज़लें लिखी हैं; वे प्रयोगधर्मिता के बाहुल्य, भाषा-शैथिल्य तथा कुछ अन्य कारणों से भी अधिक सफल नहीं हो सकीं । यों सुमधुर सरस काव्य पाठ-शैली के कारण ये अपनी दुरूह रचनाओं को भी मंच पर जमा ले जाने में समर्थ रहते हैं ।

काव्योदाहरण—

"सुर्ख सुबह
चम्पई दुपहरी
मोरपंखिया-शाम
रंग-रंग से लिख जाता मन, पत्र तुम्हारे नाम !
बाँहों के खालीपन पर यह
बढ़ता हुआ दबाव
चेहरे पर थकान के जाले
बुनता हुआ तनाव
बढ़ने लगे देह से लिपटी यादों के आयाम ।"

('विराम' कविता का एक अंश, नवगीतदशक 1, पृष्ठ 35)

डा. राजेश्वरप्रसाद सक्सेना

पिता—श्री रघुवीरप्र ाद जी। जन्मतिथि—3 जून, सन् 1934 ई.। जन्मस्थान—रुड़की (सहारनपुर)। शिक्षा—एम. ए., पी-एच. डी. (समाज शास्त्र)। व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1942 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1946 ई., रुड़की में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—सन् 1955 ई. से। वर्तमान पता—2 गोपाल कुंज, बाग मुजफ्फर खाँ, आगरा-282004।

अन्य—आगरा के साहित्यकारों की एक सहकारी समिति का गठन किया, जिसके अन्तर्गत तीन संकलन प्रकाशित हुए। "युवक" (मासिक) का एक वर्ष तक सम्पादन किया। सम्प्रति—समाज विज्ञान संस्थान, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा में रीडर पद पर कार्य-रत। समाज-सेवा के क्षेत्र में विविध कार्य।

साहित्य-सेवा—सन् 1945 ई. में हस्तलिखित-पत्रिका निकाली, पहली रचना उसी में निकली; तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक पुस्तकों का सम्पादन। काव्य-सृजन के अतिरिक्त कहानी एवं निबन्ध-लेखन। अनेक काव्य-मंचों से काव्य-पाठ। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध। सम्प्रति—मंच से सन्यास।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) नीहारिका, (2) ताज की छाया में-1 (कविता-संग्रह), (3) ताज की छाया में—2 (कहानी-संग्रह), (4) ताज की छाया में—3 (एकांकी-संग्रह)—ये सभी पुस्तकें सम्पादित हैं, जिनमें अन्य लेखकों की रचनाएँ भी संकलित हैं।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक कविताएँ, निबन्ध तथा कहानियाँ।

विशेष—भाव, भाषा तथा शिल्प की दृष्टि से कविताएँ उत्तम।

काव्योदाहरण—

"चाँदनी तो सूर्य से विधु ने चुराई,
चाँदनी उसकी नहीं है,
तुम कहाँ से रूप अपना यह चुरा लायीं, बताओ,
आज तुम को प्यार करलूँ, पास आओ।"

(ताज की छाया में, पृ. 32)

श्री गोपेश शरण शर्मा "आतुर"

पिता—श्री गोपालशरण शर्मा। जन्मतिथि—14 अक्टूबर, सन् 1934 ई.। जन्मस्थान—भरतपुर। शिक्षा—एम. ए., बी. एड.। व्यवसाय—राजकीय-सेवा। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—13 वर्ष की आयु से। प्रथम बार मंचीय काव्य-

पाठ—सन् 1953 ई., भरतपुर-प्रदर्शनी में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—56, कृष्णा नगर, भरतपुर (राजस्थान)।

अन्य—सम्प्रति : राजकीय-सेवा में उपशिक्षा अधिकारी के पद पर भरतपुर में कार्यरत। सन् 1962 में राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा कविता पुरस्कृत। सन् 1964 में सहकारी विभाग राजस्थान द्वारा एकांकी नाटक पुरस्कृत। सन् 1969 में राजस्थान सरकार द्वारा "श्रेष्ठ-शिक्षक" के राज्य-पुरस्कार से सम्मानित।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1952 ई. में "कर्मभूमि" नामक पत्र में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक मंचों से काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण, अनेक साहित्यिक संस्थाओं तथा कार्यक्रमों से सम्बद्ध। खड़ी बोली के अतिरिक्त-ब्रज भाषा में काव्य-रचना तथा एकांकी नाटकों का सृजन। हिन्दी साहित्य-समिति, भरतपुर की कार्यकारिणी के सदस्य।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) निर्मल मिलन (कविता संग्रह), (2) एक और एक ग्यारह (एकांकी संग्रह)। इनके अतिरिक्त (1) काव्य-कला निधि, (2) गल्प गुच्छ, (3) लोहागढ़ ललकार—इन पुस्तकों मेंरचनाएँ संकलित।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक कविताएँ तथा एकांकी नाटक आदि।

विशेष—भाषा, भाव, छन्द तथा शिल्प की दृष्टि से रचनाएँ सरल, सामान्य तथा हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"गीत तो लिख दूँ हजारों,
किन्तु गायक मिल सकेंगे क्या ? बतादो।
मौन होकर भाव अपने,
लेखनी से व्यक्त करना चाहता हूँ।
घिर रहा मानस विचारों से,
उसे मैं रिक्त करना चाहता हूँ,
खोल दूँ अपने अधर भी,
किन्तु ग्राहक मिल सकेंगे क्या ? बतादो।

(निर्मल मिलन, पृ.—14)

श्री राम गोपाल परदेसी

पिता—स्व. लक्ष्मण प्रसाद गुप्त। जन्म-तिथि—17 मार्च, सन् 1937 ई.। जन्म-स्थान – मचोरा (एटा)। शिक्षा—साहित्यरत्न, साहित्य शिरोमणि। व्यवसाय—पुस्तक-प्रकाशन। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1956 ई। प्रथम बार मंचीय

काव्य-पाठ—सन् 1962 ई. आगरा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—14/250, मण्डी सईद खाँ, आगरा।

अन्य—पहले अनेक वर्षों तक विभिन्न क्षेत्रों में कार्य। शवरी, समाज-उन्नायक तथा 'युवक' पत्रों के पूर्व सम्पादक। संघर्ष शील-जीवन भोगा। सम्प्रति—प्रगति प्रकाशन, आगरा के संचालक। अनेक भाषाओं का ज्ञान।

साहित्य-सेवा—पहली रचना सन् 1955 ई. में प्रकाशित, तत्पश्चात् विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ। काव्य-सृजन के अतिरिक्त एक सौ से अधिक पुस्तकों के अनुवादक तथा सम्पादक। कहानी एवं निबन्ध-लेखक। आकाशवाणी नई दिल्ली से अनेक वार्ताएँ प्रसारित। सम्पूर्ण देश का भ्रमण। एक कहानी पूना विश्वविद्यालय के बी. ए. पाठ्यक्रम में। विराज. स्मृति संस्थान तथा सांत्वना 'साहित्य कक्ष' के संस्थापक, निदेशक। तृषा संस्था द्वारा अभिनंदित, फिल्म लेखन से भी सम्बद्ध।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) फागुन की गंध, (2) मन का महुआ, (3) पंख मेरे खोल दो, (4) जी उठा अकेलापन, (सभी काव्य), (5) बोलता हुआ सच, (6) भारतीय लेखक कोश तथा (7) साहित्यालोक, (8) आग और आकर्षण, (9) कतारें, (10) दहकते अंगारे (कहानी संग्रह), (11) चल मस्तानी चाल, (12) शंखनाद, (13) छोटी इ से इमली, तथा (14) उठो-उठो हो गया सवेरा (सभी बाल-काव्य) तथा प्रतिनिधि हस्ताक्षर, तीस प्रतिनिधि कहानियाँ, चेहरों से घिरा दर्पण, आँचल डोल गया, फासला (कहानी) गूँजते स्वर, उद्गम, गीत और सरगम, तीन सौ गीत, जूड़े के फूल, हिन्दी कवियों की रुबाइयाँ, हिन्दी कवियों की गज़लें, हिम शिखिर बलिदान मांगता है, शंख स्वर, नयी धरती के नये स्तर (काव्य), प्रतिनिधि साहित्य, एवं निबन्ध मणि ये सभी पुस्तकें सम्पादित। रावी द्वारा सम्पादित 'परदेसी' विशेषांक में अनेक विद्वानों के व्यक्तित्व और कृतित्व पर निबन्ध।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) ढोलकिया बाज उठी (लोक-गीत)। इनके अतिरिक्त अनेक स्फुट कविताएँ, निबन्ध, कहानियाँ आदि। आधुनिक कवि, आधुनिक कवयित्रियाँ, ब्रजभाषा गद्य निबन्ध, रेडियो वार्ताएँ।

विशेष—साहित्यिक-दृष्टि से कविताएँ सरस, समृद्ध तथा हृदयस्पर्शी।

काव्योदाहरण—

"बिना बुलाए ही अब मेरे
गीत अधर पर आ जाते हैं,
इतना ही क्या कम है, कुछ तो,
मन की जलन मिटा जाते है,

मेरे जीवन के पतझर में, अपने पावन चरण धरो तो,
सच कहता हूँ गा-गाकर मै, फागुन का मौसम कर दूँगा।"
(बोलता हुआ सच, पृष्ठ 24)

श्री राजेन्द्र "मिलन"

पिता—श्री सोहनलाल जी। जन्मतिथि—16 नवम्बर, सन् 1936 ई.। जन्मस्थान—आगरा। शिक्षा—एम. ए., साहित्यरत्न, आर. डी. एस. (लंदन)। व्यवसाय—नौकरी। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1952 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—अज्ञात। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—द्वारा—जान्स पब्लिक लाइब्रेरी, पालीवाल पार्क, आगरा।

अन्य—जीवन में अनेक संघर्षों से जूझते रहे। मुहर्रिरी से लेकर पत्रकारिता तक की। सम्प्रति—जांस पब्लिक लाइब्रेरी, आगरा मे पुस्तकालयाध्यक्ष के पद पर कार्य-रत।

साहित्य-सेवा—पहली रचना सन् 1956 ई. में "अजंता" (हैदराबाद) में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक मंचों से काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी केन्द्रों से कविता, कहानी, लेख, रिपोर्ताज, यात्रा-संस्मरण आदि का प्रसारण। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध। खड़ी बोली के अतिरिक्त ब्रजभाषा में काव्य-सृजन तथा कहानी, नाटक, उपन्यास, निबन्ध आदि का भी लेखन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) ठहरो क्षण भर (काव्य-संकलन), (2) नागफनी और धुंआ, (3) काँच के तन, मोम के मन (दोनों उपन्यास), (4) एक और वीरांगना, (खण्ड-काव्य) तथा (5) हिम शिखर बलिदान मांगता है। (सम्पादित)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) अग्नि-वृक्ष (उपन्यास), (2) मिलन के गीत (गीत-संग्रह, (3) मोम रश्मि तथा कटे पंख (कहानी-संग्रह)।

विशेष—कविताओं की भाषा सरल तथा हृदयग्राही। छन्द, शिल्प आदि की दृष्टि से उत्तम। अनेक रचनाएँ मुक्त-छन्द में। कविताओं के प्रमुख विषय पीड़ा, संत्रास, घुटन तथा विद्रोह। राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में लिखी गई कविताओं के अतिरिक्त कुछ प्रणय-गीतों का भी सृजन।

काव्योदाहरण—

"शहर भी अस्तित्व तक खोने लगे,
आदमी अब छल-कपट होने लगे,
गंध ताजा इन हवाओं में कहाँ,

फूल-पत्ते, कीट-खग रोने लगे,
आदमी खुद खुदकुशी का सबब हो,
जिन्दगी को यंत्रवत् ढोने लगे,
नगर को यह रोशनी ही खा रही,
आचरण तक कैक्टस बोने लगे,
गाँव को लौटें 'मिलन' अपने चलो,
राज पथ करने महज टोने लगे।"

श्री मूलचन्द्र शर्मा "नादान"

पिता—श्री गोपीलाल शर्मा । जन्मतिथि—10 जुलाई, सन् 1937 ई. । जन्मस्थान—भरतपुर । शिक्षा—मैट्रिक । व्यवसाय—व्यापार । काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—स्मरण नहीं । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1960 ई., हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर में । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से । वर्तमान पता—खान-पान व्यवस्थापक, रेलवे स्टेशन, भरतपुर ।

अन्य—साहित्य के गहन अध्ययन में विशेष रुचि ।

साहित्य-सेवा—सन् 1962 ई. में पहली बार रचना प्रकाशित, तत्पश्चात् अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन । अनेक मंचों से काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी के मथुरा-केन्द्र से रचनाओं का प्रसारण । अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध । खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा में काव्य-सृजन ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) भारत निराला है एवं (2) राय बरेली की हार (काव्य) ।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक स्फुट रचनाएँ ।

विशेष—"नादान जी" हास्य-व्यंग्य के कवि के रूप में जाने जाते हैं । यों, आपने भक्ति एवं करुण रस की कविताएँ भी लिखीं हैं तथा सामयिक-समस्याओं पर भी लेखनी उठाई है । भाषा, भाव, छन्द, शिल्प आदि की दृष्टि से रचनाएँ सामान्य, परन्तु हृदयग्राही ।

काव्योदाहरण—

"भारत का सैनिक निर्भय हो, साहस से रण में लड़ता है ।
साहस हो तो "गाजी" को भी क्षण में वीर डुबा देता है;
साहस हो तो नैट, मिराजों को भी धूल चटा देते हैं,
साहस हो तो तोपों के आगे सैनिक वक्ष अड़ा देते हैं;
साहस हो तो खुखरी से सैनिक, दस-दस शत्रु मिटा देते हैं ।

भारत का सैनिक बलिदानी।
रण में करता है कुरबानी।
तोप टैंक बम्बों के आगे लड़ता रहता है तूफानी ।।"

(भारत निराला है, पृष्ठ 15)

श्री निखिल सन्यासी

वास्तविक नाम—श्री गोविन्द सक्सेना। पिता—श्री हरचरन बिहारी लाल सक्सेना। जन्मतिथि—15 जुलाई, सन् 1937 ई.। जन्मस्थान—मैनपुरी। शिक्षा—विशारद। व्यवसाय—लिपिक। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1951 ई.। प्रथमबार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1956 ई., मेला बटेश्वर (आगरा) में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—द्वारा, एम. डी. जैन इण्टर कालेज, हरीपर्वत, आगरा।

अन्य—सम्पूर्ण जीवन संघर्षमय रहा। सम्प्रति—आगरा के एम. डी. जैन इण्टर कालिज में प्रधान-लिपिक के पद पर कार्यरत।

साहित्य-सेवा—पहली रचना सन् 1960 ई. में प्रकाशित, तत्पश्चात् अनेक पत्र-पत्रिकाओं में कविताओं तथा कहानियों का प्रकाशन। काव्य-सृजन के अतिरिक्त कहानियाँ तथा उपन्यास भी लिखे। अनेक मंचों से काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी केन्द्रों से रचनाओं का प्रसारण।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) यादों के चम्पई बबूल—(गीत-संग्रह), तथा (2) अनुप्रिया (उपन्यास)। इनके अतिरिक्त अनेक संकलन-ग्रंथों में भी कविताएँ सम्मिलित।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) अनाम (कविता-संग्रह), (2) राही एक, छह पड़ाव, (3) कांटा और कसक (4) रिश्ते तथा (5) एक था प्यासा कुँआ (सभी उपन्यास)। अनेक स्फुट कविताएँ तथा कहानियां।

विशेष—अधिकतर शृंगारी गीत लिखे हैं। कुछ रचनाओं में पीड़ा और कसक की अभिव्यक्ति भी है। राजनीतिक सन्दर्भों को भी एक नया रूप देकर गीतों में बांधा है। परिष्कृत, संस्कृतनिष्ठ टकसाली भाषा, भाव-गाम्भीर्य तथा शिल्प-सौन्दर्य की सभी-विशेषताएँ इनके गीतों में पाई जाती हैं। सम्प्रेषणीयता, सरलता एवं हृदय ग्राह्यता इनकी रचनाओं के विशेष गुण हैं।

काव्योदाहरण—

"छू न सका आकाश धरा से जन्म-जन्म का नाता टूटा,
पंख जले ऐसे, चाहों ने यत्नों की फिर फ़सल न बोयी !
बिछुड़न की मदिरा के तीखे घूँट पिए, अंगारे खाये,

नागफनी के आलिंगन में, बंदी प्राण बहुत अकुलाए;
घाव किसी को नहीं दिखाये, दर्द किसी को नहीं लिखाए,
मन के बनपाँखी फिर भी तो छोर गगन का नाप न पाए;
अमृत पाने के लालच में, विष का कंचन-घट भी छूटा,
प्यास कुंआरी, लहर-लहर के आगे-फूट-फूट कर रोयी।"

(यादों के चम्पई बबूल, पृ. 53)

श्री राधेश्याम अग्रवाल

पिता—श्री मनोहर लाल अग्रवाल। जन्मतिथि—10 अगस्त, सन् 1938 ई.। जन्म-स्थान—मथुरा। शिक्षा—एम. ए., साहित्यरत्न। व्यवसाय—प्रकाशन एवं पत्रकारिता। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1956 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—14 सितम्बर, सन् 1968 ई., हिन्दी प्रचार सभा, मथुरा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—100/5 जगन्नाथपुरी, मथुरा।

अन्य—साहित्य, संस्कृति, शिक्षा, पत्रकारिता एवं प्रकाशन कार्य में अभिरुचि। अनेक शैक्षणिक, सामाजिक तथा साहित्यिक संस्थाओं से सम्बन्धित।

साहित्य-सेवा—सन् 1970 ई. में पहली कविता प्रकाशित, तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। हिन्दी प्रचार सभा, मथुरा से सम्बद्ध। 'शिक्षक संसार' तथा 'ज्ञानदा' (मासिक) पत्रों का सम्पादन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) बिम्ब और प्रतिबिम्ब (कविता-संग्रह) (2) लाल बलबीर और उनका काव्य, (3) अंग्रेजी-हिन्दी शब्द कोष (संपादित), शिवपुराण और (5) महाभारत (हिन्दी अनुवाद), (6) कबीर पदावली, (7) सूर पदावली, (8) मीरा पदावली, (9) तुलसी पदावली (सम्पादित) एवं अनेक बालोपयोगी पुस्तकें।

अप्रकाशित कृतियाँ—साहित्य-गंधा (निबन्ध-संग्रह), (2) ब्रज के आधुनिक लोक-गीत, (3) शैक्षिक समस्यायें और सुझाव (4) समाज और चलचित्र तथा (5) विन्दु-विन्दु सिन्धु (काव्य-संकलन)। इनके अतिरिक्त अनेक अन्य रचनाएँ।

विशेष—साहित्यिक-दृष्टि से कविताएँ सामान्य, परन्तु हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

मैं बुरा तो हूँ, किन्तु इतना बुरा नहीं
कि किसी के केश-पाश में भी न सज सकूँ,
चाहे रूप-रंग नहीं है, किंतु सुगंधि तो मुझमें है
क्या रूप रंग ही सजायेगा ?
सुगंधि की कोई जरूरत नहीं !

नहीं प्रिय, मुझे रूप से क्या, रंग से क्या,
मैं तो सुगंधि का उपासक हूँ। मुझे शाश्वत प्रेम चाहिए,
रूप नहीं, तन नहीं, मन चाहिए।

(बिम्ब-प्रतिबिम्ब, पृ. 13)

श्री ओमप्रकाश सारस्वत "द्रोणाचार्य"

पिता—श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा। जन्मतिथि—2 नवम्बर, सन् 1938 ई. जन्मस्थान—मदावली, पो. जारखी (जि. आगरा)। शिक्षा—बी. ए., जे. टी. सी., एन. डी. एस., पी. ई. टी.। व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1966 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1969 ई., बटेश्वर मेला (जि. आगरा) में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—303 आर्य नगर, फीरोज़ाबाद (जि. आगरा)।

अन्य—समाज-सेवा के कार्य में विशेष रुचि। आर्य-समाज के कार्यों में संलग्न। पत्रिकारिता के क्षेत्र में भी कुछ समय तक कार्य किया।

साहित्य-सेवा—प्रथम रचना सन् 1975 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) महावीर वाणी (2) बाहुबलि वैभव तथा (3) प्रिय दर्शिनी इन्दिरा (सभी काव्य) एवं 80 के लगभग आशीर्वादात्मक लघु काव्य-पुस्तिकाएँ।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) नारद की कुण्डलियाँ, (2) महाराजा अग्रसेन, (3) धरती हमारी माँ है तथा (4) सुगन्ध कुण्डलियाँ—(सभी काव्य) एवं सैकड़ों की संख्या में स्फुट कविताएँ।

विशेष—भाषा, भाव, शिल्प की दृष्टि से रचनाएँ सरस, सरल तथा हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"स्याद्वादमय तीर्थंकर की वाणी अमर बनाती।
समाधान की स्थिर लहरी आनन्द भाव दर्शाती॥
जिन-वाणी में मन अवगाहन से निर्मल होता है।
ज्ञानोदय की प्रबल धार से चित्त शुद्ध होता है॥"

(महावीर वाणी : पृष्ठ 19)

डा. राधेश्याम कौशिक

पिता—श्री घनश्याम दास शर्मा। जन्मतिथि—13 दिसम्बर, सन् 1938 ई.। जन्मस्थान—भरतपुर (राज.)। शिक्षा—एम. ए., पी-एच. डी.। व्यवसाय—

लेखन । काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1955 ई. । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1956 ई., जसवन्त प्रदर्शनी, भरतपुर में । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से । वर्तमान पता— बासन दरवाजा, भरतपुर ।

अन्य—अध्ययन, भ्रमण तथा लेखन में ही निरन्तर व्यस्त । भारतीय संस्कृति, इतिहास तथा बंगला-साहित्य प्रिय विषय । हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत, अंग्रेजी तथा बंगला भाषाओं का अध्ययन । "स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास का शिल्प विकास" विषय पर अनुसंधान-कार्य ।

साहित्य-सेवा—प्रथम रचना सन् 1958 ई. में 'आदर्श' (कलकत्ता) में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन । अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ । अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध । काव्य-सृजन के अतिरिक्त कहानी, उपन्यास, शोध, समीक्षा एवं बालोपयोगी साहित्य का सृजन ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) हिन्दी के आंचलिक उपन्यास (आलोचना), (2) स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास का शिल्प विकास (शोध-प्रबन्ध), (3) थकन की नींद (4) असुन्दर के छोर, (5) बेटा किसका (उपन्यास), (6) चम्पा के फूल (बाल-कथाएँ) तथा (7) राजस्थान के किले (अन्वेषणात्मक) ।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक स्फुट कविताएँ, लेख, कहानी आदि ।

विशेष—कविताएँ सरल, सरस तथा हृदयग्राही ।

काव्योदाहरण—

"अँबुआ के बौर-बौर,
बगिया में ठौर-ठौर,
मेघों की छाँव तले—
कोयलिया बोल रही ।।
निबुआ के पातों में,
कलियों के गातों में,
अल्हड़ मन पुरवैया—
सिहरन सी घोल रही ।।

"तपस्विनी" कृष्णा माँ

पिता—पं. गंगा प्रसाद शास्त्री । जन्मतिथि—कार्तिक शुक्ला, अक्षय नवमी, सं. 1996 वि. (सन् 1939 ई.) । जन्मस्थान—मथुरा । शिक्षा—घर पर ही । काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1954 ई. । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1954 ई., चित्रकूट में । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से । वर्तमान पता—गली कसेरान, मण्डी राम दास, मथुरा ।

नहीं प्रिय, मुझे रूप से क्या, रंग से क्या,
मैं तो सुगंधि का उपासक हूँ। मुझे शाश्वत प्रेम चाहिए,
रूप नहीं, तन नहीं, मन चाहिए।

(बिम्ब-प्रतिबिम्ब, पृ. 13)

श्री ओमप्रकाश सारस्वत "द्रोणाचार्य"

पिता—श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा। जन्मतिथि—2 नवम्बर, सन् 1938 ई.। जन्मस्थान—मदावली, पो. जारखी (जि. आगरा)। शिक्षा—बी. ए., जे. टी. सी., एन. डी. एस., पी. ई. टी.। व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1966 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1969 ई., बटेश्वर मेला (जि. आगरा) में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—303 आर्य नगर, फीरोज़ाबाद (जि. आगरा)।

अन्य—समाज-सेवा के कार्य में विशेष रुचि। आर्य-समाज के कार्यों में संलग्न। पत्रिकारिता के क्षेत्र में भी कुछ समय तक कार्य किया।

साहित्य-सेवा—प्रथम रचना सन् 1975 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) महावीर वाणी (2) बाहुबलि वैभव तथा (3) प्रिय दर्शिनी इन्दिरा (सभी काव्य) एवं 80 के लगभग आशीर्वादात्मक लघु काव्य-पुस्तिकाएँ।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) नारद की कुण्डलियाँ, (2) महाराजा अग्रसेन, (3) धरती हमारी माँ है तथा (4) सुगन्ध कुण्डलियाँ—(सभी काव्य) एवं सैकड़ों की संख्या में स्फुट कविताएँ।

विशेष—भाषा, भाव, शिल्प की दृष्टि से रचनाएँ सरस, सरल तथा हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"स्याद्वादमय तीर्थंकर की वाणी अमर बनाती।
समाधान की स्थिर लहरी आनन्द भाव दर्शाती॥
जिन-वाणी में मन अवगाहन से निर्मल होता है।
ज्ञानोदय की प्रवल धार से चित्त शुद्ध होता है॥"

(महावीर वाणी : पृष्ठ 19)

डा. राधेश्याम कौशिक

पिता—श्री घनश्याम दास शर्मा। जन्मतिथि—13 दिसम्बर, सन् 1938 ई.। जन्मस्थान—भरतपुर (राज.)। शिक्षा—एम. ए., पी-एच. डी.। व्यवसाय—

लेखन । काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1955 ई. । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1956 ई., जसवन्त प्रदर्शनी, भरतपुर में । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से । वर्तमान पता— बासन दरवाजा, भरतपुर ।

अन्य—अध्ययन, भ्रमण तथा लेखन में ही निरन्तर व्यस्त । भारतीय संस्कृति, इतिहास तथा बंगला-साहित्य प्रिय विषय । हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत, अंग्रेजी तथा बंगला भाषाओं का अध्ययन । "स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास का शिल्प विकास" विषय पर अनुसंधान-कार्य ।

साहित्य-सेवा—प्रथम रचना सन् 1958 ई. में 'आदर्श' (कलकत्ता) में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन । अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ । अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध । काव्य-सृजन के अतिरिक्त कहानी, उपन्यास, शोध, समीक्षा एवं बालोपयोगी साहित्य का सृजन ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) हिन्दी के आंचलिक उपन्यास (आलोचना), (2) स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास का शिल्प विकास (शोध-प्रबन्ध), (3) थकन की नींद (4) असुन्दर के छोर, (5) बेटा किसका (उपन्यास), (6) चम्पा के फूल (बाल-कथाएँ) तथा (7) राजस्थान के किले (अन्वेषणात्मक) ।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक स्फुट कविताएँ, लेख, कहानी आदि ।

विशेष—कविताएँ सरल, सरस तथा हृदयग्राही ।

काव्योदाहरण—

"अँबुआ के बौर-बौर,
बगिया में ठौर-ठौर,
मेघों की छाँव तले—
कोयलिया बोल रही ।।
निबुआ के पातों में,
कलियों के गातों में,
अल्हड़ मन पुरवैया—
सिहरन सी घोल रही ।।

"तपस्विनी" कृष्णा माँ

पिता—पं. गंगा प्रसाद शास्त्री । जन्मतिथि—कार्तिक शुक्ला, अक्षय नवमी, सं. 1996 वि. (सन् 1939 ई.) । जन्मस्थान—मथुरा । शिक्षा—घर पर ही । काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1954 ई. । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1954 ई., चित्रकूट में । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से । वर्तमान पता—गली कसेरान, मण्डी राम दास, मथुरा ।

अन्य—तपस्विनी तथा ब्रह्मचारिणी कृष्णा मां को बाल्यावस्था में अनायास ही श्रीकृष्ण-विग्रह की प्राप्ति हुई; तब से ये उसी की सेवा-पूजा एवं आराधना में संलग्न हो गईं तथा आजीवन अविवाहित रहने का कठोर संकल्प लेकर, भगवद्-भक्ति में अधिकाधिक निमग्न होती चली गई। आपने अपनी आध्यात्मिक-उपलब्धियों, नाम-संकीर्तन तथा पद-गायन में असाधारण ख्याति एवं लोक-प्रियता प्राप्त की है। देश के विभिन्न भागों में आपके सैकड़ों शिष्य-शिष्यायें हैं।

साहित्य-सेवा—प्रथम कविता सन् 1965 ई. में "महाप्राण" (पाक्षिक) चिड़ावा में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओ में प्रकाशन। अनेक मंचों से काव्य-पाठ। खड़ी बोली के अतिरिक्त ब्रजभाषा में भी काव्य-सृजन। चिन्तन प्रधान आध्यात्म तथा भक्ति विषयक निबंध-लेखन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) श्री जुगल पद वन्दन। (पद-संग्रह)। (2) आत्मजा (गद्य-काव्य)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) आस्था (गद्य-काव्य), (2) अर्चन, (3) आराधन (पद्य-संग्रह) तथा (4) चिन्तन (निबंध)। अन्य अनेक स्फुट रचनाएँ।

विशेष—आपके पद मीरा, सूर तथा तुलसी के पदों के समकक्ष रखे जा सकते हैं। भाव, भाषा, शिल्प-सौन्दर्य सभी दृष्टियों से अनुपम। पदों का लालित्य एवं माधुर्य सहृदयों को बरबस अपनी ओर आकृष्ट करता है। सभी पद हिन्दी-साहित्य की अमूल्य निधि हैं।

काव्योदाहरण—

"प्रिया-छबि लखि, रतिपति बलिहारी।
अतुलित अनुपमेय छबि सीमा, लाजत सरद चन्द्र उजियारी॥
बिमल, बिसाल, रसालय लोचन, रुचि-रचि क़ाजर रेख सँवारी॥
अलकन अलिन मनो कमलासन, केलि कलोल करत रखवारी॥
सुघर समुज्वल लसत दसन दुति, जनु जड़ि मुक्ता रूप-अपारी॥
सरसित मृदुल हासरस अधरन जिमि बिकसित कोमल कलिप्यारी॥
चित्रित चितव चकित ह्वै 'कृष्णा', पलकन पलक न दृग चिक डारी॥

(श्री जुगल पद बंदन, पृ. 87)

डा. सुरेश पाण्डेय

पिता—डा. ब्रजनाथ पाण्डेय। **जन्मतिथि**—1 दिसम्बर 1939 ई.। **जन्म-स्थान**—मथुरा। **शिक्षा**—इण्टरमीडिएट, ए. एम. बी. एस.। **व्यवसाय**—चिकित्सा। **काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष**—1967 ई.। **प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ**—सन्

1968 ई., मथुरा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—सदर बाजार, मथुरा।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1969 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। आकाशवाणी केन्द्र से रचनाओं का प्रसारण। हिन्दी प्रचार सभा, मथुरा के मन्त्री। अनेक पुस्तकों के सम्पादक काव्य-सृजन के अतिरिक्त निबंध, कहानी तथा आलोचना लेखन। अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) बन्द जिन्दगी और विद्रोह (कविता-संग्रह)।

अप्रकाशित कृतियाँ—खण्ड-खण्ड दर्द (कविता) तथा अन्य स्फुट रचनाएँ।

विशेष—भाव, भाषा तथा शिल्प की दृष्टि से रचनाएँ समृद्ध एवं हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"मर गया प्रजातंत्र। और। हम अघोरी से—
उसके शव को। कन्धे पर। रखे फिर रहे हैं—
नगरों में। गाँवों में। गलियों में—
चौराहों पर। इस आशा में। सिद्ध हो ही जायेगा।
अपनी इच्छा पूर्ति के साधन का महामंत्र।"

(बन्द जिन्दगी और विद्रोह, पृ. 3)

श्री रामावतार सिंह चौहान "शशि"

पिता—श्री महीपाल सिंह। जन्मतिथि—2 फरवरी, 1940 ई.। जन्म-स्थान—खरफरी (जि. मैनपुरी)। शिक्षा—स्नातक। व्यवसाय—कृषि तथा लेखन। काव्य-सृजन का प्रारम्भ—1960 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1960 ई., आगरा में, । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। स्थायी पता—खरफरी (मैनपुरी)। वर्तमान पता—238 गाड़ीवान, मैनपुरी।

अन्य—हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी तथा संस्कृत का ज्ञान। अनेक कार्यों में संलग्न। (वर्तमान सन् 1984 में, मूर्ति-चोरी के अपराध में कारावासी)।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1962 ई. में "जनतंत्र" (साप्ताहिक) मैनपुरी में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण। काव्य-सृजन के अतिरिक्त उपन्यास एवं गद्य-लेखन में भी रुचि।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) गांधी के जवाहर, (2) चीन को चुनौती तथा (3) तात्या टोपे (सभी काव्य)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) सुकन्या, (2) अंजुरी भर सपने (3) गुफाओं में गवाक्ष, (4) तीन बंद तथा (5) लोहे की लंका (उपन्यास)।

विशेष—ओजस्वी काव्य-पाठ के लिए ख्याति लब्ध। कविताएँ साहित्यिक दृष्टि से सामान्य तथा छन्द-दोष युक्त, भाषा में भी शैथिल्य, परन्तु भावों की दृष्टि से हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"सोने के कलसों में तुम चाहे विष भेजो,
लेकिन भारत शंकर बन कर है पी सकता।
है एक हाथ में पंचशील का गंगाजल,
फिर भी सौ-सौ ज्वाला-मुखियों सा फट सकता।"

(चीन को चुनौती, पृष्ठ 15)

अन्य कविगण—

इस वर्ग के जो कवि पुस्तक रूप में प्रकाशित होते हुए भी मंचीय-कवि के रूप में केवल क्षेत्रीय-ख्याति ही अर्जित कर सके हैं, उनका संक्षिप्त-परिचय निम्नानुसार है—

(1) **श्री प्रताप दीक्षित**—अपका जन्म 1931 ई. में हुआ। आप डाक-तार विभाग में कार्यरत हैं। आपके द्वारा लिखित (1) 'बांसों का वन' शीर्षक काव्य-संकलन प्रकाशित हो चुका है। आप व्यंग्य प्रधान कविताएँ लिखने के लिए प्रसिद्ध हैं। साहित्यिक दृष्टि से आपकी रचनाएँ समृद्ध तथा हृदयग्राही हैं। वर्तमान पता है—रावली, आगरा।

(2) **चौधरी सुखराम सिंह**—आपका जन्म 4 अगस्त सन् 1935 ई को ग्राम घाटमपुर (जि. मथुरा) में हुआ। आप सरकारी-नौकरी में हैं। आपकी लिखित (1) हिन्दी का साहित्य का इतिहास तथा (2) नियोजन देश और विदेश में (अंग्रेजी से अनूदित)—ये दो गद्य-पुस्तकें प्रकाशित हैं। आप खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा—दोनों में काव्य-रचना करते हैं। आपकी कविताएँ साहित्यिक दृष्टि से सम्पन्न तथा हृदयग्राही होती हैं। वर्तमान पता है—चौधरी निवास, अर्जुन नगर (वैस्ट), आगरा।

(3) **श्री राम कृष्ण शर्मा**—आपका जन्म 25 अक्टूबर सन् 1936 को ग्राम सुहारी, पो. भुसावर (जिला भरतपुर) में हुआ था। आप महारानी जया कालिज, भरतपुर, के हिन्दी-विभाग में व्याख्याता हैं। आपके द्वारा लिखित (1) काव्यानन्द तथा (2) सभ्य सूर्य (काव्य)—ये दो पुस्तकें प्रकाशित है। आप खड़ी बोली में काव्य-सृजन करते हैं। आपका वर्तमान पता है—सरस्वती सदन, मौहल्ला कौड़ियान, भरतपुर।

"ख" वर्ग के अप्रकाशित कवि—

इस वर्ग के कवियों की नामावली निम्नानुसार है। जिन नामों के आगे एक गुणक चिह्न × लगा है, वे मंचीय-कवि के रूप में अन्तर्प्रान्तीय तथा जिनके आगे दो गुणक चिह्न ×× लगे हैं, वे अखिल भारतीय स्तर की ख्याति अर्जित कर चुके हैं—

(1) श्री राघवेन्द्र शर्मा "विकल" (1931 ई.)
(2) श्री शिशुपाल सिंह "निर्धन" (1931 ई.)××
(3) श्री वीरेन्द्र शर्मा (1931 ई.)
(4) सुश्री कुसुम कुमारी सिन्हा (1932 ई.)×
(5) श्री लक्ष्मणसिंह सैंगर (1933 ई.)
(6) श्री ओम प्रकाश उपाध्याय "मधुर" (1934 ई.)
(7) श्री विनोद 'विक्षिप्त' (1934 ई.)
(8) डा. रामस्वरूप त्रिपाठी (1935 ई.)
(9) श्रीमती पुष्पा सक्सेना (1938 ई.)×
(10) श्री सत्यदेव 'आजाद' (1938 ई.)
(11) श्री आत्म प्रकाश शुक्ल (1939 ई.)××
(12) श्री ज्ञानेन्द्र अग्रवाल (1940 ई.)
(13) श्री सुभाष राठी (1940 ई.)
(14) श्री बहादुर सिंह निर्दोषी (1940 ई.)×

उक्त कवियों के काव्योदाहरण सहित संक्षिप्त-परिचय आगे प्रस्तुत हैं—

(1) **श्री राघवेन्द्र शर्मा "विकल" (सिविल कोर्ट, एटा)**—आप सरकारी कर्मचारी हैं। आपकी काव्य-रचना का एक उदाहरण निम्नलिखित है—

"सिन्धु में खलबली हो गयी, साध क्या मनचली हो गयी ?
मुग्ध अलि ने जिसे छू लिया, शोडषी वह कली हो गई ।।
याचना का नया रंग है, ज्यों सुरा के सुधा संग है,
आपके रूप की गंग है, क्यों दृगों की तृषा तंग है।
वासना का नशा जब चढ़ा, कामना बावली हो गयी ।।

(2) **श्री शिशुपाल** सिंह **"निर्धन" (नगला मुईउद्दीनपुर, पो. खुरजा, जिला-बुलन्दशहर)**—आपका मुख्य व्यवसाय कृषि तथा मंचीय काव्य-पाठ है। आपकी काव्य-रचना का एक उदाहरण निम्नलिखित है—

"एक पुराने दुख ने पूछा—"क्या तुम अभी वहीं रहते हो ?"
उत्तर दिया—"चले मत आना, मैंने वह घर बदल दिया है।"

जग ने मेरे सुख-पंछी के, पांखों में पत्थर बाँधे हैं।
मेरी विपदाओं ने अपने, पैरों में पायल साधे हैं।
एक वेदना मुझसे बोली—, मैंने अपनी आँख न खोली।
उत्तर दिया—"चली मत आना, मैंने वह उर बदल दिया है।"

(3) **श्री वीरेन्द्र शर्मा (विष्णुपुरी, अलीगढ़)**—आप सरकारी कर्मचारी हैं। आपकी काव्य-रचना का एक उदाहरण निम्नलिखित है—

'मैं किसी की मांग का सिन्दूर हूँ, मुझसे न बोलो।
शर्वरी के अंक में पलता सुधाकर, देख नभ के भी सहम जाते सितारे।
बंध न पाया रूप के आकर्षणों में, हूँ वही योगी साक्ष्य आँसू तुम्हारे।
मत कहो-रंगीनियों का दास हूँ मैं, यह तुम्हारी मात्र निर्मम भर्त्सना है।
एक ही सर्वस्व मैं अपनी सजनि का, एक ही अपरूप मेरी साधना है।"

(4) **सुश्री कुसुम कुमारी सिन्हा (शिवपुरी, बुलन्दशहर)**—आप अध्यापन कार्य करती हैं। आपकी काव्य-रचना का एक उदाहरण निम्नलिखित है—

"इन चंचल नयनों से छिप कर, वह मेरे मन में रहते हैं,
मेरी सिसकी, मेरी आहें, सब चुपके-चुपके सहते हैं,
तुम मेरे नयनों से छिपने को उनका अभिमान न कहना।
सखि, उनको पाषाण न कहना॥"

(5) **श्री लक्ष्मणसिंह सेंगर (सासनी, जिला अलीगढ़)**—आप अध्यापक हैं। आपकी काव्य-रचना का एक उदाहरण निम्नलिखित है—

"नैनन पेखत आज भटू हम, सोउर मोद बतावत भारी।
उच्च सिंहासन भौन बनो सुचि, तापै रहै छबि छत्र की न्यारी॥
मोतिन की लटकैं बहु झालर, जीन कसौ ढिग सिंह सवारी।
धूप सुगंध भरी अति मोहक, तँह बिराजत मात हमारी॥"

(6) **श्री ओम प्रकाश उपाध्याय "मधुर" (फीरोजाबाद, जिला—आगरा)**—आप अध्यापक हैं। आपका एक काव्य-संकलन भी प्रकाशित हो चुका है। आपकी काव्य-रचना का एक उदाहरण निम्नलिखित है—

"सभ्यता के नए दौर का क्रम चला, लापता हो गए आचरण के चरण।
बूंद पानी नहीं आँख की कोर में, बढ़ रहा आज निर्लज्ज वातावरण।
क्यों सुमन-मन खिले अनखिले ही रहे; तन मिले, मन मिले, अनमिले ही रहे।
पास रह कर भी हम दूर होते रहे; आवरण के नए सिलसिले ही रहे॥
आदमी तक मिला खोजने पर नहीं, देवता का यहाँ हो रहा अवतरण।"

(7) **श्री विनोद विक्षिप्त (गली पीरपंच, मथुरा)**—आप अध्यापक हैं। आपकी काव्य-रचना का एक उदाहरण निम्नलिखित है—

"वरण क्यों करूँ मैं खुशी का बताओ,
नहीं साथ गम का मुझे जब सताता ?
सदा पान विष का किया है जिन्होंने,
उन्हें कब अमी का कोई घूँट भाता ?
सदा शूल ने है निमंत्रण पठाया,
नहीं फूल को याद पल भर को आई;
सुलगते चतुर्दिक् जहाँ अग्नि शोले,
उसी बीच से राह मैंने बनाई;
नहीं मान की भूख मुझको ही है,
न अपमान पर मन है आँसू बहाता ।।"

(8) **डा. रामस्वरूप त्रिपाठी (प्रतापनगर, आगरा)**—आप आगरा कालिज में हिन्दी के प्राध्यापक हैं। आपकी काव्य-रचना का एक उदाहरण निम्नलिखित है—

"बोलो कबतक दूर रहेंगे, मेरा मस्तक, चरण तुम्हारे ?
जन्म-जन्म से प्राण जगा कर, मेरे स्वर में बोल रहे हो,
कभी-कभी लगता है जैसे भ्रम की आँखे खोल रहे हो;
पर जब भी मैं बाँह बढ़ाता, रहजाते अनछुए अजाने,
आँख-मिचौनी के नायक-से, लुकते-छिपते डोल रहे हो;
बोलो कब तक और चलेंगे, ये अभिनय मनहरण तुम्हारे ।।"

(9) **श्रीमती पुष्पा सक्सेना (रेल्वे कालोनी, कासगंज, जिला—एटा)**—आप गृहिणी-धर्म का पालन कर रही हैं। आपकी काव्य-रचना का एक उदाहरण निम्नलिखित है—

"तुम कभी आओ, न आओ द्वार मेरे,
मैं तुम्हारी ओर आऊँगी, मिलोगे ?
रह सकूँगी क्या प्रतीक्षा के सहारे,
क्यों सुलभ होते नहीं दर्शन तुम्हारे,
किस अवधि तक ज्वार को रोके रहेंगे,
लोचनों के बीच सातों सिन्धु-खारे ?
तुम किनारे बैठकर लहरें निहारो,
मैं जलधि झकझोर आऊँगी, मिलोगे ?"

(10) **श्री सत्यदेव "आजाद" (द्वारा-आकाशवाणी, मथुरा)**—आप मूलतः संभल (जि. मुरादाबाद) निवासी हैं तथा आकाशवाणी केन्द्र, मथुरा के 'उद्घोषक' पद पर कार्य-रत हैं। आपकी काव्य-रचना का एक उदाहरण निम्नलिखित है—

"दूर क्षितिज के पार, सुरीली वंशी कौन बजाता ?
आज युगों के बाद अकेली किसने रात जगाई ?
यह किसकी आवाज, धरा को चीर, गगन में छाई ?
महामिलन है आज कहीं, या कोई विरही रोया ?
घर उजड़ा है या कि महल में बजती है शहनाई ?
बड़ा अनोखा विश्व, यहाँ धरती रोती नभ गाता ।
दूर क्षितिज के पार, सुरीली वंशी कौन बजाता ?

(11) श्री **आत्म प्रकाश शुक्ल** (अलीगंज, जिला-एटा)—आप एक इन्टर कालिज के प्राचार्य पद पर कार्य-रत हैं। थोड़े ही समय में गीतकार के रूप में आपने अखिल भारतीय ख्याति अर्जित की है। आप खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा दोनों में ही काव्य-सृजन करते हैं। आपके खड़ी बोली के गीत जहाँ साहित्यिक दृष्टि से उत्तम तथा हृदयस्पर्शी हैं, वहीं ब्रजभाषा की रचनाएँ भाषा एवं शिल्प की दृष्टि से शिथिल हैं। आपकी काव्य-रचना का एक उदाहरण निम्नलिखित है—

"पान-फूल सी देह, देह पर छुई-मुई नखरे,
तुम्हें निभाए, जो जीवित वैतरणी पार करे।
'हाँ' कहना, 'ना' कहना, अक्सर एक साथ कहना,
खूब तुम्हें आता है, अपने पहलू पर रहना,
अर्थ-हीन तर्कों से कर-कर जिरह वकीलों सी,
बुद्धू बना लिया करती है, मिट्ठू को मैना,
मेरी गति उस अभ्यागत सी,
जिसकी सारी रात जाय देहरी पर शीश धरे।"

(12) श्री **ज्ञानेन्द्र अग्रवाल** (खिरनीगेट, अलीगढ़)—आप मुस्लिम विश्व-विद्यालय, अलीगढ़ के हिन्दी-विभाग में कार्य-रत हैं। आप हिन्दी तथा उर्दू में समान रूप से काव्य-सृजन करते हैं। आपकी सभी रचनाएँ पुष्ट होती हैं। आपकी कविता का एक उदाहरण निम्नलिखित है—

"हमने सपनों की फसलें काटी हैं,
लेकिन सच से समझौता नहीं किया।
पतझर के पात बने, टूटे, भटके—
लेकिन बसन्त को न्यौता नहीं दिया।
हमसे मिलना यदि बहुत जरूरी हो,
हमसे बन जाना, फिर हमसे मिलना।
जिन्दगी जहर पर यों आसक्त हुई,
रस की सारी मनुहारें व्यर्थ लगीं।

इतना भटकाया बंजारे मन को—
बस, अर्थहीन बातें ही अर्थ लगीं।
तम से मिलना यदि बहुत जरूरी हो,
तम-से बन जाना, फिर तम से मिलना।

(13) **श्री सुभाष राठी (सिकन्दराराऊ, जिला—अलीगढ़)**—आप दूकानदारी करते हैं तथा हिन्दी और उर्दू – दोनों में कविताएँ लिखते हैं। आपकी काव्य-रचना का एक उदाहरण निम्नलिखित है—

"गीत दर्द का भाव न पाते, आँसू कभी न खारा होता।
उर में प्यार जन्म ले लेता, तुमने अगर पुकारा होता।।
वेश्या सी बेशर्म पीर को, मेरे उर में स्थान न होता,
लहरों की राहों को तट तक, सागर में तूफान सँजोता;
क्यों जीवन बिखरा सा होता, तुमने अगर सँवारा होता ?"

(14) **श्री बहादुर सिंह 'निर्दोषी' (सिरसागंज, जिला-मैनपुरी)**—आप एक इन्टर कालिज में प्राध्यापक हैं तथा वीररस की ओजस्वी-रचनाएँ लिखने तथा पढ़ने के लिए विशेष प्रसिद्ध हैं।

अन्य कविगण—

"ख" वर्ग के अप्रकाशित कवियों में कुछ अन्य प्रमुख नाम निम्नलिखित हैं—

(1) **आगरा नगर एवं जिला**—डा, राम अवतार शर्मा "राम", डा. प्रणवीर चौहान ×, श्रीमती इन्दिरा फौजदार, श्री शंभूदयाल 'हृदयेश' तथा डा. योगेश चन्द्र मिश्र।

(2) **मथुरा नगर एवं जिला**—(स्व.) बिशन चन्द्र अग्रवाल ×, डा. सुषमा भार्गव, डा. राजकुमारी शर्मा, श्रीमती सरस्वती देवी चतुर्वेदी, डा. उर्मिला शर्मा, श्रीमती सुषमा "विप्लव", श्री कुन्दन लाल "पंकज", डा. सुरेश चतुर्वेदी, डा. चंद्र किशोर पाठक, सर्वश्री चतुर्भुज चतुर्वेदी, महेश शर्मा, सत्येन्द्र बोस, सत्यनारायण याज्ञवल्क्य "सत्येन्दु" ×, ललिताचरण गोस्वामी, रामदयाल, जगदीश प्रसाद शर्मा "जितेन्द्र", ब्रजमोहन लाल शर्मा "मोहन", क्षेत्रपाल शर्मा, रामलखन शर्मा "राम", विश्वम्भर दयाल "चातक", राम दयाल तथा डा. सत्य जैसवाल।

(3) **अलीगढ़ नगर एवं जिला**—सर्वश्री राममोहन द्रोण तथा बनवारी लाल शर्मा (सिकन्दराराऊ), गंगा प्रसाद "गंग", हरिस्वरूप "धुरंधर", डा. रघुराज स्वरूप "राज", सुरेन्द्र "कपिल", शिवशरण गुप्ता, तथा राजेन्द्र मोहन कटारा "दादा हाथरसी"।

(4) **एटा नगर एवं जिला**—सर्वश्री हरिशंकर सक्सेना।

(5) **मैनपुरी नगर एवं जिला**—सर्वश्री श्री उमाशंकर शर्मा तथा कृपाशंकर 'शूल' (शिकोहाबाद)।

(6) **भरतपुर नगर एवं जिला**—सर्वश्री गोकुल प्रसाद महर्षि "रसिक", हीरालाल शर्मा "सरोज", श्री निवास ब्रह्मचारी, जयशंकर चतुर्वेदी "जय", रमेश चन्द्र भट्ट "चन्द्रेश", दिनेश शर्मा "मुकुट" तथा श्रीमती राजबाला शर्मा ।

(7) **मुरैना नगर एवं जिला**—श्री दिनेश भारद्वाज × ।

(8) **इटावा नगर एवं जिला**—श्री कौशल किशोर अवस्थी ।

(9) **बुलन्दशहर नगर एवं जिला**—सर्वश्री धर्मेन्द्र अरुणेश, विश्वनाथ शर्मा, राजेन्द्र सिंघल, प्यारेलाल शर्मा; हरिशंकर अग्रवाल, वीरेन्द्र शर्मा, जय प्रकाश परेशान, श्रीपाल सिंह "अज्ञात", राजेन्द्र कुमार "राजा", रमेशचन्द्र भारद्वाज, सुरेश चन्द्र "पवन", शिवकुमार सोती, कैलाश सक्सेना, तथा डा. ए. एस. भटनागर "राज" ।

टिप्पणी—उक्त नामों में जो मंचीय-कवि के रूप में अन्तर्प्रान्तीय-ख्याति अर्जित कर चुके हैं, उनके आगे गुणक चिह्न × लगा हुआ है । शेष कवि क्षेत्रीय ख्याति प्राप्त हैं ।



प्रकरण 6

ब्रजक्षेत्र के मंचीय हिन्दी-कवियों की नई पीढ़ी और उसका साहित्यिक-योगदान

1. सन् 1941 ई. से 1950 ई. के मध्य जन्मे कवि ।
2. सन् 1950 ई. के बाद जन्मे कवि ।

ब्रजक्षेत्र के मंचीय हिन्दी कवियों की नई पीढ़ी को निम्नलिखित दो वर्गों में बाँटा जा सकता है—

(1) सन् 1941 ई. से 1950 ई. के मध्य जन्मे कवि।

(2) सन् 1950 ई. के बाद जन्मे कवि।

इनमें से प्रथम वर्ग के कवियों को निम्नलिखित दो उप-वर्गों में विभाजित करना समीचीन रहेगा—

(क) पुस्तक रूप में प्रकाशित कवि।

(ख) पुस्तक रूप में अप्रकशित कवि।

द्वितीय वर्ग के प्रायः सभी कवि पुस्तक रूप में अप्रकाशित हैं, अतः उनका वर्गीकरण करने की आवश्यकता नहीं है।

1. सन् 1941 ई. से 1950 ई. के मध्य जन्में कवि

"क" उपवर्ग—इस उपवर्ग के (पुस्तक रूप में प्रकाशित) कवि निम्न-लिखित हैं—

1. डा. कृष्णचन्द्र पण्ड्या "पूषन"
2. श्री राधागोबिन्द पाठक
3. डा. राजेन्द्र "रंजन"
4. श्री विभांशु "दिव्याल"
5. श्री महावीर द्विवेदी
6. डा. वेदप्रकाश "अभिताभ"
7. श्री मुनीश "मदिर"
8. श्री श्रीकृष्ण शरद्

इन कवियों के सम्बन्ध में ज्ञातव्य-विवरण नीचे लिखे अनुसार है—

डा. कृष्णचन्द्र पण्ड्या "पूषन"

पिता—पं. कन्हैयालाल पण्ड्या। जन्मतिथि—आषाढ़ कृष्णा चतुर्दशी, सं. 1998 वि. (सन् 1942 ई.)। जन्म—गोवर्धन (जिला मथुरा)। शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी), पी-एच. डी.। व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1954 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1954 ई., गोवर्धन में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—कृष्णापुरी, मथुरा।

अन्य—सन् 1969 ई. में पी. सी. बागला कालिज, हाथरस में अध्यापन-कार्य। फिर रिसर्च के लिए वहाँ से त्यागपत्र देकर स्वतन्त्र-लेखन कार्य। सन् 1972 ई. में दो मास के लिए बी. एस. ए. कालिज, मथुरा में अध्यापन। सन् 1974 ई. से किशोरी रमण महाविद्यालय, मथुरा के हिन्दी-विभाग में प्राध्यापक। सम्प्रति—डी. लिट् के लिए शोध-कार्यरत।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1960 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक-पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक मंचों से काव्य-पाठ। सन् 1976 ई. से आकाशवाणी, मथुरा केन्द्र से वार्ताएँ प्रसारित। "सशस्त्र क्रान्तिकारी साहित्यकार और उनका हिन्दी गद्य-साहित्य पर प्रभाव" विषयक शोध-कार्य। खड़ी बोली के अतिरिक्त ब्रजभाषा में भी काव्य-सृजन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) चन्द्रशेखर-आजाद (खण्ड-काव्य)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) शोध-प्रबन्ध तथा अनेक गीत, नवगीत, लोक-गीत आदि।

विशेष—साहित्यिक-शिल्प की दृष्टि से कविताएँ सामान्य, परन्तु हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"केतकी की गन्ध-सी महकी तुम्हारी याद सारी रात।
सिरहाने बैठकर दुहरा गई बेसुध व्यथाओं को,
नयन कब रोक पाये तब दबी अन्तर्कथाओं को,
सुहाना लग चला अब तो अकेलापन,
कि जैसे आम फिर बौरा गए आँगन,
विकीरित कर चला हर रंध्र-वातायन अमित साह्लाद सारी रात।

श्री राधा गोबिन्द पाठक

पिता—श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक। जन्म-तिथि—17 नवम्बर, 1943 ई.। जन्मस्थान—बल्देव (जिला—मथुरा)। शिक्षा—बी. ए.। व्यवसाय—कावर-लघु-उद्योग। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1959 ई.। प्रथम बार मंचीय

काव्य-पाठ—सन् 1963 ई., फरह इण्टर कालेज, फरह (मथुरा) में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—विवेकालय, बल्देव (जि. मथुरा)।

अन्य—जीवन में अनेक संघर्ष रहे। सम्प्रति—निजी व्यवसाय में संलग्न।

साहित्य-सेवा—प्रथम कविता सन् 1961 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक मंचों से काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण। मुख्यतः ब्रजभाषा में काव्य-सृजन। कुछ कविताएँ खड़ी बोली मे भी। अनेक साहित्यिक-संस्थाओं से सम्बद्ध।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) गोबिन्द गीत (कविता-संग्रह)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) कुंभ-कलश तथा, (2) ब्रज-गुंजन (काव्य-संग्रह) एवं (3) कपिल पुकार (नाटक)। इनके अतिरिक्त स्फुट रचनाएँ।

विशेष—सम्प्रति: "ब्रजभाषा शब्द कोष" के निर्माण में संलग्न। सुमधुर छन्द-योजना; भाव, भाषा तथा शिल्प की दृष्टि से सभी रचनाएँ उत्तम।

काव्योदाहरण—

"पुण्यमयी ब्रज-रज परसन कूं हियरा लेत हिलोर।
जयति-जयति ब्रजधरा, जयति जय-जय मधुवन के मोर॥
मोह रही हर गली यहाँ की, उपवन, ताल, तमाल।
झूमि रहे हैं बन-विहार, झूमें बन-बन की डाल॥
नांच रहे हैं रीझ-रीझ बन, लता, कदम्ब, करील।
कालिन्दी के तीर कुहकती विहग वृन्द की रोर॥"

डा. राजेद्र रंजन

पिता—श्री हरिहर शास्त्री। जन्म-तिथि—29 नवम्बर, सन् 1944 ई.। जन्मस्थान—मथुरा। शिक्षा—एम. ए., पी-एच. डी.। व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1961 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1961 ई., किशोरी रमण इण्टर कालिज, मथुरा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—के. एल. इण्टर कालिज, सासनी (जि. अलीगढ़)।

अन्य—सम्प्रति के. एल. इण्टर कालिज, सासनी (जि. अलीगढ़) में अध्यापक। ब्रजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु सतत प्रयत्नशील।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1961 ई. में 'कालिज-पत्रिका' में प्रकाशित, तत्पश्चात् अनेक पत्र-पत्रिकाओं में कविताओं तथा लेखों का प्रकाशन। अनेक साहित्यिक-संस्थाओं तथा कार्यक्रमों से सम्बद्ध। "कालिज-मैगजीन" के सम्पादक। अनेक मंचों से काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी केन्द्रों से कविता एवं

वार्ताओं का प्रसारण। ब्रजभाषा में काव्य-सृजन के अतिरिक्त हिन्दी में निबन्ध-लेखन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) "केलिमाल" की भाव-निधि टीका, (2) भारतीय संगीत और स्वामी हरिदास, (3) स्वामी-हरिदास का तत्व-चिन्तन, (4) सिद्धान्त के पद और उनकी टीका, (सभी समीक्षात्मक) (5) निधिवन को सन्त (औपन्यासिक शैली में जीवनी), (6) सुपर्णा, (7) निष्ठा और निर्माण, (8) स्वामी हरिदास के सिद्धान्त तथा (9) आशा (सभी सम्पादित)। इनके अतिरिक्त "आशा" पत्रिका के "लोक शास्त्र अंक" तथा "शैक्षिक क्रांति अंक" का सम्पादन।

अप्रकाशित कृतियाँ–ब्रजभाषा के लगभग 100 छन्द तथा स्फुट लेख आदि।

विशेष—आपकी ब्रजभाषा की काव्य-रचनाएँ उत्तम कोटि की हैं। अपने सहज-संकोची स्वभाव के कारण मंच पर काव्य-पाठ हेतु बहुत कम ही जाते हैं।

काव्योदाहरण—

"घनश्याम के रंग रँगी उमँगी,
सुचि प्रेम पगी मन मोहन मानी।
वृषभानु की लाड़ली—प्यारी लली,
नव कुंजन नायिका रूपन खानी॥
मुरलीधर की अँखियाँन में झूमत,
गूँजत बाँसुरी में रससानी।
कवि "रंजन" नैंकु निहार अली,
जमुना तट सोहत राधिका रानी॥"

श्री विभांशु दिव्याल

पूरा नाम—श्री राजकुमार "विभांशु दिव्याल"। पिता का नाम—श्री बाबूरामजी। जन्मतिथि—3 फरवरी, सन् 1946 ई.। जन्मस्थान—एत्मादपुर (जि. आगरा)। शिक्षा—एम. ए. (अंग्रेजी)। व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1962 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ सन् 1970 ई., आगरा में। वर्तमान पता—ए. 71, न्यू शाहगंज, आगरा-2।

अन्य—जीवन में अनेक प्रकार के संघर्षों से उत्पीड़ित रहे। समाज-सेवा, अध्ययन तथा अध्यापन में रुचि। सम्प्रति : महाराजा अग्रसेन इन्टर, कालिज आगरा में अध्यापक।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1962 ई. में "कालिज पत्रिका" में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक काव्य-मंचों से काव्य-

पाठ तथा आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण। अनेक साहित्यिक-संस्थाओं से सम्बद्ध। काव्य-सृजन के अतिरिक्त कहानी एवं उपन्यास-लेखन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) भीतर एक महायुद्ध, (2) मन देहरी न लाँघ तथा (3) पिंजरे परिन्दे एवं (4) नेहा (सभी उपन्यास)।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक कविताएँ तथा कहानियाँ।

विशेष—सामयिक तथा राजनीतिक विषयों पर व्यंग्य-प्रधान रचनाओं के लिए ख्याति प्राप्त। गीत, मुक्तक, गजल आदि के अतिरिक्त मुक्त-छन्द में भी काव्य-सृजन। भाषा, भाव-गांभीर्य तथा शिल्प की दृष्टि से सभी रचनाएँ पुष्ट एवं हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"चलो दोस्तो
  कमर कसें फिर
इन बेहूदे हुरियारों से,
  गति के सारे चक्के छीनें।
आँधी-मेह झेलने वाले,
  छप्पर खिमका कर
माठरियों की—
रखवाली पर बैठ गये हैं
  बगुले इधर-उधर।"

(अभिव्यक्ति 2, पृष्ठ 13)

श्री महावीर द्विवेदी

पिता—श्री चम्पाराम शर्मा। जन्मतिथि—19 जुलाई, 1946 ई.। जन्म-स्थान—जान्हेरा (जिला अलीगढ़)। शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी)। व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारम्भ—1967 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1968 ई., हाथरस में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। स्थायी पता—ग्राम-जान्हेरा, पो. मजूपुर (जिला—अलीगढ़)। वर्तमान पता—199 होली गेट, एटा।

अन्य—आर्य सेवा संघ, मेरठ द्वारा "साहित्य शास्त्री" की सम्मानोपाधि प्राप्त। हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी तथा संस्कृत भाषाओं का ज्ञान। सम्प्रति : एटा में अध्यापक।

साहित्य-सेवा—पहली कविता 1969 ई. में बिजनौर के एक समाचार पत्र में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक मंचों से काव्य-पाठ

तथा आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से प्रसारण। काव्य-सृजन के अतिरिक्त समीक्षा—लेखन।

प्रकाशित पुस्तकें—बिखरे आँसू (मुक्तक-संग्रह)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) अंजुरी भर गीत (काव्य-संग्रह), (2) शकुन्तला (खण्डकाव्य) तथा अनेक स्फुट रचनाएँ।

विशेष—सभी रचनाएँ भाषा, भाव एवं शिल्प की दृष्टि से उत्तम।

काव्योदाहरण—

"गंगाजल पीकर मदिरा के मद जैसा अभिनय करते हो,
राम ! बैठकर सिंहासन पर, ये कैसी माया रचते हो ?
गति का दावा भरने वाले कहीं नहीं पद-चिन्ह तुम्हारे,
गद्दी पर बैठे-बैठे ही उड़ते हो तुम पंख पसारे,
भले-भले सह नही सके हैं, वाणी के शर का तीखापन,
हम इस अचरज में डूबे हैं, जाने तुम कैसे सहते हो ?"

("राम" शीर्षक कविता का एक अंश)

डा. वेदप्रकाश शर्मा "अमिताभ"

पिता—श्री मदनलाल शर्मा। जन्मतिथि—1 जुलाई, सन् 1947 ई.। जन्मस्थान—गाजीपुर। शिक्षा—एम, ए. (हिन्दी), पी-एच. डी.। व्यवसाय—अध्यापन। स्थायी पता—कुंज, असकुंडा बाजार, मथुरा। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1968 ई.। प्रथम बार मंचीच काव्य-पाठ—सन् 1974 ई., विजयगढ़ में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि— विगत 15 वर्षों से। वर्तमान पता—द्वारा श्री श्रीनाथ अग्रवाल, द्वारकापुरी, अलीगढ़।

अन्य—"समकालीन उपन्यास" पर शोध कार्य। सम्प्रति—धर्म समाज कालिज, अलीगढ़ के हिन्दी-विभाग में प्राध्यापक।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1972 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में कविताओं तथा कहानियों का प्रकाशन। अनेक मंचों से काव्य-पाठ। काव्य-सृजन के अतिरिक्त कहानियों तथा समीक्षात्मक ग्रंथों का लेखन। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) साहित्यिक निबंध, (2) समकालीन हिन्दी कहानी, (3) उपन्यासकार जैनेन्द्र और उनका त्याग पत्र (सभी समीक्षात्मक) (4) कथा सीता (सम्पादित), (5) प्रेमचन्द का कथा संसार तथा (6) समकालीन हिन्दी साहित्य (सह-सम्पादन)।

अप्रकाशित कृतियाँ—अंधेरे के विरुद्ध (काव्य-संग्रह)। इनके अतिरिक्त अन्य स्फुट कविताएँ, कहानी, निवन्ध आदि।

विशेष—भाषा, भाव तथा शिल्प की दृष्टि से सभी रचनाएँ उत्तम एव हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

हँसने की कोशिश में, आँख हुई नम।
अक्सर इस मुश्किल से गुजरे है हम॥
सांसों के इर्द-गिर्द बंधन हैं, पहरे है,
पीड़ा से अपने संबंध बहुत गहरे है,
खुशियों से मुलाकात होती है कम॥
प्यासे ही लौटे हम सिन्धु के किनारे से,
लहरों के अनुभव हर बार बहुत खारे थे,
टूटता नहीं विफल होने का क्रम॥

(गीतांश)

श्री मुनीश "मदिर"

वास्तविक-नाम—श्री मुनीश्वर दयाल चतुर्वेदी। पिता—श्री रामदयाल चतुर्वेदी। जन्मतिथि—27 दिसम्बर, सन् 1947 ई.। जन्मस्थान—नगला काशी, पो. सोरों (जिला एटा)। शिक्षा इण्टरमीडिएट। व्यवसाय—नौकरी। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1959 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1965 ई., मथुरा में ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—26 बी, देव-नगर, मथुरा।

अन्य—हिन्दी प्रचार सभा, मथुरा तथा अन्य अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध। सम्प्रति: टेलीफोन केन्द्र, मथुरा मे 'आपरेटर' के पद पर कार्यरत।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1966 ई. मे प्रकाशित, तत्पश्चात् अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी से प्रसारण। खड़ी बोली के अतिरिक्त व्रज-भाषा में भी काव्य-सृजन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) याद के मस्तूल (काव्य-संग्रह)। इसके अतिरिक्त (2) सातवीं दशक के उभरते नवगीतकार, (3) बुनी हुई रोशनी तथा (4) 'नवगीत-संग्रह' आदि सामूहिक-संकलनों में अनेक कविताएँ प्रकाशित।

अप्रकाशित कृतियाँ—लगभग 150 गीत, नवगीत एवं अन्य विधाओं की कविताएँ।

विशेष—नवगीत के सशक्त युवा-हस्ताक्षरों में से एक। भाव, भाषा तथा शिल्प की दृष्टि से सभी कविताएँ उत्तम।

काव्योदाहरण—

"सोन मछरी सी
सरल चितवन बिछाए,
छिटकता है श्वेत मरमर—
गंधवी-तन,
झील के
छिछले किनारों से कहो मत ।
पारदर्शी काँच के कुछ टूक,
रख गये है
एक-ऊपर एक ।"
("याद के मस्तूल" पृ.—1)

श्री श्रीकृष्ण "शरद्"

पिता—पं. रामस्वरूप वैद्य । जन्मस्थान—मौसमपुर (जिला—एटा) । जन्म-तिथि—2 अप्रैल 1948 ई. । शिक्षा—एम. ए, बी. एड., साहित्यरत्न । व्यवसाय—सरकारी सेवा । काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—1958 ई. । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—1959 ई., बी. ए. वी इण्टर कलिज, कासगंज में । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से । स्थायी पता—ग्राममौ समपुर, पो. कासगंज (जि. एटा) । वर्तमान पता—45 बी. कृष्णा नगर, मथुरा—4 ।

अन्य—छात्र-जीवन में काव्य-प्रतियोगिता एवं कहानी प्रतियोगिता में पुरस्कृत । हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत तथा अंग्रेजी का ज्ञान । सम्प्रति—आकाशवाणी मथुरा में 'उद्घोषक' पद पर कार्यरत ।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1961 ई. में "पराग" में प्रकाशित, तदुपरान्त अन्य पत्र-पत्रिकाओं में कहानी, रेडियो-रूपक आदि का लेखन । आकाशवाणी से प्रसारण । अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) चयन (गीत-संग्रह) ।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) तुलसी की रत्ना (ब्रज-भाषा में) तथा स्फुट कविताएँ ।

विशेष—साहित्यिक-दृष्टि से रचनाएँ सामान्य, परन्तु हृदयस्पर्शी ।

काव्योदाहरण—

"मेरे नयनों में पानी है, फिर भी प्यासे,
इन नयनों की ही तपन बुझाने आया हूँ ।।

जो गीत किसी चौराहे पर भूले-भटके,
थे खोज रहे अपने प्रियतम, जीवन-धन को,
उन अनजाने गीतों की बाँह गहे मन में,
मन की देहरी औ द्वार सजाने आया हूँ।'

"ख" उपवर्ग—इस उपवर्ग के (पुस्तक रूप में अप्रकाशित) प्रमुख कवि निम्न-लिखित हैं—

1. (स्व.) श्री शंकर द्विवेदी (1941-1981) × ×
2. डा. कुसुम चतुर्वेदी (1942 ई.) × ×
3. डा. कमल पाण्डेय (1942 ई.)
4. श्री गिरिराज किशोर "सन्त हाथरसी" (1944 ई.) ×
5. गो. कृष्णगोपाल "पीयूष" (1947 ई.)
6. श्री दिनेश सन्यासी (1947 ई.) ×
7. श्री धनेशचन्द्र दुबे "फक्कड़" (1948 ई.) ×
8. डा. शशि तिवारी (1948 ई.) ×
9. श्री नटवर नागर (1950 ई.)
10. श्री ओमपाल सिंह "निडर" (1959 ई.) ×

टिप्पणी—उक्त नामों में, जिन्होंने मंचीय-कवि के रूप में अखिल भारतीय ख्याति अर्जित की है, उनके आगे दो गुणक चिह्न × × तथा जिन्होंने अन्तर्प्रान्तीय ख्याति अर्जित की है, उनके आगे एक गुणक चिह्न × लगे हैं। सभी के जन्म-सन् नाम के आगे उल्लिखित हैं। इन कवियों के काव्योदाहरण सहित संक्षिप्त-परिचय आगे लिखे अनुसार हैं—

(1) **(स्व.) श्री शंकर द्विवेदी (सासनी, जि. अलीगढ़)**—आप ब्रजबिहारी महाविद्यालय, कोसी कलां, जिला-मथुरा के हिन्दी-विभाग में प्राध्यापक थे। हिन्दी तथा ब्रजभाषा दोनों में उत्कृष्ट कोटि की काव्य-रचना करते थे। मंचीय-कवि के रूप में आपने अखिल भारतीय ख्याति अर्जित की थी। आप वीर, शृंगार, भक्ति, करुण आदि सभी रसों में समानाधिकार पूर्वक लिखते थे। अनेक लोक-गीत भी लिखे। आपके काव्य की भाषा प्रांजल, छन्द निर्दोष तथा शिल्प अप्रतिम रहे। जुलाई सन् 1981 ई. में एक बस-दुर्घटना में आपका असामयिक-देहावसान हो गया। आपकी कविता का एक अंश यहाँ प्रस्तुत है—

"संत्रस्त हुए जलजात,
निठुर-घन ! मुक्त करो रवि-किरणों को।
फिर विकसे नवल-प्रभात, ज्योति-कर ! क्षरो तिमिर-आवरणों को॥

कैसा अतिशय औदार्य्य ? कहीं बरसे इतने, मग तक डूबे,
गौशाला में ही बँधे-बँधे, निशि-दिवस विवश गो-धन ऊबे,
अनुसृत अगणित उत्पात, विकृत-मन ! शुद्ध करो आचरणों को ।
निठुर घन ! मुक्त करो रवि-किरणों को ।।"

(2) **डा. कुसुम चतुर्वेदी (एस. टी. टी. 28, तारघर कम्पाउण्ड, शहजादीमंडी, आगरा)**—आप श्रीमती भगवतीदेवी जैन महिला महाविद्यालय में प्रशिक्षण विभाग की अध्यक्षा हैं । आप हिन्दी, उर्दू तथा ब्रजभाषा-तीनों में ही श्रेष्ठ एवं हृदयग्राही काव्य का सृजन करती हैं । सुमधुर-कण्ठ के कारण आपकी काव्य-पाठ शैली भी अत्यन्त मनोमोहक है । आपकी कविता का एक अंश यहाँ प्रस्तुत है—

"उम्र के मोड़ पर आज जब तुम मिले ।
भावना के सुमन खिल गए, अधखिले ।।
ओढ़ कर शोडषी लाज की चूनरी,
साधना-पंथ पर मैं चली बावरी;
भेंट तुमसे अचानक हुई इस तरह,
भोर से ज्यों मिले राग असावरी;
आँख ने आँख को जब निमन्त्रण दिया,
तार सहसा हृदय-बीन के हैं हिले !"

(3) **डा. कमला पाण्डेय (महात्मा गांधी मार्ग, आगरा)**—आप सेन्ट जान्स कालिज, आगरा के हिन्दी-विभाग में प्राध्यापिका हैं । आपकी काव्य-रचना का एक अंश यहाँ प्रस्तुत है—

"पुष्प ! सुनो,
ठहरो,
मुझे बहुत पसन्द है तुम्हारी,
प्राणों को बहलाती हुई,
मधुर मादक गंध ।
तुम्हारी पंखुरियों के,
परस का कोमलतम अहसास
उँगली की पोर-पोर से,
मन का हर कोना गमकाता है ।
तुम्हारे करीब होने की मात्र अनुभूति
मुझे प्रेरणा देती है—
झूलने की, इन्द्रधनुषी झूले पर,
मैं बादलों के पार तक,
तुम्हें अपने नजदीक पाती हूँ ।"

(4) **श्री गिरिराज किशोर "सन्त हाथरसी" (गली चौमुखा महादेव, हाथरस, जि अलीगढ़)**—आप एक विद्यालय में कार्यरत हैं। आपकी काव्य-रचना का एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है—

"आम भरी डारें टैंक बम्ब हथगोला कंज
बूँदन बंदूक तोप तड़का धराती है।
सारस सिपाही, मोर मेजर, मशीन मेघ,
ग्रीषम गनीम कों पछारि चढ़ी छाती है॥
गिरि सों गयंद सोहै, हवा की हवलदार,
पपिहा परेड पिक विमाने उड़ाती है।
कवि मुख सों कहें "संत" मारै मान वैरी के,
पावस की फौज मौज मोर्चा लगाती है।

(5) **गो. कृष्णगोपाल "पीयूष" (बरसाना, जिला मथुरा)**—आप अध्यापन एवं प्रवचन कार्य करते है। आपकी काव्य-रचना का एक उदाहरण निम्न लिखित है—

"भीषम है ग्रीषम असह ताप तेज जाकौ,
जेठ की दुपहरी तौ अति दुखदाई है।
अगनि अँगारे सी धरती की धूरि जरै,
परै सीस ज्वाल मनौं अनल बरसाई है॥
तपत बयार तेज लागत लपट तन कौ
मन के मयूरन की साँसि चलि आई है।
कवि "पीयूष" छाँह हेरत जग जीव सबै,
छाँह कूँ बचाय देह कुंजन कौं धाई है॥"

(6) **श्री दिनेश सन्यासी, (द्वारा अमर उजाला कार्यालय, उद्योग नगर, गुरु का ताल मार्ग, आगरा)**—आप स्वतन्त्र-लेखन एवं पत्रकारिता का कार्य करते हैं। आपकी काव्य-रचना का एक अंश यहाँ प्रस्तुत है—

"दीप-आरती करते मंदिर, गीत लगाते माथे चंदन,
कहीं रूप जैसा ही सुन्दर, होता यदि आचरण तुम्हारा।
हीरा जबतक रहे खान में, कोई मोल नहीं होता है,
कला न जबतक उसे तराशे, वो अनमोल नहीं होता है;
नागमणी खुद चलकर आती, कोहिनूर करता अभिनंदन,
कहीं सुनहले तन जैसाही, होता अन्तः करण तुम्हारा।"

(7) **श्री धनेशचन्द्र दुबे "फक्कड़" (पुराने डाकखाने के पीछे, भरतपुर)**—आप पत्रकारिता एवं साहित्य-सेवा करते हैं। हास्य-व्यंग्य के कवि के रूप में चर्चित हैं। आपकी काव्य-रचना के दो अंश यहाँ प्रस्तुत हैं—

"मेरे साथ भागती, पश्चात्ताप नहीं होता ।
बड़े आदमी के सँग भगना, पाप नहीं होता ।।"

× × ×

"नयन के सम्मुख था रत्नेश, समझना नहीं रहा कुछ शेष ।
युद्ध के प्रलयंकारी शस्त्र, चीरते थे अबला के वस्त्र ।।
द्रुपद डकराई जैसे गाय, कौन सेनापति से टकराय ।
ढह गई मिट्टी की सी भीत, खेलता हुआ अधर पर गीत ।।"

(8) **डा. शशि तिवारी, (मदिया कटरा, आगरा)**—आप आगरा कालिज के महिला-विभाग में संस्कृत की प्रवक्ता हैं । आपको संगीत का अच्छा ज्ञान है; अतः अपने काव्य-पाठ को भी सरस बना देती हैं । यों आपकी रचनाएँ भाषा तथा भाव की दृष्टि से सामान्य एवं छन्द तथा शिल्प की दृष्टि से दोष पूर्ण भी हैं । आपकी एक रचना का अंश यहाँ प्रस्तुत है—

"तुम को विश्वास हो न हो,
तुम पर विश्वास है मुझे ।
भक्ति हो कि प्रेम हो कि श्रद्धा हो,
सबका विश्वास मूल है ।
कली हो कि पाँखुरी, पराग हो,
सबका आधार फूल है ।।
तुम जो भी दान दे सको,
सब कुछ मधुमास है मुझे ।।"

(9) **श्री नटवर नागर (गलीभीकचंद, मथुरा)**—आप अध्यापन कार्य करते हैं । आपकी काव्य-रचना का एक अंश यहाँ प्रस्तुत है—

'जाने दो प्रियतम ! अब, मत बनो अधीर ।
मन भावन ! मन में, कुछ देर धरो धीर ।।
अरहर के खेत बीच, नीम के तले,
आऊँगी मिलने मैं, पिया दिन ढले,
होठ की किनारी ले दाँत के तले ।
दो खजन कर गये वायदे भले ।।"

(10) **श्री ओम्पालसिंह "निडर" (दुर्गानगर, फीरोजाबाद, जिला-आगरा)**—आप एस. आर. के कालिज, फीरोजाबाद में प्राध्यापक हैं । आपकी रचनाएँ छन्द-दोष पूर्ण होती हैं । आपकी कविता का एक अंश यहाँ प्रस्तुत है—

"उन आँखों से अंधा अच्छा, जिन आँखों में नीर नहीं है,
उस हृदय से पत्थर अच्छा, जिस हृदय में पीर नहीं है,

वैश्यालय और मदिरालय में बना कोई रणधीर नहीं है,
भली निपूती पुत्रवती से, जिसका बेटा वीर नहीं है,
फैशन की अंधी दुनियाँ मे, जिसे वतन का ध्यान नहीं है,
उस बेहूदा तरुणाई को मैंने नमन नही सीखा है।"

अन्य कविगण—

"ख" उपवर्ग के कवियों में कुछ अन्य प्रमुख नाम निम्नलिखित हैं—

(1) **आगरा नगर एवं जिला—**सर्वश्री लेखराज शर्मा ×, राधेश्याम उपाध्याय ×, शलभ भारती, शिवसागर ×, डा. प्रतिमा अस्थाना, डा. सुषमा सिंह, श्रीमती शतरूपा, हरि निर्मोही ×, कै. व्यास चतुर्वेदी तथा श्री संग्राम सिंह चौहान।

(2) **मैनपुरी नगर एवं जिला—**श्री उमाशंकर तिवारी "सरल"।

(3) **मथुरा नगर एवं जिला—**सर्वश्री शैलेन्द्र कुलश्रेष्ठ ×, रवि खण्डेलवाल, घनश्याम चतुर्वेदी "घनश्री", पंकज भारद्वाज, राजेश कुमार "पथिक" तथा श्रीराम उपमन्यु।

(4) **अलीगढ़ नगर एवं जिला—**सर्वश्री एस. गौतम खैरवी ×, प्रदीप प्रशान्त ×, ध्रुवेन्द्र "विद्रोही", देवीसिंह "निडर", गंगा सहाय 'प्रेमी', चरनलाल 'चंचरीक', श्री गिरिराज किशोर 'नीरव', तथा सुरेश चतुर्वेदी ×।

(5) **भरतपुर नगर एवं जिला—**सर्वश्री वरुण कुमार चतुर्वेदी, हरिकृष्ण "कमलेश", राजेन्द्र प्रसाद शर्मा एवं श्रीमती वीणा त्रिवेदी।

(6) **इटावा नगर एवं जिला—**श्री सन्तोष कुमार चतुर्वेदी।

(7) **अलवर नगर एवं जिला—**श्री नन्नूमल अग्रवाल।

(8) **बुलन्दशहर नगर एवं जिला—**सर्वश्री कृष्णराज "कृष्ण", कौशल किशोर, रामपाल "विश्वास", जगवीर सिंह "अंचल", हर्षवर्धन तथा सत्यप्रकाश गुप्त।

टिप्पणी—उक्त वर्ग में जिन कवियों ने मंचीय-कवि के रूप में विशेष ख्याति अर्जित की है, उन के नाम के आगे एक गुणक चिह्न × लगा हुआ है।

2. सन् 1950 ई. के बाद जन्मे कवि

इस वर्ग के प्रायः सभी कवि पुस्तक रूप में अप्रकाशित हैं, अतः यहाँ इनकी नामावली मात्र प्रस्तुत की जा रही है। इनमें से जिन्होंने मंचीय-कवि के रूप में विशेष ख्याति अर्जित की है, उनके नाम के आगे एक गुणक चिह्न × लगा हुआ है।

ब्रजक्षेत्र के विभिन्न जिलों के मंचीय हिन्दी-कवियों की नामावली

(1) **आगरा नगर एवं जिला—**सर्वश्री रमेश पंडित ×, राजकुमार रंजन ×, हरेश चतुर्वेदी ×, जितेन्द्र अल्पेश ×, नरेन्द्रसिंह चौहान "नीरेश", चन्द्र प्रकाशयार'

अखिलेश श्रोत्रिय ×, देव राजेन्द्र शर्मा, दिनेश पंडित ×, राकेश सन्तोष, मुरारीलाल शर्मा, हरिशंकर "देवेश", राजेश "सरल", श्याम सनेही, भूपेन्द्र पाठक, कृष्ण मनमीत, गोपाल कृष्ण "दीन", सुभाषचन्द्र आर्य, प्रमोद पाठक, अरविन्द श्रीवास्तव, रामनरेश भदौरिया, उमाधर पाठक, सत्य शर्मा "प्रीति", नारायण सिंह "निर्दोष", रमेश कुमार चाहर "निर्झर", कु. साधना शर्मा एवं श्रीमती उषा गुप्ता।

(2) **मथुरा नगर एवं जिला**—सर्वश्री रमेश मिश्र, उमाशंकर दीक्षित, राधेश्याम शर्मा, विष्णुदत्त शर्मा, श्याम कुमार दास "उदास", लक्ष्मी नरायण दीक्षित एवं देवकुमार पचौरी।

(3) **मैनपुरी नगर एवं जिला**—सर्वश्री पवन चौहान ×, महेन्द्र पाण्डेय, नारायण दास "निर्झर" एवं सुनील कुमार सक्सेना।

(4) **एटा नगर एवं जिला**—सर्वश्री उपेन्द्र यादव, बहादुर सिंह सोलंकी तथा सुश्री सरोज वार्ष्णेय।

(5) **अलीगढ़ नगर एवं जिला**—सर्वश्री सुरेन्द्र सुकुमार × तथा श्रीमती मीरा जैन।

(6) **अलवर नगर एवं जिला**—सर्वश्री बलवीर सिंह "करुण", जगन प्रसाद स्वामी, किंकर तथा उमेश अपराधी।

(7) **भरतपुर नगर एवं जिला**—कु. कुसुम अनजान।

(8) **मुरैना नगर एवं जिला**—श्रीमती इन्दिरा "इन्दु" × तथा सर्वश्री बलवीर सिंह "व्योम", देवेन्द्र सिंह जैन एवं बालकृष्ण शर्मा "विवश"।

(9) **भिण्ड नगर एवं जिला**—सर्वश्री राम अवतार सिंह कुशवाहा ×, राम दत्त जोशी, राम बाबू राठौर एवं धीरेन्द्र शुक्ल ×।

(10) **बुलन्दशहर नगर एवं जिला**—सर्वश्री प्रमोद भारद्वाज, सुभाष भट्ट, अरुण शकुन, रामकुमार शर्मा, धर्मपालसिंह, यतीन्द्र शैली, ए. पी. तिवारी तथा सुश्री विनय कुमारी शर्मा ×।

—

प्रकरण 7

ब्रजक्षेत्र से सम्बन्धित प्रमुख मंचीय हिन्दी-कवि और उनका साहित्यिक-योगदान

1. ब्रजक्षेत्र में जन्मे प्रकाशित-कवि।
2. मूलतः ब्रजक्षेत्र के निवासी प्रकाशित-कवि।
3. ब्रजक्षेत्र से सम्बद्ध रहे प्रकाशित-कवि।
4. ब्रजक्षेत्र से किसी भी रूप में सम्बद्ध अप्रकाशित-कवि।

ब्रजक्षेत्र से सम्बन्धित, परन्तु वर्तमान में ब्रजक्षेत्र से बाहर निवास करने वाले मंचीय हिन्दी-कवियों के निम्नलिखित 4 वर्ग निर्धारित किए जा सकते हैं—

(1) **ब्रजक्षेत्र में जन्मे प्रकाशित कवि**—अर्थात् वे कवि, जिनका जन्म तो ब्रजक्षेत्र में ही हुआ, परन्तु जो वर्तमान में ब्रजक्षेत्र से बाहर रह रहे हैं तथा जिनकी पुस्तकें भी प्रकाशित हैं।

(2) **मूलतः ब्रजक्षेत्र के निवासी प्रकाशित कवि**—अर्थात् वे कवि, जिनका जन्म ब्रजक्षेत्र से बाहर हुआ तथा वर्तमान में भी इस क्षेत्र से बाहर ही रह रहे हैं, परन्तु जिनका पितृ-गृह ब्रजक्षेत्र ही रहा है। इस प्रकार जिन्हें "ब्रजक्षेत्र का मूल निवासी" माना जाता है और जिनकी पुस्तकें भी प्रकाशित हैं।

(3) **ब्रजक्षेत्र से सम्बद्ध रहे प्रकाशित कवि**—अर्थात् वे कवि, जिनका जन्म ब्रजक्षेत्र से बाहर हुआ तथा वर्तमान में भी बाहर ही रह रहे हैं, साथ ही यह क्षेत्र जिनका पितृ-गृह भी नहीं है; परन्तु जो न्यूनतम तीन वर्षों तक ब्रजक्षेत्र में स्थायी रूप से निवास कर चुके हैं तथा अभी भी किसी-न-किसी रूप में ब्रजक्षेत्र से सम्बन्धित हैं तथा जिनकी पुस्तकें भी प्रकाशित हैं।

(4) **ब्रजक्षेत्र से किसी भी रूप में सम्बद्ध अप्रकाशित कवि**—अर्थात् वे कवि, जो उपर्युक्त तीनों में से किसी भी वर्ग के अन्तर्गत आते हैं, परन्तु जिनकी कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं है।

उक्त वर्गीकरण के आधार पर विभिन्न कवियों के सम्बन्ध में ज्ञातव्य-विवरण इस प्रकरण में प्रस्तुत किया जा रहा है।

1. ब्रजक्षेत्र में जन्मे प्रकाशित कवि

इस वर्ग के प्रमुख कवि निम्नलिखित हैं तथा इस सूची में सभी आयु के कवि सम्मिलित हैं—

1. पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी "श्रीवर"
2. श्री शान्तिस्वरूप "चाचा"

3. श्री रामेश्वर दयाल दुबे
4. श्री मधुसूदन चतुर्वेदी
5. (स्व.) डा. श्यामसुन्दर लाल दीक्षित
6. (स्व.) श्री नीरव "शास्त्री"
7. श्री दाऊदत्त श्यामलाल उपाध्याय
8. श्री गोपाल प्रसाद व्यास
9. श्री जगदम्बा प्रसाद त्यागी
10. डा. बरसाने लाल चतुर्वेदी
11. श्री रामप्रकाश "राकेश"
12. डा. चन्द्रभान रावत
13. डा. इन्द्रपालसिंह "इन्द्र"
14. श्री शैलेन्द्र कुमार पाठक
15. श्री मुकुट बिहारी "सरोज"
16. श्री वीरेन्द्र मिश्र
17. डा. मुरारिलाल शर्मा "सुरस"
18. डा. प्रेम प्रकाश गौतम
19. श्री राधेश्याम शर्मा "प्रगल्भ"
20. श्री जगत प्रकाश चतुर्वेदी
21. डा. रामगोपाल शर्मा "दिनेश"
22. श्री राजेन्द्र कुमार पाठक
23. श्री मधुर शास्त्री
24. श्री शत्रुघ्नदत्त दुबे
25. डा. रामरजपाल द्विवेदी
26. श्री सतीशचन्द्र शर्मा "कमलाकर"
27. श्री थम्मनसिंह "सरस"
28. डा. बाबूलाल गोस्वामी
29. डा. सत्यप्रकाश "बजरंग",
30. श्री देवेन्द्र शर्मा "इन्द्र"
31. श्री विद्यानन्दन "राजीव"
32. श्री मदन मोहन "उपेन्द्र"
33. डा. मुहम्मद अयूब खाँ "प्रेमी"
34. श्री शैवाल सात्यार्थी

35. श्री मोहनलाल शर्मा
36. डा. प्रकाश चतुर्वेदी "चंचल"
37. श्री आनन्दवल्लभ शर्मा 'सरोज"
38. डा. मनोहरलाल शर्मा "अभय"
39. श्री बंकट बिहारी 'पागल"
40. श्री रमेश "रंजक"
41. श्री प्रेम किशोर "पटाखा"
42. डा. विष्णुदत्त चतुर्वेदी "विराट्"
43. श्री अशोक "चक्रधर"

इन कवियों के सम्बन्ध में विशेष विवरण निम्नानुसार है—

पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी "श्रीवर"

पिता—पं. चतुर्वेदी श्रीद्वारका प्रसाद शर्मा। जन्मतिथि—28 सितम्बर, 1895 ई.। जन्मस्थान—इटावा। शिक्षा—प्रयाग तथा लंदन विश्वविद्यालयों से इतिहास और शिक्षण-पद्धति में एम. ए.। पूर्व व्यवसाय—सरकारी-सेवा। **वर्तमान कार्य**—साहित्य-लेखन। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—1911 ई.। **प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ**—अज्ञात। व्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—बाल्यकाल से। **वर्तमान पता**—53 खुर्शेद बाग, गणेश गंज पोस्ट आफिस के सामने, लखनऊ।

अन्य—आरम्भ में उत्तर प्रदेश के शिक्षा-विभाग में उच्चाधिकारी (जिला विद्यालय निरीक्षक) रहे, फिर मध्यप्रदेश के शिक्षा विभाग में संचालक (डायरेक्टर) पद पर रहने के बाद आकाशवाणी के उप-संचालक (डिप्टी डायरेक्टर जनरल) के पद पर दिल्ली में कार्य-रत रहे। सेवा-निवृत्ति के उपरान्त, एक लम्बे अर्से तक प्रसिद्ध मासिक पत्रिका 'सरस्वती" एवं 'सचित्र संसार' का सम्पादन किया। अनेक भाषाओं के पण्डित। लीग ऑफ नेशन्स, जेनेवा की शिक्षा-समिति में भारत का प्रतिनिधित्व किया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा 'साहित्य वाचस्पति" की सम्मानोपाधि प्राप्त। अनेक संस्थाओं द्वारा अभिनन्दित। अंग्रेजी-शासन में 'रायबहादुर' की पदवी भी प्राप्त की थी।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1914 ई. में इंडियन प्रेस से "चारण" नामक एक छोटी सी पुस्तिका के रूप में प्रकाशित हुई, तदुपरान्त प्रायः सभी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में कविता, लेख आदि का प्रकाशन। आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से वार्ता आदि का प्रसारण। अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ तथा अध्यक्षता। 'हिन्दुस्तानी अकादमी' ने आपके भाषणों का संकलन प्रकाशित किया है, जिसमें भारतेन्दु तथा द्विवेदी-युग की साहित्यिक-चेतना पर गहरा प्रकाश

पड़ता है तथा हिन्दी-सेवियों की सही तस्वीर उभरती है। हिन्दी भाषा तथा साहित्य के प्रचार-प्रसार की सभी श्रेष्ठ योजनाओं से सम्बद्ध रहकर, हिन्दी-सेवा को राष्ट्र-सेवा के रूप में स्वीकार करने वाले हिन्दी के अनन्य सेवक-साधक। ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली—दोनों में काव्य-सृजन के अतिरिक्त साहित्य के विभिन्न अंगों तथा विभिन्न विषयों पर निबंध-लेखन में अग्रणी। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध तथा अनेक साहित्यकारों के संरक्षक। "विश्वभारती" के सम्पादन से साहित्य-जगत् में विशेष ख्याति लब्ध। "विनोद शर्मा" उपनाम से व्यंग्य-प्रधान निबंधों के सुप्रसिद्ध लेखक। साहित्य के अतिरिक्त अनेक सांस्कृतिक, सामाजिक तथा धार्मिक संस्थाओं से भी सम्बद्ध। हिन्दी-जगत् में अनेक उच्चतम पदों पर प्रतिष्ठित रहे।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) रत्नदीप तथा (2) जीवन कण (काव्य-संग्रह)। (3) महात्मा टालस्टाय की जीवनी, (4) मनोरंजक संस्मरण, (5) पावन संस्मरण, (6) राजभवन की सिगरेटदानी, (7) मैकियावेली के प्रिंस (अंग्रेजी से अनूदित), (8) विश्वभारती (सम्पादित), (9) पुण्य संस्मरण (सम्पादित), (10) एजूकेशनल सर्वे आफ इटावा डिस्ट्रिक्ट 1927 तथा (11) हिस्ट्री आफ रूरल एजूकेशन इन यू. पी. 1932 (दोनों अंग्रेजी में)—इनके अतिरिक्त सूर आदि कवियों के पदों का सम्पादन तथा प्रौढ़-शिक्षा विषयक कुछ पुस्तकें, अनेक स्फुट निबंध तथा कविताएँ आदि। आपके अभिनन्दन में "हिन्दी सेवा की संकल्पना" (संपादक—डा. विद्यानिवास मिश्र) शीर्षक एक ग्रंथ भी प्रकाशित है, जिसमें आपकी अनेक रचनाएँ संकलित है।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक स्फुट निबंध आदि।

विशेष—"भैया साहब" के नाम से हिन्दी-जगत् में विख्यात श्रीचतुर्वेदी जी की गणना हिन्दी-साहित्य के प्रमुख स्तम्भों में की जाती है। भाषा, भाव तथा शिल्प आदि सभी दृष्टियों से समृद्ध साहित्यिक-रचनाओं के कवि तथा लेखक। 90 वर्ष से अधिक की आयु होने पर भी आप साहित्य-सृजन में निरंतर संलग्न हैं।

काव्योदाहरण—

"हैं चन्द्रिका "चन्द" चढ़ा चुके जिसे, कवित्व की है "तुलसी" चढ़ी हुई,
विभूषिता "भूषण" से हुई, जो 'हिन्दी' उसी का गुणगान गाइए।
भाषा हमारी यह तो वही है, पवित्र "रामायण" है कि जिसमें,
औ, "सूर" ने गा जिसमें चरित्र को श्रीकृष्ण के ज्योति अनंत पाई।
(हिन्दी सेवा की संकलपना)

श्री शान्तिस्वरूप "चाचा"

पिता—श्री शंकर लाल गोविल। जन्मतिथि—फाल्गुन कृष्णा 6, दिनांक 14 फरवरी सन् 1906 ई.। जन्मस्थान—खुर्जा। शिक्षा—सामान्य। व्यवसाय —

कपड़ा-छपाई का काम। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष– सन् 1921 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1928 ई., एस. एम. जे. हाईस्कूल, खुर्जा में। व्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता– विट्ठल मंदिर, गोरखी के पीछे, ग्वालियर।

अन्य—साहित्य-सृजन की प्रेरणा पं. नारायण प्रसाद "बेताब" से प्राप्त हुई। स्वाध्याय द्वारा हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओं का ज्ञान। क्रमशः मदुरा, गोरखपुर, हरगाँव आदि स्थानों में निवास तथा व्यवसाय एवं नौकरी आदि के कार्य। सन् 1941 ई. से ग्वालियर में स्थायी-निवास। हिन्दी साहित्य समाज, श्रमशिविर, अग्रवाल युवक समाज, ग्वालियर एवं हिन्दी साहित्य सम्मेलन, भोपाल द्वारा अलंकृत एवं सम्मानित। अनेक पुरस्कार प्राप्त। साहित्य-साधना में सतत संलग्न।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1932 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। सैकड़ों मंचों से काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण। अनेक साहित्यिक-संस्थाओं से सम्बद्ध रहे। खड़ी बोली के अतिरिक्त व्रजभाषा एवं उर्दू में भी काव्य-सृजन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) मुखर हुई धरती बलिदान की तथा (2) चित-चिन्तन (काव्य-संग्रह)।

अप्रकाशित कृतियाँ– (1) गधा पँचीसी, (2) चाचा का चाबुक, (3) चाचा की चिलम, (4) साँड़-सप्तक, (5) ऊँट अष्टक, (6) बैल बावनी तथा (7) दिल्ली-श्वान आदि (सभी काव्य-संकलन)। इनके अतिरिक्त अनेक स्फुट कविताएँ।

विशेष—श्री चाचा शिष्ट हास्य-व्यंग्य के कवि के रूप में अत्यधिक लोकप्रिय रहे हैं। श्लेषात्मकता इनकी रचनाओं का वैशिष्ट्य है। भाषा विषयानुसार सरल, दुरूह एवं टकसाली। छन्द-योजना तथा शिल्प-सौन्दर्य अप्रतिम, भाव-गाम्भीर्य एवं सम्प्रेषणीयता अत्युत्तम।

काव्योदाहरण—

"सूफी बोले—"एक अर्ज है", ये बोले—"गज-गिरह बताओ",
मीरा बोली—"मेरा पद है", ये बोले—"घुँघरू पहनाओ",
गालिब बोले—"शेर पेश है", ये बोले—"कटघर में रक्खो",
मैंने कहा—"गीत सुनिएगा", ये बोले—"ढोलक पर गाओ"।

श्री रामेश्वर दयाल दुबे

पिता—पं. देवी दयाल दुबे। जन्मतिथि—1 जुलाई सन् 1909 ई.। जन्म-स्थान—ग्राम-हिन्दपुर (जिला मैनपुरी)। शिक्षा—साहित्य-रत्न, एम. ए. (हिन्दी)।

व्यवसाय—अवकाश-प्राप्त-प्राध्यापक। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष — सन् 1921 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1922, मैनपुरी-प्रदर्शनी में। ब्रजक्षेत्र सम्पर्क की अवधि—जन्म से। स्थायी पता—द्वारा डा. विकासचन्द्र दुबे, प्रेम-निवास मैनपुरी। वर्तमान पता—3 स्टेशन रोड, लखनऊ।

अन्य—बाल्यावस्था गाँव तथा मैनपुरी में व्यतीत हुई, उच्च अध्ययन दिल्ली में किया। सन् 1937 ई. से दो वर्षों तक वर्धा कालिज में हिन्दी-प्राध्यापक रहे। महात्मा गांधी, काका कालेलकर, डा. राजेन्द्र प्रसाद, जमनालाल बजाज एवं बिनोवा भावे के निकट सम्पर्क में आये। मैनपुरी-प्रदर्शनी में प्रथम काव्य-पाठ के लिये पुरस्कृत। "नूपुर" (खण्ड-काव्य) तथा 'तिरुवक्कुरक' (तमिल से काव्यानुवाद) पुस्तकें उत्तर प्रदेश शासन द्वारा पुरस्कृत। हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी, गुजराती संस्कृत, पालि, तमिल आदि अनेक भाषाओं का ज्ञान। अब मंच से सन्यस्त।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1924 ई. में प्रकाशित। तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। राष्ट्र-भाषा के प्रचार-कार्य में 40 वर्षों तक निरन्तर संलग्न रहे। राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनेक वर्षों तक सहायक तथा परीक्षा-मंत्री रहे। अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ। आकाशवाणी-केन्द्रों से रचनाओं का प्रसारण। कविता के अतिरिक्त अन्य भाषाओं से अनुवाद। हास्य-व्यंग्य, नाटक, जीवनी आदि विविध विधाओं में लेखन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) कोणार्क, (2) सौमित्र, (3) नूपुर तथा (4) चित्रकूट (खण्डकाव्य), (5) अबोल के वोल (काव्य) (6) पिकनिक, (7) विश्वास तथा (8) अभिलाषा (हास्य) (9) उत्तर प्रदेशः उत्तम प्रदेश (10) डाल-डाल के पंछी तथा (11) मां यह कौन (बाल-साहित्य), (12) तिरवक्कुरक (तमिल से काव्यानुवाद), (13)धम्मपद शतक (पाली से अनुवाद), (14) चले-चलो (गद्य), (15) कुकड़ू कूँ, (16) डंडा-बाँसुरी तथा (17) फूल-काँटा (बाल नाटक), (18) सांची, केसर तथा अगस्त्य (नाटक), (19) भाषा भगिनि (नाटिका), (20) बड़े जब छोटे थे, (21) बापू की बातें, (22) जीवन की बूंदें, (23) गाँधी-पुरस्कार प्राप्त कर्ता, (24) श्री राम कथा (जीवनी) तथा (25) गांधी-आश्रम प्रार्थना।

अप्रकाशित कृतियाँ—दस-बारह पुस्तकें-काव्य, नाटक, जीवनी आदि।

विशेष—भाषा टकसाली, भाव गंभीर एवं शिल्प-सौन्दर्य अप्रतिम। दुबेजी की सभी काव्य-रचनाएँ प्रत्येक कसौटी पर खरी उतरने वाली, हिन्दी-साहित्य की अनुपम निधि हैं। आत्म-विज्ञापन तथा प्रचार-प्रसार से दूर रहने के कारण इन्हें जितनी प्रसिद्धि मिलनी चाहिए थी, वह नहीं मिल सकी; परन्तु एक समय ऐसा अवश्य आयेगा, जब कि दुबेजी की गणना हिन्दी के मूर्द्धन्य कवियों में की जाएगी।

काव्योदाहरण—

"काल अनादि अनन्त न उसके खण्ड कभी है होते ।
मान लिया दिन जब जगते है, निशि जब हम हैं सोते ।।
अन्त निशा का, आदि दिवस का, किसने अब तक देखा ?
खींच सका कोई न आज तक युगल-विभाजन-रेखा ।।
मास, वर्ष यह शर्ती मात्र हैं, कल्पित सृष्टि विचारी ।
शाश्वत को कैसे बाँधेगी, सीमित दृष्टि हमारी ?"

(नूपुर, पृ. 57)

श्री मधुसूदन चतुर्वेदी

पिता—श्री देवी प्रसाद चतुर्वेदी । जन्मतिथि—10 दिसम्बर सन् 1910 ई. । जन्मस्थान—कमतरी (आगरा) । शिक्षा—एम. ए., बी. एस-सी., विशारद । व्यवसाय—प्रकाशन-सम्पादन । काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1928 ई. । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1932 ई., कमतरी (आगरा) में । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से । वर्तमान पता—द्वारा-हिन्दी अकादमी, 14-7-3 बेगम बाजार, हैदराबाद (आंध्र-प्रदेश) ।

अन्य—दक्षिण भारत में हिन्दी-प्रचार के लिए आजीवन कार्यरत । अनेक शिक्षा-संस्थाओं से संबंधित रहे । हैदराबाद (आंध्र) से प्रकाशित "संकल्प" के सम्पादक तथा चतुर्वेदी प्रकाशन समिति, हैदराबाद के संस्थापक । सम्प्रति—रा. बा. सर बंशीलाल बालिका विद्यालय हैदराबाद के आचार्य पद से सेवा-निवृत्त होकर साहित्याराधन में रत ।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1928 ई. मे "सुकवि" पत्रिका में प्रकाशित हुई, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं मे प्रकाशन । अनेक मंचों से काव्य-पाठ । अनेक साहित्यिक-संस्थाओं से सम्बद्ध । काव्य-सृजन के अतिरिक्त विविध विधाओं में लेखन ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) द्वितीय महासमर, (2) मंजरी, (3) वृन्दावन (काव्य), (4) साहित्य-आलोचना के सिद्धान्त, (5) कविवर प्रसाद का आँसू, (आलोचना) (6) रज-कण (कहानी-संग्रह) (7) विश्राम, (8) झांसी की रानी, (9) ग्वालिनी, (10) टैनीसन की राजकुमारी (काव्यानुवाद) (11) अंग्रेजी नाट्य साहित्य (आलोचनात्मक) तथा विभिन्न विषयों की अनेक पाठ्य-पुस्तकें ।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) कुहू बोली काली कोकिल, (2) जब मैंने लन्दन मे बेर खरीदे, (3) नागरी का निवेदन (4) नई कविता पर नई कविता, तुम कहते हो कविता है, (5) हथेली पर न जमता आम प्यारे, (6) भू-मध्य सागर में चाँदनी

रात, (7) रण-पिपासु के प्रति, (8) शासन, (9) निर्झर (सभी काव्य-संकलन) तथा अनेक स्फुट रचनाएँ।

विशेष—काव्य की भाषा सरल, शिल्प सामान्य तथा भाव हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"कौन तुम झाँकते हो आँखों के झरोखे बैठ,
कौन भव्य-भावना से नीचे ढर आते हो ?
होके विदा म्लान होती आभा न तुम्हारी कुछ,
घर से निकलने से कौन निधि पाते हो ?
बान है तुम्हारी यह कैसी बतलाओ हमें,
अति अकुला के प्राण अपने गँवाते हो।
कौन-सी नवीन नीति विश्व को सिखाते "मधु"
जीवन क्षणिक द्वारा कौन सुख पाते हो ?"
(मंजरी, पृ. 24)

(स्व.) डा. श्याम सुन्दरलाल दीक्षित

पिता—पं. देवी प्रसाद दीक्षित। जन्मतिथि—16 अगस्त 1914 ई.। जन्मस्थान—ग्वालियर। शिक्षा—एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्.। व्यवसाय—अध्यापन। काव्य का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1930 ई.। प्रथम बार मचीय काव्य-पाठ—सन् 1935 ई. आगरा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—आजीवन। निधन तिथि—18 अप्रैल 1980 ई.।

अन्य—प्रारंभ में होम्योपैथी के चिकित्सक रहे। सन् 1945 से 1947 ई. तक आकाशवाणी, दिल्ली केन्द्र से गीता-प्रवचन। 1954 ई. से अध्यापन-क्षेत्र में कार्यरत। बरेली, अजमेर, भोपाल, छतरपुर, रींवा, रायपुर, शिवपुरी, चंदेरी तथा अमरावती में हिन्दी के प्राध्यापक-पद पर कार्यरत रहे। सेवा ग्राम मेडिकल कालिज में हृदयगति रुक जाने के कारण निधन।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन 1936 ई. में आगरा के एक पत्र में प्रकाशित, तदुपरात अनेक पत्र-पत्रिकाओं मे प्रकाशन। अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे। आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों द्वारा रचनाओं का प्रसारण। खड़ी बोली के अतिरिक्त ब्रजभाषा में भी काव्य-सृजन। नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी, जीवनी तथा आलोचनात्मक निबन्धों का लेखन। "मराल" नामक मासिक पत्रिका का सम्पादन तथा अनेक पुस्तकों के अनुवाद किये।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) भारती, (2) हुंकार, (3) क्लैव्यंमास्म गमः पार्थ (सभी कविता-संग्रह), (4) दरोगा जी, (5) शहरों के परदे में (कहानी-संग्रह), (6) जवाहर दोहावली, (7) गांधी त्रयोदशी (काव्य), (8) श्याम संदेश, (9) ठाकुर रणमतसिंह, (10) पुरुषोत्तम (खण्ड-काव्य), (11) महाराजा भर्तृहरि (नाटक) (12) दहेज के नाम पर (एकांकी) (13) मंगल पाण्डे (उपन्यास), (14) कृष्ण-काव्य में भ्रमर गीत (शोध-प्रबंध), (15) नारायण शब्द सागर (कोष), (16) वर्माजी और मृगनयनी (17) गुप्तजी और यशोधरा, (18) प्रेमचन्द और गोदान (आलोचना), (19) पंचायतन (आलोचनात्मक निबंध), (20) श्यामगीता (भाषा) (21) सरदार पटेल (जीवनी) (22) ट्रैवलर (23) प्राथमिक बीमा सिद्धान्त, (24) पंचतंत्र-हितोपदेश (अनुवाद) तथा (25) कुन्तला और (26) विनय पत्रिका (सम्पादित)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) मृणाल (2) रस-विहीन (कविता-संग्रह), (3) कारागार (कहानी-संग्रह), (4) गांधी गीतावली (काव्य) (5) उर्मिला (महाकाव्य) तथा (6) कौमुदी (एकांकी नाटक)। इनके अतिरिक्त अनेक स्फुट रचनाएँ।

विशेष—भाव, भाषा तथा शिल्प की दृष्टि से सभी कविताएँ मनोरम तथा हृदयग्राही। अपने समय में मंचीय-काव्य-पाठ के हेतु विशेष ख्याति प्राप्त।

काव्योदाहरण—

> मुक्त-मन से नेह के नाते बिखेरो,
> पा सकें पाषाण पावन प्राण तुम से।
> छोर छूलें छन्द छवियों के छबीले,
> पा सकें कवि दिव्यता का दान तुमसे।
> ध्वनित हों गलियां गुलाबी हलचलों से,
> पा सके स्वर वेदना का गान तुमसे।
> "रूप का दीपक जलाओ मानिनी तुम,
> पा सके जग ज्योति का अभियान तुम से।"

(नारी तेरे रूप अनेक, पृ. 117)

(स्व.) श्री नीरव शास्त्री

पूरा नाम—श्री रविचन्द्र शास्त्री। पिता—श्री ताराचंद्र शास्त्री। जन्मतिथि—आश्विन कृष्णा नवमी, संवत् 1968 वि (सन् 1914 ई.)। जन्मस्थान—बरौठा (जि. अलीगढ़)। शिक्षा—शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य। व्यवसाय—वैद्यक। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सं. 1988 वि.। प्रथमबार मंचीय काव्य-पाठ सं. 1990 वि.। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—आजीवन। निधन-तिथि—28 मार्च, सन् 1959 ई.।

अन्य—छात्र-जीवन से ही साहित्यिक-कार्यक्रमों में भाग लेना आरंभ किया। जीवन का अधिकांश तथा अन्तिम भाग बम्बई में बीता। वहाँ म्युनिसिपल कार्पोरेशन ने इनके सम्मान मे एक सड़क का नाम "नीरव स्ट्रीट" भी रखा है।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1920 ई. में प्रकाशित। तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। हिन्दी के अतिरिक्त ब्रजभाषा तथा उर्दू में काव्य-सृजन। महाराष्ट्र प्रान्त मे हिन्दी-प्रचार हेतु आजीवन प्रयत्नशील रहे।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) वेदना, (2) सीप तथा (3) शिव और शक्ति (सभी काव्य-संग्रह)।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक।

विशेष—नीरवजी ने सुमधुर गायक-कवि के रूप में अत्यधिक ख्याति अर्जित की थी। महाराष्ट्रीय-जनता को हिन्दी-कविता के प्रति आकर्षित करने तथा बम्बई में हिन्दी-कवि-सम्मेलनो के आयोजन में इन्होंने जीवनभर अथक परिश्रम किया। इनकी कविताएँ भाव, भाषा, शिल्प आदि की दृष्टि से उत्तम तथा हृदयग्राही है।

काव्योदाहरण—

"प्यार दो, पर प्यार का विश्वास मत दो,
तृप्ति दो पर तृप्ति का उपहास मत दो;
साँझ तो उपचार है हारे दिवस का,
स्वप्न दो, पर स्वप्न का उच्छ्वास मत दो।"

(सीप, पृ. 18)

श्री दाऊदत्त श्यामलाल उपाध्याय

पिता—श्री श्यामलाल उपाध्याय। **जन्मतिथि**—16 अगस्त, सन् 1916 ई.। **जन्मस्थान**—गोकुल (मथुरा)। **शिक्षा**—साहित्य-सुधाकर, काव्यतीर्थ। **व्यवसाय**—नौकरी। **काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष**—सन् 1930 ई.। **प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ**—सन् 1934 ई.। **ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि**—जन्म से। **वर्तमान पता**—राजमहल, 3 माला, भूलेश्वर, बम्बई-2।

अन्य—आरंभ में मथुरा में रहकर "प्रकाश" (साप्ताहिक) एवं "राष्ट्रलक्ष्मी" (पाक्षिक) पत्रों का सम्पादन तथा जन-सेवा कार्य किए। तदुपरान्त महाराष्ट्र सरकार के शिक्षा-विभाग में शिक्षक-पद पर कार्य करने हेतु बम्बई चले गए। सम्प्रति—शिक्षा-विभाग से रिटायर होकर, अब "शिवकुमार भुवालका पुस्तकालय", बम्बई में पुस्तकालयाध्यक्ष के पद पर कार्य-रत। अनेक स्वर्ण तथा रजत पदक एवं नकद धनराशि के पुरस्कारों द्वारा सम्मानित। हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत, गुजराती तथा

मराठी भाषाओं का ज्ञान । "संग्राम" (साप्ताहिक), तथा "विश्वमित्र" (दैनिक) के संपादकीय, विभाग में भी कुछ समय तक कार्य किया ।

साहित्य-सेवा—प्रथम कविता सन् 1936 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन । आकाशवाणी से प्रसारण । सैकड़ों कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ । अनेक साहित्यिक-कार्यक्रमों के आयोजक तथा अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे । खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा के अतिरिक्त गुजराती-मराठी में भी काव्य-सृजन ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) अंकुर, (2) मुहब्बत के मण्डप में, (3) सरगम, (सभी काव्य-सकलन), (4) बम्बई के हिन्दी कवि (सम्पादित), (5) सूना मंदिर (खांडेकर के मराठी उपन्यास का हिन्दी अनुवाद) तथा (6) हिन्दी व्याकरण (शैक्षिक) ।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक कविताएँ, निबन्ध तथा शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकें आदि ।

विशेष—श्री उपाध्याय ने बम्बई में हिन्दी कविता के प्रचार-प्रसार तथा हिन्दी-कवियों के संगठन एवं सरक्षण के लिए बहुत काम किया है । आप मधुर काव्य-पाठ के लिए अत्यधिक प्रसिद्ध रहे । सम्प्रति—अब कवि-सम्मेलनों से सन्यास लेकर साहित्य-सृजन में ही संलग्न है । भाषा, छन्द तथा शिल्प की दृष्टि से आपकी प्रायः सभी कविताएँ उत्कृष्ट कोटि की हैं । शृंगार आपकी रचनाओं का प्रधान-रस है । कुछ कविताएँ भक्ति परक, दार्शनिक तथा सामाजिक विषयों से भी सम्बन्धित हैं ।

काव्योदाहरण—

"क्यों कर तेरी याद न आये ?
कितने मूल्यवान है वे पल, जिनको जीवन कह सकता हूँ,
जिनकी सुधि के सग-सहारे, कुसमय जीवित रह सकता हूँ,
राशि-राशि रस सपने, जिनमें जीवन की निधियों से पाये ।
क्यों कर तेरी याद न आये ?"

(सरगम, पृ. 9)

श्री गोपाल प्रसाद व्यास

पिता—पं. ब्रजकिशोर शास्त्री । **जन्मतिथि**—माघ शुक्ला 10, संवत् 1972 वि. (सन् 1916 ई.) । जन्मस्थान—पारासौली, गोवर्धन (जि. मथुरा) । शिक्षा—साहित्यरत्न । व्यवसाय—श्रमजीवी-लेखन । काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1927 ई. । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1928 ई., मथुरा की नुमाइश

में । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से । वर्तमान पता—बी-52, गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली ।

अन्य—व्यासजी ने कम्पोजीटरी से लेकर सम्पादन तक के कार्य किए हैं । आरंभ में "साहित्य संदेश" आगरा में नौकरी की, फिर दिल्ली चले गए तथा दैनिक "हिन्दुस्तान" के सम्पादकीय-विभाग में कार्यरत रहे । वहाँ से सेवा-निवृत्त होकर अब स्वतन्त्र-लेखन कार्य कर रहे हैं । 'दिल्ली प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के अनेक बार प्रधान मंत्री रहे । 'ब्रज साहित्य मण्डल', मथुरा के भी अध्यक्ष रहे । भारत सरकार द्वारा सामाजिक-सेवा कार्य के लिए "पद्म श्री" की उपाधि से अलंकृत । आगरा से प्रकाशित "दैनिक विकासशील भारत' नामक एक समाचार पत्र के भी कुछ दिनों तक सम्पादक रहे । इनके विषय में एक 'अभिनन्दन ग्रंथ भी प्रकाशित है । गणतन्त्र-दिवस के अवसर पर दिल्ली के लाल किले में आयोजित होने वाले अखिल भारतीय कवि-सम्मेलन के वर्षों तक संयोजक रहे । अनेक कवि-सम्मेलनों, साहित्यिक गोष्ठियों तथा सांस्कृतिक समारोहों के आयोजक । एक बार एक शिष्ट-मण्डल के सदस्य के रूप में अल्पकालीन विदेश-यात्रा भी की ।

साहित्य-सेवा—आपकी पहली रचना, सन् 1930 ई. में चम्पा अग्रवाल इण्टर कालिज, मथुरा की मैगजीन में प्रकाशित हुई, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन । वर्षों तक दैनिक "हिन्दुस्तान" के "यत्र-तत्र-सर्वत्र" स्तंभ के लेखक रहे । काव्य-सृजन के अतिरिक्त विभिन्न साहित्यिक विषयों पर निबंध-लेखन । अनेक साहित्यिक-संस्थाओं के जन्मदाता ।

देश के विभिन्न भागों में आयोजित सैकड़ों कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ । आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से रचनाओं का प्रसारण । खड़ी बोली के अतिरिक्त ब्रजभाषा में भी काव्य-सृजन । सम्प्रति : वृद्धावस्था के कारण मंच से सन्यस्त ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) उनका पाकिस्तान, (2) नया रोजगार, (3) अजी सुनो, (4) चले आ रहे है, (5) कदम-कदम बढ़ाए जा, (6) रंग-जंग-व्यंग्य, (7) अनारी-नर (सभी काव्य) । कुछ कविता-संग्रह पाकेट बुक्स के रूप में भी प्रकाशित ।

अप्रकाशित कृतियाँ—स्फुट कविताएँ तथा लेखादि ।

विशेष—व्यासजी का हिन्दी काव्य-मंच पर हास्य-व्यंग्य के कवि के रूप में जब उदय हुआ, उस समय इस विधा के कवियों की संख्या बहुत कम थी; अतः अपनी सरल भाषा, आकर्षक पाठ-शैली तथा विषयों की नवीनता आदि के कारण ये शीघ्र ही अखिल भारतीय ख्याति अर्जित कर, लोक-प्रिय हो गए तथा पूरे दो दशकों तक हिन्दी-मंच पर छाए रहे ।

व्यासजी ने "सुभाष बाबू का तुलादान" जैसी ओजपूर्ण उत्कृष्ट हिन्दी कविताओं तथा ब्रजभाषा में प्राचीन शैली के चमत्कार पूर्ण छन्दों की रचना भी की है, तथापि वे हिन्दी-जगत् में "पत्नीवाद" के प्रवर्तक के रूप में ही जाने गए हैं। पत्नी, साला, साली आदि इनकी रचनाओं के प्रमुख विषय रहे। सामान्य-श्रोताओं को तात्कालिक रूप से विशेष प्रभावित करने की क्षमता रखते हुए भी व्यासजी की ऐसी रचनाएँ अश्लीलता के दोष से मुक्त नहीं रह सकीं, अतः बुद्धिजीवियों द्वारा उन्हें कभी सराहा नहीं गया।

भाषा तथा शिल्प की दृष्टि से व्यासजी की ब्रजभाषा तथा हास्यव्यंग्येतर हिन्दी कविताएँ जहाँ पुष्ट है, वहीं जिन रचनाओं के कारण उन्हें प्रसिद्धि मिली है तथा जो अधिकतर प्रकाशित भी है, वे प्रायः साहित्यिक-दरिद्रता की प्रतीक, अरुचिकर तथा अश्लील भी हैं। अनेक साहित्यकारों की राय में हिन्दी काव्य-मंच पर हुड़दंग तथा भौंड़ापन फैलाने एवं हिन्दी व्यंग्य-काव्य को विद्रूप बनाने में व्यासजी अग्रणी रहे हैं। आत्म-प्रशंसकों में भी आपका प्रमुख स्थान है।

काव्योदाहरण—

"पढ़ते वक्त मुझे बचपन में अक्सर प्यास लगा करती थी,
और गणित का घण्टा आते, शंका खास लगा करती थी,
बड़ा हुआ तो मुझे इश्क के दौरे पड़ने लगे भयंकर,
हर लड़की की अम्मा, मुझको अपनी सास लगा करती थी।"

× × ×

"जब तक पूरी तरह चाँदनी नही चाँद पर लहराती है,
तब तक तन के ताजमहल पर गोरी नही लचक पाती है,"

× × ×

"फर्म पुरानी से सदैव डीलिंग करना चोखा होता है,
नई कम्पनी से तो नवले ! अक्सर ही धोखा होता है,"

× × ×

"कौन दाव कितना गहरा है, नया खिलाड़ी कैसे जाने ?
अरी, पुराने हथकंडों को, नया बांगड़ू क्या पहिचाने ?"

श्री जगदम्बा प्रसाद "त्यागी"

पिता—श्री केशवप्रसाद श्रीवास्तव। जन्मतिथि—अज्ञात, 1919 ई.। जन्मस्थान—जौरा (जि. मुरैना)। शिक्षा—एम. ए., एल-एल. बी., साहित्यालंकार। व्यवसाय—शासकीय-सेवा से निवृत्त होकर, स्वतन्त्र-लेखन। काव्य-सृजन का

प्रारम्भिक वर्ष—1930 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1930 ई., मुरैना में। वर्तमान पता—ई-2-176, महावीर नगर, भोपाल—14 (म. प्र.)।

अन्य—प्रारम्भिक शिक्षा मुरैना में, बी. ए. ग्वालियर से, एम. ए. नागपुर से तथा एल-एल. बी. इन्दौर से किया। मध्यप्रदेश के उद्योग-विभाग में संयुक्त-संचालक के पद पर रहे। पहले कुछ समय तक ग्वालियर-राज्य के "जयाजी प्रताप" के सहायक-संपादक पद पर भी कार्य किया। हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी तथा अनेक क्षेत्रीय भाषाओं का ज्ञान। आकाशवाणी, इन्दौर की परामर्शदात्री समिति के सन् 1940 ई. से सदस्य। सम्प्रति—सेवा-निवृत्त।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1940 ई. में "आशा" (मासिक) में प्रकाशित, तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, जिला भोपाल की कार्यकारिणी के सदस्य। सन् 1948 ई. तक सैकड़ों मंचों से काव्य-पाठ किया, तदुपरान्त शासकीय-सेवा में जाने के कारण सार्वजनिक मंच से सन्यस्त; परन्तु गोष्ठियों मे भाग लेते रहे। आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से लगभग 100 बार रचनाएँ प्रसारित। काव्य-सृजन के अतिरिक्त कहानी, लघु-कथा, भाषा विज्ञान तथा समालोचनात्मक-साहित्य का भी सृजन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) प्रतिध्वनि, (2) अधूरागीत तथा (3) मिसलों के कीड़े (काव्य), (4) चर्म उद्योग परिचय, (5) भाषा-विज्ञान की रूपरेखा एवं अंग्रेजी में 45 सर्वेक्षण रिपोर्टें।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक काव्य-संग्रह तथा कहानी-संग्रह।

विशेष—साहित्य, भाव, भाषा तथा शिल्प की दृष्टि से सभी कविताएँ उत्कृष्ट। अपने समय के प्रसिद्ध मंचीय-कवि तथा साहित्यिक-कार्यक्रमों के आयोजक।

काव्योदाहरण—

"यह तृषित अधर—कि जो कभी झुके नहीं,
यह नयन—जो रूप-द्वार पर रुके नहीं,
स्नेह-स्वाँति-सिन्धु पर कभी मचल उठें—
बाहु-पाश-पंथ से प्रिये! पुकारना,
क्योंकि—
मैं मनुष्य हूँ—देवता नहीं॥"

(नारी तेरे रूप अनेक, पृ. 182)

डा. बरसाने लाल चतुर्वेदी

पिता—पं. जगन्नाथ चतुर्वेदी। **जन्मतिथि**—1 अगस्त, सन् 1921 ई.। **जन्मस्थान**—मथुरा। **शिक्षा**—एम. ए., एम. काम., एल. टी., पी-एच. डी., डी.

लिट्. । व्यवसाय—शिक्षा-विभाग में नौकरी । काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन 1938 ई. । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1940 ई. मथुरा में । ब्रजक्षेत्र मे सम्पर्क की अवधि—जन्म से । वर्तमान पता—13/7 शक्तिनगर, दिल्ली ।

अन्य—पैतृक-व्यवसाय—यजमानी । मथुरा में अनेक वर्षों तक अध्यापक रहे । फिर सैन्ट्रल स्कूल के प्राचार्य, तदुपरान्त केन्द्रीय विद्यालय संगठन, दिल्ली में शिक्षा-अधिकारी रहे । सम्प्रति—शिक्षा-विभाग के सहायक-आयुक्त के पद से अवकाश प्राप्त । शिक्षा-क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य के हेतु 1970 ई. में "राष्ट्रीय पुरस्कार" से विभूषित । शिक्षा-सुधार संबंधी अनेक कार्य-गोष्ठियों के निर्देशक रहे । शिक्षा संबंधी अनेक शोध-पत्र अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित ।

साहित्य-सेवा—प्रथम कविता सन् 1940 ई. में प्रकाशित, तत्पश्चात् विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कविताओं, लेखों तथा संस्मरणादि का प्रकाशन । अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ । आकाशवाणी तथा दूरदर्शन केन्द्रों से प्रसारण । सन् 1977 ई. में यूगोस्लाविया में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय काव्य-समारोह में भारत के प्रतिनिधि । बी. बी. सी. लन्दन से भी काव्य-पाठ ।

"जोकर" नामक हास्य-रस प्रधान मासिक पत्र के भू. पू. संस्थापक-संपादक । 'नौंक-झोंक' एवं "हिन्दी शिक्षण" पत्रों के सम्पादक भी रहे । अनेक वर्षों तक आकाशवाणी, दिल्ली केन्द्र की 'कार्यक्रम सलाहकार समिति' के सम्मानित-सदस्य रहे । कुछ पुस्तकें उत्तर प्रदेश शासन द्वारा पुरस्कृत ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) रंग और व्यंग्य, (2) छींटे, (3) हंसी के इन्जेक्शन, (4) हंसी के कैप्सूल, (5) काँटेदार कविताएँ, तथा (6) सुदामा चरित (सभी काव्य-संकलन) । इनके अतिरिक्त 15 हास्य-निबंध संग्रह तथा 9 आलोचनात्मक ग्रंथ । अब तक कुल 30 पुस्तकें प्रकाशित । आपके संबंध में एक 'अभिनन्दन ग्रंथ' भी प्रकाशित हुआ है, जिसमें आपकी अनेक गद्य-पद्य रचनाएँ भी संकलित हैं ।

विशेष—चतुर्वेदीजी हास्य-व्यंग्य के कवि के रूप में जाने जाते हैं, परन्तु आपकी हास्य-व्यंग्य कविताएँ भाषा, छन्द, व्याकरण तथा शिल्प सम्बन्धी अनेक दोषों से युक्त, अत्यन्त सामान्य-स्तर की हैं, जबकि आपका गद्य-साहित्य रुचिकर प्रतीत होता है । मंचीय-कवि के रूप में आप सफल नहीं हो सके ।

काव्योदाहरण—

"जसोदा हरि अंग्रेजी पढ़ावै ।
मम्मी डैडी कहहु दुलारे, सुनि मोहि आनँद आवै ।।
मेरो लाल "कान्वेन्ट" जात है, इंगलिश पोइम गावै ।
"टा-टा" कहि जब विदा होत है, रोम-रोम हरषावै ।।
"आंटी" सुनि चाची बलि जावै, अंकल मूँछ फरकावै ।

"डांस करत कजिन-सिस्टर सँग, नंद बबा मुस्कावै ।।
'बरसाने' या छवि कों निरखत, अंगरेजहु शरमावै ।।"

श्री राम प्रकाश "राकेश"

पिता—श्री ईश्वरी प्रसाद शर्मा । **जन्मतिथि**—1 अक्टूबर, सन् 1922 ई. । जन्म स्थान—ग्रा. पो.—पिलौना (जि. अलीगढ) । शिक्षा—साहित्य भूषण, साहित्य सुधाकर, हिन्दी में विशेष योग्यता । व्यवसाय—नौकरी । काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1936 ई. । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1943 ई., हाथरस में । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से । वर्तमान पता—सम्पादक : दौराला मिल पत्रिका, दौराला शुगर वर्क्स, दौराला (जिला मेरठ) ।

अन्य—सन् 1942 ई. के स्वतंत्रता-आन्दोलन में कार्यरत रहे; फिर क्रमशः अध्यापक, शिक्षा-प्रसार विभाग में पाठशाला-निरीक्षक, प्रान्तीय रक्षादल में अफसर, पुनः शिक्षा प्रसार विभाग में पाठशाला-निरीक्षक एवं सन् 1954 ई. से समाज-सेवा तथा जूनियर हाई स्कूलों के प्रवंधक पद पर रहे। सम्प्रति-"दौराला मिल पत्रिका" के सम्पादक । जिला पत्रकार संघ के अध्यक्ष तथा "अ. भा. औद्योगिक सम्पादक मण्डल" के सदस्य । अनेक पुरस्कार प्राप्त ।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1945 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन । अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी एवं दूर-दर्शन से प्रसारण । अनेक साहित्यिक-संस्थाओं से सम्बद्ध तथा साहित्यिक-कार्यक्रमों के संयोजक । हिन्दी, उर्दू तथा ब्रजभाषा में काव्य-सृजन के अतिरिक्त कहानी एवं निबंध लेखन । लोक-साहित्य के भी सर्जक ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) आजादी का सन्देश, (2) स्फुलिंग, (3) पत्नी का पीहर (4) देश यह वन्दनीय मेरा (सभी कविता-संग्रह) तथा (5) विश्वामी (खण्ड-काव्य)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) वर की बारात, (2) सृजन के दीप, (3) गीत-सरोवर । इनके अतिरिक्त खड़ी बोली की अनेक स्फुट कविताएँ, ब्रजभापा के छन्द तथा कहानियाँ आदि ।

विशेष—ओजस्वी काव्य-पाठ के लिए ख्याति प्राप्त । अधिकांश कविताएँ राष्ट्र-भक्ति, सामाजोत्थान तथा सामयिक विषयों से संबंधित । कुछ रचनाएँ हास्य-व्यंग्य की भी । छन्द, भाषा, भाव तथा शिल्प की दृष्टि से कविताएँ सरल तथा हृदयग्राही ।

काव्योदाहरण—

"देश यह वन्दनीय मेरा,
धरा अभिनन्दनीय मेरी;

नमन इस घाटी को मेरा,
नमन इस माटी को मेरा ॥
यहाँ होता नित स्वर्ण प्रभात,
विहँस कर खिलें कली सुकुमार,
अरुण किरणों से चूम कपोल,
दिवाकर देता जिन्हें दुलार ॥"

(देश यह वन्दनीय मेरा, पृष्ठ—5)

डा. चन्द्रभान रावत

पिता—पं. बांकेलाल नंबरदार। जन्म-तिथि—अज्ञात, जनवरी सन् 1925 ई.। जन्मस्थान—सोहवन (जि. मथुरा)। शिक्षा—एम. ए., एल. एल. बी., एल. टी., पी-एच. डी., व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1940 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—1941 ई. सरस्वती पुस्तकालय, मथुरा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—गोल्डन थ्रेशहोल्ड, नाम पल्ली स्टेशन रोड, हैदराबाद 500001 (आन्ध्र-प्रदेश)।

अन्य—बी. ए. के छात्र के रूप में गुरुकुल, वृन्दावन के मंच से काव्य-पाठ पर प्रथम पुरस्कार प्राप्त। सागर विश्वविद्यालय तथा तिरुपति विश्वविद्यालयों में हिन्दी के प्राध्यापक रहे। सम्प्रति—सेन्ट्रल-यूनिवर्सिटी, हैदराबाद में हिन्दी-विभागाध्यक्ष।

साहित्य-सेवा—बाल्यावस्था से ही काव्य-सृजन में रुचि। युवावस्था तक अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ। शिक्षा क्षेत्र में प्रवेश के बाद काव्य-मंच से सन्यास तथा समीक्षा एवं आलोचना के क्षेत्र में प्रवेश। अनेक साहित्यिक-संस्थाओं से सम्बद्ध।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) मथुरा जिले की बोली (2) सूर साहित्य : नव मूल्यांकन, (3) कृष्ण भक्ति साहित्य : वस्तु, स्रोत और संरचना (4) कृष्ण भक्ति साहित्य में प्रयुक्त काव्य रूप, (5) रास : एक मिश्रित काव्य-रूपक, (6) रामचरित मानस में लोकवार्ता, (7) तुलसी साहित्य : बदलते प्रतिमान, (8) दृष्टि और दिशा, (9) हिन्दी भाषा : विकास और विश्लेषण, (10) शोध-प्रविधि और प्रक्रिया, (11) भारतीय काव्य-शास्त्र: नवीन सम्भावनाएँ, (12) समकालीन समीक्षा तथा (13) हिन्दी कहानी : फिलहाल (सभी पुस्तकें शोध तथा समीक्षा विषयक), (14) दम्पति वाक्य विलास तथा (15) हित चौरासी और उनकी प्रेमदास कृत ब्रजभाषा टीका (ये दोनों पुस्तकें सम्पादित)।

इनके अतिरिक्त श्री कृष्णदत्त वाजपेयी द्वारा सम्पादित "ब्रज के इतिहास"

में (1) ब्रजभाषा (2) ब्रज का लोक साहित्य, तथा (3) ब्रजभाषा का साहित्य—इन तीनों भागों के लेखक।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) भंगैड़ी की अभिलाषा, (2) एक कपड़े की चाह, (3) अभिमन्यु का रणप्रयाण, (5) गाँव याद आ गया, (5) आइए मिलें (6) प्रतीक, (7) आंखें, (8) काजल, (9) नींद और सपने, (10) धूप (11) इन्सान (12) दिल के टुकडे (13) कुर्सी तथा (14) ठेकेदार (सभी काव्य तथा अनेक गद्य पुस्तकें।

विशेष—श्री रावत की कविताएँ सरल तथा सीधी-सादी भाषा में लिखी गई हैं। इनकी रचनाओं में ग्रामीण वातावरण तथा लोकधुनों का अद्भुत सामंजस्य पाया जाता है भक्ति-साहित्य तथा ब्रजभाषा का क्षेत्र आपके प्रिय विषय रहे हैं। आपकी अधिकांश गद्य पुस्तकें इन्हीं विषयों से सम्बन्धित हैं। लोकतान्त्रिक-समीक्षा तथा शैली-तान्त्रिक समीक्षा के क्षेत्र में आपने विशेष ख्याति अर्जित की है।

काव्योदाहरण—

"चाह नहीं मैं पंडितजी का एक अंगरखा बन जाऊँ,
चाह नहीं मैं बाबूजी का कोट-पैन्ट बन इतराऊँ,
चाह नहीं धनिकों के रुपये मुझमें ही बाँधे जाएँ,
चाह नहीं विरही के आँसू मुझसे ही पौंछे जाएँ,
मुझे चाह बस इतनी भगवन् ! पूरी करके दिखलाऊँ।
भारत-मां की विजय-पताका बनूं तिरंगा फहराऊँ ॥"

(कपडे की अभिलाषा)

डा. इन्द्रपाल सिंह "इन्द्र"

पिता—श्री रामचरनसिंह जी। जन्मतिथि—ज्येष्ठ कृष्णा द्वितीया, संवत् 1982 वि. सन् 1925 ई.। जन्मस्थान—सरेंधी (आगरा)। शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी-संस्कृत), पी-एच. डी., साहित्यरत्न, प्रभाकर। व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1937 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1942 ई., आगरा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। **वर्तमान पता**—द्वारा, हिन्दी-विभाग, नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर।

अन्य—सन् 1942 के स्वातन्त्र्य-आन्दोलन में भाग लेने के कारण वारण्ट निकला और भूमिगत रहे। उन्हीं दिनों 1943 ई. में लाहौर में "प्रभाकर" की परीक्षा दी। प्रथम विवाह के दो वर्ष बाद पत्नी की मृत्यु। सन् 1948 ई. में नार्मल की परीक्षा उत्तीर्ण कर, आगरा नगर महापालिका के एक विद्यालय में अध्यापन। अध्यापन कार्य करते हुए ही एम. ए. तक की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं, तदुपरान्त फैजे-आम कालेज में नियुक्ति। 1957 में "साकेत" महा-विद्यालय फैजाबाद, 1958 से

1964 तक बलवन्त राजपूत कालिज, आगरा तथा 1964 ई. से नागपुर विश्व-विद्यालय, नागपुर में हिन्दी-प्राध्यापक ।

साहित्य-सेवा—जनवरी 1953 ई. में कलकत्ता के "सन्मार्ग" में पहली कविता प्रकाशित, तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कविताओं तथा लेखादि का प्रकाशन । अनेक कवि-सम्मेलनों तथा गोष्ठियों में काव्य-पाठ । अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध । कविता के अतिरिक्त रेखाचित्र, एकांकी तथा समीक्षा-साहित्य का सृजन ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) शंख और वीणा (काव्य-संग्रह), (2) रीति काल के प्रमुख प्रबंध काव्य, (3) हिन्दी साहित्य चिन्तन, (4) तुलसी साहित्य और साधना, (5) संस्कृत नाटक और समीक्षा, (6) साहित्यिक निबंध, (7) साहित्य पथ, (8) अध्ययन और विचार, (9) पच्चीस निबन्ध, (10) अध्ययन और अनुसंधान तथा (11) एकता की वेदी पर (समीक्षात्मक) ।

अप्रकाशित कृतियाँ—तीन कविता संग्रह ।

विशेष—सभी कविताएँ सरल, सरस, तथा हृदयग्राही ।

काव्योदाहरण—

"यह तुम्हारा प्यार कैसा ?
कमल कलिका में विषम-विष का तरल संचार कैसा ?
नयन में आँसू झलकते, अधर अतिशय मुसकुराते।
रोम पुलकित हो मुझे उल्लास का परिचय बताते।
मिलन के सुख-समय में यह, मान का उपहार कैसा ?"

(शंख और वीणा, पृ. 159)

श्री शैलेन्द्र कुमार पाठक

पिता—श्री ब्रजबिहारीलाल पाठक । जन्म—बकेवर (इटावा) । जन्मतिथि—3 फरवरी, सन् 1926 ई. । शिक्षा—सामान्य । व्यवसाय—लेखन एवं पत्रकारिता। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—7 वर्ष की आयु से । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1938 ई., इटावा में । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से । वर्तमान पता—10/282, बीडनपुरा, करौलबाग, नई दिल्ली ।

अन्य—स्वतन्त्रता-संग्राम-सेनानी, ताम्रपत्र-प्राप्त । कुछ मिलाकर 8 वर्ष का कारावास भोगा । अनेक प्रतिष्ठित दैनिक तथा साप्ताहिक पत्रों के सम्पादक-मण्डल के सदस्य तथा दिल्ली "हिन्दी पत्रकार संघ" के अध्यक्ष रहे । अनेक साहित्यिक, सामाजिक तथा राजनीतिक संस्थाओं से सम्बद्ध एवं "कैदी" तथा "ताण्डव"

में (1) ब्रजभाषा (2) ब्रज का लोक साहित्य, तथा (3) ब्रजभाषा का साहित्य—इन तीनों भागों के लेखक।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) भंगेड़ी की अभिलाषा, (2) एक कपड़े की चाह, (3) अभिमन्यु का रणप्रयाण, (5) गाँव याद आ गया, (5) आइए मिलें (6) प्रतीक, (7) आंखें, (8) काजल, (9) नींद और सपने, (10) धूप (11) इन्सान (12) दिल के टुकड़े (13) कुर्सी तथा (14) ठेकेदार (सभी काव्य तथा अनेक गद्य पुस्तकें।

विशेष—श्री रावत की कविताएँ सरल तथा सीधी-सादी भाषा में लिखी गई हैं। इनकी रचनाओं में ग्रामीण वातावरण तथा लोकधुनों का अद्भुत सामंजस्य पाया जाता है भक्ति-साहित्य तथा ब्रजभाषा का क्षेत्र आपके प्रिय विषय रहे हैं। आपकी अधिकांश गद्य पुस्तकें इन्हीं विषयों से सम्बन्धित हैं। लोकतान्त्रिक-समीक्षा तथा शैली-तान्त्रिक समीक्षा के क्षेत्र में आपने विशेष ख्याति अर्जित की है।

काव्योदाहरण—

"चाह नहीं मैं पंडितजी का एक अँगरखा बन जाऊँ,
चाह नहीं मैं बाबूजी का कोट-पैन्ट बन इतराऊँ,
चाह नहीं धनिकों के रुपये मुझमें ही बाँधे जाएँ,
चाह नहीं विरही के आँसू मुझसे ही पौंछे जाएँ,
मुझे चाह बस इतनी भगवन् ! पूरी करके दिखलाऊँ।
भारत-मां की विजय-पताका बनूँ तिरंगा फहराऊँ।।"

(कपड़े की अभिलाषा)

डा. इन्द्रपाल सिंह "इन्द्र"

पिता—श्री रामचरनसिंह जी। जन्मतिथि—ज्येष्ठ कृष्णा द्वितीया, संवत् 1982 वि. सन् 1925 ई.। जन्मस्थान—सरेंधी (आगरा)। शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी-संस्कृत), पी-एच. डी., साहित्यरत्न, प्रभाकर। व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1937 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1942 ई., आगरा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—द्वारा, हिन्दी-विभाग, नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर।

अन्य—सन् 1942 के स्वातन्त्र्य-आन्दोलन में भाग लेने के कारण वारण्ट निकला और भूमिगत रहे। उन्हीं दिनों 1943 ई. में लाहौर में "प्रभाकर" की परीक्षा दी। प्रथम विवाह के दो वर्ष बाद पत्नी की मृत्यु। सन् 1948 ई. में नार्मल की परीक्षा उत्तीर्ण कर, आगरा नगर महापालिका के एक विद्यालय में अध्यापन। अध्यापन कार्य करते हुए ही एम. ए. तक की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं, तदुपरान्त फैजे-आम कालेज में नियुक्ति। 1957 में "साकेत" महा-विद्यालय फैजाबाद, 1958 से

1964 तक बलवन्त राजपूत कालिज, आगरा तथा 1964 ई. से नागपुर विश्व-विद्यालय, नागपुर में हिन्दी-प्राध्यापक।

साहित्य-सेवा—जनवरी 1953 ई. में कलकत्ता के "सन्मार्ग" में पहली कविता प्रकाशित, तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कविताओं तथा लेखादि का प्रकाशन। अनेक कवि-सम्मेलनों तथा गोष्ठियों में काव्य-पाठ। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध। कविता के अतिरिक्त रेखाचित्र, एकांकी तथा समीक्षा-साहित्य का सृजन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) शंख और वीणा (काव्य-संग्रह), (2) रीति काल के प्रमुख प्रबंध काव्य, (3) हिन्दी साहित्य चिन्तन, (4) तुलसी साहित्य और साधना, (5) संस्कृत नाटक और समीक्षा, (6) साहित्यिक निबंध, (7) साहित्य पथ, (8) अध्ययन और विचार, (9) पच्चीस निबन्ध, (10) अध्ययन और अनुसंधान तथा (11) एकता की वेदी पर (समीक्षात्मक)।

अप्रकाशित कृतियाँ—तीन कविता संग्रह।

विशेष—सभी कविताएँ सरल, सरस, तथा हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"यह तुम्हारा प्यार कैसा ?
कमल कलिका में विषम-विष का तरल संचार कैसा ?
नयन में आँसू झलकते, अधर अतिशय मुसकुराते।
रोम पुलकित हो मुझे उल्लास का परिचय बताते।
मिलन के सुख-समय में यह, मान का उपहार कैसा ?"

(शंख और वीणा, पृ. 159)

श्री शैलेन्द्र कुमार पाठक

पिता—श्री ब्रजबिहारी लाल पाठक। **जन्म**—बकेवर (इटावा)। **जन्मतिथि**—3 फरवरी, सन् 1926 ई.। **शिक्षा**—सामान्य। **व्यवसाय**—लेखन एवं पत्रकारिता। **काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष**—7 वर्ष की आयु से। **प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ**—सन् 1938 ई., इटावा में। **ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि**—जन्म से। **वर्तमान पता**—10/282, बीडनपुरा, करौलबाग, नई दिल्ली।

अन्य—स्वतन्त्रता-संग्राम-सेनानी, ताम्रपत्र-प्राप्त। कुल मिलाकर 8 वर्ष का कारावास भोगा। अनेक प्रतिष्ठित दैनिक तथा साप्ताहिक पत्रों के सम्पादक-मण्डल के सदस्य तथा दिल्ली "हिन्दी पत्रकार संघ' के अध्यक्ष रहे। अनेक साहित्यिक, सामाजिक तथा राजनीतिक संस्थाओं से सम्बद्ध एवं "कैदी" तथा "ताण्डव"

(साप्ताहिक) के सम्पादक रहे। सम्प्रति-स्वतन्त्र रूप से साहित्य-सृजन एवं समाज-सेवा। अनेक भाषाओं का ज्ञान।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1938 ई. में "प्रतिभा" (मासिक) में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में कविता, कहानी, लेखादि का प्रकाशन। सैकड़ों कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी से प्रसारण। खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा में काव्य-सृजन के अतिरिक्त कहानी, उपन्यास, लेख, नाटक, संस्मरण आदि का लेखन तथा अनुवाद कार्य। सम्पादित पुस्तकें अनेक प्रदेशों की माध्यमिक तथा स्नातक-कक्षाओं के पाठ्यक्रमों में स्वीकृत। अनेक पुस्तकें विभिन्न राज्य-सरकारों द्वारा पुरस्कृत।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) एक स्वर, (2) साजन की सनक, (3) ज्वालामुखी, (4) चिनगारी (सभी काव्य-संग्रह), (5) पगड़ी संभाल ओ जट्टा, (6) आजादी की राह, (7) इन्सान का दिल, (सभी कहानी संग्रह), (8) कथा-कुँज (सम्पादित कहानी संकलन), (9) लाल बहादुर शास्त्री : जीवन दर्शन और संस्मरण, (10) लाल बहादुर शास्त्री : व्यक्ति और विचार (11) लाल बहादुर शास्त्री : प्रधानमंत्री भवन से ताशकंद तक, (12) दिल्ली में गाँधीजी, (13) बंगाल का नरमेध, (14) भारतीय स्वाधीनता संग्राम की कहानी, (15) युग-पुरुष नेहरू के संकल्प, (16) सींखचों के पीछे, (17) महाविप्लवी : रास बिहारी बोस (जीवनी और संस्मरण), (18) पतिव्रता की डायरी (उपन्यास), (19) इच्छा-शक्ति, (20) मनोविज्ञान और सफल जीवन (मनोवैज्ञानिक), (21) बाल सेना : आजाद हिन्द फौज तथा (22) आजाद हिन्द फौज के सेना नायक (बाल-साहित्य)।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक कविताएँ, कहानियाँ, निबंध, संस्मरण आदि।

विशेष—पाठक जी अपनी युवावस्था में कवि-सम्मेलनों में ओजस्वी काव्य-पाठ के लिए विशेष प्रसिद्ध रहे, परन्तु अब कवि-सम्मेलनों से सन्यास लेकर साहित्य-साधना में संलग्न हैं। आपकी सभी कविताएँ भाषा, भाव तथा शिल्प की दृष्टि से उच्चकोटि की हैं। वर्तमान काल में ख्याति प्राप्त अनेक कवियों को मंच पर लाने तथा उन्हें प्रसिद्धि दिलाने में पाठकजी का अत्यधिक योगदान रहा है। इस प्रकार ये साहित्य-सर्जक के अतिरिक्त साहित्यकार-निर्माता भी रहे हैं।

काव्योदाहरण—

"संयम की जर्जर-जंजीरें,
मैं कब पलभर को तोड़ सका ?
मधुबाला ने मधुसिक्त-अधर,
रख दिए पिपासित-अधरों पर।
ढुलका दी नीर भरी गगरी,
मेरे चिर-कम्पित चरणों पर।

मेरे कवि के भोले मन को छलने के सौ-सौ छंद हुए।
पर, मेरे जीवन की धारा, कोई न कहीं भी मोड़ सका।"

श्री मुकुट बिहारी सरोज

पिता—श्री रामस्वरूप सारस्वत। जन्मतिथि—26 जुलाई, 1926 ई.। जन्मस्थान—गाँव-कोटा, तहसील-हाथरस (जिला—अलीगढ़)। शिक्षा—एम. ए., बी. एड., साहित्यरत्न। व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारंभ—सन् 1942 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1950 ई., बांदा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—बाल्य-काल से। वर्तमान पता—खासगी, लश्कर (ग्वालियर)।

अन्य—जीवन में अनेक संघर्ष रहे। सन् 1945 ई. से ग्वालियर में स्थायी-निवास। सम्प्रति—मध्यप्रदेश के शिक्षा-विभाग में अध्यापक।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1948 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। सैंकड़ों मचों से काव्य-पाठ। आकाशवाणी के केन्द्रों से कविताओं का प्रसारण। काव्य-सृजन के अतिरिक्त निबन्ध-लेखन। अनेक साहित्यिक-संस्थाओं से सम्बद्ध। अनेक बार अभिनन्दित तथा अनेक पुरस्कार प्राप्त।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) किनारे के पेड़ (गीत-संकलन)।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक रचनाएँ।

विशेष—भाषा, भाव तथा शिल्प-सौन्दर्य की दृष्टि से सभी कविताएँ अनुपम एवं हृदयग्राही। अपनी काव्य-पाठ की विशिष्ट शैली से हजारों श्रोताओं को प्रभावित करने में सक्षम। गीत-विधा के अनोखे शैलीकार। सामयिक तथा सामाजिक समस्याओं पर चुटीले साहित्यिक-व्यंग्य लिखने में बेजोड़।

काव्योदाहरण—

ऐसे-ऐसे लोग रह गए।
बनें अगर तो पथ के रोड़ा,
करके कोई ऐब न छोड़ा,
असली चेहरा दीख न जाए,
इस कारण हर दर्पण तोड़ा,
पानी पर दुनियाँ बहती है,
मगर हवा के साथ बह गए।
ऐसे-ऐसे लोग रह गए॥"

श्री वीरेन्द्र मिश्र

पिता—पं. चंद्रिका प्रसाद मिश्र। जन्म—मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् 1984 वि.। (सन् 1927 ई.)। जन्मस्थान—मुरैना। शिक्षा—बी. ए.। व्यवसाय—

स्वतंत्र-लेखन। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1938 ई.। प्रथम बार मंचीय-काव्य-पाठ—सन् 1940 ई., ग्वालियर में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—कृष्ण कुंज, तीसरी मंजिल, दादा भाई रोड, तीसरी गली, विलेपार्ले (पश्चिम) बम्बई—400056।

अन्य—जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव देखे। 'आकाशवाणी' की सेवा में 6 वर्ष तक 'प्रोड्यूसर' के पद पर कार्यरत रहे। दैनिक "नव प्रभात", साप्ताहिक "मंगल प्रभात" तथा दैनिक "आगामी कल" के सम्पादन-विभाग में भी कार्य किया। सन् 1957 ई. में भारत सरकार के सांस्कृतिक-शिष्ट-मण्डल के सदस्य के रूप में नेपाल-यात्रा। (1) हरिश्चन्द्र तारामती (2) बदनाम बस्ती (3) समस्या, (4) धूप-छाँव, (5) संस्कार (6) औरत खड़ी बाजार में तथा (7) गीता और गंगा आदि फिल्मों के लिए गीत लिखे। एन. सी. सी. फिल्म्स डिवीजन द्वारा सन् 1974 ई. में गीतात्मक फिल्म वृत्तचित्र प्रदर्शित। सम्प्रति—वार्षिक पत्रिका "सान्ध्यमित्रा" के सम्पादक। देव-पुरस्कार प्राप्त। बाल-साहित्य की अनेक पुस्तकें पुरस्कृत। बम्बई, पूना, गुजरात तथा विक्रम विश्वविद्यालयों के पाठ्य क्रमों में अनेक कविताएँ निर्धारित। अनेक भाषाओं का ज्ञान।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1950 ई. में प्रकाशित, तदनन्तर अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। सैकड़ों कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ। आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से गीत, संगीत-रूपक, संगीतिका-रूपक, नाटक, रूपान्तर आदि का प्रसारण। खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा में काव्य-सृजन के अतिरिक्त संगीत-रूपक, नाटक एवं बाल-साहित्य का सृजन। ग्वालियर में "आलोकन" तथा बम्बई में "सान्ध्य-मित्रा" नामक साहित्यिक-संस्थाओं के संस्थापक।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) गीतम (2) लेखनी वेला (3) अविराम चल मधुवंती (सभी गीत-संकलन), (4) कालेमेघा पानी दे (प्रहसन), (5) जय जवाहर (6) अपना देश महान तथा, (7) सुनो राम की कथा (बाल-साहित्य) एवं (8) गीतों के झूले (संपादित)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) आँगन में रांगोली बार-बार (काव्य)। इसके अतिरिक्त अनेक स्फुट कविताएँ, कहानियाँ, निबन्ध, रेडियो-रूपक आदि।

विशेष—श्री वीरेन्द्र मिश्र की गणना हिन्दी के प्रमुख गीतकारों में की जाती है। स-स्वर काव्य-पाठ तथा सुरुचि एवं उद्देश्य पूर्ण गीतों के लिए आपने विशेष ख्याति प्राप्त की है। हिन्दी गीति-काव्य को रूढ़ियों से निकाल कर एक नई भूमि पर प्रतिष्ठित कराने में आपने महत्वपूर्ण योगदान किया है। नव-गीत के शीर्षस्थ हस्ताक्षर आपने अपनी कविताओं में न केवल नवीन प्रयोग ही किए हैं, अपितु नये छन्दों की रचना भी की है। भाषा, भाव-गांभीर्य एवं शिल्प सभी दृष्टियों से आपकी रचनाएँ उच्च कोटि की हैं। अतिशय बौद्धिकता एवं क्लिष्ट शब्दावली के प्रयोग के कारण वर्तमान में मंच से प्रायः दूर हो चुके हैं।

काव्योदाहरण—

"फूलों की भारी भीड़ तुझे घेरे है जो,
यह भीड़ नहीं है, कफन उड़ाया गया तुझे।
जीवन-नद में जो नाव पड़ी है सपने की,
वह लहर आखिरी, जहाँ बहाया गया तुझे।
तू मृत-सा लहरों पर चुपचाप बहा जाता,
आकुल कूलों से आँख फेरता चलता है।
तू दूर-दूर के स्वर्ग देख लेता कैसे,
जब आस-पास ही नर्क घेरता चलता है।
(गीतम, पृ. 111)

डा. मुरारिलाल शर्मा "सुरस"

पिता—पं. चुन्नीलाल शर्मा। जन्मतिथि—16 सितम्बर, 1927 ई.। जन्मस्थान—आगरा। शिक्षा—एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्, साहित्यरत्न। व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1938 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1942 ई., गुरुकुल में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। स्थायी पता—लाड़ली कटरा, आगरा। वर्तमान पता—42, टैगोर पार्क, जी. टी. रोड, जालंधर 144008 (पंजाब)।

अन्य—प्राथमिक शिक्षा मथुरा में, पूर्व माध्यमिक इटावा में, माध्यमिक मथुरा में तथा उच्च शिक्षा आगरा में हुई। एम. ए. नागपुर से, पी-एच. डी. आगरा विश्वविद्यालय तथा डी. लिट् भागलपुर विश्वविद्यालय से। सी. ओ. डी. तथा मिलिट्री एकाउण्टस् आफिस में क्लर्की करने के बाद क्रमशः अग्रवाल इण्टर कालिज तथा राजकीय ट्रेनिंग कालिज, आगरा में अध्यापक रहे। जीवन में अनेक संघर्षों से जूझते रहने के बाद सम्प्रति—डी. ए. वी. कालेज, जालंधर में स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग के अध्यक्ष। 'नवीन लेखक संघ', आगरा के उपाध्यक्ष एवं अध्यक्ष, भारत स्काउट और गाइड, आगरा के प्रधानमंत्री एवं जिला मंत्री, तरुण साहित्य संगम, जालंधर के उपसभापति एवं सभापति तथा प्रेमचन्द हिन्दी साहित्य परिषद्, जालंधर के अध्यक्ष रहे। छात्र-जीवन में कविता एवं निबंध प्रतियोगिताओं में अनेक बार पुरस्कृत।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1942 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में कविता, एकांकी तथा निबंध आदि का प्रकाशन। खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा में काव्य-सृजन के अतिरिक्त एकांकी, निबंध तथा समीक्षा ग्रंथों के लेखक। अनेक मंचों से काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी से प्रसारण।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) प्रकृति संदेश (काव्य), (2) शशि गुप्त—एक अध्ययन, (3) वत्सराज—एक अध्ययन, (4) शिक्षा-शास्त्र की रूपरेखा, (5) अवधी कृष्ण काव्य और उसके कवि, (6) कबीर की काव्य-कला, (7) हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास, (8) साहित्यिक निबन्ध तथा (9) हिन्दी कृष्ण-काव्य परंपरा का स्वरूप (समीक्षात्मक)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि (2) हिन्दी-कृष्ण काव्य का इतिहास, (3) विचार और विश्लेषण (समीक्षात्मक), (4) उठो सबेरे (काव्य)।

विशेष—आपकी कविताएँ साहित्यिक-दृष्टि से सामान्य होते हुए भी सरल, सरस तथा हृदयग्राही हैं।

काव्योदाहरण—

"आज छा रहे काले बादल।
ये गम्भीर मधुर रव करते,
घिरते, शीघ्र फैल ये जाते,
तिरते मलयज के कूलों पर।
कभी धवल बक-पाँति सजाकर,
कभी मधुरतर गीत सुनाकर,
कभी छहरते दूर गगन में,
फेन उगलती जलधारा में,
ये उँडेलते गागर भर कर।"

(जनसाहित्य, फरवरी 1965 ई.)

डा. प्रेमप्रकाश गौतम

पिता—पं. रोशनलाल गौतम। जन्मतिथि—10 फरवरी, 1929 ई.। जन्म-स्थान—ग्राम-दगसह, पो. सादाबाद (मथुरा)। शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी-संस्कृत), पी-एच. डी.। व्यवसाय—अध्यापक। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1941 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1946 ई., सेन्ट जान्स कालिज, आगरा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—डी 1/70 जनकपुरी, नई दिल्ली।

अन्य—प्रारंभिक शिक्षा गाँव में तथा उच्च शिक्षा आगरा में हुई। आगरा विश्वविद्यालय तथा दिल्ली विश्वविद्यालय से सम्बधित विभिन्न कालेजों में विगत 29 वर्षों से अध्यापन-कार्य। सम्प्रति : आत्माराम सनातन धर्म कालेज, नई दिल्ली के

हिन्दी-विभाग में वरिष्ठतम प्राध्यापक। अनेक साहित्यिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं से सम्बद्ध। अनेक शोधार्थियों के निदेशक।

साहित्य-सेवा—पहली रचना सन् 1951 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में कविताओं तथा समीक्षात्मक निबन्धों का प्रकाशन। अनेक मंचों से काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) नव निर्माण, (2) मरुभूमि, (3) तरंगावलि, (4) जीवन के स्वर दो, (5) नीराजना, (6) धरा की ओर, (7) संकल्प की चट्टान (सभी काव्य-संग्रह), (8) समवेत (अन्य कवियों की रचनाओं के साथ प्रकाशित कविता-संकलन), (9) हिन्दी गद्य का विकास (शोध-प्रबंध), (10) काव्यागिनी, (काव्य-शास्त्र), (11) त्रिपथगा, (12) आधुनिक कविता की प्रवृत्तियां (आलोचना) एवं (13) एक सम्बोधन, छः कहानियाँ (चिन्तन प्रधान कहानी, संग्रह)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) हिन्दी साहित्य : आदि काल और मध्यकाल तथा (2) प्रेमचन्दोत्तर कथा-साहित्य। इनके अतिरिक्त अनेक कविता तथा समीक्षात्मक निबन्ध।

विशेष—श्री गौतम की कविता के प्रमुख विषय राष्ट्रीयता, प्रणय, प्रकृति, ईश्वर-भक्ति तथा परिवारीजन रहे हैं। 'मरुभूमि' तथा 'तरंगावलि' में प्रणय तथा प्रवृति विषयक रचनाएँ हैं। "नव निर्माण" तथा "धरा की ओर" में देशभक्ति-परक कविताएँ संकलित हैं। "जीवन के स्वर दो" में प्रणय-प्रकृति, देश भक्ति, परिवारीजन तथा मृत्यु संबंधी कविताएँ संकलित हैं। "समवेत" सामयिक कविताओं का संकलन है। 'संकल्प की चट्टान' में देश-भक्ति, देश-दशा, परम-शक्ति तथा पुत्र पर लिखी गई कविताएँ संग्रहीत हैं।

इनकी देश भक्ति-परक रचनाएँ राष्ट्रीय-सांस्कृतिक कविता के क्षेत्र महत्वपूर्ण हैं। श्री गौतम की अधिकांश रचनाएँ छन्दोबद्ध हैं, जो भाषा, भाव तथा शिल्प-सभी दृष्टियों से उच्च कोटि की हैं। डा. रांगेय राघव ने "आधुनिक हिन्दी कविता में प्रणय और शृंगार" तथा लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय ने "द्वितीय समरोत्तर हिन्दी साहित्य" शीर्षक अपने ग्रंथों में श्री गौतम की अधिकांश रचनाओं को उद्धृत करते हुए उनकी विशेष रूप से प्रशंसा की है। इधर कुछ समय से आपने गद्यात्मक शैली की कविताएँ लिखना भी आरंभ किया है।

काव्योदाहरण—

"विरह के दो क्षण युगों से, मिलन के दो युग क्षणों से।
नयन मिलते हैं नयन से, हृदय मिलता है हृदय से,
छेड़ता है प्राण मीठी रागिनी अलमस्त लय से,

द्वारा खुलता है धरा के स्वर्ग का उद्घोष करता,
प्रीति की मधुमय सुरभि के कोष से संसार भरता,
झूमता झोंका मदिर आता चला जाता अचानक,
सुरभि में सोई लता को कर व्यथित कंटक व्रणों से ॥"

(तरंगावलि, पृष्ठ 3)

श्री राधेश्याम शर्मा "प्रगल्भ"

पिता—श्री कंछीलाल शर्मा । जन्मतिथि—20 फरवरी, 1929 ई. । जन्म-स्थान—खुरजा । शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी-भूगोल), सी. टी. । व्यवसाय—ग्रंथ-संपादन । काव्य-सृजन का प्रारंभ—1945 ई. । प्रथमबार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1948 ई., बुलन्दशहर-प्रदर्शनी में । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से । वर्तमान पता—21, श्री निवासपुरी, नई दिल्ली—65 ।

अन्य—सन् 1947 में ए. एस. इण्टर कालिज, खुरजा में शिक्षक, 1948 ई. से 16 वर्ष तक एस. एम. जे. ई. सी. इण्टर कालिज खुरजा में सहायक-अध्यापक तथा सन् 1959 ई. में पदोन्नत होकर भूगोल-प्राध्यापक के रूप में कार्यरत । सन् 1952 से 1957 ई. तक नगर पालिका, खुरजा के निर्वाचित सदस्य के रूप में कार्य-रत । "सुरश्मि" एवं "अर्घ्य" मासिक पत्रों का सम्पादन । प्रयाग महिला विद्यापीठ एवं यू. एस. ओ. कार्यसमिति के सदस्य रहे । सन् 1964 ई. से 1968 ई तक बिजली मिल, हाथरस में सचिव तथा ब्रजकला केन्द्र के संयुक्त मन्त्री पद पर कार्य-किया, जिसके माध्यम से देश के विभिन्न हिन्दी तथा अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में लोक-मंच की स्थापना एवं कार्यक्रमों के प्रदर्शन किए गए । सन् 1970 ई. से 1974 ई. तक मथुरा में निवास कर संकल्प" प्रेस का संचालन, ब्रजलोक-मंच का पुनर्गठन, ग्रंथ-लेखन तथा अनेक साहित्यिक, सांस्कृतिक कार्य-क्रमों के आयोजन किए । सम्प्रति—सन् 1975 ई. से दिल्ली में निवास तथा 'मैकमिलन कम्पनी आफ इण्डिया लि.' में हिन्दी ग्रंथ-सम्पादक के रूप में कार्यरत । पंचों का फैसला", तथा "कस्तूरबा" नाम पुस्तकें भारत सरकार पुरस्कृत । बाल-साहित्य के लेखक के रूप में उपराष्ट्रपति द्वारा सम्मानित ।

साहित्य-सेवा—प्रथम कविता सन् 1956 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन । अखिल भारतीय स्तर पर सैकड़ों मंचों से काव्य-पाठ । खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा में काव्य-रचना के अतिरिक्त नाटक उपन्यास, जीवनी आदि का सृजन । बाल-साहित्य के प्रमुख लेखक । सम्प्रति : दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन के साहित्य-मंत्री तथा साहित्य-संस्कृति मंच के अध्यक्ष । आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से रचनाओं का प्रसारण । अनेक साहित्यिक-सेमिनारों में सम्मिलित हुए ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) मीरा, (2) राह अनेक, मजिल एक (3) पंचों का फैसला (नाटक), (4) सूरज की बेटी (काव्य), (5) नील कमल (6) सलाउद्दीन,

(7) हँसता पेड़ बोलती मैना (बालोपन्यास), (8) प्रेमचन्द्र (9) अभिमन्यु (10) द्रौपदी, (11) कस्तूरबा तथा (12) हिन्दी के मुसलमान कवि (औपन्यासिक-जीवनी)। इनके अतिरिक्त एक दर्जन सम्पादित बाल-उपन्यास।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) प्रगल्भ की कविताएँ (काव्य-संकलन), (2) सीता (खण्ड-काव्य) तथा अनेक स्फुट रचनाएँ।

विशेष—ओजस्वी तथा व्यंग्य-प्रधान काव्य-पाठ हेतु अखिल भारतीय ख्याति प्राप्त। मुक्त-काव्य भी लिखा। भाषा-भाव तथा शिल्प की दृष्टि से खड़ी बोली की सभी कविताएँ अत्युत्तम, उनमें अभिनव नवीन प्रयोग तथा प्रतीकों का बाहुल्य; ब्रज-भाषा की कविताएँ साहित्यिक दृष्टि से सामान्य। मुक्त-छन्द में लिखी गईं चिन्तन प्रधान रचनाएँ सर्वाधिक श्लाघनीय।

काव्योदाहरण—

"ईश्वर एक बहुत बड़ा सम्पादक है,
उसके अखबार के प्रतिदिन
दो अंक आते हैं,
रात और दिन उनका नाम।
चांद और सूरज नाम के पैकार
उन्हें लाते हैं,
द्वार-द्वार जाते हैं,
और हम उस अखबार से
उतना पढ़ पाते हैं
जितना अपनी भाषा में छपा होता है,
इसलिए दोस्त!
उन भाषाओं को सीखो,
जिन्हें नहीं जानते हो,
ताकि,
ईश्वर के अखबार की
और बातें भी पढ़ सको।"

('ईश्वर' शीर्षक लम्बी कविता का एक अंश)

श्री जगत प्रकाश चतुर्वेदी

पिता—श्री दीन दयाल चतुर्वेदी। जन्म-तिथि—30 जून, सन् 1929 ई.। जन्मस्थान—चंदीकरा (मैनपुरी)। शिक्षा—एम. ए., सहित्य भूषण, साहित्यरत्न। व्यवसाय—शासकीय-सेवा। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1942 ई.। प्रथम

बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1944 ई., मैनपुरी में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—सूचना एवं जन सम्पर्क अधिकारी, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

अन्य—प्रारंभिक शिक्षा मैनपुरी में तथा उच्च शिक्षा आगरा कलिज, आगरा में प्राप्त की। फिर शासकीय-सेवा में चले गए। उत्तर प्रदेश के अनेक जिलों में जिला सूचना अधिकारी रहे। आकाशवाणी इलाहाबाद में प्रसार अधिकारी तथा राष्ट्रीय सहकारी संघ, दिल्ली में संयुक्त-निदेशक (जन-सम्पर्क) के पदों पर रहने के बाद सम्प्रति-काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में सूचना एवं जन सम्पर्क अधिकारी के पद पर कार्यरत। अनेक कहानी-प्रतियोगिता तथा काव्य-प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त।

साहित्य-सेवा—पहली रचना सन् 1945 ई. में प्रकाशित, तत्पश्चात् अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से प्रसारण। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे। कविता के अतिरिक्त कहानी तथा रिपोतार्ज आदि का भी लेखन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) दीपबेला (गीत-संग्रह)।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक गीत संग्रह, रिपोतार्ज एवं कहानियाँ।

विशेष—सुमधुर कण्ठ-स्वर। पावस-गीतों के लिए विशेष लोक-प्रियता प्राप्त। भाषा टकसाली, भाव गाम्भीर्य एवं शिल्प की दृष्टि से कविताएँ समृद्ध। मूलतः श्रृंगारी-कवि। प्राकृतिक-सुषमा के अनुपम शब्द-शिल्पी।

काव्योदाहरण—

"किसी के नयन का संदेश लेकर आ गए बादल,
तुम्हारी आज भी पाती नहीं आई।
सुबह जब मेघ में छुप कर किरन फूटी,
तुम्हीं जैसी तनिक हँसती, तनिक रूठी,
दिखाकर दामिनी पलभर मुझे बहका गए बादल,
तुम्हारी आज भी पाती नहीं आई॥"

डा. राम गोपाल शर्मा "दिनेश"

पिता—कन्हैयालाल मिश्र। **जन्मतिथि**—5 जुलाई सन् 1929 ई.। जन्म-स्थान—सिघावली, पो. बाह (जि. आगरा)। शिक्षा एम. ए. (हिन्दी-संस्कृत) पी-एच. डी., डी. लिट्.। व्यवसाय—शिक्षण। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1945 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1947 ई., बटेश्वर मेला (जिला आगरा)। में ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—हिन्दी विभागा-

ध्यक्ष, सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर। निवास : 43 सुन्दरवास (उत्तरी), उदयपुर (राजस्थान)।

अन्य—सारथी (महाकाव्य), मधु रजनी (गीत-संग्रह), रूपगंधा (गीत संग्रह), लोक देवता जगा (नाटक) तथा धरती के लाल 3 भाग (बाल-साहित्य)—ये सभी पुस्तकें पुरस्कृत। अन्य अनेक पुरस्कार प्राप्त। "विश्व ज्योति बापू" (काव्य) शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत। सम्प्रति—सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर में प्रोफेसर तथा हिन्दी-विभागाध्यक्ष पद पर कार्य-रत।

साहित्य-सेवा—पहली कविता "वीरांगना" सन् 1948 ई. में प्रकाशित तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कविता एवं निबंध आदि का प्रकाशन। खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा में काव्य-सृजन के अतिरिक्त नाटक, कहानी, उपन्यास, बाल-साहित्य तथा शोध एवं समीक्षात्मक ग्रन्थों का सृजन। अनेक पुस्तकों का सम्पादन। अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ। आकाशवाणी के अनेक केन्द्रों से प्रसारण। अनेक साहित्यिक संस्थाओं तथा कार्यक्रमों से सम्बद्ध।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) सारथी (महाकाव्य), (2) हिमप्रिया, (3) उत्सर्ग, (4) विश्व ज्योति बापू, (5) दुर्वासा (सभी खण्ड-काव्य), (6) मधु रजनी (7) जलती रहे मशाल, (8) जय घोष, (9) संघर्षों के राही, (10) गौरवगान (11) सर्वोदय के गीत, (12) रूपगंधा (सभी गीत-संग्रह), (13) आयाम, (14) अहं मेरा गेय (नई कविता), (15) धरती का देवता, (16) लोक देवता जगा, (17) विजय पर्व, (18) सदानीरा, (19) सोमनाथ, (20) कुणाल (सभी नाटक), (21) द्रोण का शिल्प तथा (22) शान्ति के प्रहरी (एकांकी नाटक), (23) बदलती रेखाएँ तथा (24) राह की रोशनी (सभी उपन्यास) (25) आकाश के यात्री (कहानी-संग्रह) (26) हिन्दी शिव-काव्य का उद्भव और विकास, (27) कामायनी का नया अन्वेषण, (28) शोध और समीक्षा, (29) हिन्दी काव्य में नियतिवाद, (30) हिन्दी भाषा और उसका इतिहास, (31) मीमांसा और मूल्यांकन, (32) प्रताप की काव्य-साधना, (33) प्रेमचन्द और उनका गोदान, (34) खड़ी बोली के प्रतिनिधि कवि, (35) हिन्दी-साहित्य का आदर्श इतिहास, (36) वृन्दावन लाल वर्मा और उनकी मृगनयनी, (37) काव्यालोचन, (38) तुलनात्मक विवेचन, (39) साहित्य के नए संदर्भ, (40) सूरति मिश्र ग्रन्थावली (भाग 1, 2, 3, 4) तथा (41) शशिनाथ विनोद (ये सभी शोध, आलोचना, समीक्षा एवं इतिहास विषयक गद्य ग्रन्थ), (42) हम धरती के लाल 3 भाग, (43) ऐसा देश हमारा, (44) गांधी बनूँगा, (45) वीर शिवाजी, (46) आचार्य कृपलानी, (47) साम्ययोगी विनोबा, (48) सर्वपल्ली राधाकृष्णन (सभी बाल-साहित्य), (49) अध्ययन और अन्वेषण, प्रथम और द्वितीय खण्ड, (50) साहित्यिक अनुसंधान के प्रतिमान, (51) साहित्यिक शोध के सिद्धान्त

और समस्याएँ, (52) तुलसीदास : काव्यकला और दर्शन, (53) आधुनिक काव्य-बोध और परम्परा (54) रस सिद्धान्त (55) हिन्दी भाषा विज्ञान रूप-तत्व (56) साहित्यालोचन के प्राचीन और नवीन सिद्धान्त तथा (57) पाण्डुलिपि-सम्पादन कला (ये सभी पुस्तकें सम्पादित)। हाल ही में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा भी 'लोकप्रिय हिन्दी कवि माला' के अन्तर्गत आपकी कविताओं का एक संकलन प्रकाशित किया गया है।

अप्रकाशित कृतियाँ—एक काव्य संकलन, अनेक स्फुट कविताएँ, कहानियां, निबन्ध आदि।

विशेष—दिनेशजी की सभी कविताएँ भाषा, भाव, शिल्प, छन्द-योजना आदि की दृष्टि से अत्यधिक समृद्ध हैं। सूक्ष्म-दृष्टि, वर्ण्य-विषय का गंभीर विवेचन तथा तटस्थ-विश्लेषण—ये सभी गुण इनकी रचनाओं में प्रभूत मात्रा में विद्यमान हैं। मंचीय-कवि के रूप में भी आपने पर्याप्त ख्याति अर्जित की है।

काव्योदाहरण—

"हैं फूल हवा को बेच चुके
खिलने से पहले गंध बिका।
किरणें बंध गई अँधेरे से,
निस्तेज हुआ सूरज युग का।
आवाज रुकी है कुहरे में,
मैं गीत सुनाऊँ भी कैसे ?
मौसम ही खुद को खा बैठा,
मैं तुम्हें जगाऊँ भी कैसे ?"

(रूपगंधा, पृष्ठ 63)

श्री राजेन्द्र कुमार पाठक

पिता—श्री दामोदर शर्मा। जन्म-तिथि—9 जुलाई 1929 ई.। जन्म-स्थान—सोरों (जि. एटा)। शिक्षा—एम. ए., बी. एस-सी., एल. एल. बी., साहित्यरत्न। व्यवसाय—सरकारी-सेवा। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1941 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1942 ई., विजयगढ़ में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। स्थायी पता—द्वारा-श्री जयशंकर शंखधार, मोहल्ल-गाड़ीखाना, कटघर, मुरादाबाद। वर्तमान पता—जिला सूचना कार्यालय, अशोक नगर, आगरा।

अन्य—आरंभ में कुछ समय तक वकालत की। फिर विभिन्न नौकरियों में रहे। सम्प्रति-उत्तर प्रदेश सरकार के 'जिला सूचना अधिकारी' के पद पर कार्यरत।

साहित्य-सेवा—प्रथम रचना सन् 1946 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। खड़ी बोली के अतिरिक्त ब्रजभाषा मे भी काव्य-सृजन। अनेक साहित्यिक-संस्थाओं से सम्बद्ध। अनेक कवि-सम्मेलनों मे काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) प्रियदर्शिनी, (2) परिणय (खण्ड-काव्य), तथा (3) रणभेरी (कविता-संग्रह)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) अहल्या, (2) उमा, (3) कैकेयी, (4) विश्वामित्र (सभी खण्ड काव्य), (5) श्री वराह, (6) परशुराम (7) दक्षिणा काली, (8) विजय शतक (काव्य-संकलन) तथा सैकड़ों स्फुट-रचनाएँ।

विशेष—भाषा, भाव तथा शिल्प की दृष्टि से सभी रचनाएँ पुष्ट तथा हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

श्वासों के रहते ऐसा लगता साहस का थकना,
जैसे सागर के पग में, हिमगिरि का मस्तक झुकना,
पाकर सर्वस्व समर्पण त्यागे वह सन्यासी है,
अन्यथा भटकने वाला कोलाहल का वासी है।"

श्री मधुर शास्त्री

पूरा नाम—श्री पुरुषोत्तमचन्द्र शास्त्री "मधुर"। पिता—पं. ताराचन्द्र शास्त्री। जन्मतिथि—7 जनवरी, सन् 1930 ई.। जन्मस्थान—ग्राम-बरौठा पो. हरदुआगंज (जि. अलीगढ़)। शिक्षा—एम. ए., शास्त्री, साहित्यरत्न। व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1951 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1952 ई.। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—3233 कूँचा ताराचंद, दरिया गंज, दिल्ली।

अन्य—जीवन भर संघर्षों से जूझते रहे। अध्ययन तथा अध्यापन में विशेष रुचि। सम्प्रति-दिल्ली के एक माध्यमिक विद्यालय में हिन्दी-शिक्षक।

साहित्य-सेवा—प्रथम कविता सन् 1953 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा में काव्य-सृजन के अतिरिक्त निबन्ध एवं कहानी-लेखन। सैकड़ों कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से प्रसारण। अनेक साहित्यिक-संस्थाओं से सम्बद्ध।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) आँधी के पाँव और घुँघरू (गीत-संग्रह) तथा (2) तूलिका (सम्पादित)।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक कविताएँ, कहानी तथा निबन्ध ।

विशेष—स-स्वर काव्य-पाठ के लिए ख्याति प्राप्त शास्त्रीजी की रचनाओं के प्रमुख विषय प्रेम, श्रृंगार तथा प्रकृति हैं । कुछ रचनाएँ दार्शनिक, सामाजिक तथा सामयिक विषयों पर भी लिखी गई हैं । भाषा संस्कृत-निष्ठ, परिमार्जित, मुहावरेदार तथा निर्दोष है । भाव-गांभीर्य, छन्द-योजना एवं शिल्प की दृष्टि से सभी कृतियाँ अनुपम तथा स्थायी-साहित्य की श्रेणी में रखी जाने योग्य हैं ।

काव्योदाहरण—

आँधी के पाँवों में मैंने घुंघरू बाँध दिये,
असन्तुष्ट लहरों का क्रंदन फिर भी बन्द नहीं ॥
असन्तोष की क्या कहिएगा, उसका भाग्य खिला,
तिनके से लेकर तरुवर तक सबमें यहाँ मिला ।
मन की परवशता का गाहक कोई नहीं लगा,
सम्बन्धों की इस नगरी में कोई नहीं सगा ।
पतझर के आंगन में मैंने फूल बिखेर दिए,
असम्बद्ध कांटों का दर्शन फिर भी बन्द नहीं ॥

(आंधी के पाँव और घुंघरू, पृ. 13)

श्री शत्रुघ्नदत्त दुबे

पिता—श्री बालादत्त दुबे । जन्मतिथि—1 जनवरी, 1931 ई.। जन्मस्थान—मधुदह (उ. प्र.) । शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी), एल. टी. । व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रथम वर्ष—सन् 1949 ई. । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1952 ई., किशोरी रमण कालेज, मथुरा में । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से । वर्तमान पता—एम. 18, गाँधी नगर, ग्वालियर ।

अन्य—डा. भगवत सहाय स्मारक महाविद्यालय, ग्वालियर तथा कस्तूरबा कन्या महाविद्यालय गुना में रहे । सम्प्रति, शासकीय महाविद्यालय, मुरार (ग्वालियर) में हिन्दी-विभागाध्यक्ष के पद पर कार्य-रत । जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर की प्रथम कला संकाय तथा महासभा के सदस्य रहे । क्रमशः वृन्दावन, मथुरा, आगरा तथा इलाहाबाद में रहने के उपरान्त अब ग्वालियर निवासी । अनेक पुरस्कार प्राप्त ।

साहित्य-सेवा—पहली रचना सन् 1958 ई. में "अजन्ता" (हैदराबाद) में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन । अनेक मंचों से काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से प्रसारण । अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध । खड़ी बोली के अतिरिक्त ब्रजभाषा में भी काव्य-सृजन । ब्रजभाषा में गीतों का

प्रयोग। अनेक शोध-निबन्धों का लेखन। आकाशवाणी के लिए रूपक तथा एकांकी नाटकों की रचना। अलिखित नाटक के प्रथम और सफल प्रयोगकर्ता।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) वेले की कली तथा (2) ज्योति लेखा (कविता संग्रह)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) मधुवन (काव्य-संग्रह), (2) वासवदत्ता (एकांकी नाटक संग्रह), (3) चिन्तन-पथ (निबन्ध-संग्रह), (4) खड़ी बोली कृष्णकाव्य का विवेचन (समीक्षात्मक ग्रन्थ)।

विशेष—तटस्थ, समन्वित विचार-चेतना के मूक-चिन्तक; कोमल-प्राण रसालता के गीति-कवि। गीतों में माधुर्य एवं कलात्मकता। भाव, भाषा तथा शिल्प-सभी दृष्टियों से कविताएँ परिपुष्ट।

काव्योदाहरण—

"असफलताओं बीच अडिग ये साहस ये विश्वास—
प्रेयसि! ठोकर खाकर भी मैं बढ़ता जाऊँगा।
आकुल झंझा तरु-सितार के तार-तार बिखरा,
व्याकुल लहरें अंतर के सपने तट पर छितरा;
अपने मन की ध्वंस-आश करते रह-रह साकार,
मेरे मन की तरी न डूबेगी, मैं कर में थाम—
आशा की पतवार, स्वप्न के पाल उड़ाऊँगा।"

(ज्योतिलेखा, पृ. 51)

डा. रामरजपाल द्विवेदी

पिता—श्री दुर्गाप्रसाद द्विवेदी। जन्मतिथि—10 अप्रेल, 1931 ई.। जन्म-स्थान—चाँदपुर (जि. एटा)। शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी-अंग्रेजी), पी-एच. डी.। व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारंभ—1946 ई.। प्रथम बार मंचीय-काव्य-पाठ—सन् 1949 ई., कासगंज में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। स्थायी पता—अलीगंज मार्ग, एटा। वर्तमान पता—268 के, रामनगर, गाजियाबाद।

अन्य—हिन्दी-अंग्रेजी के अतिरिक्त उर्दू एवं संस्कृत का ज्ञान। अध्ययन एवं लेखन में विशेष अभिरुचि। सम्प्रति : महानन्द मिशन कालिज, गाजियाबाद में प्राध्यापक।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1957 ई. में "सुदर्शन" (साप्ताहिक) में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी से प्रसारण। अनेक साहित्यिक संस्थाओं तथा कार्य-

क्रमों से सम्बद्ध । हिन्दी तथा ब्रजभाषा में काव्य-सृजन के अतिरिक्त शैक्षणिक एवं समीक्षात्मक-साहित्य का भी लेखन ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) प्रसाद एवं पन्त का तुलनात्मक अध्ययन (2) रत्नाकर और उनका उद्धव शतक, (3) कविवर पन्त और आधुनिक कवि, (4) कविवर पन्त और रश्मिबन्ध, (5) व्यावहारिक हिन्दी तथा (6) पाश्चात्य काव्य-शास्त्र आदि ।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक स्फुट कविताएँ तथा निबन्ध आदि ।

विशेष—कविताएँ सरल, सामान्य तथा हृदयग्राही ।

काव्योदाहरण—

"गरमी की दुपहरिया कैसे-कैसे जीतीं राम ।
ठिठुरन भरी निरदयी रतियाँ कैसे बीतीं राम ।।
कितनी मुश्किल से समझाया बावरिया मन को
सावन की रिमझिम में कर लेना मनचीती राम ।।"

× × ×

"बंजारे सा अल्हड़ यौवन कैसे माने ?—जब,
पड़ने लगीं फुहारें आई रितु रूठने-मनाने की ।
और तुम्हारी पाती मिली न आने की ।।"

(पाण्डुलिपि से)

श्री सतीशचन्द्र शर्मा "कमलाकर"

पिता—श्री सूर्यप्रकाश शर्मा । **जन्म-तिथि**—1 अक्टूबर, 1933 ई. । **जन्मस्थान**—मथुरा । **शिक्षा**—बी. एस-सी., एम. ए. । **व्यवसाय**—अध्यापन । **काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष**—सन् 1951 ई. । **प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ**—सन् 1964 ई., लाल किला, दिल्ली में । **ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि**— जन्म से । **स्थायी पता**—316, दलपत स्ट्रीट, मथुरा । **वर्तमान पता**—1/7093, विष्णु मार्ग, शिवाजी पार्क, शाहदरा, दिल्ली—32 ।

अन्य—सन् 1956 ई. तक मथुरा में रहे, तदुपरान्त दिल्ली में निवास । सम्प्रति-एक सीनियर सैकिण्डरी विद्यालय में विज्ञान के अध्यापक । विद्यार्थी-जीवन में खेलों में विशेष रुचि । अनेक साहित्यिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, राजनीतिक, जातीय तथा सामाजिक संस्थाओं से सम्बद्ध ।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1962 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन । अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ । खड़ी बोली के अतिरिक्त ब्रजभाषा में भी काव्य-सृजन ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) काश, खुदा ! मैं नारी होता तथा (2) न लल्ली, न लल्ला (हास्य-व्यंग्य कविताओं के संकलन)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) मण्डे चालीसा (2) कलयुगी कुण्डलियां (3) मुक्तक संग्रह तथा (4) फिल्मी पैरोडियां।

इनके अतिरिक्त अनेक स्फुट-कविताएँ।

विशेष—हास्य-व्यंग्य के कवि। भाषा, भाव, शिल्प की दृष्टि से कविताएँ सामान्य, परन्तु मनोरंजक एवं हृदयस्पर्शी।

काव्योदाहरण—

"पत्नी को रखना हो प्रसन्न, साली की इज्जत किया करो।
साली के पैरों को धोकर, नित तुम चरणामृत लिया करो॥
कलियुग में ऐसा सुनते हैं, साली पवित्र गंगाजल है।
साली का दर्शन उत्तम है, साली ही तुलसी का दल है॥"

(काश, खुदा ! मैं नारी होता, पृ.—14)

श्री थम्मन सिंह "सरस"

पिता—श्री गंगारामजी। जन्मतिथि—4 जनवरी 1934 ई.। जन्म **स्थान**—गाँव-बिल्टीगढ़, पो. मक्खनपुर, जि. मैनपुरी। शिक्षा—बी. ए. तथा सिविल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा। व्यवसाय—रेलवे विभाग में कार्यरत। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1946 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1951 ई., शिकोहाबाद मे। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—106/106 क, नजरबाग, लखनऊ।

अन्य—वर्तमान में एन. ई. रेलवे के लखनऊ कार्यालय मे हैड ड्राफ्ट्समैन के पद पर कार्यरत।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1956 ई. में "साप्ताहिक हिन्दुस्तान" में प्रकाशित, तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक-कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ। खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा में काव्य-सृजन के अतिरिक्त कहानी, नाटक तथा निबन्ध-लेखन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) आशाओं की मंजिल तथा (2) तुम्हीं ने कहा था (कविता-संग्रह)।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक कविताएँ, कहानी, नाटक तथा निबंध।

विशेष—कविताएँ साहित्यिक-शिल्प की दृष्टि से सामान्य, परन्तु हृदयस्पर्शी।

काव्योदाहरण—

"विपदाओं से हार, आदमी अश्रु बहाने लगा अगर,
आशाओं की मंजिल अपना, कैसे मन समझायेगी ?

निर्माणों की कथा जिन्दगी, संघर्षो का अर्थ सबेरा,
गाँव धूप का दूर बहुत है, दीपक का विश्वास उजेरा,
सूनी-सूनी आँख पंथ की आभा-अंजन कौन भरेगा, ?
होड़ थकन के बंधन हँस, निर्जन को नंदन कौन करेगा ?
संकट में नैया लख मांझी होता है भयभीत अगर.
हिमगिरि की गौरवमय गरिमा, मिट्टी में मिल जायेगी ।।"

(आशाओं की मंजिल पृ. 32)

डा. बाबूलाल गोस्वामी

पिता—श्री रामनाथ शास्त्री । जन्मतिथि—चैत्र कृष्णा सप्तमी, सं. 1991 वि (सन् 1934 ई.) । जन्मस्थान—बिहारीपुरा, वृन्दावन (मथुरा) । शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी-संस्कृत), पी-एच. डी. । व्यवसाय—अध्यापन । काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1950 ई. । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—अज्ञात । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से । वर्तमान पता—बी-166, सूर्य नगर, पो. चिकम्बरपुर, (जिला—गाजियाबाद) ।

अन्य—सन् 1961 से 1965 ई. तक गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन में हिन्दी महोपाध्याय के पद पर कार्यरत रहे । सम्प्रतिः—श्यामलाल कालिज, दिल्ली विश्वविद्यालय में वरिष्ठ व्याख्याता । "वंशीअलिजी का सम्प्रदाय—ललित सिद्धान्त और साहित्य" पर शोध-कार्य ।

साहित्यसेवा—प्रथम रचना सन् 1975 ई. में प्रकाशित, तत्पश्चात् विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कविताओं तथा लेखादि का प्रकाशन । अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ । अनेक साहित्यिक-संस्थाओं से सम्बद्ध ।

प्रकाशित पुस्तकें--(1) कितने पद चिह्न (कविता संग्रह) तथा (2) एक अन्तराल (खण्ड-काव्य) ।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक स्फुट कविताएँ तथा निबन्ध आदि ।

विशेष—भाव, भाषा तथा शिल्प की दृष्टि से कविताएँ सरस तथा हृदयग्राही ।

काव्योदाहरण—

"परबत-परबत गहन तमिस्रा, घाट घाट अँधियारा ।
बस्ती-बस्ती बेसुध सोयी, लुटता वैभव सारा ।।
पहले स्वर्ण-विहान सजा दो, फिर आराधन होगा ।
पहले मुझे सबेरा ला दो, फिर अभिनन्दन होगा ।।"

(कितने पद चिह्नः पृष्ठ 61)

डा. सत्यप्रकाश "बजरंग"

पिता—श्री लक्ष्मीनारायण गुप्त। जन्मतिथि—7 मार्च, सन् 1934 ई.। जन्मस्थान— कासगंज (एटा)। शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी-राजनीति शास्त्र), पी-एच. डी., बी. टी. आचार्य। व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1950 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ सन् 1948 ई., एटा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता : डी. 47, भजनपुरा, शाहदरा, दिल्ली—110055।

अन्य—"काव्य रत्नाकर" की सम्मानोपाधि तथा अनेक पुरस्कार प्राप्त। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध। प्रारम्भ से अनेक नौकरियाँ कीं, तदुपरान्त शिक्षा-क्षेत्र में प्रवेश। सम्प्रति—दिल्ली के एक विद्यालय में अध्यापक।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1974 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी से प्रसारण। ब्रजभाषा एवं खड़ी बोली में काव्य-सृजन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) क्रान्ति-घोष तथा (2) राष्ट्रोत्थान (काव्य-संग्रह)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) काव्योद्‌गम (2) गीतोद्यान, (3) लालाजी (4) विद्यालय (सभी काव्य) एवं (5) भवानी प्रसाद मिश्र की कविताएँ (शोध-प्रबंध)।

विशेष—वीर-रस के ओजस्वी-कवि के रूप में ख्याति प्राप्त। भाषा, भाव, छन्द तथा शिल्प की दृष्टि से रचनाएँ उत्तम।

काव्योदाहरण—

"हो तिमिरांकित सपने जिनके, उनको हृदय-ज्योति बन जाऊँ,
प्यास बुझाए जो मरुथल की, मैं ऐसा वारिद बन जाऊँ।
तपन मिटाए जो चातक की, स्वाँति बूँद बन पीर हरूँगा,
द्रवित हो उठें जो करुणा से, उन नयनों का नीर बनूँगा।।"

(नवचण्डी स्मारिका, 1973 ई. पृ.-27)

श्री देवेन्द्र शर्मा "इन्द्र"

पिता—श्री मेवाराम जी। जन्मतिथि—1 अप्रैल, सन् 1934 ई.। जन्म-स्थान—ग्राम-नगला अकबरा, पो. रुनकुता (जि. आगरा)। शिक्षा—एम. ए.। व्यवसाय—प्राध्यापक। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1947 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1947 ई. होलिकोत्सव पर, ग्राम-नगला अकबरा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—1/9672 पश्चिमी गोरखपार्क, शाहदरा, दिल्ली-32।

अन्य—सन् 1956 ई. से 1966 ई. तक क्रमशः किशोरीरमण डिग्री कालिज, मथुरा; आगरा कालिज, आगरा; जे. बी. जैन कालिज, सहारनपुर; पी. सी. बागला कालिज, हाथरस तथा पुन. आगरा कालिज, आगरा के हिन्दी-विभाग में प्राध्यापक रहे। सम्प्रति—दिल्ली विश्वविद्यालय के अन्तर्गत "श्यामलाल कालिज, शाहदरा" के हिन्दी-विभाग में वरिष्ठ-प्राध्यापक। प्रारंभिक शिक्षा पितामह के श्रीचरणों में बैठ कर संस्कृत में, तदुपरान्त स्वामी कृष्णानन्द सरस्वती के सान्निध्य में हुई; फलतः धार्मिक-संस्कारों की जीवन पर अमिट छाप। अध्ययन, अध्यापन तथा साहित्य एवं साहित्यकारों के प्रति विशेष रुचि। अ. भा. हिन्दी प्रसार प्रतिष्ठान,पटना द्वारा "साहित्य-मनीषी" की मानद उपाधि से अलंकृत।

साहित्य-सेवा—प्रथम रचना सन् 1948 ई. में, प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी केन्द्रों से कविताओं एवं वार्ताओं का प्रसारण। खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा में काव्य-सृजन के अतिरिक्त अनेक समीक्षात्मक ग्रंथ एवं निबन्धों का लेखन। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) कालजयी (खण्ड-काव्य), (2) पथरीले शोर में, (3) पंख कटी महराबें, (4) कुहरे की प्रत्यंचा (गीत-सग्रह), (5) ताज की छाया में (सम्पादित कविता-संग्रह), (6) बिहारी सतसई, (7) जयशंकर प्रसाद और आँसू, (8) महाकवि हरिऔध और उनका प्रिय-प्रवास, (9) लक्ष्मीनारायण मिश्र और जगद्‌गुरु, (10) रश्मि बंध और सुमित्रानन्दन पंत तथा (11) महाकवि निराला की शक्ति पूजा (सभी समीक्षात्मक)।

अप्रकाशित कृतियां—(1) कारा, (2) मरीचिका, (3) सान्ध्य-किरण, (4) राख और अंगारे, (5) पंछी और उड़ान, (6) कचनार की कलियाँ, (7) ऋचाओं के छन्दमय सीमान्त, (8) अनन्तिमा (गीत-संग्रह) (9) पूर्वमेघ, (10) उत्तर मेघ, (11) ऋतु संहार (हिन्दी-काव्यानुवाद) (12) मैं साक्षी हूँ (प्रबन्ध-काव्य), (13) वंशीध्वनि (ब्रजभाषा की कविताएँ) (14) कुछ-गीत, कुछ कविताएँ (काव्य-संग्रह) तथा (15) नई कविता का एक संकलन। इनके अतिरिक्त भी अनेक स्फुट रचनाएँ और निबन्ध।

विशेष—रचनाओं में प्रकृति-सौन्दर्य तथा कला के प्रति अगाध निष्ठा, परन्तु जीवन-संघर्ष से निरपेक्ष रहकर एक भी शब्द नहीं लिखा। भाषा टकसाली, भाव गंभीर। शिल्प-सौन्दर्य एवं चिन्तन की दृष्टि से सभी रचनाएँ उत्तम।

काव्योदाहरण—

"गीत मेरा,
झिलमिलाते सूर्य के प्रतिबिम्ब-सा

झांक कर
इस पारदर्शी-मौन के निर्वाह में
कब तक रहेगा काँपता ?
क्षीर-स्नाता चाँदनी के रश्मि वलयित रज्जु से
साँवली गहराइयाँ—
कब तक रहेगा मापता.......?

(सांध्यमित्रा. 2 पृ. 176)

श्री विद्यानन्दन शर्मा "राजीव"

पिता—श्री गोकुल चन्द्र शर्मा। जन्मतिथि—7 जुलाई, सन् 1934 ई.। जन्मस्थान—ग्राम-कठैरा (जि. अलीगढ़)। शिक्षा—एम. ए., एल. टी.। व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1948 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य पाठ—सन् 1951 ई., अलीगढ़ प्रदर्शनी में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—द्वारा-राजकीय महाविद्यालय, दतिया (मध्यप्रदेश)।

अन्य—सन् 1956 ई. में मध्यभारत, फिर मध्य प्रदेश के शिक्षा-विभाग में सेवारत। सम्प्रतिः—राजकीय महाविद्यालय, दतिया के हिन्दी-विभाग में प्राध्यापक।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1952 ई. में प्रकाशित, तदनन्तर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण। खड़ी बोली के अतिरिक्त ब्रजभाषा में भी काव्य-सृजन। सम्प्रतिः नवगीत-लेखन में संलग्न।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) पंछी और पवन, (2) गीत गंध (गीत-संग्रह) तथा (3) शिशु गीत (बाल-गीत संग्रह)। "आस्था के शिखर" शीर्षक सामूहिक काव्य-संकलन में भी रचनाएँ संकलित एवं प्रकाशित।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) शीशदान (खण्डकाव्य) तथा (2) मेरे अभिराम (गीत-संग्रह)। इसके अतिरिक्त अनेक स्फुट कविताएँ।

विशेष—सुमधुर गीतकार के रूप में मंचीय ख्याति प्राप्त। नवीन प्रयोगों के लिए नवगीत के मान्यता-प्राप्त कवि के रूप में चर्चित। छन्द-योजना, भाव, भाषा, शिल्प आदि की दृष्टि से सभी कविताएँ उत्तम तथा हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"जब-जब मन रह गया अकेला, तेरी याद बहुत ही आई।
यों तो तेरे लिए हृदय में, चाह बहुत थी प्यार बहुत था,
मेरी अनव्याही पूजा पर, तेरा ही अधिकार बहुत था,

पर तेरे ही साथ बहारें भी हम से ले गईं विदाई।
जब-जब मन रह गया अकेला, तेरी याद बहुत ही आई॥"

(पंछी और पवन, पृष्ठ—17)

श्री मदनमोहन "उपेन्द्र"

पिता—श्री तोताराम यादव। जन्मतिथि—8 सितम्बर, सन् 1934 ई.। जन्मस्थन—जलेसर (एटा)। शिक्षा—बी. काम, साहित्यरत्न, विद्यावाचस्पति। व्यवसाय—राजकीय सेवा। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1952 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1953 ई.। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। स्थायी पता—385 सदर, मथुरा। वर्तमान पता—नलकूप खण्ड, मैनपुरी।

अन्य—जीवन का अधिकांश भाग आगरा तथा मथुरा में व्यतीत हुआ। सम्प्रतिः नलकूप खण्ड, मैनपुरी में कार्यालय-प्रमुख के पद पर कार्य-रत।

साहित्य-सेवा—पहली रचना सन् 1953 ई. में "नोंकझोंक" आगरा में प्रकाशित, तत्पश्चात् अन्य पत्र-पत्रिकओं में प्रकाशन। अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ। हिन्दी प्रचार सभा मथुरा तथा अन्य अनेक साहित्यिक-संस्थाओं से सम्बद्ध। खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा में काव्य-सृजन के अतिरिक्त कहानियाँ भी लिखीं। "साहित्या-लोक", "हिप्रस" तथा "अभिव्यक्ति" नामक पत्रिकाओं का सम्पादन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) उलझी अलकें, (2) किरण भर उजाले को, (3) जन-मेजय रुको (कविता-संग्रह), (4) कंजूस राजा, (बाल कहानियाँ) (5) लालच बुरी बलाय (बाल-कविताएँ) तथा (6) नारद जी बन्दर बने (बाल-काव्य)। इसके अतिरिक्त "शब्द वेणु अग्निमय" शीर्षक सामूहिक-संकलन में कविताएँ प्रकाशित तथा (1) रक्त तिलक, (2) पुरवैया की पायल (संपादित कविता-संग्रह) (3) कहानियां भोर की तथा (4) मोमबत्ती जलती रही (सम्पादित कथा-संग्रह)

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) अनुभूतियाँ (नवगीत संग्रह) तथा (2) भटकती आस्थाएँ (कथा-संग्रह)।, स्फुट कविताएँ एवं कहानियाँ।

विशेष—उपेन्द्रजी की कविताएँ प्रगतिशील विचारों की; जन-संघर्ष, अभाव तथा सामाजिक-विद्रोह से संबंधित हैं। कुछ व्यंग्य प्रधान भी हैं। अधिकांश रचनाएँ मुक्त-छन्द में, कुछ छन्दोबद्ध एवं कुछ मुक्तकों के रूप में भी लिखी गई हैं। भाषा, भाव, प्रवाह तथा शिल्प की दृष्टि से रचनाएँ सामान्य, परन्तु हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"स्वाधीनता के नाम पर
थोपे गए आग्रहों को ज्यों-ज्यों हम

जुए में बँधे बैलों की तरह स्वीकारते गए, त्यों त्यों हमारे—
जनतांत्रिक अस्तित्व को नकारा गया।
हमारे ऐतिहासिक महत्व को
जंग लगी ब्लेडों से तराशा गया,
चारों ओर प्रेतों का जंगल उगाया गया।"

(किरण भर उजाले को, पृ.—4)

डा. मुहम्मद अयूब खां "प्रेमी"

पिता—श्री बाबू खां। जन्मतिथि—22 जुलाई, सन् 1935 ई.। जन्म-स्थान—शकरौली (जि. एटा) शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी-संस्कृत), पी-एच. डी., डी. लिट्। व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1947 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य पाठ— सन् 1951 ई, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा में। ब्रज क्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। स्थायी पता—बदरविला, बेगपुर कंजौला, दोधपुर, अलीगढ़। वर्तमान पता—रीडर, स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग, काश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर (काश्मीर)।

अन्य—आपकी धर्मपत्नी भी हिन्दी की कवयित्री हैं। दो कविता संग्रह पुरस्कृत। "राज मार्ग के यात्री" नामक कहानी संग्रह पर 'जम्मू-काश्मीर कल्चरल ऐकेडेमी' द्वारा पुरस्कार प्राप्त।

साहित्य-सेवा— पहली कविता "प्रतीक्षा के दीप" सन् 1950 ई. में 'सरस्वती' में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध। काव्य-सृजन के अतिरिक्त कहानी, उपन्यास, शैक्षणिक एवं समीक्षात्मक ग्रन्थों तथा निबंधों आदि का लेखन। अनेक मंचों से काव्य-पाठ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) दर्पण बन गया इतिहास, (2) व्यामोह (3) यह आस्था यह अंधेरा, (4) पीले चाँद के शहर में (काव्य-संकलन), (5) निराला के काव्य में दार्शनिकता, (6) हिन्दी का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन, (7) संस्कृत व्याकरण मंजूषा (सभी-शैक्षणिक), (8) ये कंगूरे (उपन्यास), तथा (9) राज मार्ग के यात्री (कहानी-संग्रह)।

अन्य कृतियाँ—अनेक स्फुट कविताएँ, निबन्ध, कहानी आदि।

विशेष—भाव, भाषा तथा शिल्प की दृष्टि से कविताएँ सामान्य, परन्तु हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"एक शिला से टकरा आहत,
मन के सब अरमान सो गये,

अब न हृदय में ज्वार,
न झंझा के चलते प्रतिघात गगन में।
अब न पपीहा प्यास,
न उमड़ी सावन की बरसात नयन में ।।
गल-गल प्रतिदिन प्राण विकल ये,
सुधि कर-कर म्रियमाण हो गए ।।"

(नवगीत, पृष्ठ 10)

श्री शैवाल सत्यार्थी

पिता—(स्व.) श्री कन्हैयालाल जी। जन्मतिथि—2 अगस्त, 1935 ई.। जन्मस्थान—भिण्ड। शिक्षा—सामान्य। व्यवसाय—लेखन तथा मुद्रण। काव्य-सृजन का प्रारंभ—अज्ञात। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ-अज्ञात। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। पता—शारदा प्रेस, ग्वालियर-9।

अन्य—पिता "सैशन्स जज" थे। समृद्ध परिवार में पालन-पोषण। "इंगित" (पत्रिका) के अनेक अंकों का संपादन। सम्प्रति—प्रेस-संचालन तथा प्रकाशन। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा कथा-संग्रह पुरस्कृत।

साहित्य सेवा—पहली कविता सन् 1955 ई. में "मस्ताना जोगी" दिल्ली में प्रकाशित, तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। काव्य-सृजन के अतिरिक्त कहानी तथा संस्मरण-लेखन। अनेक मंचों से काव्य-पाठ। आकाशवाणी के विविध केन्द्रों से प्रसारण।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) और पहिए घूम रहे थे (कहानी-संग्रह) तथा अनेक सामूहिक-संकलनों में कविताएँ प्रकाशित।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) ओस और अंगारे (काव्य-संकलन), (2) बातें और मुलाकातें (साहित्यकारों के संस्मरण) तथा कविता-कहानी आदि अनेक स्फुट रचनाएँ।

विशेष—साहित्यिक दृष्टि से कविताएँ सामान्य, परन्तु हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"चल-चल बीती उमर डगरिया।
पर न मिला हम-सफ़र सँवरिया ।।
हर निगाह पर आँख लगाई,
हर नदिया को प्यास दिखाई;
हाथ जोड़ कर सबके सम्मुख,
पहुँचा लेकिन प्रीति न पाई;

छलक-छलक रीती गागरिया ।
ढुलक-ढुलक मिट गई नजरिया ।।"

श्री मोहन लाल शर्मा

पिता—पं. रामस्वरूप शर्मा । जन्मतिथि—10 अक्टूबर सन् 1936 ई. । जन्म-स्थान—कोसीकलां (मथुरा) । शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी-राजनीति शास्त्र), एल. टी., साहित्यरत्न । व्यवसाय—शिक्षण । काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1955 ई. । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—26 जनवरी, सन् 1955 ई. कोसीकलां में । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से । स्थायी पता—भगवती मंदिर मार्ग, कोसीकलां (जि. मथुरा) । वर्तमान पता—केन्द्रीय विद्यालय, आई. एन. ए. कालोनी, नई दिल्ली ।

अन्य—ब्रज साहित्य मण्डल, राजधानी ब्रजकला केन्द्र तथा राजधानी ब्रज समाज के क्रमशः सदस्य, केन्द्र-मंत्री तथा महामंत्री । सम्प्रति-स्नातकोत्तर हिन्दी-शिक्षक । कुण्डलियों में "कविमीत" उपनाम का प्रयोग ।

साहित्य-सेवा—प्रथम कविता सन् 1956 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन । अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी से प्रसारण । खड़ी बोली के अतिरिक्त ब्रजभाषा में भी काव्य-सृजन । गीत, मुक्तक, लम्बी कविता आदि विविध-विधाओं में लेखन । अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) ब्रजवार्ता, (गद्य-पद्य) तथा (2) आराधना (काव्य) ।

अप्रकाशित-कृतियाँ—अनेक स्फुट कविताएँ ।

विशेष—आपने हास्य-व्यंग्य अधिक लिखा है । साहित्यिक-दृष्टि से कविताएँ सामान्य, परन्तु हृदयग्राही ।

काव्योदाहरण—

चाहना के पंख ले, मन-विहग उड़ने का प्रयासी ।
तृण सँयोजित नीड़, जिसमें निहित एकाकी निशायें ।
डालियाँ बचपन झुलाईं, चहक से गुंजित दिशाएँ,
पर अनन्त असीम के सुख में रही मुझको उदासी"

डा. प्रकाशचन्द्र चतुर्वेदी "चंचल"

पिता—पं. श्रीवर चतुर्वेदी । जन्मतिथि—माघ शुक्ला, नवमी सं. 1996 वि. (सन् 1936 ई.) । जन्मस्थान—मथुरा । शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी-संस्कृत), पी-एच.

डी. । व्यवसाय—अध्यापन । काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—16 वर्ष की आयु से। प्रथम बार मंची-काव्य-पाठ—सन् 1960 ई. । ब्रज-क्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—353/2 आनन्द निवास, टीला जमालपुरा, भोपाल ।

अन्य—प्रारंभिक शिक्षा मथुरा में। सन् 1955 ई. में मथुरा छोड़कर भोपाल चले गए और वहीं प्राथमिक-शिक्षक पद पर नियुक्ति हुई। तत्पश्चात् घर पर ही अध्ययन करते हुए शिक्षा-विभाग के उच्च-शिक्षक पद पर पदोन्नति। सम्प्रति—शास. हमीदिया स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपाल के हिन्दी-विभाग में प्राध्यापक। ब्रजवासी समाज, भोपाल एवं अखिल भारतीय ब्रज-साहित्य परिषद, भोपाल के महामंत्री तथा उपाध्यक्ष। ए. आर. एजूकेशन सोसाइटी, भोपाल के अध्यक्ष।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन 1960 ई. में प्रकाशित, तत्पश्चात् विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं तथा अनेक काव्य-संकलनों में रचनाओं का प्रकाशन। कविताओं के अतिरिक्त समीक्षात्मक निबन्धों का भी लेखन। खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा-दोनों में काव्य-सृजन। अनेक मंचों से काव्य-पाठ । आकाशवाणी के अनेक केन्द्रों से प्रसारण।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) चेतना के स्वर, (2) सुरभि (3) ब्रजबानी (4) बीस सूत्र के कवि (सभी संम्पादित काव्य-संकलन)।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक कविताएँ तथा समीक्षात्मक-निबन्ध।

विशेष—कविताओं की भाषा सरल तथा हृदयग्राही। साहित्यिक दृष्टि से रचनाएँ सामान्य।

काव्योदाहरण—

"भरमाये मन को तुम तनिक तो सँभारो प्रिय।
शंका की कुंजगली गंध बिखर जायेगी ॥
भ्रमित मन उदास यहाँ बातों की घातों से,
अलसायी साँझ कहीं मिलन को चुराये ना।
चंचल बयार गंध उन्मादी कली-कली,
फूलों के गजरे कहीं (और) भौंर-मन लुभाये ना ॥
ओ मन के मीत !, तनिक रीति तो दुलारो तुम,
साधों की गली-गली गंध बिखर जायेगी।"

श्री आनन्द बल्लभ शर्मा "सरोज"

पिता—श्री मोतीलाल मुखिया । जन्मतिथि—आषाढ़ कृष्ण, 11 संवत 1993 वि. (दिनांक 5 जुलाई, 1937 ई.) [illegible] (मथुरा)। शिक्षा—

एम. ए. (हिन्दी) । व्यवसाय—सरकारी-सेवा । काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1956 ई. । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—वसंत पंचमी, सन् 1957 ई., टोपीकुंज वृन्दावन में । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से । वर्तमान पता—द्वारा श्री पी. एस. भट्ट, ए. सी. एफ. विल्ड लाइफ डिवीजन,हद्दो (पोर्ट ब्लेयर), अण्डमान । अण्डमान तथा निकोबार ।

अन्य—'अखिल भारतीय कला संस्कृति साहित्य परिषद', मथुरा द्वारा "साहित्यालंकार" की सम्मनोपाधि से अलंकृत । सन् 1974 ई. से पूर्व गोकुल नगर क्षेत्र-समिति के क्रमशः उपाध्यक्ष तथा अध्यक्ष रहे । वल्लभ-सम्प्रदाय के मन्दिरों में मुखिया के रूप में सेवा-कार्य । संगीत के माध्यम से कथा-प्रवचन । राधा-कृष्ण संस्कृत विद्यालय, महावन में हिन्दी-अध्यापन । खयाल-दंगल, भगत, कव्वाली गायन, संगीत-सम्मेलन, कवि-सम्मेलन, साहित्य-गोष्ठी आदि के आयोजनों में प्रारंभ से रुचि । लोक-नाटकों में अभिनय । संगीत-सम्मेलनों में गायन । वल्लभ-सम्प्रदाय में दीक्षित । अण्डमान-निकोबार से प्रकाशित "द्वीप प्रभा" पत्रिका के सम्पादकीय मण्डल के सदस्य तथा वरिष्ठ हिन्दी-अनुवादक के पद पर कार्य करने के बाद, सम्प्रति-आकाशवाणी के अण्डमान-निकोबार केन्द्र में कार्य-रत ।

साहित्य-सेवा—पहली कविता मार्च 1970 में "भाषा-ज्योति" (बम्बई) में प्रकाशित, तत्पश्चात् विभन्न पत्र-पत्रिकाओं में कविताओं तथा लेखों का प्रकाशन । अनेक काव्य-मंचों से काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण । 1968 ई. में "गोकुल उत्थान समिति" तथा 1976 ई. में पोर्ट ब्लेयर में साहित्य-संस्था "परिमल" के संस्थापक । खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा में काव्य-सृजन ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) क्रांतिदूत सुभाष, (2) कृति, (3) आकाश मंचल (सभी काव्य) ।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) अण्डमान में राधा, (2) प्रयाण गीत, (3) विदा, (4) विरुदावलि, (5) आस्था, (6) शंखनाद, (7) अभिलाषा (सभी काव्य) तथा अनेकों स्फुट रचनाएँ ।

विशेष—सभी कविताएँ सरल, सरस तथा हृदयग्राही ।

काव्योदाहरण—

"है वीर भोग्या वसुन्धरा भारत की, जिसने कर प्रकाश,
निज रत्न गर्भिणी-गरिमा से था दिया रत्न सचमुच सुभाष,
जो भासमान था दिनकर-सा, पौरुष का लेकर प्रखर पुंज,
लख जिसे विदेशी सत्ता के नक्षत्र हो उठे निपट लुंज,
दृढ़ अनुशासन से आवेष्टित सुगठित सैनिक था वीर वेष,
उद्दीप्त वीर रस मूर्तिमान, भय और भीरुता का न लेश ।"

('जय सुभाष' कविता का एक अंश)

डा. मनोहर लाल शर्मा "अभय"

पिता—श्री बांकेलाल शर्मा। जन्मतिथि—3 अक्तूबर, सन् 1937 ई.। जन्म-स्थान—मथुरा। शिक्षा—एम. कॉम, एल-टी., पी-एच. डी.। व्यवसाय—राजकीय-सेवा। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1956 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1958 ई. मथुरा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—संगठन सचिव, फैमिली प्लानिंग एसोसियेशन आफ इण्डिया, हरियाणा ब्रांच, 1542/22 सी. एच., चण्डीगढ़।

अन्य—"दिशा" (त्रैमासिक) तथा "पी. ई. एन." का सम्पादन किया। सम्प्रतिः चण्डीगढ़ में परिवार नियोजन संस्थान के संगठन-सचिव पद पर कार्यरत।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1960 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। हिन्दी प्रचार सभा, मथुरा से सम्बद्ध तथा अनेक साहित्यिक-कार्यक्रमों के आयोजक रहे। हिन्दी तथा ब्रजभाषा में काव्य-सृजन तथा निबन्ध लेखन। अनेक मंचों से काव्य-पाठ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) एक चेहरा, पच्चीस दरारें (काव्य-संकलन) तथा अनेक सामूहिक संकलनों में कविताएँ संकलित।

अप्रकाशित कृतियाँ—काजल पांखी (2) पुरवा के पायल (काव्य-संग्रह) तथा अनेक स्फुट रचनाएँ।

विशेष—साहित्यिक-दृष्टि से कविताऐं सरल, सामान्य तथा हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"हिम तुषार से दबी-दबी सी, सौ-सौ साधें खड़ी सिसकतीं।
मन की ड्योढ़ी पर बेमन सी, भरी उमंगें सांसें भरतीं,
लदे खड़े बादल पर बादल, उमड़ रहे ये लोचन घायल,
आँसू जमकर हुए हिमानी, पत्थर बन कर प्राण रह गये।"

(अंखुये और अंकुर, पृ. 39)

श्री बंकट बिहारी "पागल"

पिता—श्री शंकरलाल श्रीवास्तव। जन्मतिथि—12 अगस्त, सन् 1938 ई.। जन्मस्थान—मथुरा। शिक्षा—बी. ए.। व्यवसाय—शासकीय-सेवा। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1953 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1958 ई., मथुरा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से। वर्तमान पता—हाथी बाबू का बाग, कान्ति नगर, जयपुर।

अन्य—विद्यार्थी-जीवन में मंच पर एकांकी मूक-अभिनय (मोनो एक्टिंग)

के प्रति विशेष रुचि रही। चित्रकारी का कार्य भी किया। सम्प्रति: राजस्थान सरकार की सेवा में कार्यरत।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1958 ई. में प्रकाशित,तत्पश्चात् विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी से प्रसारण। "मंगल सूत्र" तथा "यमराज" फिल्मों के लिए गीत लिखे। अनेक साहित्यिक एवं सांस्कृति कार्यक्रमों के आयोजक तथा संस्थाओं से सम्बद्ध। हिन्दी तथा ब्रजभाषा में काव्य-सृजन के अतिरिक्त उपन्यास तथा कहानी-लेखन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) एक अंजुरी भर पीड़ा (कविता संग्रह)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) मुर्दे की आंख (सामाजिक उपन्यास) (2) कुन्ती (महाकाव्य), अनेक कविताएँ और कहानियाँ।

विशेष—श्री पागल ने हास्य-व्यंग्य के कवि के रूप में ख्याति अर्जित की है। ये करुण तथा वीर रस की रचनाएं भी लिखते तथा सुनाते है। अधिकाश कविताएँ मुक्त-छन्द में लिखी गई हैं। इनकी काव्य-पाठ शैली श्रोताओं को प्रभावित करती है, परन्तु साहित्यिक-दृष्टि से इनकी कविताएँ अत्यन्त सामान्य कोटि की हैं तथा उनमें से कुछ को विद्रूप की श्रेणी में भी रक्खा जा सकता है। भाषा, छन्द आदि की त्रुटियां भी पर्याप्त परिलक्षित होती हैं। इनके काव्य-पाठ में नाटकीयता का बाहुल्य पाया जाता है। मंच पर चुटकुले आदि सुना कर अपनी साहित्यिक-दरिद्रता को छिपाने में भी ये पटु हैं।

काव्योदाहरण—

"मैं रातों की नींद बेचने वाली,
अँधियारा बेचा करती हूँ,
उजियारा बेचा करती हूँ,
यूँ सेजों की सलवट बेचा करती हूँ,
अपनी हर करवट बेचा करती हूँ,
मेरा खून पसीना होता है,
थक कर चूर बहुत होती हूँ,
इतने पर भी अस्मत देती हूँ,
तब जाकर पैसा लेती हूँ।"

(अजुरीभर पीड़ा, पृ. 73)

श्री रमेश "रजक"

पिता—पं. दाताराम उपाध्याय। जन्मतिथि—12 सितम्बर, सन् 1938 ई.। जन्मस्थान—अलीगढ़। शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी)। व्यवसाय—अध्यापन।

काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1950 ई. । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1953 ई., एटा में । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से । पता—ई—19 पालिका निवास, लोदी कालोनी, नई दिल्ली—31

अन्य—जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में संघर्षशील रहे । अध्ययन—अध्यापन, समीक्षा एवं अलोचना में विशेष रुचि । सेमीनारों में भाग लेना भी रुचिकर ।

साहित्य-सेवा—पहली रचना सन् 1955 ई. में प्रकाशित, तदनन्तर अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन । सैकड़ों कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी के विविध केन्द्रों से रचनाओं का प्रसारण । खड़ी बोली के अतिरिक्त ब्रजभाषा में भी काव्य-सृजन । समीक्षा, आलोचनात्मक निबधों तथा लोक-गीतों का लेखन ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) किरन के पाँव, (2) गीत विहग उतरा, (3) मिट्टी बोलती है, (4) इतिहास दुबारा लिखो, (5) रमेश रंजक के लोक गीत एवं (6) गोलबन्दी (सभी काव्य-संग्रह) ।

अप्रकाशित कृतियाँ—तीन काव्य-कृतियाँ तथा दो गद्य पुस्तकें ।

विशेष—श्री रंजक अपने सुमधुर काव्य-पाठ के लिए विख्यात है । काव्य की भाषा टकसाली तथा मुहावरेदार । छन्द-योजना निर्दोष, भाव गांभीर्य एवं शिल्प-सौन्दर्य की दृष्टि से सभी रचनाएँ उत्तम । सम्प्रेषणीयता एवं चित्रोपमता इनकी कविताओं के विशिष्ट गुण हैं ।

काव्योदाहरण—

"बैल भई रे, करतार ।
उमरिया बैल भई । (टेक)

सुबह थमावै चाकी-चूल्हौ, दुपहर गोबर ढेर
सांझ निगोड़ी ऐसे पीटै, जैसे लोह लुहार ।
उमरिया बैल भई ।।

बारो देवर दरद न जानें, ससुर न आवै गेह,
ननदी छांटै थानेदारी, सासु लगै सरकार ।
उमरिय बैल भई ।।"

(रमेश रंजक के लोकगीत, पृष्ठ 5)

श्री प्रेमकिशोर "पटाखा"

पिता—(स्व.) पं. लक्ष्मीनारायण शर्मा । जन्मस्थान—अलीगढ़ । जन्मतिथि—27 अक्टूबर, 1943 ई. । शिक्षा—इण्टरमीडिएट । व्यवसाय—सरकारी-सेवा । काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष-1967 ई. । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1967

ई , अलीगढ़-प्रदर्शनी में । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि-जन्म से । स्थायी पता—872, लक्ष्मीपुरी, अलीगढ़ । वर्तमान पता—दादरी (जिला-गाज़ियाबाद) ।

अन्य—काव्य-सृजन एवं संगीत में अभिरुचि । कुछ कविताओं के ग्रामोफोन रिकार्ड तथा कैसेट भी बने हैं ।

साहित्य-सेवा—प्रथम रचना की प्रकाशन तिथि-अज्ञात । अनेक पत्र-पत्रिकाओं में कविताओं प्रकाशन । अनेक मंचों से काव्य-पाठ । आकाशवाणी तथा दूरदर्शन केन्द्रों से प्रसारण । हास्य-व्यंग्य की कविताओं तथा बाल-साहित्य के सृजन में विशेष रुचि ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) साली को सर्वेश्वर जानो, (2) पिल्ले की सालगिरह (दोनों काव्य) तथा बाल-साहित्य की लगभग एक दर्जन पुस्तकें ।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक स्फुट कविताएँ ।

विशेष—हास्य-व्यंग्य की सामायिक कविताओं के लोकप्रिय कवि । साहित्यिक दृष्टि से रचनाएँ सामान्य ।

काव्योदाहरण—

"दुल्हन की हो रही थी विदाई,
बार-बार रोने के लिए कर रही थी ट्राई,
बनावटी हिचकी ली, पहली,
तभी दुल्हन की मां बोली—"पगली"
यहीं रोने लगी तो सारा मेकअप धुल जायेगा,
तेरी सुन्दरता का राज खुल जायेगा ।
सुनकर लड़की ने कहा—"तब क्या करूँ माँ ?
मां बोली—
"अरी, तेरी अक्ल अभी तक मोटी है,
रोयेगा तेरा दूल्हा, तू क्यों रोती है ?"

डा. बिष्णुदत्त चतुर्वेदी "विराट्"

पिता—श्री बैजनाथ चतुर्वेदी । जन्मतिथि—7 फरवरी, सन् 1946 ई. । जन्म-स्थान—मथुरा । शिक्षा—एम. ए., पी-एच. डी. । व्यवसाय—स्वतंत्र-लेखन । काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1960 ई. । प्रथम बार मंचीय-काव्य-पाठ—सन् 1962 ई. । ब्रज-क्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—जन्म से । वर्तमान पता—श्रीगोवर्धननाथ जी का मंदिर, सिद्धनाथ रोड, बड़ौदा (गुजरात) ।

अन्य—संघर्षशील जीवन । "अखिल भारतीय आशीर्वाद प्रतियोगिता" में पुरस्कृत ।

साहित्य-सेवा--पहली कविता सन् 1968 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण। खड़ी बोली के अतिरिक्त ब्रजभाषा में भी काव्य-सृजन। शोध, समीक्षा, उपन्यास, कहानी, निबन्ध, बाल-साहित्य आदि विविध विषयों पर लेखन। गुजरात हिन्दी प्रचार सभा के संस्थापक एवं प्रधान मन्त्री।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) फुलवारी, (2) रंग बीथी (काव्य-संग्रह), (3) टूटती लकीरें (उपन्यास), (4) गोस्वामी हरिराय जी और उनका ब्रज-भाषा साहित्य (शोध-प्रबन्ध) (5) बृहद् हिन्दी व्याकरण तथा 25 के लगभग बाल-उपन्यास।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) संकल्प (महाकाव्य), (2) झांसी की रानी (काव्य) तथा (3) तुम नहीं आई (उपन्यास)। इनके अतिरिक्त लगभग 100 ब्रज-भाषा की तथा शताधिक खड़ी बोली की कविताएँ। शताधिक कहानियाँ एवं निबन्ध आदि।

विशेष—मंच पर ओजस्वी काव्य-पाठ के लिए विख्यात। वीर तथा शृंगार-दोनों रसों में काव्य-सृजन। छन्द-योजना तथा शिल्प की दृष्टि से सभी रचनाएँ उत्तम तथा हृदयस्पर्शी, परन्तु भाषा की दृष्टि से वीर रस की कविताओं मे कटूक्तियों की भरमार तथा परूष-शब्दावली का प्रयोग। राष्ट्रीय, सामाजिक तथा सामयिक विषयों पर विद्रोहात्मक कविताएँ अधिक लिखीं। कुछ कविताएँ भक्ति तथा शृंगार विषयक भी। काव्य-सृजन एवं साहित्य-सेवा के क्षेत्र में मनस्वी-साधक।

काव्योदाहरण—

"जनतन्त्र बन गया है मज़ाक मदिरालय का,
साकी स्वदेश के अर्थ बताया करती है।
दिल्ली के सिंहासन पर खिसियानी बिल्ली
अब संबिधान का मांस चबाया करती है।"

× × × ×

"नव-जीवन के आयोजन की तय्यारी में,
तुम शोक-सभा के आयोजन से ऊब गए।
तैराकी के तमगे हासिल करने थे पर,
घुटने-घुटने पानी में ही तुम डूब गए॥"

× × × ×

श्री अशोक "चक्रधर"

पिता—श्री राधेश्याम "प्रगल्भ"। जन्म तिथि—8 फरवरी, सन् 1951। जन्म स्थान—खुर्जा (बुलन्दशहर)। शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी), एम. लिट्।

व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1960 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1961 ई., खुर्जा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—बाल्यकाल से। वर्तमान पता—88 डी. सनलाइट कालोनी-2, आश्रम, नई दिल्ली—110014।

अन्य—पहले सत्यवती को-ऐजूकेशन्स कालेज, तीमारपुर में और अब जामिया कालिज, नई दिल्ली के हिन्दी-विभाग में प्राध्यापक। बाल्यावस्था में खुर्जा, फिर 3 वर्ष तक मथुरा में रहने के बाद, सम्प्रति: दिल्ली में निवास। जनवादी-आन्दोलनों में विशेष रुचि। सन् 1980 ई. में सर्वश्रेष्ठ युवा हास्य-व्यंग्य कवि का "टिठोली" पुरस्कार तथा "मुक्ति बोध की काव्य-प्रक्रिया" पुस्तक पर जोधपुर विश्वविद्यालय द्वारा 'वर्ष 1975 की सर्वोत्तम-पुस्तक' का पुरस्कार प्राप्त। 'जमुना किनारे' फिल्म के पट-कथा एवं संवाद-लेखक।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1962 ई. में कालिज-पत्रिका "सरश्मि" में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। आकाशवाणी से कविताओं का प्रसारण। अनेक साहित्यिक-कार्यक्रमों से सम्बद्ध।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) बूढ़े बच्चे (काव्य, (2) हीरों की चोरी (बाल-उपन्यास), (3) मुक्ति बोध की काव्य-प्रक्रिया (समीक्षा), (4) इतिहास क्या है (अनुवाद), (5) छाया के बाद, (सम्पादित काव्य-संकलन), तथा (6) भोर की किरण (प्रौढ़ोपयोगी-साहित्य),

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) मुक्ति बोध का काव्य (समीक्षा) (2) गुलाम के बेटे का बेटा (बाल-उपन्यास), (3) सुनो कहानी कृष्ण की (बाल खण्ड-काव्य), (4) खचेरा की दास्तान (काव्य) तथा (5) दीवार और दास्तान (काव्य-संकलन)। अनेक स्फुट कविताएँ।

विशेष—आपने अधिकांश काव्य-रचनाएँ मुक्त-छन्द में लिखी हैं। कुछ कविताएँ छन्दोबद्ध भी हैं। सामयिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय विषयों पर चुटीले-व्यंग्य लिखने में सिद्ध-हस्त। भाव, भाषा तथा शिल्प की दृष्टि से सभी रचनाएँ आकर्षक। वर्ण्य-विषय की गहराई तक पैठने में सक्षम।

काव्योदाहरण—

"याद होगी आपको,
त्रेतायुग की वह राक्षसी-सुरसा
जिसके मुँह में हनुमान घुसे
और मच्छर बनकर
निकल आए थे सहसा।
विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है

साहित्य-सेवा पहली कविता सन् 1968 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण। खड़ी बोली के अतिरिक्त ब्रजभाषा में भी काव्य-सृजन। शोध, समीक्षा, उपन्यास, कहानी, निबन्ध, बाल-साहित्य आदि विविध विषयों पर लेखन। गुजरात हिन्दी प्रचार सभा के संस्थापक एवं प्रधान मन्त्री।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) फुलवारी, (2) रंग बीथी (काव्य-संग्रह), (3) टूटती लकीरें (उपन्यास), (4) गोस्वामी हरिराय जी और उनका ब्रज-भाषा साहित्य (शोध-प्रबन्ध) (5) बृहद् हिन्दी व्याकरण तथा 25 के लगभग बाल-उपन्यास।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) संकल्प (महाकाव्य), (2) झांसी की रानी (काव्य) तथा (3) तुम नहीं आईं (उपन्यास)। इनके अतिरिक्त लगभग 100 ब्रज-भाषा की तथा शताधिक खड़ी बोली की कविताएँ। शताधिक कहानियाँ एवं निबन्ध आदि।

विशेष—मंच पर ओजस्वी काव्य-पाठ के लिए विख्यात। वीर तथा शृंगार-दोनों रसों में काव्य-सृजन। छन्द-योजना तथा शिल्प की दृष्टि से सभी रचनाएँ उत्तम तथा हृदयस्पर्शी, परन्तु भाषा की दृष्टि से वीर रस की कविताओं मे कटूक्तियों की भरमार तथा परूष-शब्दावली का प्रयोग। राष्ट्रीय, सामाजिक तथा सामयिक विषयों पर विद्रोहात्मक कविताएँ अधिक लिखीं। कुछ कविताएँ भक्ति तथा शृंगार विषयक भी। काव्य-सृजन एवं साहित्य-सेवा के क्षेत्र में मनस्वी-साधक।

काव्योदाहरण—

"जनतन्त्र बन गया है मज़ाक मदिरालय का,
साकी स्वदेश के अर्थ बताया करती है।
दिल्ली के सिंहासन पर खिसियानी बिल्ली
अब संबिधान का मांस चबाया करती है।"

× × × ×

"नव-जीवन के आयोजन की तय्यारी में,
तुम शोक-सभा के आयोजन से ऊब गए।
तैराकी के तमगे हासिल करने थे पर,
घुटने-घुटने पानी में ही तुम डूब गए॥"

× × × ×

श्री अशोक "चक्रधर"

पिता—श्री राधेश्याम "प्रगल्भ"। जन्म तिथि—8 फरवरी, सन् 1951 ई.। जन्म स्थान—खुर्जा (बुलन्दशहर)। शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी), एम. लिट्।

व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1960 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1961 ई., खुर्जा में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—बाल्यकाल से। वर्तमान पता—88 बी. सनलाइट कालोनी-2, आश्रम, नई दिल्ली—110014।

अन्य—पहले सत्यवती को-एजूकेशन्स कालेज, तीमारपुर में और अब जामिया कालिज, नई दिल्ली के हिन्दी-विभाग में प्राध्यापक। बाल्यावस्था में खुर्जा, फिर 3 वर्ष तक मथुरा में रहने के बाद, सम्प्रति: दिल्ली में निवास। जनवादी-आन्दोलनों में विशेष रुचि। सन् 1980 ई. में सर्वश्रेष्ठ युवा हास्य-व्यंग्य कवि का "ठिठोली" पुरस्कार तथा "मुक्ति बोध की काव्य-प्रक्रिया" पुस्तक पर जोधपुर विश्वविद्यालय द्वारा 'वर्ष 1975 की सर्वोत्तम-पुस्तक' का पुरस्कार प्राप्त। 'जमुना किनारे' फिल्म के पट-कथा एवं संवाद-लेखक।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1962 ई. में कालिज-पत्रिका "सरश्मि" में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। आकाशवाणी से कविताओं का प्रसारण। अनेक साहित्यिक-कार्यक्रमों से सम्बद्ध।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) बूढ़े बच्चे (काव्य), (2) हीरों की चोरी (बाल-उपन्यास), (3) मुक्ति बोध की काव्य-प्रक्रिया (समीक्षा), (4) इतिहास क्या है (अनुवाद), (5) छाया के बाद, (सम्पादित काव्य-संकलन), तथा (6) भोर की किरण (प्रौढ़ोपयोगी-साहित्य),

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) मुक्ति बोध का काव्य (समीक्षा) (2) गुलाम के बेटे का बेटा (बाल-उपन्यास), (3) सुनो कहानी कृष्ण की (बाल खण्ड-काव्य), (4) खचेरा की दास्तान (काव्य) तथा (5) दीवार और दास्तान (काव्य-संकलन)। अनेक स्फुट कविताएँ।

विशेष—आपने अधिकांश काव्य-रचनाएँ मुक्त-छन्द में लिखी हैं। कुछ कविताएँ छन्दोबद्ध भी हैं। सामयिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय विषयों पर चुटीले-व्यंग्य लिखने में सिद्ध-हस्त। भाव, भाषा तथा शिल्प की दृष्टि से सभी रचनाएँ आकर्षक। वर्ण्य-विषय की गहराई तक पैठने में सक्षम।

काव्योदाहरण—

"याद होगी आपको,
त्रेतायुग की वह राक्षसी-सुरसा
जिसके मुँह में हनुमान घुसे
और मच्छर बनकर
निकल आए थे सहसा।
विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है

कि एक बहन और थी उसकी,
जिसका नाम था—सुरसी,
इस कालिकाल में वह सुरसी ही
बन गई है कुरसी।"

("सुरसी" कविता का एक अंश)

अन्य कविगण

ब्रजक्षेत्र में जन्मे तथा पुस्तक रूप में प्रकाशित होते हुए भी जो कवि बहुत थोड़े समय तक ही काव्य-मंच पर रहने के बाद उससे अलग हट गए, उनका संक्षिप्त परिचय निम्नानुसार है—

(क) **डा. मुंशीराम शर्मा "सोम"**—आपका जन्म मार्गशीर्ष कृष्णा पंचमी, सं. 1958 वि. (सन् 1902 ई.) को आगरा जिले की फीरोजाबाद तहसील के "ओखरा" नामक गाँव में हुआ था। वर्तमान में आप डी. ए. वी. कालिज, कानपुर के हिन्दी-विभागाध्यक्ष के पद से सेवा-निवृत्त होकर कानपुर में ही रह रहे हैं। पता है—8/141 आर्य नगर, कानपुर। आपके द्वारा लिखित (1) सन्ध्या-संगीत, (2) सोमसुधा तथा (3) जीवन-गीत शीर्षक काव्य-संग्रह तथा अनेक समीक्षात्मक एवं शोध-विषयक ग्रंथ प्रकाशित हैं। आप ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली के श्रेष्ठ कवि हैं।

(ख) **श्री रमेश चन्द्र शर्मा**—आपका जन्म 29 जुलाई, 1936 ई. को शिकारपुर (जिला-बुलन्दशहर) में हुआ था। वर्तमान में आप राजकीय पुरातत्व संग्रहालय, लखनऊ के निदेशक पद पर कार्यरत हैं। आपका वर्तमान पता है—निदेशक, राजकीय संग्रहालय, लखनऊ। आपके द्वारा लिखित पुरातत्व-विषयक हिन्दी तथा अंग्रेजी की लगभग 8 पुस्तकें प्रकाशित हैं। आप खड़ी बोली में उत्तम काव्य-रचना करते हैं।

(2) मूलतः ब्रजक्षेत्र के निवासी प्रकाशित-कवि

इस वर्ग के प्रमुख कवि निम्नलिखित हैं तथा इस नामावली में सभी आयु के कवि सम्मिलित हैं—

(1) श्री महेश शरण जौहरी "ललित" (उज्जैन)।
(2) श्री अटल बिहारी बाजपेयी (दिल्ली)
(3) (स्व.) आनन्द मिश्र (ग्वालियर)
(4) श्री प्रकाशचन्द्र जैन (पटना)

इनके सम्बन्ध में विशेष विवरण आगे प्रस्तुत है—

श्री महेश शरण जौहरी "ललित"

पिता—मुंशी चतुरबिहारीलाल जौहरी। जन्मतिथि—वैशाख शुक्ला पंचमी, सं. 1978 विक्रमी (सन् 1921 ई.)। जन्मस्थान—उज्जैन। मूल निवासी—पुरदिलपुर (जिला-अलीगढ़)। शिक्षा—सामान्य। व्यवसाय—लेखन तथा प्रकाशन। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—13 वर्ष की आयु से। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1944 ई., उज्जैन में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—बाल्यकाल से (पैतृक-निवास-पुरदिलपुर, जि. अलीगढ़)। वर्तमान पता—चिन्तन-गृह प्रकाशन 610, चन्द्र शेखर आज़ाद मार्ग, उज्जैन (मध्य प्रदेश)।

अन्य—हिन्दी के अतिरिक्त बंगला, अंग्रेजी, ब्रजभाषा, अवधी, मालवी, गुजराती, मराठी, उर्दू, फारसी, निनाड़ी तथा हिमाचली आदि भाषाओं का यथेष्ट ज्ञान। डेढ़ वर्ष की आयु में पितृ-विहीन। दो वर्ष की आयु में मातृ-विहीन। जीवन भर संघर्ष-रत। दिल्ली, आगरा, मथुरा, शिमला आदि अनेक स्थानों पर प्रवासी-जीवन बिताया। बाँसुरी-वादन, शास्त्रीय-संगीत, श्रेष्ठ-साहित्य के अध्ययन, मुद्रणालय-व्यवस्था, प्रकाशन एवं पत्रकारिता में अभिरुचि। अनेक पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। अपने अधिकांश साहित्य के स्वयं प्रकाशक रहे। सम्प्रति-माधव कालिज के पुस्तकालयाध्यक्ष पद से अवकाश ग्रहण कर, साहित्य-साधना में रत।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1938 ई. में प्रकाशित, हुई, तत्पश्चात् अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। सन् 1945 ई. से आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से रचनाओं का प्रसारण। सैकड़ों कवि-सम्मेलनों तथा गोष्ठियों में काव्य-पाठ। खड़ी बोली के अतिरिक्त ब्रजभाषा, उर्दू तथा मालवी भाषा में भी काव्य-सृजन तथा उपन्यास, कहानी, रेखाचित्र एवं निबन्ध आदि का लेखन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) ज्वाला औ' ज्योति, (2) पथिक के स्वर, (3) मेघ-मल्हार, (4) अंधेरी-उजेरी, (5) आह्वान-विसर्जन (6) कूल के फूल, (7) पर अब भी.... (8) सुबह-शाम, (9) देवदास (10) सर्जन-गर्जन (सभी काव्य-संकलन) तथा (11) मुक्ति-द्वार (कहानी-संग्रह)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) आचमन, (2) अवन्तिका, (3) कफ़न-सदा देहरी पर, (4) निधियां, (5) यह जीवन इक नौटंकी ही (सभी काव्य-संग्रह)। इनके अतिरिक्त अनेक कविताएँ, कहानियाँ, संस्मरण, रेखाचित्र तथा निबंध आदि।

विशेष—ललितजी अपने स-स्वर काव्य-पाठ एवं स्वर-माधुर्य के लिए विशेष प्रसिद्ध रहे हैं। इनकी अधिकांश कविताओं के विषय—श्रृंगार, प्रेम, करुणा, भक्ति तथा दर्शन हैं। कुछ रचनाएं सामयिक विषयों पर भी लिखी हैं। गीतों में सम्प्रेषणीयता, ध्वन्यात्मकता, अनुप्रास एवं अलंकार की प्रचुरता पाई जाती है। इन्होंने अनेक नवीन छन्दों का सृजन भी किया है। भाषा सरल तथा प्रवाहमयी है। कविताओं

में जीवन की व्यक्तिगत अनुभूतियाँ विशेष रूप से मुखर हुई हैं। वर्तमान में आयु-वार्धक्य के कारण मच से विरत।

काव्योदाहरण—

"झुलस रही है दुनियाँ सारी,
गा दे मेघ—मल्हार।
नन्हें की नन्हीं-सी नगरिया,
नन्हीं की नन्हीं-सी टपरिया,
कहीं ताप में जली जा रही,
छाया शोक अपार।"

(मेघ मल्हार, पृष्ठ—5)

श्री अटल बिहारी बाजपेयी

पिता—पं. कृष्ण बिहारी बाजपेयी। जन्मतिथि—25 दिसम्बर सन् 1926 ई.। जन्मस्थान—ग्वालियर। मूल निवासी—बटेश्वर (जि. आगरा) शिक्षा—एम. ए.। पूर्व-व्यवसाय—पत्रकारिता। वर्तमान कार्य—संसद-सदस्य। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1939 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1940 ई., ग्वालियर में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—बाल्यकाल से। वर्तमान पता—6, राय सीना रोड, नई दिल्ली।

अन्य—16 वर्ष की आयु में स्वतंत्रता-आन्दोलन मे गिरफ्तार। "राष्ट्रधर्म" (मासिक) के संस्थापक-सम्पादक। "पांचजन्य" (साप्ताहिक), "स्वदेश" एवं "वीर अर्जुन" (दैनिक) पत्रों के 'सम्पादक' रहे। सन् 1957 ई. से 1962 ई. तक "लोक सभा' एवं 1962-67 ई. तक 'राज्य-सभा, के सदस्य। 1966 से 1967 तक 'सरकारी आश्वासनों सम्बन्धी समिति' के सदस्य। 1967 ई. से 1970 ई. तक एवं 1971-77 ई. तक 'लोकसभा' के पुनः सदस्य निर्वाचित। 1969-70 ई. में 'लोक लेखा समिति' के सभापति। 1975 मे नजरबन्द। 'जनता-पार्टी' के संस्थापक-सदस्य। 1977 ई. में पुनः 'लोक सभा' के लिए नई दिल्ली से निर्वाचित। 1977-79 ई. में भारत सरकार के 'विदेश मंत्री' पद पर कार्यरत। सन् 1980 में दिल्ली से 'लोक सभा' के लिए पुनः निर्वाचित। सम्प्रति: 'भारतीय जनता पार्टी' के अध्यक्ष तथा संसद-सदस्य। विश्वख्याति प्राप्त राजनीतिज्ञ।

साहित्य-सेवा— सन् 1939 ई. में "ताजमहल" शीर्षक कविता प्रथम बार प्रकाशित हुई, तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कविताओं तथा लेखादि का प्रकाशन। आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से प्रसारण। अनेक मंचों पर काव्य-पाठ, अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) कैदी कविराय की कुण्डलियाँ (काव्य), (2) मृत्यु या हत्या, (3) अमर बलिदान, (4) भारत की विदेश-नीति तथा (5) लोकसभा में अटलजी (भाषणों का संग्रह)।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक कविताएँ तथा लेखादि।

विशेष—अधिकांश कविताएँ देश-धर्म-प्रेम की भावनाओं से अनुप्राणित। "कैदी कविराय की कुण्डलियाँ" में आपातकालीन-स्थिति के दौरान नजरबन्दी की अवधि में, कारावास में लिखी गई स्फुट-कविताएँ संकलित हैं; जिनमें तत्कालीन राजनीति एवं शासन के विविध क्रिया-कलापों पर आलोचनात्मक व्यंग्योक्तियां हैं। विद्यार्थी-जीवन से लेकर अनेक वर्षों तक मंच पर ओजस्वी काव्य-पाठ के लिए प्रसिद्धि प्राप्त; परन्तु अब राजनीतिक-क्षेत्र में पूर्ण प्रविष्टि के उपरान्त काव्य-मंच से सन्यस्त। राजनीतिक-मंचों से अपने हृदयग्राही भाषणों के लिए विशेष रूप से लोकप्रिय। आपके द्वारा लिखित व्यंग्य-कविताएँ साहित्यिक-दृष्टि से सामान्य, परन्तु अन्य रचनाएँ पुष्ट तथा हृदयग्राही हैं।

काव्योदाहरण—

"गीत नया गाता हूँ!
टूटे हुए तारों से निकले वासन्ती स्वर,
पत्थर की छाती में उग आया नव अंकुर;
झरे सब पीले पात,
कोयल की कुहुक रात,
प्राची में अरुणिमा की रेख देख पाता हूँ।
गीत नया गाता हूँ।
टूटे हुए सपने की सुनी नहीं सिसकी,
जीवन की व्यथा कथा पलकों पर ठिठकी,
हार नहीं मानूँगा,
रार नयी ठानूँगा
काल के कपाल पर लिखता-मिटाता हूँ।
गीत नया गाता हूँ।"

(कवि द्वारा प्रेषित पाण्डुलिपि से)

(स्व.) श्री आनन्द मिश्र

पिता—श्री हरस्वरूप मिश्र। जन्मतिथि—14 जनवरी, सन् 1934 ई.। जन्मस्थान—[illegible]। मूलनिवासी—मैनपुरी। शिक्षा—सामान्य। व्यवसाय—श्रमजीवी-लेखन एवं काव्य-पाठ। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1947 ई.।

में जीवन की व्यक्तिगत अनुभूतियाँ विशेष रूप से मुखर हुई है। वर्तमान में आयु-वार्धक्य के कारण मच से विरत।

काव्योदाहरण—

"झुलस रही है दुनियाँ सारी,
गा दे मेघ—मल्हार।
नन्हें की नन्हीं-सी नगरिया,
नन्हीं की नन्हीं-सी टपरिया,
कहीं ताप में जली जा रही,
छाया शोक अपार।"

(मेघ मल्हार, पृष्ठ—5)

श्री अटल बिहारी बाजपेयी

पिता—पं. कृष्ण बिहारी बाजपेयी। जन्मतिथि—25 दिसम्बर सन् 1926 ई.। जन्मस्थान—ग्वालियर। मूल निवासी—बटेश्वर (जि. आगरा) शिक्षा—एम. ए.। पूर्व-व्यवसाय—पत्रकारिता। वर्तमान कार्य—संसद-सदस्य। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1939 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1940 ई., ग्वालियर में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—बाल्यकाल से। वर्तमान पता—6, राय सीना रोड, नई दिल्ली।

अन्य—16 वर्ष की आयु में स्वतंत्रता-आन्दोलन मे गिरफ्तार। "राष्ट्रधर्म" (मासिक) के संस्थापक-सम्पादक। "पांचजन्य" (साप्ताहिक), "स्वदेश" एवं "वीर अर्जुन" (दैनिक) पत्रों के 'सम्पादक' रहे। सन् 1957 ई. से 1962 ई. तक "लोक सभा' एवं 1962-67 ई. तक 'राज्य-सभा, के सदस्य। 1966 से 1967 तक 'सरकारी आश्वासनों सम्बन्धी समिति' के सदस्य। 1967 ई. से 1970 ई. तक एवं 1971-77 ई. तक 'लोकसभा' के पुनः सदस्य निर्वाचित। 1969-70 ई. में 'लोक लेखा समिति' के सभापति। 1975 मे नजरबन्द। 'जनता-पार्टी' के संस्थापक-सदस्य। 1977 ई. में पुनः 'लोक सभा' के लिए नई दिल्ली से निर्वाचित। 1977-79 ई. में भारत सरकार के 'विदेश मंत्री' पद पर कार्यरत। सन् 1980 में दिल्ली से 'लोक सभा' के लिए पुनः निर्वाचित। सम्प्रति: 'भारतीय जनता पार्टी' के अध्यक्ष तथा संसद-सदस्य। विश्वख्याति प्राप्त राजनीतिज्ञ।

साहित्य-सेवा—सन् 1939 ई. में "ताजमहल" शीर्षक कविता प्रथम बार प्रकाशित हुई, तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कविताओं तथा लेखादि का प्रकाशन। आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से प्रसारण। अनेक मंचों पर काव्य-पाठ, अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) कैदी कविराय की कुण्डलियाँ (काव्य), (2) मृत्यु या हत्या, (3) अमर बलिदान, (4) भारत की विदेश-नीति तथा (5) लोकसभा में अटलजी (भाषणों का संग्रह)।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक कविताएँ तथा लेखादि।

विशेष—अधिकांश कविताएँ देश-धर्म-प्रेम की भावनाओं से अनुप्राणित। "कैदी कविराय की कुण्डलियाँ" में आपातकालीन-स्थिति के दौरान नज़रबन्दी की अवधि में, कारावास में लिखी गई स्फुट-कविताएँ संकलित हैं; जिनमें तत्कालीन राजनीति एवं शासन के विविध क्रिया-कलापों पर आलोचनात्मक व्यंग्योक्तियां हैं। विद्यार्थी-जीवन से लेकर अनेक वर्षों तक मंच पर ओजस्वी काव्य-पाठ के लिए प्रसिद्धि प्राप्त; परन्तु अब राजनीतिक-क्षेत्र में पूर्ण प्रविष्टि के उपरान्त काव्य-मंच से सन्यस्त। राजनीतिक-मंचों से अपने हृदयग्राही भाषणों के लिए विशेष रूप से लोकप्रिय। आपके द्वारा लिखित व्यंग्य-कविताएँ साहित्यिक-दृष्टि से सामान्य, परन्तु अन्य रचनाएँ पुष्ट तथा हृदयग्राही हैं।

काव्योदाहरण—

"गीत नया गाता हूँ !
टूटे हुए तारों से निकले वासन्ती स्वर,
पत्थर की छाती में उग आया नव अंकुर;
झरे सब पीले पात,
कोयल की कुहुक रात,
प्राची में अरुणिमा की रेख देख पाता हूँ।
गीत नया गाता हूँ।
टूटे हुए सपने की सुनी नहीं सिसकी,
जीवन की व्यथा कथा पलकों पर ठिठकी,
हार नहीं मानूंगा,
रार नयी ठानूंगा
काल के कपाल पर लिखता-मिटाता हूँ।
गीत नया गाता हूँ।"

(कवि द्वारा प्रेषित पाण्डुलिपि से)

(स्व.) श्री आनन्द मिश्र

पिता—श्री हरस्वरूप मिश्र। जन्मतिथि—14 जनवरी, सन् 1934 ई.। जन्मस्थान—लश्कर। मूलनिवासी—मैनपुरी। शिक्षा—सामान्य। व्यवसाय—श्रमजीवी-लेखन एवं काव्य-पाठ। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1947 ई.।

प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1957 ई., ग्वालियर में। पता—जयेन्द्र-गंज, लश्कर। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—बाल्यकाल से। निधन तिथि—26 नवम्बर, 1974 ई.।

अन्य—सन् 1952 ई. में "साधना" (काव्य-संग्रह) पर मध्य प्रदेश कला परिषद् का पुरस्कार; सन् 1961 ई. में मध्य प्रदेश शासन द्वारा "देव-पुरस्कार"; सन् 1963 ई. में "अंकुर की आस्था" काव्य-संकलन पर, मध्य प्रदेश शासन द्वारा "नवीन पुरस्कार"; 1957 ई. में "चन्देरी का जौहर" नामक खण्ड-काव्य पर उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश शासन द्वारा पुरस्कार; 1957 ई. में "झांसी की रानी" खण्ड-काव्य पर उत्तर प्रदेश शासन द्वारा पुरस्कार एवं 1964 ई. में "प्रियदर्शी" खण्ड-काव्य पर "निराला पुरस्कार" प्राप्त। इनके अतिरिक्त अनेक सम्मानोपाधियाँ प्राप्त तथा अनेक स्थानों पर अभिनन्दित।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1950 ई. में ग्वालियर के एक पत्र में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। सैकड़ों कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ। आकाशवाणी के अनेक केन्द्रों से रचनाओं का प्रसारण। अनेक साहित्यिक-कार्यक्रमों के आयोजक तथा अनेक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे। अनेक पुस्तकें विश्वविद्यालयीन पाठ्य-क्रमों में निर्धारित।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) साधना, (2) चंदेरी का जौहर (3) झाँसी की रानी, (4) हिमालय के आँसू तथा (5) प्रियदर्शी (सभी काव्य)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) अंकुर की आस्था (काव्य), (2) दुनियाँ की कहानी (गद्य), (3) चेतना के चरण (अन्तिम तथा अपूर्ण महाकाव्य)। इसके अतिरिक्त अनेक स्फुट कविताएँ।

विशेष—श्री आनन्द मिश्र वीर रस के ओजस्वी-कवि के रूप में मंच पर अवतरित हुए तथा अल्पकाल में ही इन्होंने अखिल भारतीय ख्याति अर्जित की। विषय-वस्तु की गहराई तक पैंठ, टकसाली तथा प्रवाहपूर्ण सरल भाषा; भाव-गांभीर्य, सूक्ष्म-दृष्टि, चित्रोपमता, निर्दोष छन्द-रचना, अलंकार, अभिनव बिम्ब-विधान, रूपक, नवीन उपमान एवं उत्प्रेक्षा आदि शिल्प-सौन्दर्य की दृष्टि से इनकी रचनाएँ उत्कृष्ट-साहित्य की श्रेणी में आती है। हृदय-ग्राह्यता उनका विशेष गुण है। यद्यपि आपकी अधिकांश रचनाओं की आधार—भूमि ऐतिहासिक पात्र रहे हैं; परन्तु सामाजिक, राष्ट्रीय तथा सामयिक विषयों पर भी इन्होंने प्रभूत मात्रा में काव्य-सृजन किया है। सन् 1962 के 'भारत-चीन युद्ध' के समय इनकी ओजस्वी-रचनाएँ जन-मानस को आन्दोलित एवं रोमांचित कर देती थीं। "बम्बई एक प्रतिक्रिया" शीर्षक रचना में इन्होंने महानगरों की आन्तरिक-कुरूपता का जो चित्रण किया है, वह अनुपम है। "चेतना के चरण" शीर्षक जिस महाकाव्य को ये लिख रहे थे और जो अपूर्ण ही रह गया; यदि वह पूर्ण हो जाता तो संभवत: हिन्दी-साहित्य

की एक अमूल्य-निधि सिद्ध होता। खेद है कि ऐसे अनुपम प्रतिभाशाली कवि का अल्पायु में ही निधन हो गया।

काव्योदाहरण—

"फूलों ने तुमसे मुसकाना सीखा होगा,
श्याम घटाओं के लहरे केशों से घुमड़न;
तुम आईं जैसे मरुथल-सी धू-धू जलती,
धरती पर उतरी गंगा की धारा पावन,
रीझ गया सौन्दर्य स्वयं देखा जो तुमको;
कोमलता ने अरुण-चरण छू लिए सहेली,
हारे दर्शन, कला, ज्ञान, विज्ञान, धर्म, तप,
तुम न सुलझ पाईं पर, कैसी गूढ़ पहेली ?"

(ना. ते. रू, ब., पृ. 330)

श्री प्रकाशचन्द्र जैन

पिता—श्री नेमीचन्द जैन। जन्मतिथि—9 जनवरी, 1934 ई.। जन्म-स्थान—कलकत्ता। शिक्षा—एम. ए., साहित्यरत्न, प्रभाकर। व्यवसाय—प्रत्रकारिता एवं मुद्रणालय का संचालन। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1949 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1941 ई., टांटिया, हाई स्कूल, कलकत्ता में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—बाल्यकाल से। मूल-निवासी—फरिहा (जि. मैनपुरी)। स्थायी पता—जैन कुटीर पो. फरिहा (जि. मैनपुरी)। वर्तमान पता—लक्ष्मी निवास, मीठापुर, पटना-1 (बिहार)।

अन्य—श्री शा. वी. सि. सं. सभा, बम्बई द्वारा "कविरत्न" की सम्मानोपाधि प्राप्त। हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत, अंग्रेजी, बंगला, राजस्थानी, ब्रज, मैथिली, भोजपुरी, गुजराती आदि भाषाओं तथा बोलियों का ज्ञान। अनेक अखिल भारतीय जैन संस्थाओं के पदाधिकारी। 'युगवीर वातायन" (पटना) तथा "अखिल भारतीय जैन पत्रकार संघ" के महासचिव। दि. जैन पंचायत, पटना के अध्यक्ष तथा श्री जैन संघ, पटना के प्रचार-सचिव। संक्षिप्त नाम-प्रकाश जैन।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1951 ई. में दैनिक "लोकमान्य" (कलकत्ता) में प्रकाशित, तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक मंचों से काव्य-पाठ। आकाशवाणी से प्रसारण। काव्य-सृजन के अतिरिक्त निबंध, कहानी, बाल-साहित्य, उपन्यास तथा हास्य-व्यंग्य की विधाओं में लेखन। जैन-दर्शन विषयक साहित्य पर विशेष कार्य। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध। सन् 1965 ई. में "बाल-प्रभात" (मासिक) तथा 1973 ई. से "युगवीर" (साप्ताहिक) का सम्पादन एवं प्रकाशन। अनेक पत्र-पत्रिकाओं के स्थायी स्तंभ-लेखक।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) द्वादश-द्वादशी, (2) वरमाला, (3) आदीश अर्चना, (4) नानी की कहानी, (5) आओ साथी करें वन्दना, (6) बूझो तो जानें, (7) शत-शत मरसलगंज प्रणाम (सभी काव्य), (8) साहसी अरुण (बाल-उपन्यास) तथा (9) कथाकार (कहानी-संग्रह)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) हत्यारे की सनक, (3) मृत्युदान (उपन्यास,) (3) जगमगाते तारे (निबंध), (4) ये अपने चलता है (व्यंग्य) तथा (5) धरती को वरदान (महाकाव्य)। अनेक स्फुट रचनाएँ।

विशेष—"चाचा पटनवी" के उपनाम से हास्य-व्यंग्य के ख्याति लब्ध मंचीय-कवि। भाषा, भाव तथा शिल्प की दृष्टि से सभी रचनाएँ उत्तम।

काव्योदाहरण—

"गोद तुम्हारी में न चाँद क्या रह-रह शरमाया ?
नई कली का मादक सौरभ तुम्हें न क्या भाया ?
कभी न खोए श्याम घटा-सी काली अलकों में ?
झांक न पाए कभी, कहो अलसाई पलकों में ?
क्या न तुम्हारे मन ने सपनों की दुनियाँ देखी ?
जब कि चाँद से छूट, चाँदनी सुधा लुटाती है।"

(वरमाला, पृ. 37)

3. ब्रजक्षेत्र से सम्बद्ध रहे प्रकाशित कवि

इस वर्ग के कवियों में प्रमुख नाम निम्नलिखित हैं। इस सूची में हर आयु के कवि सम्मिलित हैं—

1. (स्व.) श्री गुरुभक्त सिंह "भक्त"
2. (स्व.) कुँ हरिश्चन्द्र देवजू वर्मा "चातक"
3. (स्व.) डा. ब्रह्मदत्त मिश्र "सुधीन्द्र"
4. श्री भैयालाल व्यास
5. डा. देवर्षि सनाढ्य
6. श्री देवराज "दिनेश"
7. श्री कविरत्न पाराशर
8. डा. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय
9. श्री रामकुमार चतुर्वेदी "चंचल"
10. श्री सोमेश चन्द्र शंखधार "कवि कुल्हड़"
11. श्रीमती चन्द्ररेखा सिंह
12. श्री शचीन्द्र भटनागर

इनके सम्बन्ध में विशेष विवरण निम्नानुसार है—

(ख) श्री गुरुभक्त सिंह "भक्त"

पिता—ठा. कालिका प्रसाद सिंह । जन्म तिथि—भाद्रपद कृष्णा द्वितीया, सं. 1950 वि. (7 अगस्त सन् 1893 ई.) । जन्मस्थान—जमानियां (जि. गाजीपुर) । शिक्षा—बी. ए., एल-एल. बी. । पूर्व व्यवसाय—नौकरी । काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1919 ई. । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—1922 ई. । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—सन् 1933 से 1935 ई. तक । रियासत-अवागढ़ (जि. एटा) में सैक्रेटरी रहे । पता—भक्त-भवन अलवरा, आजमगढ़ । निधन तिथि—सन् 1983 ई. ।

अन्य—अनेक रियासतों में दीवान रहकर, अन्त में नगर-पालिका आजमगढ़ के सैक्रेटरी पद से अवकाश ग्रहण । सन् 1926 ई. में रायल एशियाटिक सोसाइटी, लंदन के सदस्य निर्वाचित । विश्व साहित्य संस्था पी. ई. एन. बम्बई के सदस्य । नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी द्वारा "बलदेवदास पदक" तथा "रत्नाकर पुरस्कार" से सम्मानित । अ. भा. संस्कृत आध्यात्मिक विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा "साहित्य-रत्न" की मानद उपाधि तथा अभिनन्दन-पत्र से सम्मानित । हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा "साहित्य वारिधि" तथा प्रयाग हिन्दी-संस्थान द्वारा "साहित्य महारथी" की सम्मानोपाधियों से अलंकृत । "विक्रमादित्य" महाकाव्य उत्तर प्रदेश शासन द्वारा पुरस्कृत । 1977 ई. में तत्कालीन प्रधानमंत्री द्वारा हिन्दी-संस्थान, लखनऊ के समारोह में मानपत्र, प्रशस्ति-स्मारक-ताम्रपत्र तथा पन्द्रह सहस्र रुपयों के पुरस्कार से सम्मानित । सैकड़ों मंचों से काव्य-पाठ । अनेक साहित्यिक-आयोजनों के अध्यक्ष रहे ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) सरस सुमन, (2) कुसुम कुंज, (3) वंशीध्वनि (4) वनश्री, (5) दो फूल तथा (6) कुसुमाकर (सभी काव्य-संग्रह) तथा, (7) नूरजहां, (8) विक्रमादित्य (दोनों महाकाव्य) । हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा प्रकाशित आधुनिक कवि गुरुभक्त सिंह "भक्त" में अनेक रचनाएँ संकलित ।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) प्रेमपाश, (2) तसलीम (दोनों नाटक), (3) रधिया तथा (4) वे दोनों (उपन्यास), (5) भक्त मंजरी (काव्य-संग्रह), (6) नूरजहां (अंग्रेजी काव्यानुवाद), (7) प्रमद-वन (गीत, मुक्तक, चतुष्पदी तथा हिन्दी ग़ज़लों का संकलन) तथा (8) आत्मकथा (अद्यतन जीवनी) ।

विशेष—"भक्त जी ने द्विवेदी युगीन इतिवृत्तात्मकता को सरस वर्णन, सौन्दर्य, आदर्शवाद को मानवीय यथार्थ की मनोदृष्टि, प्रकृति संकोच को नूतन विस्तार तथा भाषा की गद्यात्मक रुक्षता को तरल प्रवाह एवं जीवन्त मधुरिमा प्रदान की है । ये छायावादी अमूर्तता एवं वैयक्तिकता से परे अपरोक्ष अनुभूतियों के सहज प्रसारक तथा

तत्कालीन काव्य विषय को नूतन अर्थ-भूमि प्रदान करके वाले प्राकृत स्वच्छन्दतावादी कवि हैं । इनके प्रयास से छायावादी काव्य ने एक नया मोड़ लिया । ग्राम्य-जीवन का मनोहारी चित्रण इनकी रचनाओं की विशेषता है । "नूरजहां" तथा विक्रमादित्य— दोनों ऐतिहासिक कथानकों पर आधारित महाकाव्यों में चरित्र-चित्रण की यथार्थता तथा भाषा की प्रांजलता दर्शनीय है । अमेरिका से प्रकाशित "बायोग्राफिकल इन्साइक्लोपीडिया आफ द वर्ल्ड" में विश्व के महान साहित्यकारों की श्रेणी में आपकी सम्पूर्ण जीवनी प्रकाशित है ।"[1]

काव्योदाहरण—

"सुमन-सुमन तुम मादकता में, मधुशाला बन जाओ,
रसिक मधुप को प्याले भर-भर, सौरभ-सुरा पिलाओ,
हँसी होठ पर नाच रही है कलिकाओ ! मुस्काओ,
सुमन मँजीरे पर पत्ते हिल-हिल के ताल बजाओ,
सरसी ! पहन बसंती हिलमिल बिलस-बिलस खिल जाना
पंचम, हां, पंचम के स्वर में कोकिल उठे तराना,
गन्ने के रस के सुगन्ध से मलयानिल है माता,
है रसाल बौरा कर मटर-कुसुम से आँख लड़ाता ।"

(नूरजहाँ, पृष्ठ—59)

(स्व.) कुं. हरिश्चन्द्रदेवजू वर्मा "चातक"

वास्तविक नाम—श्री हरिहरबख्श सिंह । जन्मतिथि—1 जुलाई, 1908 ई. । जन्मस्थान—अतरौली-जाफराबाद (जिला—फर्रुखाबाद) शिक्षा—माध्यमिक । व्यवसाय—जमींदारी । काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1920 ई. । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1928 ई., फर्रुखाबाद में । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—40 वर्षों से अधिक समय तक आगरा, मथुरा, हाथरस आदि स्थानों में रहे । निधन-तिथि—19 फरवरी 1976 ई. ।

अन्य—हिन्दी के अतिरिक्त उर्दू, संस्कृत, फ़ारसी, गुजराती, बंगला, अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओं का ज्ञान । प्रौढ़ावस्था तक जमींदारी तथा साहित्य-सृजन, तदुपरान्त यायावरी-जीवन बिताते हुए आजीवन साहित्य-साधना में संलग्न रहे । उत्तर-प्रदेश शासन द्वारा "साहित्यायन" पुस्तक पुरस्कृत । अनेक स्थानों पर अभिनन्दित ।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1930 ई. में प्रकाशित हुई, तदुपरान्त

1. हिन्दी साहित्य कोश, भाग—2, पृष्ठ—130,

अनेक पत्र-पत्रिकाओं में कविता तथा निबंध आदि का प्रकाशन। खड़ी बोली के अतिरिक्त ब्रजभाषा तथा उर्दू में भी काव्य-सृजन। समीक्षात्मक लेख तथा निबंध-लेखन। उर्दू, अंग्रेजी, फारसी आदि अनेक भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद-कार्य। अनेक साहित्यिक-संस्थाओं से सम्बद्ध रहे। सैकड़ों कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ। आकाशवाणी के अनेक केन्द्रों से रचनाओं का प्रसारण। अनेक सम्मानोपाधि एवं पुरस्कारप्राप्त। अनेक रचनाएँ पाठ्य-पुस्तकों में संकलित तथा अनेक पुस्तकें पाठ्यक्रमों में स्वीकृत।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) वन्दना चतुष्ट्य, (2) कुसुमांजलि, (3) अंजलि (4) नैवेद्य, (5) वासंती, (6) नीराजन (सभी काव्य-संकलन), (7) क्रान्तिदूत तथा (8) भैरव (खण्डकाव्य), (9) खलील जिब्रान तथा (10) शकुन्तला नाटक (अनुवाद), (11) साहित्यायन, (12) सत्यं शिवं सुन्दरम् तथा (13) शत-सन्दर्भ (शोध निबंध), (14) संस्कृत-काव्य में रोमांसिकता, (15) भारत में अस्त्र-शस्त्र विद्या (गद्य) तथा (16) मेरे कुछ विचार कण (गद्य-पद्य)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) भावों के स्वर्ग मे (काव्य) तथा सैकड़ों स्फुट कविताएँ, निबन्ध आदि।

विशेष—"चातक" जी द्विवेदी-युग के एक प्रमुख कवि थे। आपकी कविताएँ साहित्यिक-शिल्प की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध हैं। इन्होंने प्रायः सभी रसों तथा अनेक विषयों पर काव्य-सृजन किया है। भाषा शुद्ध, टकसाली मुहावरेदार तथा भावानुकूल है। सभी रचनाएँ हृदय-स्पर्शी तथा हिन्दी-साहित्य की निधि हैं।

काव्योदाहरण—

"तुम्हें लुभा लेते यदि बरबस कनक अपार शोभाशाली,
तो जाकर देखो नभ तल की अरुण किरण रजित लाली,
नाँच रंग से पड़ जाता है यदि मन का बन्धन ढीला,
तरल-तरंगा वलिकी देखो तो फिर ललित लास्य-लीला,
यदि प्यारे लगते अलकों में गुम्फित मुक्ताओं के हार,
तो देखो चाँदनी जहाँ पर मिलती तुमसे बाहु पसार,
फिर यदि उमड़े कभी हृदय में प्रकृति प्रेम का पारावार,
तो भावुक ! तुम अपना उस पर तन-मन-धन सब देना वार॥"

(अपने कुछ विचार कण, पृष्ठ—93)

(स्व.) डा. ब्रह्मदत्त मिश्र "सुधीन्द्र"

पिता—पं. गोकुलप्रसाद मिश्र। जन्मतिथि—दीपावली, सन् 1914 ई.। जन्मस्थान—खैराबाद (कोटा—रामगंज मंडी, राजस्थान)। शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी

तथा अंग्रेजी), पी-एच. डी., साहित्यरत्न । व्यवसाय—अध्यापन । काव्य-सृजन का प्रारम्भिक वर्ष—सन् 1928 ई. । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1929 ई., भारतेन्दु समिति, कोटा (राजस्थान) के मंच से । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—पहले सन् 1935 ई. से फिर सन् 1950 ई. से देहावसान तक निरन्तर रहे । निधन-तिथि—15 जून 1954 ई. ।

अन्य—हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी, संस्कृत तथा बंगला का ज्ञान । भारत सरकार, राजस्थान सरकार तथा ग्वालियर-राज्य द्वारा अनेक पुरस्कार प्राप्त । राजस्थान, मध्यप्रदेश तथा उत्तर प्रदेश के अनेक स्थानों पर हिन्दी-प्राध्यापक के रूप में कार्य-रत रहे ।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1930 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन । अनेक मंचों से काव्य-पाठ । दिल्ली, जयपुर आदि के आकाशवाणी केन्द्रों से अनेक बार रचनाओं का प्रसारण ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) शंखनाद, (2) प्रलयवीणा, (3) अमृतलेखा (4) काव्य श्री, (5) राम-रहीम, (6) रवीन्द्र, (7) जौहर (सभी काव्य) (8) गीतांजलि (हिन्दी-अनुवाद) तथा (9) हिन्दी कविता में युगान्तर (आलोचना) । इनके अतिरिक्त लगभग 50 समालोचनात्मक पुस्तकें ।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक कविताएँ, निबंध आदि ।

विशेष—भाव, भाषा तथा शिल्प की दृष्टि से सभी कविताएं उत्तम तथा हृदयग्राही ।

काव्योदाहरण—

"सोचा है तुमने प्रिये कभी क्या मन में—
हम क्यों आये हैं पृथ्वी पर अनजाने ?
मैंने देखा है सृष्टि-सृजन के पीछे,
मैंने है अपने रूप आज पहिचाने ।
था हुआ स्वर्ग से भ्रष्ट न कोई मानव,
निश्चय ही वह तो होगा कोई दानव,
हम तो सृष्टा के दो हाथों से आये,
दुखमय धरती पर सुखमय स्वर्ग बसाने !"

(ना. ते. रू. अ. पृष्ठ—120)

श्री भैयालाल व्यास

पिता—पं. बालकृष्ण व्यास । जन्मतिथि—भाद्रपद शुक्ला 1, सं. 1975 वि. । (सन् 1918 ई.) । जन्मस्थान—दतिया । शिक्षा—एम. ए , साहित्यरत्न ।

व्यवसाय—शासकीय-सेवा। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1938 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् [illegible] ई., झाँसी से। [illegible] सम्पर्क की अवधि—सन् 1936 ई. से अद्यतन (आगरा में ससुराल है तथा आगरा में ही विद्याध्ययन भी किया)। वर्तमान पता—नरसिंह पुरवा छतरपुर (म. प्र.)।

अन्य—युवावस्था में कुछ दिनों तक नागरी प्रचारिणी सभा, आगरा में अध्यापन कार्य किया, तदुपरान्त मध्य प्रदेश की शासकीय-सेवा में चले गये तथा सहकारी विभाग में विभिन्न पदों पर रहे। "विन्ध्य कोकिल" की सम्मानोपाधि प्राप्त। मध्यप्रदेश शासन द्वारा दो पुस्तकें पुरस्कृत। आध्यात्मिक, धार्मिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक-सेवा के क्षेत्र में रुचि तथा निरन्तर कार्यरत। सम्प्रति-सरकारी सेवा से अवकाश प्राप्त कर आध्यात्म एवं साहित्य-चिन्तन में संलग्न।

साहित्य-सेवा—पहली कविता "आगरा कालिज मैगजीन" में सन् 1940 ई. में प्रकाशित, तत्पश्चात् अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। सैकड़ों मचों से काव्य-पाठ। सन् 1954 ई. से आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से रचनाओ का प्रसारण। अनेक साहित्यिक-संस्थाओं से सम्बद्ध तथा अनेक साहित्यिक-कार्यक्रमों के आयोजक रहे। कुछ संगीत-रूपक तथा कहानियाँ भी लिखीं। खड़ी बोली, ब्रज-भाषा तथा बुन्देली में काव्य-सृजन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) जीवन के क्रम, (2) सांझ-सकारे, (3) आग-पानी (सभी कविता-संग्रह) (4) विजया दशमी (खण्ड-काव्य) तथा (5) चतुष्पदियाँ (मुक्तक-संग्रह)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) देश के देवता, (2) जागा मेरा देश (3) जगत-जननी, (4) हा ! बापू—(5) जिन्दगी की राह पर (सभी कविता-संग्रह), (6) बापू तथा (7) जय हरदौल (प्रबंध-काव्य)। इनके अतिरिक्त अनेक स्फुट-रचनाएँ।

विशेष—अधिकांश कविताएँ ऐतिहासिक तथा राष्ट्रीय-परिप्रेक्ष्य में लिखित वीररस की। कतिपय करुण, शृंगार, प्रणय, भक्ति तथा सामाजिक एवं सामयिक विषयों से भी सम्बन्धित। कुछ मुक्तक भी लिखे। स-स्वर काव्य-पाठ के लिए प्रसिद्धि-प्राप्त। कविताएँ सरल, गंभीर एवं हृदयग्राही, परन्तु कहीं-कहीं छन्द-योजना में भटकाव।

काव्योदाहरण—

"बन्धनों की व्याधियों से मुक्त हुई मातृ-भूमि,
किन्तु पूर्ण स्वस्थ सासें लेना अभी शेष है।
कूल के करीब कहीं आँधियाँ न अड़ जाये,
जागरूक होके नाव खेना अभी शेष है।।
लक्ष्य के समीप तो पहुँच ही चुके हो किन्तु,

प्राप्ति के लिए प्रमाण देना अभी शेष है।
मानिनी-स्वतंत्रता के गौरव की रक्षा हेतु—
चाब लेना लोहे के चबैना अभी शेष है।"

डा. देवर्षि सनाढ्य

पिता—श्री उमादत्त सनाढ्य। जन्मतिथि—1 दिसम्बर, 1919 ई.। जन्म-स्थान—बदायूँ। शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी-संस्कृत), शास्त्री, पी-एच. डी., डी. लिट्.। व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1935 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1936 ई., बरेली में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—सन् 1943 से 1956 ई. तक (अलीगढ़ में रहे)। वर्तमान पता—24 ग, हीरापुरी, गोरखपुर।

अन्य—पन्द्रह वर्ष आयु की से ही राष्ट्रीय संगठनों से सम्बद्ध रहे। जनपद कांग्रेस कमेटी के सदस्य तथा तहसील मन्त्री के रूप में कार्य किया। अ. भा. तथा उ. प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति के सदस्य। 1953 ई. में अलीगढ़ में आयोजित उ. प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन के आयोजक। सन् 1936 ई. से मंचीय काव्य-पाठ, साहित्य-सृजन तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रविष्ट। फिर, धर्म-समाज कालिज, अलीगढ़ तथा शासकीय महाविद्यालय, रामपुर में प्राध्यापक पद पर कार्य। सन् 1958 ई. से गोरखपुर विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक। बीच में सन् 1965 से 1968 ई. तक नेपाल के त्रिभुवन विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग में रीडर-पद पर कार्यरत रहे। सम्प्रति-गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष पद से अवकाश ग्रहण कर, साहित्य-सृजन में प्रवृत्त। सांस्कृतिक परिषद अयोध्या द्वारा "साहित्यालंकार" की मानद उपाधि से सम्मानित। नाट्य-शास्त्र के प्रयोग-पक्ष में विशेष अभिरुचि।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1936 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कविता लेखादि का प्रकाशन। नेताजी पत्र में "सुभाष" विषयक अनेक रचनाओं का प्रसारण। सैकड़ों कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ। आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण। खड़ी बोली के अतिरिक्त संस्कृत तथा ब्रजभाषा में भी काव्य-सृजन। आकाशवाणी के लिए अनेक ध्वनि-रूपकों का लेखन तथा प्रसारण। काव्य-सृजन के अतिरिक्त कहानी, निबंध, आलोचना, समीक्षा आदि विविध विधाओं में गद्य-लेखन तथा संस्कृत एवं हिन्दी से अनुवाद-कार्य।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) मन्दाकिनी (निबंध-संग्रह), तथा (2) अंधेरे के दीपक (कहानी-संग्रह), (3) बीसवीं शती के हिन्दी काव्य तथा (4) प्रतिनिधि हिन्दी नाटक (आलोचना) एवं (5) हिन्दी के पौराणिक नाटक, भारतीय नाट्य शास्त्र का स्वरूप तथा हिन्दी नाट्य-विधान (शोध ग्रंथ)। (6) कादम्बरी, (7) भोज-प्रबंध तथा (8)

प्राप्ति के लिए प्रमाण देना अभी शेष है।
मानिनी-स्वतंत्रता के गौरव की रक्षा हेतु—
चाब लेना लोहे के चबैना अभी शेष है।"

डा. देवर्षि सनाढ्य

पिता—श्री उमादत्त सनाढ्य। जन्मतिथि—1 दिसम्बर, 1919 ई.। जन्म-स्थान—बदायूँ। शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी-संस्कृत), शास्त्री, पी-एच. डी., डी. लिट्.। व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1935 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1936 ई., बरेली में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—सन् 1943 से 1956 ई. तक (अलीगढ़ में रहे)। वर्तमान पता—24 ग, हीरापुरी, गोरखपुर।

अन्य—पन्द्रह वर्ष आयु की से ही राष्ट्रीय संगठनों से सम्बद्ध रहे। जनपद कांग्रेस कमेटी के सदस्य तथा तहसील मन्त्री के रूप में कार्य किया। अ. भा. तथा उ. प्र.हिन्दी साहित्य सम्मेलनों की स्थायी समिति के सदस्य। 1953 ई. में अलीगढ़ में आयोजित उ. प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन के आयोजक। सन् 1936 ई. से मंचीय काव्य-पाठ, साहित्य-सृजन तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रविष्ट। फिर, धर्म-समाज कालिज, अलीगढ़ तथा शासकीय महाविद्यालय, रामपुर में प्राध्यापक पद पर कार्य। सन् 1958 ई. से गोरखपुर विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक। बीच में सन् 1965 से 1968 ई. तक नेपाल के त्रिभुवन विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग में रीडर-पद पर कार्यरत रहे। सम्प्रति-गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष पद से अवकाश ग्रहण कर, साहित्य-सृजन में प्रवृत्त। सांस्कृतिक परिषद अयोध्या द्वारा "साहित्यालंकार" की मानद उपाधि से सम्मानित। नाट्य-शास्त्र के प्रयोग-पक्ष में विशेष अभिरुचि।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1936 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कविता लेखादि का प्रकाशन। नेताजी पत्र में "सुभाष" विषयक अनेक रचनाओं का प्रसारण। सैकड़ों कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ। आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण। खड़ी बोली के अतिरिक्त संस्कृत तथा ब्रजभाषा में भी काव्य-सृजन। आकाशवाणी के लिए अनेक ध्वनि-रूपकों का लेखन तथा प्रसारण। काव्य-सृजन के अतिरिक्त कहानी, निबंध, आलोचना, समीक्षा आदि विविध विधाओं में गद्य-लेखन तथा संस्कृत एवं हिन्दी से अनुवाद-कार्य।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) मन्दाकिनी (निबंध-संग्रह), तथा (2) अंधेरे के दीपक (कहानी-संग्रह), (3) बीसवीं शती के हिन्दी काव्य तथा (4) प्रतिनिधि हिन्दी नाटक (आलोचना) एवं (5) हिन्दी के पौराणिक नाटक, भारतीय नाट्य शास्त्र का स्वरूप तथा हिन्दी नाट्य-विधान (शोध ग्रंथ)। (6) कादम्बरी, (7) भोज-प्रबंध तथा (8)

भातृहरि शतक-आदि अनेक संस्कृत ग्रंथों के हिन्दी-अनुवाद । हार्नली के भाषाशास्त्रीय **अंग्रेजी-ग्रन्थ** "ए कम्परेटिव ग्रामर आफ गौडियन लेंग्वेजेज विद स्पेशल रिफरेन्स टू **ईस्टर्न** हिन्दी" का हिन्दी-अनुवाद । लगभग दो दर्जन पुस्तकें प्रकाशित ।

अप्रकाशित कृतियाँ—दो सौ से अधिक कविताएँ तथा अनेक साहित्यिक-**निबंध** आदि ।

विशेष—श्री सनाढ्य वीररस के ओजस्वी मंचीय-कवि के रूप में विख्यात रहे हैं। काव्य-शिल्प के विषय में आपकी मान्यता है कि उसे सरस, सरल तथा बोधगम्य होना चहिए । कवि जब 'शब्द' तथा 'अर्थ' का सम्यक् ज्ञान प्राप्त करके रचना करता है, तभी उसके काव्य में सरसता एवं सम्प्रेषणीयता आती है । सनाढ्य जी ने अपनी रचनाओं में इस मान्यता का पूराध्यान रखा है, इसी कारण वे शिल्प-सौन्दर्य से परिपूर्ण होने के साथ ही हृदयग्राही भी है । छन्द, अलंकार, उपमा, रूपक आदि सभी दृष्टियों से सनाढ्य जी की कविताएँ पुष्ट हैं । ओजस्वी रचनाओं के अतिरिक्त आपने भक्ति, दर्शन तथा शृंगार परक कविताएँ भी लिखीं हैं तथा लोक-गीतों का भी सृजन किया है । आपकी संस्कृत पदावली भी बड़ी सुललित है ।

काव्योदाहरण—

"बौरे अभी रसाल, न लगता अभी खगों का मेला ।
पर उन्मन-मन में गुन गुन है—आयी मधु की वेला ।।"
× × × ×
"कभी तो चूक जाता है चतुर-चालाक भी कातिल ।
कि गाँधी और कैनेडी कहीं गोली से मरते हैं ?"

श्री देवराज "दिनेश"

पिता—श्री ज्ञानचन्द्रजी । **जन्मतिथि**—22 जनवरी, सन् 1922 ई. । **जन्म-स्थान**—जाखल (पंजाब) । **शिक्षा**—माध्यमिक, प्रभाकर । **पूर्व व्यवसाय**—नौकरी । **वर्तमान व्यवसाय**—लेखन और काव्य-पाठ । **काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष**—सन् 1938 ई. । **प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ**—सन् 1940 ई., लाहौर मे । **ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि**—सन् 1927 से 1935 तक अलीगढ़ जिले में निवास । **वर्तमान पता**—1/1 मालवीय नगर, नई दिल्ली-17,

अन्य—1 वर्ष की आयु में मातृ-विहीन तथा 13 वर्ष की आयु में पितृ-विहीन । चाचा की छत्रच्छाया में लालन-पालन । सन् 1938 ई. में लाहौर में नौकरी की । भारत-विभाजन के समय दिल्ली आकर स्थायी रूप में बस गए । स्वतन्त्र-लेखन, कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ तथा रेडियो-कार्यक्रमों द्वारा जीविकोपार्जन । अनेक राज्य-सरकारों द्वारा पुरस्कृत ।

साहित्य-सेवा— पहली रचना सन् 1945 ई. में प्रकाशित, तदुपरांत विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। सैकड़ों कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ। हिन्दी, उर्दू तथा ब्रजभाषा में काव्य-सृजन। कविता के अतिरिक्त रेडियो-रूपक, निबंध, कहानी नाटक आदि का लेखन। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे। रेडियो-नाटकों में अभिनय तथा आकाशवाणी द्वारा रचनाओं का प्रसारण।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) अन्तर्ज्योति (गीत-संग्रह), (2) भारत मां की लोरी, (3) जीवन और जवानी, (4) पुरवैया के नूपुर, (5) गंध और पराग (ये चारों-कविता-संग्रह, राज्य-सरकारों द्वारा पुरस्कृत) (6) रावण, (7) मानव प्रताप, (8) यशस्वी भोज, (9) बिना बुलाए पंच (हास्य एकांकी-संग्रह), (10) रिश्वत के अनेक ढंग (व्यंग्य-निबन्ध), (11) बरगद की छाया तथा (12) समस्या सुलझ गई (एकांकी-संग्रह) तथा व्यंग्य लेख, बालोपयोगी एवं नव-साक्षरोपयोगी अनेक पुस्तकें।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक कविताएँ, नाटक, एकांकी, कहानी, निबंध, व्यंग्य, रेडियोरूपक, तथा बालोपयोगी पुरस्तकें।

विशेष—श्री दिनेश हिन्दी काव्य-मंच के अत्यधिक सफल कवि रहे हैं। आपकी कविताओं में सम्प्रेषणीयता गज़ब की होती है। भाषा, भाव तथा शिल्प की दृष्टि से रचनाएँ हृदयग्राही। अधिकांश कविताएँ मुक्त-छन्द में। आपकी काव्य-पाठ शैली अत्यन्त आकर्षक तथा प्रभावो-त्पादक रही। व्यंग्य-रचनाओं के लिए विशेष ख्याति प्राप्त। 'भारत माँ की लोरी' शीर्षक कविता का अनेक बार मंचन भी हो चुका है। सम्प्रति दीर्घकालीन रुग्णता के कारण मंच से प्रायः सन्यस्त।

काव्योदाहरण—

"बाहर भी कोलाहल, घर के भीतर भी फैला कोलाहल
यह कौन जगा ?
अँधियारे में किसका कर अपना खड्ग उठाने को आतुर है ?
"मैं हूँ अशोक"
"तू जाग गया है प्रियदर्शी ?"
"हाँ माँ, मुझ को नींद नहीं आती है,
मैंने करवट ली है,
क्या तुझ पर कोई आफत आई है ?
जो तेरे दरवाजे पर चिंघाड़ रहे हैं,
उनसे कहदे—
मैंने कलिंग के महायुद्ध के बाद
प्रतिज्ञा की थी—'शस्त्र नहीं धारूंगा।'
पर इसका यह अर्थ नहीं कोई आक्रान्ता

मेरा-तेरा वक्ष-स्थल रौंद चला जाएगा
औ' मैं शान्त रहूँगा।
कहदे माँ,, कहदे उनसे-मेरा प्रियदर्शी जाग गया है
फिर कलिंग की याद धरा को दिलवा देगा।"

(भारत माँ की लोरी, पृ. 153/154)

श्री कविरत्न पाराशर

पिता—स्व. छीतूलाल पाराशर। जन्मतिथि—अनंत चतुर्दशी, संवत् 1981 वि. (सन् 1924 ई.)। जन्मस्थान—ग्वालियर। शिक्षा—एम. ए., एल-एल. बी., साहित्यरत्न, आयुर्वेदरत्न। व्यवसाय—शासकीय-सेवा। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1939 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1940 ई.। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—बाल्यकाल से। वर्तमान पता—सहायक संचालक, सूचना तथा प्रकाशन, मध्य प्रदेश शासन, मुरैना।

अन्य—सन् 1945 ई. से 1952 ई. तक राजनीति में सक्रिय। सन् 1952 ई. में विधान सभा का चुनाव लड़े, परन्तु हार गये। फिर शासकीय-सेवा में प्रवेश। सम्प्रति—सूचना विभाग, मध्य प्रदेश में उपसंचालक के पद पर कार्यरत।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1948 ई. में प्रकाशित। अनेक साहित्यिक-संस्थाओं से सम्बद्ध। अनेक काव्य-मंचों से काव्य-पाठ। वीररस के ओजस्वी-कवि के रूप में विख्यात। आकाशवाणी केन्द्रों से रचनाओं का प्रसारण।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) मिश्रा की फांसी, (खण्ड-काव्य)। तथा वीरांगना दुर्गावती (नाटक)। इनके अतिरिक्त "प्रयाण गीत" आदि अनेक संकलनों में स्फुट-रचनाएँ प्रकाशित।

अप्रकाशित कृतियाँ—लगभग 100 स्फुट कविताएँ।

विशेष—आपने दो दशकों तक ओजस्वी काव्य-पाठ के लिए मंच पर विशेष ख्याति प्राप्त की। सम्प्रतिः कवि-सम्मेलनों से सन्यास लेकर शासकीय-सेवा तथा अध्ययन-चिन्तन में संलग्न। शिल्प, भाव, भाषा आदि की दृष्टि से सभी कविताएँ हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"बैठ तट पर लहर नित्य गिनते रहो, सिन्धु की दीर्घता कुछ घटेगी नहीं,
रात को रात कहते रहो, रात की कालिमा तो तनिक भी हटेगी नहीं;
प्राण की पीर लेकर फिरो हर जगह,
पीर यों तो किसी की बँटेगी नहीं।
सच कहूँ-साधना और श्रम के बिना,
देश की दीनता भी मिटेगी नहीं॥"

साहित्य-सेवा—पहली रचना सन् 1945 ई. में प्रकाशित, तदुपरांत विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। सैकड़ों कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ। हिन्दी, उर्दू तथा ब्रजभाषा में काव्य-सृजन। कविता के अतिरिक्त रेडियो-रूपक, निबंध, कहानी नाटक आदि का लेखन। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे। रेडियो-नाटकों में अभिनय तथा आकाशवाणी द्वारा रचनाओं का प्रसारण।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) अन्तर्ज्योति (गीत-संग्रह), (2) भारत मां की लोरी, (3) जीवन और जवानी, (4) पुरवैया के नूपुर, (5) गंध और पराग (ये चारों-कविता-संग्रह, राज्य-सरकारों द्वारा पुरस्कृत) (6) रावण, (7) मानव प्रताप, (8) यशस्वी भोज, (9) बिना बुलाए पंच (हास्य एकांकी-संग्रह), (10) रिश्वत के अनेक ढंग (व्यंग्य-निबन्ध), (11) बरगद की छाया तथा (12) समस्या सुलझ गई (एकांकी-संग्रह) तथा व्यंग्य लेख, बालोपयोगी एवं नव-साक्षरोपयोगी अनेक पुस्तकें।

अप्रकाशित कृतियां—अनेक कविताएँ, नाटक, एकांकी, कहानी, निबंध, व्यंग्य, रेडियोरूपक, तथा बालोपयोगी पुस्तकें।

विशेष—श्री दिनेश हिन्दी काव्य-मंच के अत्यधिक सफल कवि रहे हैं। आपकी कविताओं में सम्प्रेषणीयता ग़जब की होती है। भाषा, भाव तथा शिल्प की दृष्टि से रचनाएँ हृदयग्राही। अधिकांश कविताएँ मुक्त-छन्द में। आपकी काव्य-पाठ शैली अत्यन्त आकर्षक तथा प्रभावोत्पादक रही। व्यंग्य-रचनाओं के लिए विशेष ख्याति प्राप्त। 'भारत माँ की लोरी' शीर्षक कविता का अनेक बार मंचन भी हो चुका है। सम्प्रति दीर्घकालीन रुग्णता के कारण मंच से प्रायः सन्यस्त।

काव्योदाहरण—

"बाहर भी कोलाहल, घर के भीतर भी फैला कोलाहल
यह कौन जगा ?
अँधियारे में किसका कर अपना खड्ग उठाने को आतुर है ?
"मैं हूँ अशोक"
"तू जाग गया है प्रियदर्शी ?"
"हाँ माँ, मुझ को नींद नहीं आती है,
मैने करवट ली है,
क्या तुझ पर कोई आफत आई है.
जो तेरे दरवाजे पर चिघाड़ रहे हैं,
उनसे कहदे—
मैंने कलिंग के महायुद्ध के बाद
प्रतिज्ञा की थी—'शस्त्र नहीं धारूंगा।'
पर इसका यह अर्थ नहीं कोई आक्रान्ता

मेरा-तेरा वक्ष-स्थल रौंद चला जाएगा
औ' मैं शान्त रहूँगा।
कहदे माँ,, कहदे उनसे-मेरा प्रियदर्शी जाग गया है
फिर कलिंग की याद धरा को दिलवा देगा।"

(भारत माँ की लोरी, पृ. 153/154)

श्री कविरत्न पाराशर

पिता—स्व. छीतूलाल पाराशर। जन्मतिथि—अनंत चतुर्दशी, संवत् 1981 वि. (सन् 1924 ई.)। जन्मस्थान—ग्वालियर। शिक्षा—एम. ए., एल-एल. बी., साहित्यरत्न, आयुर्वेदरत्न। व्यवसाय—शासकीय-सेवा। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1939 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1940 ई.। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—बाल्यकाल से। वर्तमान पता—सहायक संचालक, सूचना तथा प्रकाशन, मध्य प्रदेश शासन, मुरैना।

अन्य—सन् 1945 ई. से 1952 ई. तक राजनीति में सक्रिय। सन् 1952 ई. में विधान सभा का चुनाव लड़े, परन्तु हार गये। फिर शासकीय-सेवा में प्रवेश। सम्प्रति—सूचना विभाग, मध्य प्रदेश में उपसंचालक के पद पर कार्यरत।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1948 ई. में प्रकाशित। अनेक साहित्यिक-संस्थाओं से सम्बद्ध। अनेक काव्य-मंचों से काव्य-पाठ। वीररस के ओजस्वी-कवि के रूप में विख्यात। आकाशवाणी केन्द्रों से रचनाओं का प्रसारण।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) मिश्रा की फांसी, (खण्ड-काव्य)। तथा वीरांगना दुर्गावती (नाटक)। इनके अतिरिक्त "प्रयाण गीत" आदि अनेक संकलनों में स्फुट-रचनाएँ प्रकाशित।

अप्रकाशित कृतियाँ—लगभग 100 स्फुट कविताएँ।

विशेष—आपने दो दशकों तक ओजस्वी काव्य-पाठ के लिए मंच पर विशेष ख्याति प्राप्त की। सम्प्रतिः कवि-सम्मेलनों से सन्यास लेकर शासकीय-सेवा तथा अध्ययन-चिन्तन में संलग्न। शिल्प, भाव, भाषा आदि की दृष्टि से सभी कविताएँ हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"बैठ तट पर लहर नित्य गिनते रहो, सिन्धु की दीर्घता कुछ घटेगी नहीं,
रात को रात कहते रहो, रात की कालिमा तो तनिक भी हटेगी नहीं;
प्राण की पीर लेकर फिरो हर जगह,
पीर यों तो किसी की बँटेगी नहीं।
सच कहूँ-साधना और श्रम के बिना,
देश की दीनता भी मिटेगी नहीं॥"

डा. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय

पिता—श्री गयादीन उपाध्याय। जन्मतिथि—7 जनवरी, सन् 1925 ई.। जन्मस्थान—अधासी, पो. फफूँद (जिला-इटावा)। शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी-संस्कृत), पी-एच. डी., डी. लिट्। व्यवसाय—अध्यापन। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1940 ई.। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—सन् 1945 ई. से सन् 1960 ई. तक आगरा में रहे। वर्तमान पता—7-ड-25, जवाहर नगर, जयपुर।

अन्य—सन् 1953 ई. से सन् 1960 ई. तक आगरा कालिज, आगरा में तथा 1960 ई. से 1965 ई. तक गवर्नमेंट कालिज, नैनीताल में हिन्दी साहित्य के शिक्षक रहे। सन् 1965 ई. से 1979 ई. तक राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में रीडर पद पर रहे। सम्प्रति—जुलाई सन् 1979 से राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में हिन्दी के प्राध्यापक। "साहित्य सन्देश" तथा "समालोचक" (मासिक-पत्र) के सम्पादक भी रहे। "हिन्दी की दार्शनिक पृष्ठभूमि" तथा "सूरदास का भ्रमरगीत: एक अन्वेषण" नामक ग्रन्थ उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1952 ई. में प्रकाशित, तदनन्तर अनेक पत्र-पत्रिकाओं में कविता, लेख आदि का प्रकाशन। आरम्भ में कई वर्षों तक अनेक मंचों से काव्य-पाठ, तदुपरान्त मंच से सन्यास। आरम्भ में ब्रजभाषा में घनाक्षरियाँ तथा गीत लिखे, तदुपरान्त खड़ी बोली में भी काव्य-सृजन। उपन्यास, नाटक, कहानी, लेख तथा समीक्षात्मक-निबंधों का लेखन। अनेक साहित्यिक-संस्थाओं से सम्बद्ध।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) गांधी शतक (ब्रजभाषा-काव्य), (2) ढुंढिराज तथा अन्य कविताएँ (हिन्दी कविताएँ) (3) आदमखोर (काव्य-संग्रह, अंग्रेजी-अनुवाद सहित), (4) कबन्ध (काव्य), (5) रीछ, (6) पक्षधर (उपन्यास) (7) कलियुगीन अभिमन्यु, (8) कवि की नियति (नाटक) तथा (9) कलियां और कचोट (काव्य)। इनके अतिरिक्त (10) हिन्दी की दार्शनिक पृष्ठभूमि, (11) सूरदास का भ्रमरगीत (12) हिन्दी के प्रमुख वाद और उनके प्रवर्तक, (13) महाकवि निराला (14) पंतजी का काव्य, (15) सूर का भ्रमर गीत; एक अन्वेषण आदि, 20 आलोचनात्मक ग्रंथ।

अप्रकाशित कृतियाँ—ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली की अनेक कविताएँ, निबंध आदि।

विशेष—भाषा, भाव, छन्द-योजना तथा शिल्प की दृष्टि से ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली की सभी कविताएँ उत्तम और हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"ओढ़ैं नवनील नील मेघन की शाटिका री,
बूँद बूँद मोती चहुँ ओरन चुचात हैं।
अधरन से पातन सौं, जीभनि सी कौंपल सौं,

नीर-छीर पी-पी बाल-बिरवा अघात हैं ।।
इन्द्रधनुवाँ सी लाँबी लोनी अँगुरीन सौं ही,
बाती बढ़ी दीप बिजुरी के धधकात हैं ।
आई रितुरानी बेगि पाँवरे बिछावौ,
घन गरजि-गरजि धरती सौं बतरात हैं ।।"

श्री राम कुमार चतुर्वेदी "चंचल"

पिता—श्री साहूकार चतुर्वेदी । जन्मतिथि—8 अक्टूबत, सन् 1926 ई. । जन्म-स्थान—मुंगावली (ग्वालियर स्टेट) । शिक्षा—एम. ए. (हिन्दी) व्यवसाय—अध्यापन । काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1941 ई. । प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1945 ई. सेन्ट जांस कालेज, आगरा में । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—बाल्यकाल से । वर्तमान पता—12, आगरा-बम्बई मार्ग, शिवपुरी (म. प्र.) ।

अन्य—सम्प्रति—शासकीय महाविद्यालय, शिवपुरी के हिन्दी-विभाग में प्राध्यापक । "मध्य प्रदेश कला परिषद" द्वारा कला का प्रथम पुरस्कार प्राप्त । "धूलि का परिचय" पुस्तक मध्यप्रदेश-शासन द्वारा पुरस्कृत । सन् 1959 ई. में इण्डियन पोइट्स डेलीगेशन में नेपाल-यात्रा ।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1942 ई. में "चतुर्वेदी" (मासिक) में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन । सैकड़ों मंचों से काव्य-पाठ । आकाशवाणी के अनेक केन्द्रों से प्रसारण । काव्य-सृजन के अतिरिक्त निबंधादि का लेखन ।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) प्रथम चरण (गीत-संग्रह) (2) खून की होली (खण्ड-काव्य), (3) हिन्दुस्तान की आग, (4) धूलि का परिचय, (5) घटा के घुंघरू तथा (6) नई पीढ़ी, नई राहें (सभी काव्य-संग्रह) ।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) अमृत-घट, (2) संगमरमर का सपना तथा (3) लिखो जन-गण-मन (सभी काव्य-संग्रह) इनके अतिरिक्त अनेक स्फुट कविताएँ तथा निबंध आदि ।

विशेष—वीर रस के कवि के रूप में अखिल भारतीय ख्याति प्राप्त । भाव, भाषा तथा शिल्प की दृष्टि से रचनाएँ उत्तम तथा हृदयग्राही ।

काव्योदाहरण—

"बह चली तेज आँधी, चमन के विटप थर-थराये,
शूल बोले कि अभिषेक अब तो हमारा मनेगा ।

फूल बोले—हमारा बिखरना बड़ा कीमती है,
हम जहाँ भी गिरेंगे, वहाँ एक मन्दिर बनेगा।"
(धूल का परिचय, पृष्ठ 59)

श्री सोमेश चन्द्र शंखधार "कवि कुल्हड़"

पिता—श्री रामदत्त शंखधार। जन्मतिथि—5 जुलाई सन् 1928 ई.। जन्म-स्थान—नरौली (जि.—मुरादाबाद)। शिक्षा—एम. ए., बी. एस.-सी.। व्यवसाय—केन्द्रीय सरकारी-सेवा। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—सन् 1944 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—सन् 1944 ई., चन्दौसी में। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—1952 से 1955 ई. तक आगरा में रहे। वर्तमान पता—2, रेसकोर्स रोड, (विकास होटल) देहरादून।

अन्य—सन् 1951 ई. में वन-अनुसंधानशाला, देहरादून में नौकरी आरंभ की। 5 वर्ष बाद भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की रासायनिक शाखा, देहरादून में कार्य-रत। सम्प्रतिः वहीं हैं। केमिकल-एक्सपर्ट के रूप में विदेश-यात्रा भी की है।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1944 ई. में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। सैकड़ों कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी-केन्द्रों से प्रसारण। खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा के अतिरिक्त अंग्रेजी में भी काव्य-सृजन। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) कुल्हड़ की कुण्डलियां तथा (2) साइकिल एक्सीडेंट (कविता-संग्रह)।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक कविताएँ।

विशेष—हास्य-व्यंग्य के कवि के रूप में देशव्यापी ख्याति प्राप्त। इनके नाम तथा रचना-शैली की नकल बाद के अनेक हास्य-कवियों ने की। भाषा, शिल्प तथा सम्प्रेषणीयता की दृष्टि से सभी रचनाएँ उत्तम तथा हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"कहाँ है इतना भ्रष्टाचार, जितना शोर करते हो?
किसी मंत्री की प्रापर्टी पै तुम क्यों दाँत धरते हो?
हुआ क्या, अगर खड़िया पिस गई आटे में चौथाई?
ये मिट्टी तो वतन की है, इसे खाने से डरते हो?"

श्रीमती चन्द्ररेखा सिंह

पति—डा. एम. एम. सिंह। जन्मतिथि—14 अगस्त सन् 1936 ई.। जन्मस्थान—गाजीपुर (उ. प्र.)। शिक्षा—बी. ए. सरस्वती, साहित्यालंकार।

व्यवसाय—गृह-कार्य । काव्य-सृजन का प्रारम्भ—सन् 1947 ई.। प्रथमबार मंचीय-काव्य पाठ—सन् 1949 ई., मैनपुरी में । ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—बाल्यावस्था से विवाह पर्यन्त मैनपुरी में निवास। पता—148, लक्ष्मणगंज, झांसी ।

अन्य—भारती साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा अभिनन्दित। हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी, संस्कृत तथा बंगला का ज्ञान। सम्प्रति—गाहर्स्थ्य-धर्म के निर्वाह में संलग्न ।

साहित्य-सेवा—पहली कविता पन् 1950 ई. में "नवयुग" में प्रकाशित, तदुपरान्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं मे प्रकाशन। अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ। आकाशवाणी तथा दूरदर्शन केन्द्रों से प्रसारण ।

प्रकाशित पुस्तकें—"वन्दिनी के गीत" (कविता-संग्रह)। दिल्ली साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित "पंचम स्वर" में कुछ कविताएँ संकलित।

अप्रकाशित कृतियाँ—अनेक स्फुट रचनाएँ ।

विशेष—कविताएँ साहित्यिक-दृष्टि से सामान्य, परन्तु सरस तथा हृदयस्पर्शी ।

काव्योदाहरण—

"अरे, ये किसने बीने शूल, बिछाईं ये किसने कलियाँ ?
यह किस वंशी की तान ?
कि जिसके स्वर-स्वर से ले ताल, अचानक थिरक उठा जीवन,
यह किन अधरों का गान ?
फूटते जिसके बेसुध रागों से उल्लास भरे निर्झर अनगिन
यह कौन अछूता सुमन ?
बीनने जिसका मदिर पराग, भाग आईं भ्रमरावलियाँ ?
प्राण ! ये किसने बीने शूल, बिछाईं ये किसने कलियाँ ?"

(हिन्दी कवयित्रियों के प्रेमगीत, पृष्ठ 83)

श्री शचीन्द्र भटनागर

पिता—श्री रविशंकर भटनागर। जन्मतिथि—28 सितम्बर, 1936 ई.। जन्म स्थान—फैजाबाद। शिक्षा—एम. ए., बी. एड.। काव्य-सृजन का प्रारंभिक वर्ष—1948 ई.। प्रथम बार मंचीय काव्य-पाठ—1957 ई., गिरधारी इण्टर कालेज, सिरसागंज (मैनपुरी)। ब्रजक्षेत्र से सम्पर्क की अवधि—बाल्यकाल से पच्चीस वर्षों तक आगरा में रहे वर्तमान पता—आचार्य, इण्टर कालिज, बहजोई (जि. मुरादाबाद)।

अन्य—बाल्यावस्था से ही संघर्ष-रत । अनेक स्थानों पर अध्यापक

रहे। सम्प्रति-बहजोई (जि. मुरादाबाद) में इण्टर कालिज के प्राचार्य। "कादम्बिनी गीत-प्रतियोगिता" 1963 में प्रथम-पुरस्कार प्राप्त।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1949 ई. में 'कालिज-मैगजीन' में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे। अनेक कविता-संकलनों में रचनाएँ संकलित। मुक्तक, पद, गीत ग़ज़ल, नवगीत तथा प्रबंध-काव्य के साथ पद्य-रूपक, नाटक एवं निबंध-लेखन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) खण्ड-खण्ड चाँदनी (कविता-संग्रह)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) गजरा (ग़ज़ल-संग्रह), (2) आधुनिक गीत (निबंध-संग्रह), (3) बसेरा (मुक्तक-काव्य), (4) सोपान (कविताएँ) (5) एक रश्मि अनाहूत (नई-कविताएँ) (6) लहर-लहर तू (एकांकी-रेडियो-रूपक) (8) अपराध (नाटक) (8) इधर भी (विविध-विधाएँ), (9) उमंग में (धार्मिक-रचनाएँ), (10) आदिम गंध का आभास, (प्रबंध-काव्य) तथा अनेक स्फुट-कविताएँ।

विशेष—नवीन छन्द-विधान एवं सौन्दर्य-बिम्बों में विश्वास। भाषा, भाव, छन्द, शिल्प आदि की दृष्टि से कविताएँ उत्तम। सुमधुर-गायक। विभिन्न रसों तथा विभिन्न विधाओं के सशक्त कवि।

काव्योदाहरण—

"भरे भरे नीड़ों पर बिखरी चाँदनियाँ;
रेतिया सँवार रहीं धवलाई बाँहें।
लहर-लहर पर
किरनें जम गईं,
धुँधलाई घाटियाँ भरम गईं,
नदिया पर तैर रही सँवलाई छाँहें।
डरी-डरी भीड़ों पर बिखरी चाँदनियाँ।"

(खण्ड-खण्ड चाँदनी : पृ. 54)

4. ब्रजक्षेत्र से किसी भी रूप में सम्बद्ध अप्रकाशित-कवि

इस वर्ग के कवियों में निम्नलिखित नाम प्रमुख हैं। इस सूची में सभी आयु के कवि सम्मिलित हैं। इनमें से जिन्होंने मंचीय-कवि के रूप में विशेष ख्याति अर्जित की है, उनके नाम के आगे गुणक चिह्न × लगा हुआ है। प्रत्येक नाम के आगे कोष्ठक में जन्म-सन् का उल्लेख है।

1. डा. मोरध्वजसिंह "प्रलयंकर" (1928 ई.)
2. डा. रफीकुल ग़नी (1931 ई.)

3. श्री रामचन्द्र चतुर्वेदी "सम्पत" (1934 ई.)
4. श्री सत्यदेव शास्त्री "भौंपू" (1936 ई.)×
5. डा. गोपीचन्द्र शर्मा (1938 ई.)
6. श्री अमर प्रताप वर्मा (1938 ई.)×
7. श्री किशन सरोज (1939 ई.) ×
8. श्री अवधेश कुमार मिश्र (1943 ई.)
9. श्री विजय मेहरोत्रा (1943 ई.)
10. श्री प्रकाश मिश्र (1945 ई.)×
11. श्री ब्रजेश भट्ट (1948 ई.)

उक्त कवियों का संक्षिप्त-परिचय तथा काव्योदाहरण निम्नानुसार हैं :—

डा. मोरध्वजसिंह -'प्रलयंकर"—वर्तमान पता—रामनगर, उरई, (जिला-जालौन)। सन् 1939 ई. से 1953 ई. तक आगरा में स्थायी-निवास रहा। वर्तमान में होम्यो-चिकित्सक। "शंखनाद" (खण्ड-काव्य) तथा "प्रलय-ज्वाल" (कविता-संग्रह) अप्रकाशित। हिन्दी, बुन्देली तथा ब्रजभाषा में काव्य-सृजन। रचनाएँ सरस, सरल, ओजस्वी तथा हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"मैं कविता नहीं लिखा करता, क्रोधानल आग लगाता है।
शब्दों से ज्वाला जला-जला, प्रलयंकर छन्द बनाता है॥
कविता के अक्षर-अक्षर सब अन्तर्ज्वाला की चिनगारी।
पथ के काँटों को दावानल, भीषण ज्वाला प्रलयंकारी॥"

डा. रफ़ीकुल गनी—वर्तमान पता—प्राध्यापक, इतिहास-विभाग, आई. एम. डी. कालिज, नूह, (जि.—गुडगांवा), हरियाणा। जन्म-स्थान तथा स्थायी-निवास—वजीरपुरा, आगरा। हिन्दी, उर्दू तथा ब्रजभाषा में काव्य-सृजन। रचनाएँ सरल, सरस तथा हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"खेलें फाग सभी मिलजुल कर, प्यार गगन से रँग बरसाये।
धरती नाचे, अम्बर गाये, अबकी ऐसी होली आये॥
झूम उठे हर मन में कान्हा, नाच उठे हर तन में राधा।
अंग-अंग में मस्ती छाये॥"

श्री रामचन्द्र चतुर्वेदी "सम्पत"—वर्तमान पता—3/30 रविशंकर नगर, भोपाल। जन्मस्थान—इटावा। मूलनिवासी—फीरोजाबाद, जिला—आगरा। शिक्षा-विभाग में अधिकारी। वीररस के ओजस्वी कवि। तात्याटोपे (खण्ड-काव्य) अप्रकाशित। रचनाएँ सरल, सरस तथा हृदयग्राही।

रहे। सम्प्रति-बहजोई (जि. मुरादाबाद) में इण्टर कालिज के प्राचार्य। "कादम्बिनी गीत-प्रतियोगिता" 1963 में प्रथम-पुरस्कार प्राप्त।

साहित्य-सेवा—पहली कविता सन् 1949 ई. में 'कालिज-मैगजीन' में प्रकाशित, तदुपरान्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। अनेक कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ तथा आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण। अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे। अनेक कविता-संकलनों में रचनाएँ संकलित। मुक्तक, पद, गीत ग़ज़ल, नवगीत तथा प्रबंध-काव्य के साथ पद्य-रूपक, नाटक एवं निबंध-लेखन।

प्रकाशित पुस्तकें—(1) खण्ड-खण्ड चाँदनी (कविता-संग्रह)।

अप्रकाशित कृतियाँ—(1) गजरा (ग़ज़ल-संग्रह), (2) आधुनिक गीत (निबंध-संग्रह), (3) बसेरा (मुक्तक-काव्य), (4) सोपान (कविताएँ) (5) एक रश्मि अनाहूत (नई-कविताएँ) (6) लहर-लहर तू (एकांकी-रेडियो-रूपक) (8) अपराध (नाटक) (8) इधर भी (विविध-विधाएँ), (9) उमंग में (धार्मिक-रचनाएँ), (10) आदिम गंध का आभास, (प्रबंध-काव्य) तथा अनेक स्फुट-कविताएँ।

विशेष—नवीन छन्द-विधान एवं सौन्दर्य-बिम्बों में विश्वास। भाषा, भाव, छन्द, शिल्प आदि की दृष्टि से कविताएँ उत्तम। सुमधुर-गायक। विभिन्न रसों तथा विभिन्न विधाओं के सशक्त कवि।

काव्योदाहरण—

"भरे भरे नीड़ों पर बिखरी चाँदनियाँ;
रेतिया सँवार रहीं धवलाई बाँहें।
लहर-लहर पर
किरनें जम गईं,
धुँधलाई घाटियाँ भरम गईं,
नदिया पर तैर रही सँवलाई छाँहें।
डरी-डरी भीड़ों पर बिखरी चाँदनियाँ।"

(खण्ड-खण्ड चाँदनी : पृ. 54)

4. ब्रजक्षेत्र से किसी भी रूप में सम्बद्ध अप्रकाशित-कवि

इस वर्ग के कवियों में निम्नलिखित नाम प्रमुख हैं। इस सूची में सभी आयु के कवि सम्मिलित हैं। इनमें से जिन्होंने मंचीय-कवि के रूप में विशेष ख्याति अर्जित की है, उनके नाम के आगे गुणक चिह्न × लगा हुआ है। प्रत्येक नाम के आगे कोष्ठक में जन्म-सन् का उल्लेख है।

1. डा. मोरध्वजसिंह "प्रलयंकर" (1928 ई.)
2. डा. रफीकुल ग़नी (1931 ई.)

3. श्री रामचन्द्र चतुर्वेदी "सम्पत" (1934 ई.)
4. श्री सत्यदेव शास्त्री "भौंपू" (1936 ई.)×
5. डा. गोपीचन्द्र शर्मा (1938 ई.)
6. श्री अमर प्रताप वर्मा (1938 ई.)×
7. श्री किशन सरोज (1939 ई.) ×
8. श्री अवधेश कुमार मिश्र (1943 ई.)
9. श्री विजय मेहरोत्रा (1943 ई.)
10. श्री प्रकाश मिश्र (1945 ई.)×
11. श्री ब्रजेश भट्ट (1948 ई.)

उक्त कवियों का संक्षिप्त-परिचय तथा काव्योदाहरण निम्नानुसार हैं :—

डा. मोरध्वजसिंह -'प्रलयंकर"—वर्तमान पता—रामनगर, उरई, (जिला-जालौन)। सन् 1939 ई. से 1953 ई. तक आगरा में स्थायी-निवास रहा। वर्तमान में होम्यो-चिकित्सक। "शंखनाद" (खण्ड-काव्य) तथा "प्रलय-ज्वाल" (कविता-संग्रह) अप्रकाशित। हिन्दी, बुन्देली तथा ब्रजभाषा में काव्य-सृजन। रचनाएँ सरस, सरल, ओजस्वी तथा हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"मैं कविता नहीं लिखा करता, क्रोधानल आग लगाता है।
शब्दों से ज्वाला जला-जला, प्रलयंकर छन्द बनाता है॥
कविता के अक्षर-अक्षर सब अन्तर्ज्वाला की चिनगारी।
पथ के काँटों को दावानल, भीषण ज्वाला प्रलयंकारी॥"

डा. रफ़ीकुल गनी—वर्तमान पता—प्राध्यापक, इतिहास-विभाग, आई. एम. डी. कालिज, नूह, (जि.—गुडगांवा), हरियाणा। जन्म-स्थान तथा स्थायी-निवास—वजीरपुरा, आगरा। हिन्दी, उर्दू तथा ब्रजभाषा में काव्य-सृजन। रचनाएँ सरल, सरस तथा हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"खेलें फाग सभी मिलजुल कर, प्यार गगन से रँग बरसाये।
धरती नाचे, अम्बर गाये, अबकी ऐसी होली आये॥
झूम उठे हर मन में कान्हा, नाच उठे हर तन में राधा।
अंग-अंग में मस्ती छाये॥"

श्री रामचन्द्र चतुर्वेदी "सम्पत"—वर्तमान पता—3/30 रविशंकर नगर, भोपाल। जन्मस्थान—इटावा। मूलनिवासी—फीरोजाबाद, जिला—आगरा। शिक्षा-विभाग में अधिकारी। वीररस के ओजस्वी कवि। तात्याटोपे (खण्ड-काव्य) अप्रकाशित। रचनाएँ सरल, सरस तथा हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"कभी किसी का दुःख में देखो, साथ नहीं देता संसार ।
लोगों ने उर की पीड़ा से जलकर अपने तन को बेचा,
दो रोटी के सूखे टुकड़ों पर अपने जीवन को बेचा,
तड़प रही यह मानवता तो दानवता देखो इठलाती,
एक फूल खिलता इस जग में, तो लाखों कलियाँ मुरझाती ।"

श्री सत्यदेव शास्त्री "भौंपू"—वर्तमान पता—421 पटेल नगर, मुजफ्फर नगर। जन्म-स्थान तथा मूल निवासी—चिलावटी, (जिला—अलीगढ़)। इण्टर कालिज में अध्यापक। 'कुत्ते की टांग', 'मैं भी प्रधानाचार्य था' तथा 'सामयिक-पाठ' शीर्षक काव्य-संग्रह अप्रकाशित। हास्य-व्यंग्य के चर्चित कवि। साहित्यिक-दृष्टि से सभी रचनाएँ अत्यन्त सामान्य, तुकबंदी जैसी। भाषा-दोष तथा छन्द-दोषों की भरमार। ग्राम्य-शब्दावली के भौंड़े प्रयोग। काव्य-पाठ में नाटकीयता। मंच पर संम्भवतः परिहास पूर्ण हाजिर, जवाबी एवं चुटकुलेबाजी के लिए ही विश्रुत।

काव्योदाहरण—

"हम तो रात-दिना कवि-सम्मेलन के जीवन में रहते हैं व्यस्त,
और हमारी देवीजी ईश्वर भक्ती में रहती हैं मस्त;
हम पत्नी से बोले—"देवी" ! हमें सुनाओ फिल्मी गाना",
पत्नी बोली—"पहले आप सुनायें नया तराना";
फिर हम बोले—"गोरी ! तेरे नैना हैं जादू भरे।"
धार्मिक-पत्नी बोली—"ओम्, जय जगदीश हरे।"

डा. गोपीचन्द्र शर्मा—वर्तमान पता—71 पूरनमल, पीली भीत। जन्म तथा स्थायी आवास—ग्राम-रायपुर, पोस्ट—सुनामई, (जिला—अलीगढ़)। कालिज में प्राध्यापक। 'भोर का सपना', 'मातृ-दर्शन', 'लोकगीत' तथा 'गोलबांधकर हल्ला-बोलो'—शीर्षक काव्य-संकलन अप्रकाशित। हिन्दी, उर्दू तथा ब्रजभाषा में काव्य-सृजन। रचनाएँ सामान्य, सरस तथा हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"फहराते खूनी परचम का इतिहास दुहरना मांग रहा।
सात समुन्दर पार शिकागो यहाँ उतरना माँग रहा॥
लगता है कुरुक्षेत्र की चंडी जीभ लपलपाती है फिर,
अन्याय, अत्याचारों का प्रतिरोध उभरना माँग रहा॥"

श्री अमर प्रताप वर्मा—वर्तमान पता—चौबेपाड़ा, हिण्डौन सिटी, (जिला—सवाई माधोपुर) राजस्थान। जन्म तथा मूल निवासी—ग्राम जरौलिया, पोस्ट-बाजना, जिला-मथुरा। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य पद से त्यागपत्र देकर,

सम्प्रति स्वयं का विद्यालय चलाने को प्रयत्न शील । ओजस्वी-कवि के रूप में ख्याति लब्ध । माँ कुन्ती, कर्ण, पूतना, हम, मैं आदि अनेक लम्बी कविताएँ अप्रकाशित । रचनाएँ सरल तथा हृदयग्राही । छन्द-योजना में कहीं-कहीं भटकाव ।

काव्योदाहरण—

"आज भी देश की जाग्रति पर बड़ा विवाद है,
दो-चार प्रतिशत धनी तो अपवाद हैं,
अन्यथा सभी गरीब हैं, लगभग बेकार हैं,
इस तरह सभी समान हैं, यही तो समाजवाद है ।"

श्री किशन सरोज—वर्तमान पता—टी. 19 ए. रेलवे कालोनी, चौपला, बरेली । सन् 1971 ई. से 1979 ई. तक सोरों, जिला-एटा में स्थायी-निवास । पूर्वोतर रेलवे में यातायात-निरीक्षक के पद पर कार्यरत । हिन्दी-मंच के अत्यधिक ख्यातिलब्ध सुमधुर-गीतकार । हिन्दी तथा उर्दू में काव्य-सृजन । लगभग 200 गीत अप्रकाशित । सभी रचनाएँ भाव, भाषा, शिल्प, रूपक, अलंकार, विम्ब आदि की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध, मर्मस्पर्शी तथा उच्च साहित्यिक मूल्यवान् ।

काव्योदाहरण—

"मन की सीमा के पास-पास, तन की सीमा से दूर-दूर,
तुमने यों महकाईं मेरी सूनी-गलियाँ ।
ज्यों रजनी-गंधा खिले पराये-आंगन में ।"

श्री अवधेश कुमार मिश्र—वर्तमान पता—महल, शिकारपुर, (जि. बुलन्दशहर) । जन्म तथा स्थायी-निवासी—मथुरा । अध्यापक । अनेक स्फुट कविताएँ अप्रकाशित । रचनाएँ सरल तथा सामान्य ।

काव्योदाहरण —

"आँधी, तुमने दीप बुझाये ।
मेरे हरे-भरे उपवन के, तुमने सारे सुमन लुटाये ।।
किसने तुमसे कहा पवन था, तुम मेरी यश-सुरभि बखेरो ?
दीप-शिखा कब जलकर कहती-झंझा ! तुम मुझको झकझोरो ?
व्यर्थ स्वयं तुम आईं पथपर, मेरी जीवन-धूलि उड़ाये ।।"

श्री विजय मेहरोत्रा—वर्तमान पता—44, जल विहार, लाजपत नगर, नई दिल्ली । मूल निवासी-मथुरा । शिक्षामंत्रालय में सेवा-रत। स्फुट कविताएँ अप्रकाशित । सुमधुर गायक-कवि । रचनाएँ सरल, सामान्य, परन्तु हृदयग्राही ।

काव्योदाहरण—

"रोने से क्या मिलता है,
आँख से काजल धुलता है,

आँसू लब तक आते हैं,
दुख भीतर रह जाते हैं।"

श्री प्रकाश मिश्र—वर्तमान पता—जयेन्द्रगंज, लश्कर, ग्वालियर—1। मूल निवासी—मैनपुरी। स्वतन्त्र-लेखन। हिन्दी, उर्दू तथा ब्रजभाषा में काव्य-सृजन। 'लड़ते हुए' तथा 'स्वर्गवासी गधे के नाम' शीर्षक दो काव्य-संग्रह तथा एक कहानी-संग्रह अप्रकाशित। ओज और व्यंग्य-दोनों रसों में समान-रूप से हृदयग्राही कविताएँ लिखने वाले मंच के विशिष्ट ख्याति प्राप्त श्रेष्ठ कवि। सभी रचनाएँ भाषा, भाव तथा शिल्प की दृष्टि से उत्तम तथा हृदयग्राही।

काव्योदाहरण—

"ऐसे कैसे बने हुए हैं, बेहतर था वैसे होते।
पौधे रोप गये शूलों के, फूलों के बोते-बोते॥
ऊषा की आकर्षक पुस्तक, आमुख पढ़ा अभावों ने,
आदर्शों का उजला दर्पण, काला किया गुनाहों ने।
तुम तो बड़े अधीर हो गये, धैर्यवान् कैसे होते?
पौधे रोप गये शूलों के, फूलों के बोते-बोते॥"

श्री ब्रजेश भट्ट—वर्तमान पता—सेठ मुकंद लाल कालिज, गाजियाबाद। मूल निवासी—मथुरा। प्राध्यापक। एक गीत संकलन अप्रकाशित। कविताएँ सरल तथा सामान्य।

काव्योदाहरण—

"पतझर जब मधुमास बनेगा, कण-कण जब आकाश बनेगा।
भाव पनप पाये ना जब तक, भोलापन वरदान हो गया।"

अन्य कविगण—

ब्रजक्षेत्र से किसी भी रूप में सम्बद्ध रहे जो अन्य प्रमुख मंचीय-कवि वर्तमान समय में बाहर रह रहे हैं। उनका संक्षिप्त-परिचय निम्नलिखित है। इनमें से जिन कवियों ने विशिष्ट मंचीय-ख्याति अर्जित की है, उनके नाम के आगे गुणक चिन्ह (×) लगा हुआ है। इस सूची में सभी आयु-वर्ग के कवि सम्मिलित हैं। इनमें से अधिकांश की काव्य-पुस्तकें अप्रकाशित हैं।

(1) **श्री सेवकेन्द्र त्रिपाठी** ×—आप झांसी में रहते हैं ब्रजभाषा में श्रेष्ठ तक कवि हैं। पहले रेलवे विभाग में सेवा-रत थे। अब अवकाश प्राप्त हैं। आप कई वर्षों तक आगरा तथा मथुरा में स्थायी रूप से रहे हैं।

(2) **श्री आर. प्रकाश दीक्षित** (**श्री राम प्रकाश दीक्षित**)—आप आजकल अमेरिका में रह रहे हैं तथा वहीं प्राध्यापक हैं। सुमधुर गीतकार हैं। आप कई वर्षों तक आगरा में रहे हैं।

(3) **श्री डी. पी. द्वारिकेश (श्री द्वारिका प्रसाद "द्वारिकेश)**—आप आजकल अमेरिका में रह रहे हैं तथा वहीं प्राध्यापक हैं। हिन्दी के श्रेष्ठ कवि हैं तथा कई वर्षों तक स्थायी रूप से आगरा में ही रहे हैं।

(4) **श्री राज नारायण बिसारिया** × —आप आजकल बी. बी. सी. लन्दन में में कार्यरत हैं। सुमधुर गीतकार हैं तथा ब्रजक्षेत्र से घनिष्ठ रूप में सबंधित रहे हैं।

(5) **श्री राम सिंह चौहान "बेधड़क"** × —आप आज-कल सागर (म. प्र.) में रहते हैं। हास्य-व्यंग्य तथा ओज के प्रमुख हिन्दी कवि हैं। आप मूलतः आगरा निवासी हैं।

(6) **श्री रामेन्द्र मोहन त्रिपाठी** × —आप वर्तमान में सिकन्दराराऊ (जिला-अलीगढ़) की नगरपालिका में अधिशासी-अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं। सुमधुर गीतकार हैं। आगरा नगर में भी अनेक वर्षों तक स्थायी रूप से रहे हैं। मूलत छिबरा मऊ के निवासी हैं।

(7) **श्री शैल चतुर्वेदी** × —आप आजकल बम्बई में रह रहे हैं तथा फिल्मों में अभिनय भी करते हैं। आपने हास्य-व्यंग्य के मंचीय-कवि के रूप में पर्याप्त ख्याति अर्जित की है। आप आगरा के निवासी हैं।

(8) **श्री बिहारीलाल यादव "रजनीश"** × —आप आजकल सहसों (जि. इटावा) में रह कर अध्यापन कार्य कर रहे हैं। श्रेष्ठ गीतकार तथा व्यंग्यकार हैं। आप कई वर्षों तक आगरा में रहे हैं।

(9) **श्री नेमिचन्द जैन**—आप आजकल दिल्ली में रहते हैं तथा प्राध्यापक हैं। हिन्दी के अच्छे कवि हैं। आप आगरा-निवासी हैं।

(10) **श्री प्रदीप चौबे** × —आप आजकल ग्वालियर में रहते हैं तथा नौकरी करते हैं। हास्य-व्यंग्य के ख्याति लब्ध कवि हैं। आप आगरा के निवासी हैं।

(11) **श्री गोबिन्द व्यास** × —आप आजकल दिल्ली में रहते हैं। प्राध्यापक हैं। हास्य-व्यंग्य के विशिष्ट ख्याति प्राप्त युवा-कवि हैं। आप मूलतः मथुरा निवासी हैं

(12) **डा. अकिंचन शर्मा**—आप आजकल अजमेर में रहते हैं। अध्यापक हैं। हिन्दी तथा ब्रजभाषा में व्यंग्य-प्रधान कविताएं लिखते हैं। आप वृन्दावन (जि. मथुरा) के निवासी हैं।

(13) **डा. बादाम सिंह रावत**—आप अजकल मेहसाना (गुजरात-राज्य) में रहते हैं। प्राध्यापक हैं। हिन्दी के अच्छे गीतकार हैं। आप मथुरा जिले के निवासी हैं।

(14) **श्री सरस्वती कुमार "दीपक"** × —आप आजकल बम्बई में रहते हैं। स्वतन्त्र-लेखन एवं पत्रकारिता का कार्य करते हैं। फिल्मी गीतकार रहे हैं। अपने समय के प्रसिद्ध मंचीय-कवि भी रहे। आप मूलतः बुलन्दशहर के निवासी हैं। आपके काव्य-संकलन भी प्रकाशित हैं।

(15) श्री **महेन्द्र शर्मा निःशेष** ×—आप आजकल जयपुर में रह रहे हैं। बैंक-कर्मचारी हैं। हिन्दी के श्रेष्ठ गीतकार हैं। आप मथुरा जिले के निवासी हैं।

(16) श्री **मयंक श्रीवास्तव**—आप आजकल भोपाल में रहते हैं। सरकारी कर्मचारी हैं। हिन्दी के अच्छे कवि हैं। आप मथुरा जिले के निवासी हैं।

(17) श्री **प्रफुल्ल चतुर्वेदी**—आप आजकल बैतूल (म. प्र.) में रहते हैं। हिन्दी में अच्छी कविताएँ लिखिते हैं। आप मुरैना के निवासी हैं।

(18) **डा. (श्रीमती) मधु भारतीय** ×—आप आजकल गाजियाबाद में रहती हैं। प्राध्यापिका हैं। मंचीय-कवयित्री के रूप में विशेष ख्याति प्राप्त हैं। सुमधुर गीत लिखती हैं। आप अलीगढ़ जिले की रहने वाली हैं।

(19) श्री **हरिओम् 'बेचैन'** ×—आप आजकल दिल्ली में रहते हैं। नौकरी करते हैं। हास्य-व्यंग्य के कवि के रूप में ख्यति प्राप्त हैं। आप अलीगढ़ जिले के निवासी हैं।

(20) श्री **जयपालसिंह "तरंग"**—आप आजकल दिल्ली में रहते हैं। प्राध्यापक हैं। हिन्दी गीतकार के रूप में ख्याति लब्ध हैं। आप बुलन्दशहर जिले के निवासी हैं।

इनके अतिरिक्त सर्वश्री (स्व.) भगवंत शरण जौहरी तथा बलवीर सिंह "धुंध" (उज्जैन) रमेशगौड़, गोपाल राठौर, उमादत्त दुबे "अनजान" तथा लाखनसिंह पारसौलिया (दिल्ली), तुलसीराम मिश्र "राजेश", मुन्नालाल शर्मा तथा किशोरी लाल "प्रवासी" (भोपाल), श्री नारायण दत्त गौतम (मवाना-मेरठ) तथा श्रीमती मालती शर्मा (पूना)—ये सब कवि भी ब्रजक्षेत्र से ही सम्बन्धित रहे हैं। इनमें से कुछ की पुस्तकें भी प्रकाशित हैं; परन्तु मंचीय-कवि रूप में ये सब क्षेत्रीय ख्याति तक ही सीमित रह पाये हैं।



उपसंहार

1. हिन्दी कवि-सम्मेलनों के साहित्यिक-स्तर में गिरावट के प्रमुख कारण।
2. हिन्दी कवि-सम्मेलनों के साहित्यिक-स्तर में गिरावट से ब्रजक्षेत्र के कवियों का सम्बन्ध।
3. हिन्दी कवि-सम्मेलनों की सामप्ति के विचार का औचित्य ?
4. हिन्दी कवि-सम्मेलनों के साहित्यिक-स्तर में सुधार के उपाय।
5. ब्रजक्षेत्र के विशिष्ट साहित्यिक-प्रतिभा-सम्पन्न जीवित मंचीय-कवि।
6. निष्कर्ष : ब्रजक्षेत्र के मंचीय हिन्दी कवियों का साहित्यिक-योगदान।

अन्त में, हिन्दी कवि-सम्मेलन तथा ब्रजक्षेत्र के मंचीय-कवियों से सम्बन्धित कुछ अन्य प्रमुख विषयों पर विचार कर लेना भी आवश्यक है। वे निम्नलिखित हैं—

1. हिन्दी कवि-सम्मेलनों के साहित्यिक-स्तर में गिरावट के प्रमुख कारण।

2. हिन्दी कवि-सम्मेलनों के साहित्यिक-स्तर में गिरावट से ब्रजक्षेत्र के कवियों का सम्बन्ध।

3. हिन्दी कवि-सम्मेलनों की समाप्ति के विचार का औचित्य ?

4. हिन्दी कवि-सम्मेलनों के साहित्यिक-स्तर में सुधार के उपाय।

5. ब्रजक्षेत्र के विशिष्ट साहित्यिक-प्रतिभा सम्पन्न जीवित मंचीय-कवि।

1 हिन्दी कवि-सम्मेलनों के साहित्यिक-स्तर में गिरावट के प्रमुख कारण

स्वातन्त्र्योत्तर मंचीय हिन्दी-काव्य के साहित्यिक-स्तर में निरन्तर गिरावट आई है, यह बात सर्व विदित है। स्वतन्त्रता-पूर्व अधिकांश मंचीय-कवि सोद्देश्य तथा साहित्यिक काव्य-पाठ के पक्षधर थे। उनके वर्ण्य-विषय राष्ट्र एवं समाज से ही अधिक सम्बद्ध रहते थे। शृंगारी-गीतकार तथा हास्य-व्यंग्य के कवि भी साहित्यिक-मर्यादाओं को लाँघने का प्रयत्न नहीं करते थे; परन्तु बाद में ज्यों-ज्यों देश की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा अन्य विषयक मान्यताओं में परिवर्तन हुए, त्यों-त्यों मंचीय हिन्दी कविताओं के साहित्यिक-स्तर में भी निरन्तर गिरावट आती चली गई। इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित कहे जा सकते हैं—

(1) व्यावसायिकता, (2) मंच पर छद्मवेषियों का प्रवेश, (3) राजनैतिक-प्रतिबद्धता, (4) गुटबन्दी, (5) जातीयता, (6) चुटकुलेबाजी, (7) स्थायी-संयोजक, (8) संचालक, (9) असाहित्यिकों की पदासीनता, (10) शराबखोरी, (11) दुश्चरित्रता, (12) तथाकथित-कवयित्रियाँ, (13) मार्ग-दर्शन की उपेक्षा, (14) श्रोताओं की रुचि में परिवर्तन तथा (15) आश्रयाभाव।

(1) **व्यावसायिकता**—स्वतन्त्रता-पूर्व के कवि-सम्मेलन व्यावसायिकता से मुक्त थे। यद्यपि उन दिनों में भी कुछ गीतकार-कवि मंचीय काव्य-पाठ हेतु पारिश्रमिक की माँग कर उठे थे, परन्तु अधिकांश कवि इस विषय में कोई सौदेबाजी न करके, पुरस्कार अथवा मार्गव्ययादि के रूप में जो कुछ प्राप्त हो जाता था, उसी में सन्तुष्ट रहते थे। सन् 1962 ई. के बाद जब हास्य-व्यंग्य के कुछ नये कवि मंच पर स्थापित हुए तथा उन्होंने अपनी फूहड़, निम्नस्तरीय एवं असाहित्यिक रचनाओं द्वारा बहुसंख्यक सामान्य-श्रोता वर्ग को अपना प्रशंसक बनाने में सफलता भी प्राप्त करली तो उन्होंने मंचीय-काव्य-पाठ हेतु अपने लिए एक निश्चित तथा बड़ी धनराशि की मांग करना आरम्भ कर दिया। इसकी प्रतिक्रिया अन्य कवियों पर भी हुई। फलस्वरूप इस क्षेत्र में "व्यावसायिकता" प्रविष्ट हो गई। धीरे-धीरे पारिश्रमिक की मांग ने सुरसा जैसा मुँह फैलाना आरम्भ कर दिया। वर्तमान स्थिति यह है कि स्वतन्त्रता-पूर्व एक अखिल भारतीय स्तर का कवि-सम्मेलन आयोजित करने पर कुल जितनी धनराशि व्यय होती थी, अब एक-एक कवि उससे भी कहीं अधिक धन की मांग केवल अपने लिए करता है। फलस्वरूप वर्तमान समय में कवि-सम्मेलनों का आयोजन करना एक महँगा सौदा हो गया है तथा उसके लिए आयोजकों को या तो विभिन्न प्रकार के अनुचित-साधनों का आश्रय लेना पड़ता है अथवा फिर कम पारिश्रमिक लेने वाले सामान्य-कवियों को एकत्र कर, कार्यक्रम की खानापूरी करनी पड़ती है। जिन स्थानों पर धन-संग्रह करने में कठिनाइयाँ आती हैं, वहाँ कवि-सम्मेलनों के आयोजन बन्द भी होने लगे हैं।

मूलतः इस व्यावसायिकता ने ही कवि-सम्मेलनों के साहित्यिक-स्तर को गिराया है तथा उन अन्य कारणों को भी जन्म दिया है, जिनका उल्लेख आगे किया जा रहा है।

(2) **मंच पर छद्मवेषियों का बाहुल्य**—मंचीय काव्य-पाठ जब से आर्थिक-लाभ का साधन बना है, तब से अनेक छद्मवेषी असाहित्यिक-तुकबन्द भी मंचीय-कवि बन कर, इस क्षेत्र में प्रविष्ट हो गए हैं। छन्द-मुक्त-काव्य का प्रचलन हो जाने से भी इन तथाकथित-कवियों को बड़ी सुविधा मिली है। ऐसे छद्मवेषी मुख्यतः 'हास्य-व्यंग्य के कवि' का चोला पहन कर हिन्दी काव्य-मंच पर अवतरित हुए हैं तथा हास्य-व्यंग्य के नाम पर ऐसी फूहड़ तथा अश्लील रचनाएँ सुनाने लगे हैं, जिनके कारण न केवल काव्य-श्रोताओं की रुचि ही विकृत हुई है, अपितु हिन्दी-कविता को भी लज्जित होना पड़ रहा है। कुछ समय पूर्व तक "भाँड़" कहे जाने वाले लोग जिस कार्य का सम्पादन दस-बीस रुपये का "इनाम" लेकर ही कर देते थे; प्रकारान्तर से ये छद्मवेषी-कवि उसी के लिए "पारिश्रमिक" के रूप में सैकड़ों-हजारों रुपये वसूल कर रहे हैं। मंच पर जमने के लिए भाँति-भाँति की शक्लें बनाना, तरह-तरह की आवाजें

बदलना, चुटकुले सुनाना तथा विविध प्रकार के हाव-भाव दिखाकर, येन-केन प्रकारेण श्रोताओं तथा दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित करना ही इनका मुख्य उद्देश्य रहता है। आर्थिक-लाभ के लिए ये लोग पूँजीपतियों के विवाहादि घरेलू-उत्सवों में भी अपनी रचनाओं का पाठ करते दिखाई देते हैं।

तात्पर्य यह कि हिन्दी काव्य-मंच को भंड़ैती अथवा नौटंकी-जैसे सस्ते मनोरंजन का रूप देने तथा उसके साहित्यिक-स्तर को गिराने में ऐसे छद्मवेषी-तुकबन्दों का गिरोह ही सबसे आगे है। ऐसे तथाकथित-कवियों के अनपेक्षित बाहुल्य के कारण ही अब शुद्ध साहित्यिक-काव्य-श्रोताओं ने या तो कवि-सम्मेलनों में जाना ही बन्द कर दिया है अथवा वे एकाध साहित्यिक-कवियों की रचनाएँ सुनने के बाद वहाँ से उठकर चले आते हैं; जबकि उक्त छद्मवेषियों के कारण कवि-सम्मेलनों में असाहित्यिक तथा फूहड़-मनोरंजन-प्रेमी श्रोताओं की संख्या में वृद्धि हो रही है।

(3) **राजनीतिक प्रतिबद्धता**—स्वतन्त्रता-पूर्व मंचीय-कवि साहित्यिक दृष्टि से किन्हीं राजनीतिक-गुटों में विभाजित नहीं थे। तब के कुछ मंचीय-कवि राजनीतिक-क्षेत्र में कार्यरत रहते हुए भी अपनी रचनाओं में किसी प्रकार की राजनीतिक दलीय-प्रतिबद्धता को कोई स्थान नहीं देते थे; परन्तु स्वातन्त्र्योत्तर-काल के अधिकांश मंचीय-कवि राजनीतिक दलों की प्रतिबद्धता से भी प्रेरित हैं और वे कवि-सम्मेलन के मंच से ऐसी रचनाएँ सुनाने की भी चेष्टा करते हैं, जो प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में उनके दल के लिए लाभकारी तथा विपक्षियों के लिए अहितकर या विध्वंसक सिद्ध हों।

वर्तमान हिन्दी काव्य-मंच पर कुछ ऐसे कवि भी प्रतिष्ठित हैं, जिनकी दलीय-प्रतिबद्धता भी समय-समय पर गिरगिट की भाँति रंग बदलती रहती है। "जैसो बहै बयार, पीठ तब तैसी दीजै" के उपासक ऐसे मंचीय-कवि सत्ता-परिवर्तन के साथ ही अपनी रचनाओं में भी परिवर्तन ले आते हैं। ऐसे छल-छन्दों से उन्हें कुछ सामयिक आर्थिक-लाभ तो अवश्य हो जाता है, परन्तु वैयक्तिक-प्रतिष्ठा समाप्त हो जाती है। शासनोन्मुखी-भँड़ैती के लिए ऐसे कवियों की खिल्लियाँ भी खूब उड़ाई जाती हैं।

दलीय-प्रतिबद्धता से कवि की निष्पक्षता प्रभावित होती है तथा कवि-धर्म भी कलंकित होता है। कवि का सार्वजनीन तथा उसकी रचनाओं का तटस्थ-चिन्तन पर आधारित होना आवश्यक है; परन्तु वर्तमान के मंचीय-हिन्दी कवियों में कुछेक को छोड़कर, अधिकांश इस नियम के अपवाद ही हैं। अतः इस राजनीतिक-प्रतिबद्धता ने भी कवि-सम्मेलनों के साहित्यिक-स्तर को बहुत कुछ गिरा दिया है।

(4) **गुटबन्दी**—व्यावसायिकता को ही कवि-सम्मेलनों के क्षेत्र में गुटबन्दी का मूल-कारण कहा जा सकता है। जिन दिनों मंचीय-काव्य-पाठ आर्थिक-लाभ का

साधन नहीं था, उन दिनों अधिकांश श्रेष्ठ कवि भी मंच पर काव्य-पाठ करने को कोई महत्व नहीं देते थे; परन्तु जब से यह आर्थिक-लाभ का साधन बना है, तब से इसमें प्रतिद्वन्द्विता एवं गुटबन्दी भी अनेक रूपों में प्रकट होने लगी हैं। उनमें से कुछ का उल्लेख यहाँ किया जा रहा है—

(क) गुटबाज कवि "गीत-निशा" अथवा "हास्य-कवि सम्मेलन" के नाम पर ऐसे विशिष्ट-आयोजन करने लगे हैं जिनमें अधिकतर एक ही रस तथा एक ही गुट के कवि काव्य-पाठ करते हैं। इन आयोजनों के द्वारा श्रोताओं पर यह प्रभाव डालने की चेष्टा की जाती है कि उन कार्यक्रमों में भाग लेने वाले कवियों के अतिरिक्त अन्य कोई कवि सुनने योग्य है ही नहीं।

वीररस के कवि चूँकि अपने ओजस्वी काव्य-पाठ द्वारा शृंगार एवं हास्यरस के अधिकांश कवियों को धराशायी कर देने की क्षमता रखते हैं, अतः उन्हें ऐसे आयोजनों में प्रायः आमंत्रित ही नहीं किया जाता। इतना ही नहीं, इस प्रकार के कार्यक्रमों के आयोजक अपने ही रस में लिखने वाले उन सशक्त कवियों को भी आमंत्रित नहीं करते, जो प्रतिभा की दृष्टि से उनसे अथवा उनके सहयोगियों से कहीं अधिक भारी पडते हैं।

(ख) गुटबाज कवि जहाँ रहते हैं, वहाँ आयोजित होने वाले कवि-सम्मेलनों के 'संयोजक' का पद प्राप्त करने हेतु निरन्तर प्रयत्नशील बने रहते हैं और जब उसमें सफल हो जाते हैं, तो उस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए अधिकतर उन्हीं कवियों को आमंत्रित करते हैं, जो भविष्य में स्वप्रभाव से अपने नगर अथवा अन्य स्थानों पर आयोजित होने वाले कवि-सम्मेलनों में उन्हें भी बुलवा कर आर्थिक-लाभ पहुँचा सकें। पारस्परिक-सहायोग तथा आदान-प्रदान के आधार पर गुटबन्दी की यह प्रवृत्ति अधिकाधिक वृद्धिगत होती चली जा रही है।

(ग) कुछ ख्याति-प्राप्त मंचीय-कवियों ने कवि-सम्मेलन आयोजित करने का ठेका लेना भी आरम्भ कर दिया है। ये लोग कवि-सम्मेलन के आयोजकों से एक मुश्त धनराशि लेकर, उसमें अपने गुट के ही कुछ कवियों को काव्य-पाठ कराने के लिए ले जाते हैं तथा प्राप्त धनराशि का अधिकांश भाग स्वय हड़प कर, अन्य सहयोगियों को उसका थोड़ा-थोड़ा हिस्सा बाँट देते हैं। स्वाभाविक है कि इन ठेकेदारों के सहयोगी वे ही कवि बनते हैं, जो कवि-सम्मेलनों में या तो अपने बल बूते पर बुलाये ही नहीं जाते अथवा फिर बहुत ही कम बुलाये जाते हैं, अथवा जिनका ठेकेदार-कवि से आर्थिक आधार पर कोई गुप्त-गठबंधन होता है।

(घ) कुछ मंचीय-प्रतिष्ठा प्राप्त पुराने कवि अपेक्षाकृत कम प्रसिद्ध अथवा अप्रसिद्ध कवियों को कवि-सम्मेलनों में बुलाने के लिए आयोजकों को प्रेरित करते हैं अथवा उन्हें बिना बुलाए ही अपने साथ ले पहुँचते हैं। इस विधि से वे या तो उनके

पारिश्रमिक में से कमीशन प्राप्त करते है अथवा उन्हें अहसानमन्द बनाने का प्रयत्न करते हैं।

(ङ) कवि-सम्मेलनों के कुछ स्थायी-संयोजक भी अधिकतर उन्हीं कवियों को अपने कार्यक्रम में आमंत्रित करते हैं, जो उन्हें अपने पारिश्रमिक में से कमीशन स्वरूप "कुछ" भेंट कर सकें अथवा उनके प्रति कृतज्ञ बने रहें।

(च) मंचीय हिन्दी कवियों में गुटबंदी बढ़ाने में गणतन्त्र दिवस पर दिल्ली में आयोजित होने वाले लालकिले के कवि-सम्मेलन ने भी प्रमुख भूमिका अदा की है। यह कवि-सम्मेलन अपने जन्मकाल से ही मंचीय-कवियों के आकर्षण का एक मुख्य-केन्द्र बन गया था; क्योंकि इस कवि-सम्मेलन में श्रोता के रूप में न केवल केन्द्रीय-मन्त्रिमण्डल के अनेक सदस्य ही उपस्थित होते थे, अपितु सांसद, पत्रकार, साहित्यकार तथा अन्य वर्गों के प्रतिष्ठित बुद्धिजीवी भी बड़ी संख्या में सम्मिलित होते थे। आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से प्रसारित होने तथा समाचारपत्रों में महत्वपूर्ण स्थान पाने के कारण इस कार्यक्रम मे भाग लेने वाला कवि रातों-रात 'अखिल भारतीय प्रसिद्धि' प्राप्त कर लेता था। "लाल किले के कवि-सम्मेलन में भाग लेने वाला कवि अच्छा ही होगा"—यह धारणा भी देश के अन्य स्थानों पर आयोजित होने वाले कवि-सम्मेलनों के आयोजकों तथा श्रोताओं के हृदय मे सहज ही घर कर लेती थी, जिसके कारण इस मंच पर पहुँचने वाले कवि को देश के विभिन्न भागों से काव्य-पाठ के निमन्त्रण अधिक मिलना आरंभ हो जाते थे तथा उसकी पारिश्रमिक-राशि भी बढ़ जाया करती थी। इन सब कारणों से लालकिले का मंच अपेक्षाकृत नये तथा कम-प्रसिद्धि प्राप्त कवियों को अपनी ओर अधिक आकर्षित करता था और वे उस पर येन-केन प्रकारेण पहुँचने के लिये प्रयत्नशील भी रहते थे।

उक्त कवि-सम्मेलन यद्यपि एक सरकारी-कार्यक्रम था, परन्तु उसके आयोजन का दायित्व राजधानी की एक साहित्यिक-संस्था के माध्यम से ऐसे लोगों के हाथों में सौंप दिया गया था। जिनका मुख्य सहयोगी इस आयोजन के माध्यम से वैयक्तिक-लाभ की दिशा में निरंतर अग्रसर होता रहा। प्रारंभ में कुछ वर्षों तक तो इस मंच का साहित्यिक स्तर सामान्य रहा, परन्तु बाद में उसे नियोजित ढंग से गन्दी-गुटबन्दी तथा वैयक्तिक-लाभ का केन्द्र बना दिया गया; जिसके फलस्वरूप वहाँ सच्चे साहित्यिक-कवियों की तुलना में ऐसे तुकबन्दों की अधिक पूछ होने लगी, जो कार्यक्रम के आयोजन-प्रमुख को या तो वैयक्तिक-लाभ पहुँचा सकें अथवा उसकी जी हुजूरी करने मे कुशल हों। नौबत जब यहाँ तक आ पहुँची कि उक्त मंच पर भाँड़ तक बुलाये जाने लगे तथा उधार के गीत गा कर मनचाहा हुकुम बजाने वाली तथाकथित-कवयित्रियाँ-विशिष्ट-सम्मान पाने लगीं तो देश के अधिकांश वरिष्ठ तथा श्रेष्ठ कवियों ने लालकिले के कार्यक्रम में भाग लेना ही बंद कर दिया। कुछ और आगे चल कर जब यह मंच पूर्णतः फूहड़ हास्य-प्रधान हो गया तथा कविताओं के स्थान पर चुटकुलेबाजी का

अखाड़ा भी बन गया तो बुद्धिजीवी-वर्ग ने उसके विरुद्ध आवाज उठाई, जिसके फल-स्वरूप शासन को उसके "आयोजक" बदलने पड़े; परन्तु इस परिवर्तन में होने वाले विलम्ब ने लालकिले के काव्य-मंच की साहित्यिक-गरिमा ही नष्ट करके रख दी। आरंभ में उसने जितनी प्रतिष्ठा अर्जित की थी, दुरभिसंधियों के कारण उसका उतना ही ह्रास भी हुआ तथा उक्त कार्यक्रम के तत्कालीन-आयोजक जाते-जाते भी मंचीय-कवियों में पारस्परिक-गुटबन्दी के ऐसे विष'बीज बो गये, जो कालान्तर में और भी अधिक फले-फूले । यदि आरंभ से ही उक्त कार्य-क्रम के आयोजन का दायित्व किन्हीं धीर, गम्भीर, निर्लोभ, निष्पक्ष तथा साहित्यिक-प्रतिभा सम्पन्न लोगों की एक समिति को सौंपा गया होता तो संभवत: आज के मंचीय-हिन्दी-कवि उस घिनौनी-गुटबन्दी से बचे रह सकते थे, जो अमरबेल की भाँति अब चारों ओर फैल गई है।

परिवर्तित आयोजक-मण्डल द्वारा लालकिले का कार्यक्रम अब भी प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है, परन्तु गुटबंदी का जो बीज-वपन पहले किया जा चुका था, उसके प्रभाव में अब भी कोई कमी आई हो—ऐसा दिखाई नहीं देता। स्मरणीय है कि कवि-सम्मेलनों में व्यावसायिकता के प्रवेश ने इस लालकिले के आयोजन से भी बहुत कुछ संरक्षण प्राप्त किया है।

(5) **जातीयता**—इसे भी गुटबन्दी का ही एक प्रकार कहा जा सकता है, जिसमें किसी जाति-विशेष अथवा रस-विशेष के प्रतिष्ठित कवि, अन्य सजातीय अथवा उन्हीं के रस में लिखने वाले सामान्य-कवियों को भी मंच पर अधिकाधिक स्थापित करने का प्रयास करते हैं तथा विजातीय श्रेष्ठ कवियों को गिराने की कुचेष्टायें भी करते हैं। इस प्रवृत्ति ने भी मंच के साहित्यिक-स्तर को बड़ी हानि पहुँचाई है ।

(6) **चुटकुलेबाजी**—स्वतन्त्रता-पूर्व काल में भी हिन्दी काव्य-मंच से हास्य-व्यंग्य की कविताओं का पाठ किया जाता था; परन्तु वे साहित्यिक-दृष्टि से समृद्ध तथा चुटकुलेबाजी से दूर होती थीं। परन्तु सन् 1962 ई. के बाद हिन्दी काव्य-मंच पर ऐसे अनेक तथाकथित-कवि स्थापित हो गये हैं, जिन्होंने अपनी साहित्यिक-दरिद्रता को छिपाने के उद्देश्य से काव्य-पाठ के अतिरिक्त चुटकुले सुनाना भी आरंभ कर दिया है। जितना समय एक कवि को कविता पढ़ने में लगता है, उससे कहीं अधिक समय ये लोग चुटकुले सुनाने में ही बर्बाद कर देते हैं। ऐसे तुकबन्दों की अधिकांश रचनाएँ भी चुटकुलों पर ही आधारित होती हैं। इतना ही नहीं, एक ही चुटकुले पर कवि नामधारी अनेक लोगों द्वारा तुकबंदियाँ कर ली गई हैं तथा एक ही चुटकुला विभिन्न चुटकुलेबाजों द्वारा काव्य-मंच पर अलग-अगल ढंग से भी सुनाया जाता है।

कुछ अ-कवि इस चुटकुलेबाजी की आड़ में ही कवि बन बैठे हैं तो कुछ लोग अपनी चुटकुलेबाजी के आधार पर काव्य-मंचों के स्थायी-संचालक भी बन गये हैं। अस्तु, यह चुटकुलेबाजी भी हिन्दी काव्य-मंच के साहित्यिक-स्तर की बर्बादी का एक कारण बनी है।

(7) **स्थायी-संयोजक**—जिन संस्थाओं के उत्सवों प्रदर्शनियों, मेलों अथवा अन्य स्थानों में प्रतिवर्ष कवि-सम्मेलन आयोजित करने की एक परम्परा-सी बन गई है, वहाँ कुछ लोग "कवि-सम्मेलन के स्थायी-संयोजक" भी बन बैठे हैं। वर्तमान काल में कवि-सम्मेलन चूंकि आर्थिक-लाभ के भी साधन बन चुके हैं, अतः ऐसे स्थायी-संयोजक अपने कार्यक्रम में काव्य-पाठ हेतु प्रायः उन्हीं कवियों को अधिक बुलाते हैं, जो या तो उन्हें अपने पारिश्रमिक का एक भाग "कमीशन" के रूप में दे सकें अथवा उनकी चमचागीरी करने में ही कुशल हों। यदि किसी कवि-सम्मेलन के स्थायी-संयोजक कोई कवि महाशय होते हैं तो वे यह भी चाहते हैं कि जिन कवियों को वे अपने कार्यक्रम में आमंत्रित कर रहे हैं, बदले में वे भी उन्हें अपने यहाँ अथवा किन्हीं अन्य स्थानों के कार्यक्रमों में आमन्त्रित करवा कर आर्थिक-लाभ पहुँचायें।

इस प्रकार कवि-सम्मेलनों के संयोजक तथा मंचीय-काव्य-पाठ करने वाले कवियों के बीच "पारस्परिक-सहयोग द्वारा आर्थिक आदान-प्रदान" की एक नई प्रथा का जन्म भी हुआ है। ऐसे "विनिमय-सिद्धान्त-ग्रस्त" कवि-सम्मेलनों में मु यतः उन्हीं कवियों को काव्य-पाठ के लिये बुलाया जाता है, जो प्रायः साहित्यिक-दृष्टि से दरिद्र तथा आर्थिक-प्रलोभन-ग्रस्त होते हैं तथा ऐसे "स्थायी-संयोजक" का पद प्राप्त करने के इच्छुक भी प्रायः वे ही लोग होते हैं जो प्रत्यक्ष अथवा परोक्षरूप में कोई-न-कोई सामाजिक, राजनीतिक, व्यावसायिक अथवा आर्थिक-लाभ उठाने के इच्छुक रहते हैं।

कुछ "स्थायी-संयोजक" अपनी किसी संस्था आदि के नाम पर भी कवि-सम्मेलनों का आयोजन किया करते हैं तथा उसके लिये टिकिट की बिक्री, चंदा अथवा दान आदि के माध्यमों से आर्थिक-लाभ उठाते हैं। ऐसे आयोजक जनसाधारण को आकर्षित करने के लिये प्रायः फूहड़ हास्य-व्यंग्य अथवा अश्लील-शृंगारिक रचनाएँ सुनाने वाले कवियों तथा कवयित्रियों को ही अपने कार्यक्रमों में काव्य-पाठ हेतु आमन्त्रित करते हैं।

इस प्रकार कवि-सम्मेलनों के 'स्थायी-संयोजक' भी उनके साहित्यिक-स्तर को गिराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं।

(8) **संचालक**—कवि-सम्मेलन के अधिकांश "संचालक" (कवि-क्रम की व्यवस्था करने वाले तथा कार्यक्रम के उद्घोषक) इस बात से अपरिचित होते हैं कि कौन-सा कवि साहित्यिक-स्तर की कविताएँ लिखता है, तथा कौन फूहड़-रचनाकार है।

ऐसी स्थिति में, जब वे किसी साहित्यिक-कवि के तुरन्त बाद ही किसी फूहड़-रचनाकार को काव्य-पाठ हेतु आमन्त्रित कर बैठते हैं तो कवि-सम्मेलन का पूर्व निर्मित साहित्यिक-वातावरण स्वतः ही समाप्त हो जाता है।

कभी-कभी संचालक असाहित्यिक-श्रोताओं की माँग के समक्ष झुक कर, अच्छे कवियों की तुलना में फूहड़-रचनाकारों को ही काव्य-पाठ हेतु बारंबार बुलाने की भूल कर बैठते हैं, इससे भी मंच के साहित्यिक-स्तर को हानि पहुँचती है।

कुछ धूर्त-संचालक जानबूझ कर भी अपने किन्हीं प्रिय अथवा मित्र-कवियों को मंच पर अधिक जमाने तथा अपरिचितों अथवा प्रतिपक्षियों को उखाड़ने के उद्देश्य से काव्य-पाठ का क्रम ही ऐसा निर्धारित करते हैं कि जिसके कारण फूहड़-रचनाकार के मुकाबिले श्रेष्ठ-कवि फीका पड़ जाता है।

कभी-कभी जब किसी कवि को ही "संचालक" के पद पर बैठा दिया जाता है, तब वह स्व-पाण्डित्य-प्रदर्शन के उद्देश्य से बीच-बीच में अपनी तथाकथित आशु-कविता, चुटकुलेबाज़ी अथवा भाषण आदि से समय तथा वातावरण को नष्ट करता चलता है। इसी प्रकार कुछ "पेशेवर मंच-संचालक" भी अपनी तथाकथित-विद्वत्ता का भौंड़ा-प्रदर्शन करते हुए कवि-सम्मेलन की गरिमा को हानि पहुँचाया करते हैं।

इस प्रकार समुचित-संचालन का अभाव भी मंच के साहित्यिक-स्तर में गिरावट लाने का कारण बनता है।

(9) **असाहित्यिकों की पदासीनता**—स्वतन्त्रता-पूर्व कवि-सम्मेलनों की अध्यक्षता, उद्घाटन अथवा मुख्य-अतिथि के पद को सुशोभित करने हेतु वरिष्ठ कवियों तथा साहित्यकारों को ही आमंत्रित किया जाता था; परन्तु स्वातन्त्र्योत्तरकाल में इन पदों के लिये मंत्री, सांसद, विधायक, सरकारी-अधिकारी, पूँजीपति आदि वर्गों के तथाकथित 'बड़े आदमियों' का चुनाव करने की एक चाटुकारितापूर्ण दूषित-प्रथा ने जन्म ले लिया है। उक्त वर्गों का व्यक्ति यदि कवि अथवा साहित्यकार भी हो, तब तो उसका निर्वाचन उचित माना जा सकता है; परन्तु साहित्यिकता से कोसों दूर रहने वाले लोगों को केवल पद अथवा धन-सम्पन्न होने के कारण, अथवा उनसे कोई आर्थिक या अन्य लाभ पाने के उद्देश्य से, कवि-सम्मेलन के पवित्र साहित्यिक-यज्ञ में आचार्य-पद पर प्रतिष्ठित कर देना अक्षम्य-अपराध की श्रेणी में ही आएगा। ऐसे लोगों को पदासीन किये जाने पर कवि-सम्मेलन के साहित्यिक-स्तर में स्वतः ही गिरावट आ जाती है, क्योंकि—

(क) ऐसे लोगों की उपस्थिति में अधिकांश कवि उनसे प्रशंसा प्राप्त करने के उद्देश्य से प्रायः उन रचनाओं का पाठ करने लगते हैं, जो उन्हें अवश्य रुचिकर लगें, फिर भले ही अन्य श्रोता उन्हें नापसन्द ही क्यों न करते हों।

(ख) पूर्वोक्त वर्गों के पदासीन व्यक्ति समयाभाव अथवा अपना बड़प्पन प्रकट करने के उद्देश्य से प्राय: कवि-सम्मेलन के बीच में ही उठ कर चल देते हैं तथा उनके साथ आये हुए अन्य लोग भी उन्हीं का अनुसरण करते हैं, जिसके कारण भली-भाँति जमे हुए कवि-सम्मेलन का वातावरण भी बिगड़ जाता है।

(ग) शासक-दल के किसी नेता अथवा शासनाधिकारी के उक्त पद पर आसीन रहने के समय राष्ट्रीय-रचनाकार प्राय: शासन के विरोध में लिखी गई तथा जन-भावनाओं को अभिव्यक्त करने वाली कविताओं को सुनाने में या तो हिचकते हैं अथवा खुलकर नहीं सुना पाते, जिसके कारण कवि-सम्मेलन का यथोचित वातावरण नहीं बन पाता।

यथार्थ में, कार्यक्रमों के आयोजक अपने किन्हीं स्वार्थों को पूरा करने के उद्देश्य से ही साहित्येतर-क्षेत्र के लोगों को कवि-सम्मेलन के मंच पर पदासीन करते हैं। इस प्रकार वे उनके प्रति अपनी चाटुकारिता का प्रदर्शन करते तथा लाभान्वित भी होते हैं। अस्तु, यह कारण भी मंच के साहित्यिक-स्तर को गिराने में अपनी प्रमुख भूमिका अदा करता है।

(10) **शराबखोरी**—हिन्दी के अनेक मंचीय-कवि शराबखोरी की लत वाले हैं। उनमें कुछ ऐसे भी हैं, जो मंच पर जाने से पूर्व ही इतनी अधिक शराब पी लेते हैं कि उन्हें उचित-अनुचित का कोई विवेक ही नहीं रह जाता। ऐसे लोग अपने अथवा अन्य कवियों के काव्य-पाठ के समय भाँति-भाँति के उपद्रव करते हुए भी देखे जाते हैं। शराबी-कवियों की संख्या गीतकारों तथा हास्य-व्यंग्यकारों में ही अधिक पाई जाती है। इस बेशर्म-लत के कारण भी मंचीय-कवि जन-साधारण की दृष्टि में घृणा के पात्र बनते हैं तथा मंच की साहित्यिक-गरिमा को बड़ी ठेस पहुँचती है।

(11) **दुश्चरित्रता**—कवि का स्वयं का जीवन आदर्श हो तो उसकी लेखनी तथा वाणी से नि:सृत आदर्श-वाक्यों का समाज पर भी प्रभाव पड़ेगा; परन्तु यदि वह स्वयं ही दुश्चरित्र हो तो उसके मुख से निकला हुआ काव्योपदेश अरण्य-रोदन ही सिद्ध होगा। खेद का विषय है कि वर्तमान समय के अनेक मंचीय-कवि दुश्चरित्रता के भी मूर्तरूप बने हुए हैं, अत: उनके कारण भी मंच की साहित्यिक-प्रतिष्ठा का अत्यधिक ह्रास हुआ है।

(12) **तथाकथित-कवयित्रियाँ**—स्वतन्त्रता-पूर्व हिन्दी-मंच पर काव्य-पाठ करने वाली कवयित्रियाँ साहित्यिक-प्रतिभा-सम्पन्न तो थीं ही, नारीत्व की गरिमा से भी मण्डित होने के कारण सब की श्रद्धा पात्र बनी रहती थीं, परन्तु स्वातंत्र्योत्तर-काल में जब से मंचीय काव्य-पाठ आर्थिक-लाभ का साधन बना है, तब से हिन्दी-मंच पर ऐसी अनेक तथाकथित-कवयित्रियों का पदार्पण हो गया है, जिनमें

न तो नारी-सुलभ शालीनता के ही दर्शन होते हैं और न जिनके पास साहित्यिक-प्रतिभा नामक वस्तु ही है। आज के हिन्दी काव्य-मंच पर ऐसी अनेक तथाकथित-कवयित्रियाँ प्रतिष्ठित हैं, जो अन्य कवियों द्वारा "उपहार" में प्राप्त रचनाओं को अपनी बताकर निस्संकोच सुनातीं तथा उनके माध्यम से भरपूर यश एवं धन का उपार्जन कर रही हैं। जन-साधारण चूँकि वास्तविक-रहस्य से परिचित नहीं होता, अतः वह केवल उनके स्वर-माधुर्य, रूप-लावण्य, हाव-भाव, वेषभूषा तथा चाल-ढाल को देखकर ही प्रशंसक बन जाता है तथा उन्हें बारम्बार माइक पर बुलाये जाने के लिये आकुल हो उठता है। [illegible] ऐसी तथाकथित-कवयित्रियों में जो जितनी अधिक युवा, रूपवती, निर्लज्ज, फार्वर्ड तथा उत्तेजक होती है; आज के हिन्दी काव्य-मंच पर वह उतनी ही जल्दी प्रसिद्धि प्राप्त कर लेती है तथा उसी अनुपात में उसे रचना-पाठ के लिए पारिश्रमिक की राशि भी अधिक मिल उठती है। अतः ऐसी तथाकथित-कवयित्रियों ने भी कवि-सम्मेलनों के साहित्यिक-स्तर का अत्यधिक विनाश किया है।

(13) **मार्ग-दर्शन की उपेक्षा**—उर्दू-मुशाइरों में आज भी केवल उन्हीं शाइरों को काव्य-पाठ की अनुमति दी जाती है, जिनका कोई बाकायदा "उस्ताद" भी रहा हो। बिना उस्ताद वाले शाइर को मुशाइरे के मंच पर चढ़ने की इजाजत नहीं दी जाती। यह नियम सम्भवतः इस दृष्टि से लागू किया गया होगा कि नया शाइर अपनी रचनाओं में उस्ताद के द्वारा आवश्यक-संशोधन कराने को बाध्य हो और वे साहित्यिक-सृष्टि से समृद्ध बन सकें। यह नियम उर्दू-शाइरी के लिये बड़ा हित कर सिद्ध हुआ है तथा इसके कारण मुशाइरों के मंच से असाहित्यिक-रचनाएँ प्रायः सुनाई नहीं देतीं। यदि कभी भ्रमवश किसी असाहित्यिक-शाइर को मुशाइरे के मंच से रचना-पाठ का अवसर मिल जाय और वह अपनी ऊट-पटांग शाइरी सुनाना अरम्भ कर दे, तो संचालक द्वारा उसे काव्य-पाठ करने से बीच में ही रोक भी दिया जाता है।

मुशाइरों के मंच-संचालक प्रायः स्वयं भी साहित्यिक गुणों से सम्पन्न होते हैं तथा मुशाइरे में उपस्थित अन्य शाइर भी मंच पर असाहित्यिकता को प्रश्रय देना स्वीकार नहीं करते।

स्वतन्त्रता-पूर्व हिन्दी काव्य-मंच पर भी प्रायः इसी नियम का पालन किया जाता था तथा नवीन कवियों में से केवल उन्हीं को काव्य-पाठ का अवसर दिया जाता था, जिनके विषय में वरिष्ठ कवियों की सहमति प्राप्त हो जाती थी। परन्तु स्वातन्त्र्योत्तरकाल से इस स्थिति में आमूलचूल परिवर्तन आ गया है। आज का मंचीय-हिन्दी-कवि सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र है। उसे किसी वरिष्ठ-कवि का शिष्यत्व ग्रहण करना अपमानजनक अनुभव होता है तथा अपनी रचना में किसी आचार्य-कवि द्वारा दी गई आवश्यक संशोधन की उचित सलाह भी बुरी प्रतीत होती है। मुक्त-छन्द तथा गद्य-काव्य के प्रचलन ने काव्य-शास्त्रीय नियमों के पालन की अनिवार्यता तो समाप्त

कर ही दी है, उसके दुरुपयोग ने "साहित्य" के उद्देश्य को भी ताक पर उठाकर रख दिया है ।

आज के हिन्दी काव्य-जगत् में प्रत्येक नया कवि "वाल्मीकि" अथवा "वेदव्यास" बन कर ही अवतरित हो रहा है और वह अपने साहित्यिक-शैशवकाल में ही स्वयं को बुजुर्गों के समान-स्तर पर स्थापित कर, काव्य-पाठ हेतु सीधा मंच पर जा विराजता है । इस दुष्प्रवृत्ति के कारण नई पीढ़ी द्वारा सृजित आधुनिक हिन्दी कविता का अधिकांश असाहित्यिक, प्रभावहीन तथा अल्पजीवी बन कर रह गया है। नये कवियों द्वारा वरिष्ठ-कवियों से मार्ग-दर्शन की यह उपेक्षावृत्ति भी कवि-सम्मेलनों के साहित्यिक स्तर को निरन्तर नीचे गिराती चली जा रही हैं ।

(14) **श्रोताओं की रुचि में परिवर्तन**—सन् 1962 ई० के बाद मंचीय-कवि के रूप में स्थापित मुख्यतः हास्यरस के कवियों ने अपनी असाहित्यिक, अश्लील, फूहड़ तथा उत्तेजक तुकबन्दियों द्वारा निम्न बौद्धिक-स्तर के काव्य-श्रोताओं की रुचि में ऐसा परिवर्तन ला दिया है कि अब वे साहित्यिक-रचनाओं के स्थान पर कामोत्तेजक तथा फटकेबाजी वाली तुकबंदियों को सुनना ही अधिक पसन्द कर उठे हैं । जो मंचीय-कवि इस प्रकार की रचनाएँ ही सुनाते हैं, उन्हें "मुँह मांगी फीस" देकर कवि-सम्मेलनों में आमन्त्रित करने की दिशा में भी अत्यधिक प्रगति हुई है; जिसके फल-स्वरूप आर्थिक-लाभ उठाने के इच्छुक कुछ अच्छे साहित्यकार भी अब निम्न स्तरीय तुकबन्दियाँ लिखने पर उतर आये हैं । अतः श्रोताओं की इस रुचि-परिवर्तन का भी कवि-सम्मेलनों के साहित्यिक-स्तर पर व्यापक दुष्प्रभाव पड़ा है ।

(15) **आश्रयाभाव**—स्वतन्त्रता-पूर्व के समय में अधिकांश कवियों को राज-दरबारों, जमींदारों तथा साहित्यिक-अभिरुचि सम्पन्न सेठ-साहूकारों आदि से आश्रय प्राप्त होता रहता था तथा सामान्यजन भी अपने कवि की यथासंभव सहायता करने को उद्यत दिखाई देते थे । परन्तु स्वातन्त्र्योत्तरकाल में कवियों के वे सभी आश्रय-स्थल उजड़ गये हैं । राजा-महाराजा तथा जमींदार आदि तो रहे ही नहीं, खानदानी-रईसों का स्थान भी अब रिश्वत, चोरबाजारी अथवा तस्करी आदि कृत्यों द्वारा अल्प-काल में ही लखपति बन जाने वाले सेठों ने ले लिया है । पुराने जमाने के अधिकांश सेठ-साहूकार सम्पत्तिशाली होने के अतिरिक्त स्वयं भी साहित्य, संगीत आदि कलाओं के ज्ञाता अथवा पारखी हुआ करते थे, परन्तु आधुनिक युग के रईसों का नया वर्ग शैक्षणिक, बौद्धिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक दृष्टि से शून्यप्राय है । साथ ही, वह धन के बल पर साहित्यकारों तथा कलाकारों को अपनी इच्छानुसार नाच नचाने का आकांक्षी भी प्रतीत होता है ।

कलुषित-सम्पत्ति के मद से मदान्ध ऐसे धनिक अब कवि-सम्मेलन को भी अपनी अय्याशी के एक अड्डे के रूप में प्रयुक्त करने के इच्छुक बन गये हैं; अत. वे

उन असाहित्यिक, चुटकुलेबाज तथा अश्लील रचनाकारों को ही अपना आर्थिक-सहयोग देकर "कवि" रूप में प्रतिष्ठित करने पर तुले हुए हैं, जो उनके साथ बैठकर शराबखोरी कर सकें, उनके दुराचरणों में सहयोगी बनें तथा उनकी चाटुकारिता एवं जय-जयकार करने में भी प्रवीण हों। कवि-सम्मेलनों के आयोजनों में अब चूँकि धन का महत्व अधिक बढ़ गया है तथा साहित्यिक-रुचि-सम्पन्न जन-साधारण वर्तमानकालीन परिस्थितियों में स्वयं अर्थाभाव से पीड़ित होने के कारण अपने "कवि" की आर्थिक-सहायता कर पाने में सक्षम नहीं है, अस्तु ऐसी स्थिति में ये नये धनपति ही आगे बढ़कर अपनी थैलियों का मुँह खोलने तथा अर्थ-लोलुप असाहित्यिक तुकबन्दों को खरीद कर, उन्हें काव्य-मंच पर प्रतिष्ठित करने के दुष्प्रयत्न में जी जान से जुट पड़े हैं। यह स्थिति हिन्दी काव्य-मंच के लिये सचमुच ही बड़ी भयानक है और उसके साहित्यिक-स्तर में निरन्तर गिरावट ला रही है।

हमारी राष्ट्रीय-सरकार ने भी जहाँ समाज के विभिन्न दुर्बल वर्गों के उत्थान हेतु अनेक कल्याणकारी-योजनायें चालू की हैं, वहाँ स्वाधीनता के 37 वर्ष बीत जाने के बाद भी उसने कवियों, विशेषतः मंचीय-कवियों की आर्थिक-विपन्नता की ओर ध्यान देने की कोई आवश्यकता अनुभव नहीं की है। शासन द्वारा जहाँ कुछ सौ की संख्या में छपनेवाले क्षेत्रीय समाचारपत्रों के प्रतिनिधियों तक को यात्रा, चिकित्सा, शिक्षा, आवास आदि की अनेक सुविधायें दी जा रही हैं, वहाँ अपनी कविताओं द्वारा करोड़ों लोगों को प्रभावित करने वाले मंचीय-कवियों को "राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक" मान कर, उनकी यत्किंचित् सहायता करने की दिशा में भी कोई पग नहीं उठाया गया है। देश के कुछ राज्यों में यदा-कदा "साहित्यकारों को पुरस्कार" के नाम पर शासन द्वारा जो कुछ दिया जाता है, उससे भी मंचीय-कवि वंचित ही रह जाते हैं। अतः शासन द्वारा किसी प्रकार की सहायता न मिलने के कारण भी अधिकांश मंचीय-कवि अपने तथाकथित-पोषक पूर्वोक्त पूँजीपति वर्ग के समक्ष आत्म-समर्पण करने एवं उनके मनो-नुकूल भ्रष्ट-रचनाएँ लिखने तथा सुनाने के लिये ठीक उसी प्रकार विवश होते हैं, जिस प्रकार कि रीतिकालीन-कवि अपने आश्रयदाता को प्रसन्न बनाये रखने हेतु उनकी वैयक्तिक-प्रशंसा अथवा नायिकाओं के नख-शिख वर्णन जैसे जन-साधारण के लिये अहितकर काव्य का सृजन करने में संलग्न बने रहे थे।

उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि समुचित-आश्रय का अभाव भी कवि-सम्मेलनों के साहित्यिक-स्तर में गिरावट लाने का एक कारण रहा है।

2. हिन्दी कवि-सम्मेलनों के साहित्यिक-स्तर में गिरावट से ब्रजक्षेत्र के कवियों का सम्बन्ध

अखिल भारतीय स्तर पर काव्य-पाठ करने वाले हिन्दी के मंचीय-कवियों में

सर्वाधिक संख्या ब्रज-क्षेत्र से सम्बद्ध लोगों की है, ही अतः कवि-सम्मेलनों के साहित्यिक-स्तर में गिरावट लाने का मुख्य श्रेय भी इन्हीं को जाता है।

कवि-सम्मेलनों के साहित्यिक-स्तर में गिरावट लाने वाले प्रमुख कारणों को गिनाते समय "गुट बंदी" और उसे बढ़ाने में गणतन्त्र दिवस पर दिल्ली के लालकिले में आयोजित होने वाले कवि-सम्मेलन के योगदान की चर्चा की जा चुकी है। अत यहाँ किसी नाम-विशेष का उल्लेख किये बिना इतना संकेत कर देना ही पर्याप्त है कि उक्त कार्यक्रम के प्रमुख आयोजक तथा उनके अधिकांश सहयोगी भी ब्रज क्षेत्र से ही संबंधित थे। वर्तमान समय में भी जो विशिष्ट ख्याति प्राप्त कवि हिन्दी काव्य-मंच पर अधिकाधिक गन्दगी, अश्लीलता, चुटकुलेबाजी तथा अन्य असाहित्यिक विधियों को प्रश्रय दे रहे हैं, उनमें भी अधिकांश ब्रजक्षेत्र से ही संबंधित है।

'कवि-सम्मेलनों के साहित्यिक-स्तर को गिराने वाले ऐसे अवांछनीय-तत्वों पर शीघ्र ही कड़ा अंकुश लगाया जाय'—समय की यही माँग है।

3. हिन्दी-कवि-सम्मेलन की समाप्ति के विचार का औचित्य

विगत दो दशकों से हिन्दी कवि-सम्मेलनों के साहित्यिक-स्तर में जो भारी गिरावट आई है तथा काव्य-मंच पर जैसे भद्दे दृश्य दिखाई दे उठे हैं, उससे क्षुब्ध अधिकांश बुद्धिजीवियों का यह मत बनता चला जा रहा है कि अब सार्वजनिक कवि-सम्मेलनों के आयोजन समाप्त कर, उनके स्थान पर ऐसी कवि-गोष्ठियाँ आयोजित की जानी चाहिये जिनमें साहित्य-रसिकों को काव्य का यथार्थ-आनन्द प्राप्त हो सके।

स्मरणीय है कि आज के अधिकांश अखिल भारतीय ख्याति-लब्ध मंचीय-कवि साहित्यिक-प्रतिभा से शून्य हैं, अतः जहाँ वे सार्वजनिक-मंचों पर खूब जमते है, वहीं गोष्ठियों में काव्य-पाठ के समय उनकी बोलती बन्द हो जाती है; क्योंकि वहाँ उपस्थित प्रबुद्ध श्रोताओं को उनकी असाहित्यिक एवं फूहड़ तुकबन्दियाँ प्रभावित नहीं कर पातीं। अपनी साहित्यिक-दरिद्रता से परिचित ऐसे मंचीय ख्याति वाले कवि प्रथम तो साहित्यिक कवि-गोष्ठियों में भाग ही नहीं लेते और यदि कभी फँस ही जायँ तो लज्जित भी होते हैं। अस्तु "साहित्यिक-रचनाओं के रसास्वादन हेतु कवि-गोष्ठियाँ आयोजित की जाँय",—यह विचार बहुत अच्छा है; परन्तु उनके लिये सार्वजनिक कवि-सम्मेलनों को बलि का बकरा बना दिया जाय, यह उचित नहीं होगा। इसके निम्नलिखित कारण हैं—

(1) वर्तमान समय में एक प्रकार से सार्वजनिक कवि-सम्मेलन ही हिन्दी-कविता को जीवित रक्खे हुए हैं तथा उसके प्रचार-प्रसार में भी उपयोगी सिद्ध हुए हैं। पुस्तकाकार प्रकाशित हिन्दी काव्य-संकलनों की बिक्री अब न के बरावर रह

गई है, अतः वर्तमान समय में पुस्तक-प्रकाशन के माध्यम से हिन्दी-कविता के प्रचार-प्रसार की आशा करना व्यर्थ है। पुस्तक रूप में प्रकाशित काव्य-संग्रह निःशुल्क प्राप्त होने पर भी, उनका समुचित अध्ययन करने वाले पाठकों की संख्या अंगुलियों पर गिनने योग्य ही मिलेगी, जब कि कवि-सम्मेलनों में उपस्थित होकर काव्य-श्रवण करने वालों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। अस्तु, हिन्दी-कविता की गति को प्रवहमान बनाये रखने हेतु सार्वजनिक कवि-सम्मेलनों के आयोजनों की अभी महती आवश्यकता है। यदि इन्हें समाप्त कर दिया गया तो अल्पकाल में ही हिन्दी-कविता भी उसी दुर्दशा को प्राप्त कर लेगी, जो आज ब्रजभाषा-काव्य की दिखाई देती है।

(2) हिन्दी कवियों को कोई आश्रय प्राप्त नहीं है। कवि-सम्मेलनों में काव्य-पाठ के माध्यम से उन्हें यत्किंचित् आर्थिक-लाभ भी हो जाता है तथा यश तो मिलता ही है। वर्तमान समय में अनेक हिन्दी कवियों की आजीविका का एकमात्र साधन मंचीय काव्य-पाठ ही है। इसी भाँति, भविष्य में भी सार्वजनिक कवि-सम्मेलन हिन्दी कवियों के लिये 'आश्रयदाता' सिद्ध हो सकते हैं। अतः कवियों के व्यक्तिगत-हित की दृष्टि से भी इन्हें समाप्त कर देना उचित नहीं होगा।

(3) सार्वजनिक कवि-सम्मेलन उन नवीन प्रतिभाओं को भी शीघ्र यश तथा संरक्षण प्रदान करते हैं, जिसे पाने के लिये पहले कठोर-तपस्या करनी पड़ती थी। अस्तु, नई पीढ़ी के कवियों को त्वरित उत्कर्ष देने वाली इस सीढ़ी को नीचे नहीं गिराना चाहिये।

(4) सार्वजनिक कवि-सम्मेलनों की समाप्ति पर नौटंकी, भड़ैती, वेश्या-नृत्य जैसे अश्लील, अनुपयोगी तथा असाहित्यिक कार्यक्रमों की संख्या में पुनः वृद्धि हो जाने की संभावना रहेगी; क्योंकि जन साधारण को सामूहिक-मनोरंजन का कोई-न-कोई साधन तो चाहिये ही। अतः असाहित्यिक-कार्यक्रमों की तुलना में कवि-सम्मेलन जैसे साहित्यिक आयोजन सार्वजनिक-मनोरंजन तथा सामाजिक-हित की दृष्टि से भी आवश्यक हैं।

(5) सार्वजनिक हिन्दी कवि-सम्मेलनों की समाप्ति पर उर्दू के मुशाइरे पुनः प्रभावी हो जायेंगे, जिनसे हिन्दी की हित-हानि होगी।

उक्त कारणों को ध्यान में रखते हुए सार्वजनिक हिन्दी कवि-सम्मेलनों की समाप्ति का विचार त्याग देना चाहिये। शरीर का कोई अंग यदि रोगी हो जाय तो उसे काट फेंकने की अपेक्षा स्वास्थ्य-लाभ का उपाय करना ही उचित रहता है। हिन्दी कवि-सम्मेलनों के क्षेत्र में जिन बुराइयों ने प्रवेश पा लिया है, उन्हें दूर करने के उपाय करना तो आवश्यक है, परन्तु कवि-सम्मेलनों को समाप्त कर देना उचित नहीं होगा।

4. हिन्दी कवि-सम्मेलनों के साहित्यिक स्तर में सुधार के उपाय

हिन्दी कवि-सम्मेलनों के साहित्यिक-स्तर को पुनः उन्नत बनाने हेतु निम्न-लिखित उपायों का क्रियान्वयन उचित रहेगा—

(1) गुटबाज, चुटकुलेबाज, जातीयता के पोषक, शराबी, दुश्चरित्र, छद्म-वेषी तथा असाहित्यिक अथवा राजनीतिक दलीय-प्रतिबद्धता की रचनायें सुनाने वालों को कवि-सम्मेलन में काव्य-पाठ के लिये न बुलाया जाय।

(2) कवि-सम्मेलन के आरम्भ में ही यह स्पष्ट घोषणा कर दी जाय कि अश्लील, फूहड़, असाहित्यिक तथा दलीय-प्रतिबद्धता वाली रचनाओं का पाठ वर्जित है। इसके बावजूद भी, यदि कोई कवि ऐसी रचनाएँ सुनाने का प्रयत्न करे तो उसे तुरन्त रोक दिया जाय तथा उसकी सार्वजनिक रूप से भर्त्सना भी की जाय, ताकि वह भविष्य के लिये स्वयं में सुधार ला सके।

(3) मंच पर काव्य-पाठ हेतु आने वाले नये कवियों के लिये इस नियम का पालन आवश्यक कर दिया जाय कि वे अपनी कविताएँ किसी वरिष्ठ-कवि को दिखाकर, उनसे इस आशय की स्वीकृति प्राप्त करें कि उनकी रचनाएँ मंच पर पढ़ी जाने योग्य हैं। जिन लोगों में साहित्यिक-प्रतिभा न हो (फिर वे भले ही किसी अन्य क्षेत्र में कितने ही प्रतिष्ठित क्यों न हों) उन्हें मंच से काव्य-पाठ नहीं करने देना चाहिए।

(4) मुक्त-छन्द के प्रवर्तक पं. सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला" की भाँति मुक्त-छन्द में काव्य रचना करने का अधिकारी वही व्यक्ति हो सकता है, जो छन्दोबद्ध पद्य-रचना करने में भी सक्षम हो; अस्तु, जो लोग केवल गद्य को ही पद्य के रूप में पढ़ कर अपने कवि होने का ढोंग करते हों, उन्हें मंच से रचना-पाठ नहीं करने देना चाहिए। इस प्रक्रिया से अकवियों का मंच-प्रवेश समाप्त करने में सहायता मिलेगी।

(5) केवल उन्हीं कवयित्रियों को काव्य-पाठ हेतु आमंत्रित किया जाय, जो स्वयं साहित्यिक-काव्य का सृजन करती हों तथा जिनकी वेष-भूषा, हाव-भाव तथा व्यवहार में भी शालीनता परिलक्षित हो।

(6) अधिक पारिश्रमिक की माँग करने वाले शुद्ध व्यवसायी-कवियों को काव्य-पाठ हेतु न बुलाया जाय। केवल उन्हीं कवियों को आमंत्रित किया जाय जो अव्यवसायी तथा साहित्यिक-प्रतिभा सम्पन्न हों। इससे वे लोग स्वतः ही मचीय काव्य-पाठ से विरत हो जायेंगे, जो मात्र आर्थिक-लाभ के उद्देश्य से ही कवि बनने का ढोंग रचते हैं।

(7) कवि-सम्मेलन के "स्थायी-संयोजक" का पद समाप्त किया जाय। "संयोजक" केवल उसी व्यक्ति को बनाया जाय, जो साहित्य-प्रेमी तथा यथार्थ-कविता की समझ रखने वाला हो। जहाँ तक संभव हो, किसी मंचीय-कवि को

'संयोजक' न बनाया जाय। जो लोग कवि-सम्मेलन के संयोजक के रूप में किसी तात्कालिक अथवा दूरगामी लाभ को प्राप्त करने के इच्छुक हों, उन्हें भी 'संयोजक' का पद नहीं सौंपा जाना चाहिये।

(8) कवि-सम्मेलन के "संचालक" के पद पर किसी ऐसे व्यक्ति को ही बैठाना चाहिए, जो काव्य-पाठ करने वाले प्रायः सभी कवियों की साहित्यिक-प्रतिभा तथा पाठ-शैली से पूर्व-परिचित हो, कवियों का क्रम निर्धारित करने में किसी दुर्भावना से काम न ले, श्रोताओं की अनुचित माँग को प्रश्रय न दे तथा स्व-पांडित्य-प्रदर्शन का इच्छुक भी न हो। काव्य-मर्मज्ञ, धीर, गम्भीर, निष्पक्ष तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व-सम्पन्न संचालक ही कवि-सम्मेलन की सफलता में सर्वाधिक सहायक सिद्ध होता है।

(9) कवि-सम्मेलन के मंच पर काव्य-पाठ करने वाले कवियों, अध्यक्ष, उद्घाटनकर्ता, मुख्य-अतिथि तथा संचालक के अतिरिक्त किसी भी अन्य व्यक्ति को नहीं बैठने देना चाहिए। इससे मंच की गरिमा को ठेस नहीं पहुँचेगी।

(10) कवि-सम्मेलन के अध्यक्ष, उद्घाटनकर्ता अथवा मुख्य-अतिथि के पद पर केवल वरिष्ठ कवियों को ही आसीन किया जाय। मंत्री, सांसद, विधायक, सरकारी अधिकारी, पूँजीपति अथवा साहित्येतर क्षेत्र के किसी भी व्यक्ति को ये पद नहीं सौंपने चाहिए।

जबकि व्यावसायिक-समारोहों में व्यवसायी, शैक्षिक-सम्मेलनों में शिक्षा-शास्त्री, राजनीतिक कार्यक्रमों में राजनीतिज्ञ तथा सरकारी-आयोजनों में सरकारी अधिकारी ही अध्यक्षता, उद्घाटन आदि करते हैं; तब कवि-सम्मेलनों में काव्येतर-क्षेत्र के किसी व्यक्ति को प्रतिष्ठित करना कहाँ तक उचित है? ऐसा करने से कवि-सम्मेलन की गरिमा निश्चय ही गिरती है।

(11) कवि-सम्मेलन के संयोजन में असाहित्यिक, अगम्भीर, दुश्चरित्र तथा विकृत-रुचि सम्पन्न पूँजीपतियों से किसी भी प्रकार का सहयोग न लिया जाय।

(12) किसी व्यक्ति-विशेष अथवा संस्था द्वारा स्वयं के आर्थिक-लाभ हेतु आयोजित किये जाने वाले कवि-सम्मेलनों का बहिष्कार किया जाय।

(13) विकृत रुचि वाले, असाहित्यिक-श्रोताओं को कवि-सम्मेलन में उपस्थित न रहने दिया जाय। यदि कोई उच्छृंखल श्रोता कवि-सम्मेलन में आवाजकशी अथवा किसी अन्य प्रकार का अभद्र-प्रदर्शन करे तो उसे रोका जाय अथवा तत्काल ही सम्मेलन-स्थल से निकाल कर बाहर कर दिया जाय।

(14) जन-साधारण स्वयं भी अपने कवियों के सुख-दुःख में भागीदार बनने की आवश्यकता अनुभव करें तथा उन्हें यथाशक्ति सामयिक-सहायताएँ पहुँचाने में प्रयत्नशील बनें।

(15) शासन की ओर से मंचीय-कवियों को जीवनोपयोगी आवश्यक सुविधाएँ देने का प्रयत्न किया जाय। आर्थिक-दृष्टि से निश्चिन्त तथा अन्य चिन्ताओं से मुक्त कवि ही श्रेष्ठ-काव्य का सृजन कर पाता है। अभाव-मुक्त होने की स्थिति में उसे स्वयं ही असाहित्यिकता, अश्लीलता तथा फूहड़ता से अरुचि होगी और वह इन्हें आर्थिक-प्रलोभनवश अपनाने के लिये बाध्य नहीं होगा।

उक्त उपायों द्वारा हिन्दी कवि-सम्मेलनों के गिरते हुए साहित्यिक-स्तर को सुधारा तथा समुन्नत बनाया जा सकता है। यदि कवि-सम्मेलन जैसी सात्विक, साहित्यिक तथा जनगणमंगलकारी विधा को जीवित बनाये रखना है, तो इनके क्रियान्वयन की दिशा में अविलम्ब पग उठाये जाने चाहिए, अन्यथा वर्तमान-कालीन कुप्रवृत्तियाँ स्वयं ही कवि-सम्मेलनों को नष्ट कर देने में सफल हो जायेंगी।

5. ब्रजक्षेत्र के विशिष्ट साहित्यिक-प्रतिभा सम्पन्न जीवित मंचीय-कवि

वर्तमान समय में ब्रजक्षेत्र के जो अखिल भारतीय ख्याति प्राप्त विशिष्ट साहित्यिक-प्रतिभा सम्पन्न मंचीय-कवि जीवित हैं, उनकी नामावली नीचे प्रस्तुत की जा रही है। जो कवि जिस रस-विशेष के काव्य-पाठ हेतु विशेष प्रसिद्ध हैं, उनका उल्लेख भी उनके नाम के आगे कोष्ठक में ही कर दिया गया है।

इस सूची मे (1) पुस्तक रूप में प्रकाशित अथवा अप्रकाशित एवं (2) वर्तमान में भी ब्रजक्षेत्र के निवासी अथवा प्रवासी—दोनों वर्गों के नाम सम्मिलित हैं।

जो कवि अपनी वृद्धावस्था अथवा अन्य कारणो से अब कवि-सम्मेलनों में भाग नहीं लेते अथवा जो मंचीय-कवि के रूप में अभी तक अखिल भारतीय-स्तर पर ख्याति अर्जित नहीं कर पाये हैं, उन्हें इस सूची मे सम्मिलित नहीं किया गया है।

जो कवि मात्र मंचीय-काव्य पाठ के लिये ही प्रसिद्ध हैं, परन्तु जिनको साहित्यिक-प्रतिभा के समक्ष अभी तक प्रश्न-चिह्न ही लगा हुआ है, उन्हें भी इस सूची से प्रथक रक्खा गया है।

(1) श्री राजेश दीक्षित, आगरा (वीर रस)
(2) श्री राम कुमार चतुर्वेदी 'चंचल', शिवपुरी (वीर रस)
(3) श्री राधेश्याम 'प्रगल्भ', दिल्ली (वीर रस)
(4) श्री गोपाल दास "नीरज", अलीगढ़ (गीतकार)
(5) श्री वीरेन्द्र मिश्र, बम्बई (गीतकार)
(6) श्री मुकुट विहारी "सरोज", ग्वालियर (व्यंग्यात्मक-गीतकार)
(7) डा. रवीन्द्र भ्रमर, अलीगढ़ (गीतकार)
(8) श्री सोम ठाकुर, आगरा (गीतकार)
(9) श्री रमेश "रंजक", दिल्ली (गीतकार)

(10) श्री किशन सरोज, बरेली (गीतकार)
(11) श्री अशोक चक्रधर (व्यंग्यकार)

इनके अतिरिक्त युवा-पीढ़ी में और भी ऐसे अनेक सशक्त-हस्ताक्षर उभर रहे हैं, जिनकी साहित्यिक काव्य-प्रतिभा श्लाघनीय है। कालान्तर में, ब्रजक्षेत्र की नई पीढ़ी के ये काव्य-नक्षत्र मंचीय हिन्दी-साहित्याकाश को अपनी प्रतिभा-प्रभा से आलोकित करेंगे—ऐसी आशा है।

6. निष्कर्ष : ब्रजक्षेत्र के मंचीय हिन्दी कवियों का साहित्यिक-योगदान

हिन्दी कवि-सम्मेलनों के उद्‌भव, प्रचार-प्रसार, स्वरूप, प्रभाव, उपयोगिता, उपलब्धियों, विकृतियों तथा उनके सुधारात्मक उपाय आदि के साथ ही मंचीय-कवियों द्वारा सृजित साहित्य आदि जिन विषयों का प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के पिछले प्रकरणों में उल्लेख किया जा चुका है, उनसे यह स्वतः स्पष्ट है कि माँ भारती का भाण्डार भरने में ब्रजक्षेत्र से सम्बन्धित मंचीय हिन्दी-कवियों का साहित्यिक-योगदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहा है। उन्होंने न केवल काव्य-ग्रन्थों की ही रचना की है, अपितु उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध, समीक्षा, आलोचना तथा अनुवाद आदि अन्य विधाओं से सम्बन्धित साहित्य का भी प्रचुर परिमाण में प्रणयन किया है। प्रत्येक कवि के संक्षिप्त-जीवनवृत्त के साथ दी गई उनके प्रकाशित एवं अप्रकाशित ग्रन्थों की सूची इसका प्रमाण है।

ब्रजक्षेत्र से सम्बन्धित मंचीय हिन्दी-कवियों द्वारा लिखित अनेक पुस्तकें तथा स्फुट रचनाएँ विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा विभिन्न राज्यों की शिक्षा परिषदों के पाठ्यक्रमों में भी सम्मिलित की गई हैं। उनमें से अनेक पुरस्कृत तथा अन्य भाषाओं में अनूदित भी हुई हैं। इन कवियों का अप्रकाशित-साहित्य जब पुस्तकाकार प्रकाशित होगा तो वह हिन्दी-साहित्य के भाण्डार की और भी अधिक श्रीवृद्धि करेगा, इसमें सन्देह नहीं। ब्रजक्षेत्र के अनेक स्वर्गीय तथा जीवित मंचीय हिन्दी-कवियों के व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर अनेक शोध-कार्य भी हो चुके हैं तथा हो रहे हैं। इन सब बातों से सिद्ध है कि हिन्दी-साहित्य में ब्रजक्षेत्र के मंचीय हिन्दी-कवियों का साहित्यिक-योगदान सदैव प्रशंसनीय एवं चिरस्मरणीय बना रहेगा।



परिशिष्ट

1. ब्रजक्षेत्र से सम्बद्ध अन्य मंचीय-कवि ।
2. ब्रजक्षेत्र से असम्बद्ध आज के लोकप्रिय मंचीय-कवि
3. सहायक ग्रंथ-सूची ।

1. ब्रजक्षेत्र से सम्बद्ध अन्य मंचीय-कवि

प्रस्तुत शोध-ग्रंथ के प्रकाशन के समय ब्रजक्षेत्र से किसी भी रूप में सम्बन्धित जिन अन्य कवियों के विषय में जानकारी प्राप्त हुई है, उनका अकारादि-क्रम से परिचय नीचे लिखे अनुसार है। प्रत्येक कवि के नाम के आगे कोष्ठक में उनके जन्म का ईस्वी सन् दिया गया है।

श्री आनन्द शर्मा (1940 ई.)—आप सुमधुर गीतकार तथा मूलतः सिकन्दराबाद (जि.—बुलन्दशहर) के निवासी हैं। वर्तमान पता—प्रबंधक, राज्य बीमा कर्मचारी योजना कार्यालय; 42/98, बिल्लोचपुरा, आगरा।

श्री कृष्ण मौजी (1934 ई.)—आप मूलतः अलीगढ़ के निवासी हैं। ओजस्वी रचनाएं लिखते हैं। वर्तमान पता—उप प्रधान अध्यापक, बुनियादी विद्यालय, वर्धा (गुजरात)।

डा. तेज बहादुर (1918 ई.)—आप की शिक्षा आगरा तथा मथुरा में हुई एवं जीवन का अधिकांश भाग ब्रजक्षेत्र में ही व्यतीत हुआ है। आप श्रेष्ठ कथाकार एवं कवि हैं। वर्तमान पता—'वृज', एच. आई. जी. 80, अलीगंज योजना, लखनऊ 226020।

डा. दिनेश पंडित (1948 ई.)—आप सुमधुर गीतकार हैं तथा नज़्में भी लिखते हैं। पता—ग्राम-लालऊ, पो. फीरोजाबाद, (जि.—आगरा)।

श्री नन्द भारद्वाज (1947 ई.)—आपका जन्म जि.—बाड़मेर (राजस्थान) में हुआ था। आप राजस्थानी तथा हिन्दी के प्रमुख कवि, कथाकार एवं निबंधकार हैं। आपके द्वारा लिखित अनेक पुस्तकें प्रकाशित हैं। विगत दो वर्षों से आप आकाशवाणी के मथुरा-वृन्दावन केन्द्र पर कार्यक्रम-अधिशाषी के पद पर कार्य कर रहे हैं। वर्तमान पता—द्वारा : आकाशवाणी, मथुरा।

श्री **नरेन्द्र दीक्षित** (1948 ई.)—आप सुमधुर गीतकार हैं। गज़ल तथा कविताएँ भी लिखते है। आप मूलत: आगरा निवासी हैं। वर्तमान पता—द्वारा: चन्द्रपाल आर्य इण्टर कालिज, पो. बहजोई (जि.—मुरादाबाद)।

श्री बेदीराम शर्मा 'वेद' (1930 ई.)—आप मूलतः आगरा के निवासी हैं। अच्छे कवि तथा निबंध-लेखक हैं। वर्तमान पता—लक्ष्मी निवास, स्वामी विवेकानन्द रोड, गोरे गाँव, बम्बई।

श्री ब्रजेश कुमार यादव (1943 ई)—आप वकालत करते हैं तथा अच्छे कवि हैं। आपके दो काव्य संकलन भी प्रकाशित हैं। पता—सिकन्दराराऊ (जिला—अलीगढ़)।

श्री महेश तोमर (1951 ई.)—आप मुरैना के मूल निवासी हैं। फिर करहल (जिला—मैनपुरी) स्थायी आवास बना। आप प्रगतिशील रचनाकार हैं। वर्तमान पता—द्वारा : 'अमर उजाला' कार्यालय, गुरु का ताल मार्ग, उद्योग नगर, आगरा।

श्री महेश सन्तोषी (1935 ई.)—आप का जन्म भिण्ड में हुआ था। आप अच्छे गीतकार हैं। वर्तमान पता—तिलक चौक, विदिशा (म. प्र.)।

श्रीमती सुशीला मिश्र (1928 ई.)—आप का जन्म मैनपुरी में हुआ था। आप अच्छी कवयित्री हैं। वर्तमान पता—21 गांधी रोड, देहरादून।

अन्य—ज्ञातव्य

(1) इटावा निवासी कविकर श्री राधा बल्लभ दीक्षित 'बल्लभ' का सितम्बर 1984 ई. में स्वर्गवास हो चुका है। बल्लभ जी अपने समय के विख्यात मंचीय-कवि रहे। परतन्त्रता-काल में इनकी ओजस्वी रचनाओं ने जन-जागृति का शंखनाद किया था। आपकी कुछ पुस्तकें प्रकाशित हैं। शेष विपुल साहित्य अप्रकाशित है।

2. ब्रजक्षेत्र से असम्बद्ध आज के लोकप्रिय मंचीय-कवि

ब्रजक्षेत्र से सम्बद्ध मंचीय-कवियों के विषय में प्रस्तुत शोध-प्रबंध के प्रकरण 5, 6 तथा 7 में विस्तार पूर्वक लिखा जा चुका है। इस परिशिष्ट (2) में ब्रजक्षेत्र से असम्बद्ध, भारत के किसी भी क्षेत्र के निवासी, उन कवियों का संक्षिप्त-परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है, जो वर्तमान समय में मंचीय-कवि के रूप में विशेष ख्याति-लब्ध हैं।

इस सूची में कवियों का उल्लेख रसों के वर्गीकरण एवं नामों के अकारादिक्रम के आधार पर हुआ है। प्रत्येक रस के कवियों की सूची के प्रारम्भ में अखिल भारतीय ख्याति प्राप्त विशिष्ट कवियों का संक्षिप्त-परिचय प्रस्तुत करते हुए, बाद में उसी रस के मंचीय-ख्याति-प्राप्त अन्य कवियों के केवल नाम-पते ही दिये गये हैं। उनमें जो कवि

अखिल भारतीय मंचीय-ख्याति प्राप्त कर चुके हैं, उनके नाम के आगे दो गुणक चिह्न × × तथा जो अन्तर्प्रान्तीय मंचीय-ख्याति प्राप्त हैं, उनके नाम के आगे एक गुणक चिह्न × प्रदर्शित किया गया है। शेष कवियों को क्षेत्रीय-ख्याति लब्ध समझना चाहिए। इस सूची के कुछ कवियों की काव्य-पुस्तकें भी प्रकाशित है, तथापि अधिकांश अभी तक पुस्तक रूप में अप्रकाशित ही हैं।

(1) **वीररस**

डा. उर्मिलेश शंखधार

जन्म—जुलाई 1951। एम. ए., पी-एच. डी.। प्राध्यापक। प्रकाशित पुस्तकें—(1) साहित्य शास्त्र और समालोचना के सरल आयाम, (2) नया सप्तक : व्याख्या और विवेचन तथा (3) हिन्दी गीत : पहचान और परख (सभी अलोचनात्मक)। गीत, गज़ल तथा गेय-नज़्मों के सर्जक। भाषा, भाव, शिल्प तथा छन्द की दृष्टि से रचनाएँ निर्दोष। सामयिक विषयों पर लिखित ओजस्वी-रचनाओं के स-स्वर पाठ हेतु ख्याति-लब्ध। पता—8 प्रोफेसर्स, कालोनी, बदायूँ (उ. प्र.)

श्री तन्मय बुखारिया

पूरा नाम—हुकुमचन्द बुखारिया 'तन्मय'। जन्म—24 जनवरी 1921 ई.। शिक्षा—एम. ए., एल-एल. बी.। वकालत एवं व्यवसाय। प्रकाशित पुस्तकें—(1) आहुति (2) पाकिस्तान, (3) प्रहलाद, (4) वीर लाल पद्मधर, (5) मेरे बापू तथा (6) मरण मुक्ति का द्वारा (सभी काव्य)। भाव, भाषा, तथा शिल्प के धनी। स्वतन्त्रता-पूर्व से मंचीय ख्यातिलब्ध ओजस्वी कवि। पता—ललितपुर (उ. प्र.)

श्री दामोदर स्वरूप 'विद्रोही'

जन्म—2 अक्टूबर 1928 ई.। एम. ए.। अध्यापन एवं स्वतन्त्र लेखन। प्रकाशित पुस्तक—'दिल्ली की गद्दी सावधान।' ओजस्वी काव्य-पाठ हेतु ख्यातिलब्ध। सामयिक विषयों पर लिखित रचना में परुष-शब्दावली का प्रयोग तथा कहीं-कहीं छन्द-योजना में भी भटकाव, तथापि रचनाएँ आकर्षक एवं हृदयग्राही। पता—329 चमकनी, बहादुर गंज, शाहजहांपुर (उ. प्र.)।

श्री देवी प्रसाद 'राही'

जन्म—सन् 1931 ई.। एम. ए.। प्राध्यापक। प्रकाशित पुस्तकें—ज्योति जवाहर (काव्य) तथा कुछ अन्य भी। नज्म, गीत तथा गज़लों के सर्जक। ओजस्वी कवि के रूप में ख्याति लब्ध। मंचीय जोड़-तोड़ में बेजोड़। पता—241 एच-1 ब्लाक, किदवई नगर, कानपुर।

श्री धर्मपाल अवस्थी

जन्म—27 जनवरी 1930 ई.। एम. ए.। अध्यापक। प्रकाशित पुस्तकें—(1) कुरूपा एवं (2) मरघट (काव्य)। नज़्म तथा गीतों के सर्जक। चिन्तन प्रधान साहित्यिक रचनाओं के ओजस्वी पाठ हेतु लब्ध—कीर्ति। पता—13/177, गोविन्द नगर, कानपुर-6।

श्री नरेन्द्र मिश्र

जन्म—5 मई 1937 ई.। एम. ए.। अध्यापक। प्रकाशित पुस्तक—अमर बेल बलिदान की (काव्य)। राजस्थानी भूमि पर घटित ऐतिहासिक—घटनाओं पर आधारित मर्मस्पर्शी-काव्य के सृजन एवं पाठ हेतु ख्यातिलब्ध। पता—पोस्ट बाक्स नं. 18, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)।

श्री बालकवि बैरागी

पूरा नाम—श्री नन्दराम दास बैरागी। जन्म—10 फरवरी 1931 ई.। एम. ए.। विधायक। प्रकाशित पुस्तकें—(1) दो टूक, (2) दरद दिवानी, (3) जूझ रहा है हिन्दुस्तान, (4) गौरव गीत, (5) भावी रक्षक देश के, (6) दादी का कर्ज़, (7) रेत के रिश्ते, (8) कोई तो समझे (9) वंशज का वक्तव्य, (10) शीलवती, (11) ओ अमलतास, (12) ललकार, (13) आओ बच्चो, (14) गाओ बच्चो, (15) चहक म्हारा चम्पा एवं (16) गुलिह्वर तथा (17) सिण्डरैला। सामयिक विषयों पर लिखी रचनाओं द्वारा नौटंकी जैसे टीपदार-स्वर में नाटकीयता पूर्ण काव्य-पाठ से सामान्य—श्रोताओं को प्रभावित करने में दक्ष। हिन्दी के अतिरिक्त कुछ रचनाएँ मालवी में भी लिखी हैं। छन्दोवद्ध तथा छन्द-मुक्त—दोनों प्रकार की कविताओं का सृजन। साहित्यिक-दृष्टि से रचनाएँ सामान्य। राजनीतिक-क्षेत्र में कार्यरत रहने के कारण सामयिक-रचनाएँ राजनीतिक—(कांग्रेस ई. की) प्रतिबद्धता युक्त तथा अल्पजीवी। पता—पो. मनासा (जिला-मन्दसौर) म. प्र.।

डा. ब्रजेन्द्र अवस्थी

जन्म—1 जनवरी 1931 ई.। एम. ए., पी-एच. डी.। प्राध्यापक। प्रकाशित पुस्तकें—(1) उगते अंकुर-बढ़ते चरण, (2) सिंह गढ़ विजय तथा (3) मनोरमा। सामयिक विषयों पर लम्बी कविताएँ (नज़्में) लिखने में दक्ष। भाषा, भाव तथा शिल्प की दृष्टि से रचनाएँ निर्दोष। उच्च-स्वर से काव्य-पाठ द्वारा श्रोताओं को प्रभावित करने में सक्षम। सामयिक-परिस्थितियों के अनुसार अवसर का लाभ उठाने में सिद्धहस्त। आपात-काल में एक ओर शासन का जयघोष करते हुए दूसरी ओर स्वयं को शासन-विरोधी प्रदर्शित करने में भी संलग्न रहे। कवि-सम्मेलन के मंच पर '[illegible]' के माध्यम से व्यक्तिगत भंड़ैती के स्तर तक जा

पहुँचने की कला में निष्णात। कवि-सम्मेलन के संचालक-पद पर बैठ कर स्व-पाण्डित्य प्रदर्शन हेतु विशेष लालायित। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से संबंधित होने के कारण रचनाओं में संघी-प्रतिबद्धता का आभास, तथापि समयानुसार रंग बदलने में भी कुशल। पता—मनोरमा, कविनगर, बदायूँ (उ. प्र.)।

श्री मेघराज मुकुल

जन्म—सन् 1923 ई.। एम. ए.। सेवा-निवृत्त। राजस्थानी भाषा में लिखित 'सेनानी' कविता द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त। अनेक पुस्तकें प्रकाशित। सम्प्रति : आयु-वार्द्धक्य एवं रुग्णता के कारण मंच से प्रायः सन्यस्त। पता—बापूनगर, जयपुर।

श्री राजेन्द्र अनुरागी

पूरा नाम—श्री राजेन्द्र कुमार जैन 'अनुरागी'। जन्म 16 फरवरी, 1931 ई.। एम. ए.। शासकीय-सेवा। प्रकाशित पुस्तकें—(1) शान्ति के पाँखी, (2) सारा विश्व सुने, (3) पांव भर धरती तथा, (4) सुगंध तोरण। राष्ट्रीय एवं सामाजिक समस्याओं पर लिखित चिन्तन प्रधान ओजस्वी—रचनाओं के लिए ख्यातिलब्ध। साहित्यिक-दृष्टि से कविताएँ समृद्ध तथा हृदयस्पर्शी। पता—94/13 तुलसी नगर; भोपाल—462005। स्थायी पता—जैन मंदिर के सामने, शनीचरा वार्ड, होशंगाबाद (म. प्र.)।

अन्य कविगण

श्री अग्निवेश शुक्ल × —250 सदर बाजार, शाहजहाँपुर।

श्री अंजनी कुमार 'दृगेश'—48 पानदरीबा, इलाहाबाद।

श्री उपेन्द्र मिश्र—किशोर गंज, पन्ना (म. प्र.)।

श्री कृष्ण मित्र × —2 राकेश मार्ग, जी. टी. रोड. गाजियाबाद (उ. प्र.)।

श्री गजेन्द्र सिंह सोलंकी—मोहनसदन, लाड़पुरा, कोटा (राज)

प्रो. गिरिजा शंकर त्रिवेदी—पुरानी कोतवाली, देहरादून।

श्री छैल बिहारी वाजपेयी 'बाण' × —बालविश्व, मुन्नू लाल मार्केट, हरदोई।

श्री जगन्नाथ व्यास—13 मान सरोवर, सिविल लाइन्स, मेरठ।

श्री धर्म पाल दत्त—द्वारा : ब्रजभूषण इन्टर कालिज, सहारनपुर।

श्री नलिनीश त्रिगुणायत—5/31 रायदीपचन्द, फर्रुखाबाद।

श्री पुरुषोतम प्रतीक—294/24 त्रिनगर, दिल्ली 35।

श्री प्रकाश उप्पल—84 बेगम मार्ग, उज्जैन।

श्री प्रकाश मिश्र × —जयेन्द्र गंज, लश्कर।

श्री प्रकाश दीक्षित × —135 ललितपुर कालोनी, ग्वालियर।

श्री ब्रजेश माधव—गढ़ा, जबलपुर।
श्री भैयालाल व्यास ×—नरसिंहगढ़ पुरवा, छतरपुर।
श्री मान सिंह राही—इन्दौर गेट कालोनी, प्लाट नं. 623, उज्जैन।
श्री मृत्युंजय उपाध्याय ×—37 ए दुर्गा चरण मित्र स्ट्रीट, कलकत्ता—7।

श्री राज बहादुर विकल ×—द्वारा : काकोरी शहीद इन्टर कालिज, जलालाबाद, (जिला—शाहजहांपुर)।

श्री राधा रमण त्रिवेदी रम्मन—केसरी सिंह, पीलीभीत।
श्री राम मनोहर त्रिपाठी—563 न्यू मिल रोड, बम्बई-7।

डा. लक्ष्मी नारायण कुशवाहा ×—द्वारा : उदयराज हिन्दू कालिज, काशीपुर (जि.—नैनीताल)।

श्री वेद प्रकाश सुमन ×—2 एच-5, इस्टेट मुरादानगर (जि.-गाजियाबाद)
श्री शारदा प्रसाद मनोज ×—तमरपाई, छतरपुर (म. प्र.)
श्री शिवचन्द्र प्रताप सिंह—बेकापुर, मुंगेर (बिहार)
श्री शिव सिंह सरोज—5, कैण्ट रोड, लखनऊ।
श्री शिवानन्द मिश्र बुन्देला ×—झाँसी रोड, उरई (जि.—जालौन)।
श्री श्रीकृष्ण गौड़—13 जे/119 मुरादनगर (जि.—गाजियाबाद)।
श्री श्रीकृष्ण 'सरल' ×—13 बेताल मार्ग, माधवनगर, उज्जैन।
श्री श्रीनिवास शुक्ल—मुहल्ला शुक्लाना, छतरपुर।
श्री सन्त पाण्डेय ×—तरीनपुर, सीतापुर।
श्री सन्तोष दीक्षित—द्वारा : गांधी विद्यालय पो. उरई (जिला—जालौन)।
श्री सत्य नारायण सत्तन ×—21/2 तम्बोली बाखल, इन्दौर।
डा. सीता किशोर खरे ×—दतिया (म. प्र.)।
श्री सुमन दुबे ×—104 ए/132 रामबाग, कानपुर-12।
श्री हरिओम् पँवार ×—11 सिविल लाइन्स, मेरठ।

(2) श्रृंगार रस

डा. कुँवर बेचैन

पूरा नाम—श्री कुँवर बहादुर सक्सेना। जन्म—1 जुलाई 1942 ई.। एम. ए., पी-एच. डी.। प्राध्यापक। प्रकाशित पुस्तकें—(1) पिन बहुत सारे (2) भीतर साँकल, बाहर साँकल, (3) शामियाने काँच के तथा (4) महावर इन्तजारों का। छन्द-बद्ध तथा छन्द-मुक्त—दोनों प्रकार की रचनाएँ लिखने में सिद्धहस्त। परम्परागत एवं नवीनतम—सभी शैलियों में काव्य-सृजन। भाषा-भाव तथा शिल्प की दृष्टि से रचनाएँ मूल्यवान् एवं हृदयग्राही। हिन्दी के अतिरिक्त उर्दू में भी काव्य-

सृजन । काव्य-पाठ शैली मनमोहक । पता—II एफ, 51 नेहरू नगर, गाजियाबाद (उ. प्र.) ।

श्री भारत भूषण

जन्म—जुलाई 1929 ई. । एम. ए. । अध्यापक । प्रकाशित पुस्तकें—(1) सागर के सीप । छन्दोवद्ध सुमधुर गीतों के प्रमुख गायक । भाषा, भाव तथा शिल्प की दृष्टि से रचनाएँ आकर्षक । काव्य-पाठ शैली भी मर्मस्पर्शी । पता—950 ब्रह्म-पुरी, मेरठ ।

श्री रमानाथ अवस्थी

जन्म—दिसम्बर, 1926 ई. । एम. ए. । आकाशवाणी से सेवा-निवृत्त । भाषा, भाव तथा शिल्प की दृष्टि से रचनाएँ समृद्ध । कुछ पुस्तकें प्रकाशित । किसी समय में मंच पर सर्वाधिक सुने जाने वाले गीतकारों में से एक । पता—51 पटौदी हाउस, नई दिल्ली—1 ।

श्री रामावतार त्यागी

जन्म—8 जुलाई 1925 ई. । एम. ए. । पत्रकारिता । प्रकाशित पुस्तकें—(1) नया खून, (2) आठवाँ स्वर, (3) सपने महक उठे, (4) गुलाब और बबूल वन, (5) गाता हुआ दर्द, (6) 'मेघ दूत' का खड़ी बोली में अनुवाद, (7) मैं दिल्ली हूँ तथा (8) लहू के चन्द कतरे । हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ गीतकारों में से एक । भाषा, भाव शिल्प, छन्द आदि सभी दृष्टियों से रचनाएँ अत्यन्त समृद्ध । अपने समय के अत्यधिक लोकप्रिय मंचीय-कवि । अनेक पुरस्कार प्राप्त । "आज के लोकप्रिय कवि रामावतार त्यागी" पुस्तक बम्बई विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में । पता—डी. 65, गुलमुहर पार्क, दिल्ली ।

अन्य कविगण

श्री कैलाश गौतम—द्वारा आकाशवाणी, इलाहाबाद ।

श्री कैलाश वाजपेयी × —हिन्दी विभाग, गवर्नमेन्ट कालिज, मोतीबाग, नई दिल्ली ।

श्री चन्द्रसिंह चेतन—द्वारा : अधिशाषी अभियन्ता, विद्युत् मंडल, सीकर (राजस्थान) ।

श्री चन्द्रसेन विराट ×—एक्जीक्यूटिव इंजीनियर, पी. डब्ल्यू. डी., उज्जैन ।

श्री जगदीश पीयूष—गौरीगंज, सुल्तानपुर ।

श्री जगदीश सोलंकी × —पाल हाउस, कैथूनी पोल, कोटा ।

श्री जमनेश चौबे —पो. स्वरूप गंज (जिला—भीलवाड़ा) ।

श्री जीवन जोशी—मुहल्ला तल्ला थपलिया, अल्मोड़ा

श्री दामोदर शर्मा ×—7/10 भैरोंगली दानाओली, लश्कर (ग्वालियर)।

श्री देवकराम सुमन—निलय निकुंज, माधव नगर, सहारनपुर।

श्री धर्मजीत सरल ×—351 पुर्वाशिख लाल, मेरठ सिटी।

श्री नरेन्द्र गरल ×—पो. बिल्सी (जिला—बदायूं)।

श्री पवन कुमार—F/5/3 विश्वविद्यालय क्षेत्र, उज्जैन।

श्री पवन दीवान ×—पो. राजिम (जिला—रायपुर) म. प्र.।

श्री पवन बाथम ×—पटवनगली, पो. कायमगंज (जि.—फर्रुखाबाद)।

श्री पवन कुमायूंनी—मल्ली बाजार, चीनी मुहल्ला, अल्मोड़ा।

श्री पारस भ्रमर × ×—ब्रह्मपुरी, बहराइच।

श्री प्रेम निर्मल—हिन्दी साहित्य परिषद, हापुड़ (जिला—मेरठ)।

श्री बाल स्वरूप राही ×—8/7 एफ, माडल टाउन, दिल्ली।

श्री बुद्धि नाथ मिश्र—द्वारा : आकाशवाणी, इलाहाबाद।

श्री बैजू कानूनगो ×—इन्द्रमहल लाज, गुजरात रोड, लश्कर (ग्वालियर)।

श्री भगवत विश्वास—द्वारा केसर न. मा. विद्यालय, पो. बहेड़ी (जिला—बरेली)।

श्री मदन शलभ—24 कवि कुटीर कोटला यूसुफ, हापुड़ (जिला—मेरठ)।

श्री मनोहर पटेरिया मधुर—72/4 साउथ टी. टी. नगर, भोपाल।

श्री महेन्द्र कुमार सिंह नीलम ×—क्वार्टर नं. 208 बी., डी. एल. डब्लू., वाराणसी।

श्री माहेश्वर तिवारी शलभ × ×—प्रकाश भवन, गोकुलदास रोड, मुरादाबाद।

श्री रमेश यादव—114 अ/34, (1464 क्वार्टर्स) शिवाजी नगर, भोपाल।

श्री रघुनाथ प्यासा ×—कृष्णापुरी, मुजफ्फरनगर।

श्री रवीन्द्र शर्मा ×—मुहल्ला कटरा, जालौन (उ. प्र)।

श्री राम अधीर ×—F 108/1 शिवाजी नगर, भोपाल।

श्री राम स्वरूप सिन्दूर ×—पोस्ट बाक्स 305, 3/2 हलीम कालेज रोड कालोनी, कानपुर।

श्री रामकृपाल चौरसिया—प्राचार्य, सरस्वती शिशु मंदिर, गल्ला मण्डी, छतरपुर।

श्री रामजीलाल चतुर्वेदी—हा. सै. स्कूल के पीछे, छतरपुर (म. प्र.)।

श्री राम कुमार शर्मा—वार्ड नं. 2, नई आबादी, छिन्दवाड़ा (म. प्र.)।

श्री रामकृष्ण दीक्षित 'विश्व' ×—162 तुलाराम चौक, जबलपुर।

श्री राधाकृष्ण 'कृष्ण'—गोपीनाथ मंदिर, जनानी हवेली, पुरानी बस्ती, जयपुर।

श्री रामावतार चेतन—598 शक्तिनगर, बम्बई 71।

श्री रूपनारायण त्रिपाठी—द्वारा : प्रकाश, जौनपुर (उ. प्र.)।

श्री ब्रजेन्द्र—30/B 2, नई रेल्वे कालोनी, बादशाह नगर, लखनऊ।

श्री विकल साकेती ×—पो. अकबर पुर (जिला—फैजाबाद)।

श्री विश्वनाथ द्विवेदी—मकरन्द नगर, कन्नौज (जिला—फर्रुखाबाद)।

श्री विष्णु कुमार त्रिपाठी 'राकेश' ×—88 मास्टर कन्हैया लाल रोड, ऐशबाग, लखनऊ।

श्री शतदल—9/20 महापालिका कालोनी, उद्योगनगर, कानपुर।

श्री शिव कुमार अर्चन ×—जानकी पार्क, रीवां (म. प्र.)।

श्री शिव कुमार सिंह कुंवर ×—एम. II आर. सी. डब्ल्यू कालोनी, रावतपुर, कानपुर।

श्री शिव बहादुर सिंह भदौरिया ×—द्वारा : कमलानेहरू डिग्री कालिज, पो. तेजगाँव (जिला—रायबरेली)।

श्री शेखर ×—द्वारा : जय श्री टैक्सटाइल्स, पो. रिशड़ा, जिला हुगली (प. बंगाल)।

श्री शैलेन्द्र गोयल—प्राध्यापक, अंग्रेजी विभाग, हिन्दू कालिज, सोनीपत (हरियाणा)।

डा. शंभुनाथ सिंह ×—द्वारा : संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।

श्री श्याम अंगारा—सनातन स्कूल के पास, व्यावर (जि.—अजमेर)।

श्री श्याम श्रीवास्तव ×—208/10 गुप्ता कालोनी, गढ़ा फाटक, जबलपुर।

श्री सत्यनारायण बीजावत—245/7 कड़क्का चौक, अजमेर।

श्री सन्तोषानन्द × ×—सी 11 मिन्टो रोड काम्प्लैक्स, नई दिल्ली—2।

श्री सरस कपूर ×—क्वार्टर नं. IV/29, इन्कमटैक्स एण्ड सैन्ट्रल एक्साइज कालोनी, कानपुर।

श्री हरगोविन्द विश्व ×—406 शुक्रवारी टौरी, सागर (म. प्र.)

श्री हरेन्द्र जलज—खिरनीबाग, शाहजहाँपुर (उ. प्र.)।

(3) हास्यरस

श्री ओम्प्रकाश 'आदित्य'

जन्म—5 नवम्बर 1936 ई.। शिक्षा—एम. ए.। स्वतन्त्र-लेखन। प्रकाशित पुस्तकें—अनेक। हास्य-व्यंग्य की शिष्ट रचनाएँ लिखने में पटु। भाषा, भाव तथा

शिल्प की दृष्टि से कविताएँ सरल-सरस, निर्दोष तथा हृदयग्राही । काव्य-पाठ शैली आकर्षक । पता—जी 9/12 मालवीय नगर, नई दिल्ली 17 ।

श्री जीवनलाल वर्मा 'विद्रोही'

जन्म—29 अप्रैल 1915 ई. । शिक्षा—बी. ए. । सेवा-निवृत्त । प्रकाशित पुस्तकें—(1) काग भुशुण्डि गरुड़ से बोले, (2) चरवाहा तथा, (3) आदमी के सींग । शिष्ट, साहित्यिक एवं हृदयस्पर्शी हास्य-व्यंग्य रचनाओं के प्रणेता । अपने समय के अत्यधिक लोकप्रिय कवि । वर्तमान में भी श्रोताओं को अभिभूत करने में सक्षम । पता—30/4 दक्षिण तात्या टोपे नगर, भोपाल (म. प्र.) ।

श्री दिलजीत सिंह 'रील'

जन्म—25 दिसम्बर 1946 ई. । शिक्षा—आई-टी. आई., साहित्य रत्न, आयुर्वेद रत्न । राजकीय-सेवा । प्रकाशित पुस्तकें— कमला-विरह (खण्ड-काव्य) । भाषा तथा शिल्प की दृष्टि से रचनाएँ त्रुटि पूर्ण, तथापि मनोरंजक, हृदयस्पर्शी एवं अश्लीलता के दोष से मुक्त । काव्य-पाठ-शैली आकर्षक । हास्य-व्यंग्य के लोकप्रिय कवि । मूल-निवासी—ग्राम वियाड़ा जिला—होशियारपुर (पंजाब), वर्तमान पता—7/7 भोपाल—7 (म. प्र.)

श्री मधुप पाण्डेय

जन्म—सन् 1941 ई. । शिक्षा—एम. ए., एम. काम, साहित्यरत्न । प्राध्यापक । प्रकाशित पुस्तक—कोई नहीं । हास्य-व्यंग्य रचनाओं के लिए विश्रुत । कविताएँ छन्द-दोष पूर्ण, तथापि उत्फुल्लता दायक । पता—11 देवतले विन्यास, अंबाझरी उद्यान के पास, नागपुर—440010 ।

श्री माणिक वर्मा

जन्म—25 दिसम्बर 1938 ई. । स्वतंत्र-लेखन । प्रकाशित पुस्तकें—आदमी और बिजली का खम्भा । अधिकांश रचनाएँ मुक्त-छन्द में । अश्लीलता-रहित; भाव भाषा तथा शिल्प की दृष्टि से सरल, सरस एवं हृदयग्राही, हास्य-व्यंग्य रचनाओं के सर्जक । काव्य-पाठ शैली अत्यन्त आकर्षक । पता—शिवाजीगंज (पावर हाउस के पीछे) हरदा—461-331 (म. प्र.) ।

डा. मोहदत्त साथी

जन्म—15 मार्च 1923 । एम. ए., पी-एच. डी । प्राध्यापक । प्रकाशित पुस्तक—कोई नहीं । विभिन्न संकलनों में रचनाएँ संग्रहीत । गीत, गजल तथा ओजस्वी कविताओं के सृजन के अतिरिक्त सामयिक विषयों पर हृदयस्पर्शी व्यंग्य-प्रधान रचनाओं के प्रणेता । श्रोताओं को अभिभूत कर देने की क्षमता रखने वाले,

शिल्प एवं साहित्यिक दृष्टि से समृद्ध, मंच के सशक्त कवि। पता—हफीज मंजिल, चूनामंडी, बदायूँ।

श्री सुरेन्द्र मोहन मिश्र

जन्म—1 जुलाई 1932 ई.। स्वतंत्र-लेखन। प्रकाशित पुस्तकें—दो गीत-संग्रह। पहले शृंगारी गीतकार रहे अब विगत एक दशक से हास्य-व्यंग्य की कविताओं के सर्जक। छन्द-मुक्त तथा छन्दोबद्ध रचनाएँ लिखने में पटु। कविताएँ निर्दोष, अश्लीलता-रहित, सरल, सरस तथा हृदयग्राही। काव्य-पाठ शैली अत्यन्त आकर्षक। श्रोताओं को अभिभूत करने में सक्षम। पता—काव्य कुटीर, चँदौसी (जिला—मुरादाबाद)।

श्री सुरेश उपाध्याय

जन्म—15 जुलाई 1943 ई.। एम. ए.। स्वतन्त्र-लेखन एवं फोटोग्राफी। प्रकाशित पुस्तक—कोई नहीं। कुछ संकलनों में रचनाएं संकलित। छन्दोबद्ध तथा छन्द-मुक्त—दोनों प्रकार की रचनाएँ लिखने में पटु। भाव, भाषा तथा शिल्प की दृष्टि से रचनाएँ निर्दोष, मनोरंजक तथा हृदयग्राही। पता—कोठी बाजार, होशंगाबाद 461001 (म. प्र.)।

श्री सूँड़ फैजाबादी

पूरा नाम—श्री दानबहादुर सिंह 'सूँड़'। जन्म 1 अगस्त, 1928 ई.। एम. ए.। प्राध्यापक। प्रकाशित पुस्तकें—(1) मियां की दौड़, (2) फुंकार, (3) लपेट (4) चपेट (5) हास्यांजलि तथा कुछ अंग्रेजी कविताओं का हिन्दी रूपान्तर। अधिकांश रचनाएँ मुक्त-छन्द में। काव्य-पाठ शैली आकर्षक। सामान्य-स्तर के श्रोताओं में लोकप्रिय। चुटकुलेबाजी तथा नाटकीयता का बाहुल्य। साहित्यिक-दृष्टि से रचनाएँ अत्यन्त सामान्य। पता 63 कुर्मीटोला, आजमगढ़।

श्री हुल्लड़ मुरादाबादी

पूरा नाम—श्री सुशील कुमार चड्ढा 'हुल्लड़ मुरादाबादी'। जन्मतिथि 26 मई, 1944 ई.। एम ए.। स्वतंत्र-लेखन। प्रकाशित पुस्तकें—(1) हुल्लड़ का हुल्लड़, (2) हुल्लड़ का हंगामा (3) हुल्लड़ के कहकहे (4) हुल्लड़ की श्रेष्ठ हास्य रचनाएँ (5) हुल्लड़ के जोक्स, (6) ढोलवती एण्ड पोलवती। छन्दोबद्ध तथा छन्द-मुक्त—दोनों प्रकार की रचनाओं का सृजन। मंचीय काव्य-पाठ में चुटकुलेबाजी एवं नाटकीयता का बाहुल्य। साहित्यक-दृष्टि से रचनाएँ सामान्य, तथापि सरल, मनोरंजक एवं हृदयग्राही। काव्य-पाठ शैली आकर्षक। पता—503 चेतना बिल्डिंग, जय प्रकाश रोड, प्रताप नगर, अंधेरी (पश्चिम), बम्बई 400058।

अन्य कविगण

श्री अल्हड़ बीकानेरी × × — डी. 58, मोती बाग-1, नई दिल्ली-21।

श्री आद्याप्रसाद मिश्र 'उन्मुक्त'—सिप्तैन रोड, प्रतापगढ़ (उ. प्र.)।

श्री ओम्प्रकाश भौंपू—प्रकाश स्टोर्स, जवाहर मार्ग, उज्जैन।

श्री काका देवेश ×—पो. बिल्सी (जिला-बदायूँ)।

श्री गणेश शंकर बन्धु—124/3C गोबिन्द नगर, कानपुर।

श्री गुरु सक्सेना ×—डाँगीढाना, नरसिंहपुर (म. प्र.)।

श्री गुलकन्द—महाप्रभुजी के मंदिर के पास, पाटनपोल, कोटा (राज.)।

श्री जुगल जैपुरिया—ई 283 कर्मपुरा, नई दिल्ली-15।

श्री जैमिनी हरियाणवी ×—872 गुलाबी बाग, दिल्ली-7।

श्री डंठल—58 महेश प्रसाद स्ट्रीट, मौलवीगंज, लखनऊ।

श्री दशरथलाल पुजारी—बजरिया, जैन मंदिर मार्ग, पो. पनागर (जिला—जबलपुर)।

श्री दिनकर सोनवलकर ×—व्याख्याता: शासकीय महाविद्यालय, पो. जावरा (जिला—रतलाम)।

श्री धर्मवीर सबरस—टोंस कालोनी, पो. डाक पत्थर (जिला—देहरादून)।

श्री नारायण गुप्त 'टोपा' ×—प्रवक्ता : इन्टर कालिज, पो. अमावता (जि.—इटावा)।

श्री निराधार ×—द्वारा : नेशनल इन्टर कालिज, छिबरामऊ (जिला—फर्रुखाबाद)।

श्री प्रदीप चौबे ×—कमलसिंह का बाग, शिन्दे की छावनी, ग्वालियर।

श्री बिहारीलाल यादव रंजनीश ×—अध्यापक: गवर्नमेन्ट हाई स्कूल, पो. सहसों (जिला—इटावा)।

बेधड़क बनारसी × ×—सी 4/31 सराय गोवर्धन, वाराणसी।

श्री मतवाला—534 रिकाब गंज, फैजाबाद।

श्री मिश्रीलाल जायसवाल—भारती प्रेस, सुभाष चौक, कटनी (म. प्र.)।

श्री मुन्ने बाबू दीक्षित 'शशांक'—कवि कुटीर, पो. बिलसंडा (जिला—पीलीभीत)।

श्री मोहन स्वरूप चड्ढा—225 अनारगली, हाथीभाटा, अजमेर।

श्री वासुदेव गोस्वामी ×—वाणी बिहार, भरतगढ़, दतिया (म. प्र.)।

श्री विश्वदेव शर्मा—227 प्रसाद नगर, नई दिल्ली—5।

श्री सत्यपाल नागिया—ई 9/1 मालवीय नगर, नई दिल्ली-17।

श्री साँड़ बनारसी—अगस्त कुण्ड, वाराणसी।

श्री सुरेश शशिकर 'खटका'—कवि कुटीर, पो. विजय नगर (जिला—अजमेर)।

श्री हरभजन सिंह 'फटीचर'—हाता चन्द्रभान, सीपरी बाजार, झांसी।

श्री हरिभक्त सिंह पँवार ×—मीरा खेलपुरा, बहराइच (उ. प्र.)।

श्री हुक्का ×—निकट जैन मन्दिर, बिजनौर (उ. प्र.)।

(4) **लोक भाषायी-कवि**

श्री विश्वनाथ शर्मा 'विमलेश'

जन्म—5 अप्रैल 1927। एम. ए.। डिग्री कालिज में हिन्दी-विभागाध्यक्ष। प्रकाशित पुस्तकें—(1) सत पकवानी, (2) छेड़खानी, (3) कुचरणी, (4) रस कोली, (5) ठिठोली, (6) नौरस में रस हास्य, (7) गीता (पद्यानुवाद), (8) राम कथा (अकादमी द्वारा पुरस्कृत)—ये सभी पुस्तकें राजस्थानी-काव्य की। (9) प्राणों की छाया (10) वेदना, (11) अनामिका, (12) शकुन्तला, (13) विकास-गीत तथा (14) कुछ हँसना, कुछ रोना। अनेक पुरस्कार प्राप्त। राजस्थानी हास्य-व्यंग्य के सर्वश्रेष्ठ कवि। अपने सरस काव्य-पाठ द्वारा लाखों श्रोताओं को अभिभूत कर देने मे सक्षम। सभी रचनाएँ साहित्यिक दृष्टि से समृद्ध, शिल्प की दृष्टि से अनुपम। हास्य-व्यंग्य की रचनाएँ अश्लीलता के दोष से सर्वथा मुक्त। राजस्थानी के अतिरिक्त खड़ी बोली के भी काव्य-सर्जक। सभी भारतीय भाषाओं के हास्य-व्यंग्य कवियों में सर्वश्रेष्ठ। सुरुचिपूर्ण, सात्विक तथा मनोरंजन पूर्ण लेखन हेतु अत्यधिक प्रसिद्ध। मच के विशिष्ट लोकप्रिय कवि। पता—शान्ति कुटीर, झुंझुनु (राजस्थान)।

श्री सुरेन्द्र शर्मा

राजस्थानी भाषा के हास्य-व्यंग्य कवि। एक प्रकार से महाकवि 'विमलेश' की छायाकृति, परन्तु साहित्यिकता में उनसे बहुत पीछे। रचनाओं में अश्लीलता एवं विद्रूप भी। मंचीय जोड़-तोड़ में दक्ष। पता—द्वारा : सत्यनारायण आयुर्वेद भवन, मस्जिद तहवर खां, नया बांस, दिल्ली-6।

श्री राजा सन्तोषसिंह बुन्देला

जन्म ज्येष्ठ कृष्णा 6 सं. 1987 वि.। भूतपूर्व शासक। वर्तमान व्यवसाय—कृषि एवं ठेकेदारी। बुन्देली के अत्यन्त सुमधुर गीतकार। भाषा की सरलता एवं आकर्षक काव्य-पाठ शैली के कारण आप हिन्दी-भाषी क्षेत्रों में भी अत्यधिक लोकप्रिय हैं। बुन्देली में गीत, चौकड़िया, छन्द, सवैया आदि के सर्जक। पता—निकट सिटी पोस्ट-आफिस, छतरपुर। स्थायी पता—पहाड़ गाँव (जिला—छतरपुर) म. प्र.।

अन्य कविगण

(अ) अवधी

श्री चन्द्र शेखर मिश्र × —द्वारा : नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

श्री लवकुश दीक्षित × —गाँव तथा पोस्ट-सिधौली (जिला—सीतापुर)।

(इ) मालवी

श्री गिरिवर सिंह भंवर—लक्ष्मी पुरा, गली नं. 1, देवास (म. प्र.)।

श्री जगन्नाथ विश्व—दुर्गापुरा, बिरला ग्राम, नागदा (जिला—रतलाम)।

श्री भावसार बा × —कंठाल चौक, उज्जैन।

श्री सुल्तान मामा—इमली का बाग, पो. तराना, (जिला—उज्जैन)।

श्री हरीश निगम—माधव नगर, उज्जैन।

(उ) **राजस्थानी**

श्री कानदान 'कल्पित' × —पो. बा. 16, नागौर (राजस्थान)।

श्री दुर्गादान—प्लाट नं. 2. चोपड़ा फार्म के पास, डडवाड़ा, कोटा (राज.)।

श्री बाल कृष्ण गर्ग बालक × —1885/1 कृष्ण गंज, अजमेर।

श्री व्रज मोहन सपूत × —पो. शाहपुरा (जिला—भीलवाड़ा)।

श्री मोहन मण्डेला—पो. शाहपुरा (जि.—भीलवाड़ा)।

(ए) **विविध**

श्री अशोक चतुर्वेदी × — 98 शील सदन, गोपाल नीखरा—झांसी।

प्रो. अक्षय कुमार—दयानन्द चौक, जुमेराती, भोपाल।

श्री इशाक अश्क—हा. सै. स्कूल, पो. मोमन बडौदिया (जिला—शाजापुर) म. प्र.।

श्री उदय भानु 'हंस'—गवर्नमेन्ट कालिज, भिवानी (हरियाणा)।

श्री ओमप्रकाश आनन्द—आनन्द कुटीर, लालबाग स्ट्रीट, पटियाला (पंजाब)

श्री कल्याण कुमार जैन शशि—बाजार नसरुल्ला, रायपुर (उ. प्र)

श्री कुमार शिव—सराय कायस्थान, लाल बुर्ज, कोटा।

श्री कैलाश मड़वैया—गल्लामंडी, टीकमगढ़ (म. प्र.)

श्री कृष्णदत्त करुणेश—द्वारा : साहित्य प्रेस, दीनानाथ बाजार सहारनपुर।

श्री कृष्णानन्द चौबे—लघु उद्योग अनुभाग 15, उद्योग निदेशालय जी. टी. रोड, कानपुर।

श्री गंगा शरण 'तृषित'—10 ए. कमल नगर, दिल्ली—7।

श्री छविनाथ मिश्र—द्वारा-वेस्ट बंगाल कार्पोरेशन, 432 जी. टी. रोड, हावड़ा (पं. बंगाल)।

श्री जगन्नाथ विश्व—सी 17 दुर्गापुरा, बिरला ग्राम, पो. नागदा (जिला—रतलाम।

डा. जगदीश वाजपेयी—123 द्वारकापुरी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)।

श्री जयन्ती अग्रवाल—द्वारा : आर. एम एस., ग्वालियर रेलवे स्टेशन, ग्वालियर (म. प्र.)।

श्री तारादत्त 'निर्विरोध'—सी. 138 बापूनगर, जयपुर।

श्री नन्द चतुर्वेदी × —30 अहिंसापुरी, उदयपुर।

श्री निरंकारदेव 'सेवक'—185 सिविल लाइन्स, बरेली।

श्री पद्माकर शर्मा × —ए. 13 अनिता कालोनी, जयपुर (राज.)।

डा. परशुराम विरही—कोठी नं· 12, ए. बी. रोड, शिवपुरी।

श्री बटुक चतुर्वेदी—14/8 परी बाजार, भोपाल (म. प्र.)।

श्री बशीर अहमद मयूख—2 L-17 विज्ञान नगर, कोटा (राजस्थान)।

श्री बंशीलाल बेकारी—हमीरगढ़ (राजस्थान)।

श्री ब्रजेश चंचल—ब्रजराजपुरा, कोटा (राजस्थान)।

श्री मनोहर मनोज—सिन्धी विद्यालय, कटनी (म. प्र.)।

श्री मोहन अम्बर × —56 सेवा नगर, ग्वालियर (म. प्र.)।

प्रो. युगल किशोर सुरौलिया—गांधीनगर, भीलवाड़ा (राज.)।

श्री रमेश गुप्त चातक—148 न्यूरोड, रतलाम (म. प्र.)।

डा. रामेश्वर द्विवेदी—6/32 गांधी नगर, पो. पुखरायां (जि.—कानपुर)।

श्री रामाशंकर मिश्र पंकज—7 शिवगंगा गली, वैद्यनाथधाम (विहार)।

श्री वेद प्रकाश 'वेद, बीसलपुरी'—पो. बीसलपुर (जिला—पीलीभीत)।

श्री शेरजंग गर्ग—H5/15, मालवीय नगर, नई दिल्ली 17।

डा. हरीश—एम. बी. कालिज, उदयपुर।

श्री हरीश भादानी × —छबीली घाटी, बीकानेर।

श्री हरीराम आचार्य—42 ए. गंगवाल पार्क, जयपुर।

श्री त्रिलोक गोयल—अग्रसेन नगर, अजमेर।

(६) **कवयित्रियाँ**

श्रीमती प्रभा ठाकुर

जन्म—10 सितम्बर 1951 ई.। प्रकाशित पुस्तक—बौराये मन ... . गीत, गजल तथा मुक्तकों का सृजन। साहित्यिक-दृष्टि से रचनाएँ अत्यन्त सामान्य

तथा अनेक दोषों से युक्त। काव्य-पाठ शैली आकर्षक। पता—5 ए, आशा कालोनी, जुहूतारा रोड, जुहू, बम्बई 400049।

कु. प्रेमलता नीलम

जन्म—1 जुलाई 1954 ई.। एम. ए., बी. एड.। अध्यापिका। प्रकाशित पुस्तक—कोई नहीं। कुछ संकलनों में रचनाएँ संग्रहीत। हिन्दी तथा बुन्देली भाषा में सरस गीतों की सर्जिका। उर्दू में भी काव्य-सृजन। सुमधुर कण्ठस्वर तथा अत्यन्त आकर्षक काव्य-पाठ शैली। पता—30 मा गंज, वार्ड नं. 2, दमोह (म. प्र.)।

डा. मधु भारतीय

जन्म—1934 ई.। एम. ए., पी-एच. डी.। अध्यापिका। प्रकाशित पुस्तक—एक काव्य संकलन। भाषा, भाव तथा शिल्प की दृष्टि से आकर्षक गीतों की सर्जिका। काव्य-पाठ शैली भी आकर्षक। पता—92 नया कविनगर, गाजियाबाद (उ. प्र.)

श्रीमती माया गोबिन्द

जन्म—17 जनवरी 1943। बी. ए., बी. एड.। स्वतन्त्र-लेखन। प्रकाशित पुस्तक—सुरभि के संकेत। श्रृंगारी गीत एवं गजलों की सर्जिका। फिल्मों के लिए गीत लिखे हैं। नाटक, नृत्य एवं अभिनय-कुशल। शंभू महाराज की शिष्या रहीं। साहित्यिक-दृष्टि से रचनाएँ सामान्य, तथापि सरल, सरस एवं हृदयग्राही। काव्य-पाठ शैली अत्यन्त आकर्षक। पता—शैल्टन, फ्लैट नं. 3, दसवां रास्ता, जुहूपार्ले स्कीम, बम्बई 400049।

श्रीमती राजकुमारी 'रश्मि'

जन्म—14 जनवरी 1944 ई.। अध्यापिका। प्रकाशित पुस्तक—कगार पर खड़े हुए (कहानी-संग्रह)। गीत, गजल, कविता, कहानी तथा नाटक लेखन। लोकगीत भी लिखे हैं। भाषा, भाव तथा शिल्प की दृष्टि से रचनाएँ उत्तम। काव्य-पाठ शैली भी आकर्षक। स्थायी पता—द्वारा-श्री हरप्रसाद पाण्डेय, मुहल्ला कटरा चाँद खां, पुराना शहर, बरेली। वर्तमान पता—15 शान्तिनगर, ग्वालियर (म. प्र.)।

श्रीमती शकुन्तला पाण्डेय

जन्म—जुलाई 1949 ई.। एम. ए. (त्रय), एल-एल. बी., बी. एड., पत्रकारिता में डिप्लोमा, पी-एच. डी. हेतु शोध-कार्य-रत। स्वतन्त्र-लेखन। प्रकाशित पुस्तक—कोई नहीं। गीत-गजल, छन्द आदि विविध विधाओं में काव्य-सृजन। पता—827 कोटरा, सुल्तानाबाद, भोपाल (म. प्र.)।

श्रीमती डा. सुधारानी शर्मा

जन्म—2 अक्टूबर 1932 ई.। एम. ए., पी-एच. डी.। संगीत—प्राध्यापिका।

प्रकाशित पुस्तक—कोई नहीं। गीत, गजल तथा लोक-गीतों की सर्जिका। साहित्यिक-दृष्टि से रचनाएँ सामान्य, परन्तु हृदयग्राही। काव्य-पाठ शैली आकर्षक। पता—35/E/12 रामपुर बाग, कोठी श्री पी. सी. आजाद, बरेली।

श्रीमती स्नेहलता 'स्नेह'

स्वतन्त्र-लेखन। गीत एवं गजल। छन्द तथा शिल्प में कहीं-कहीं भटकाव। साहित्यिक-दृष्टि से रचनाएँ सामान्य, तथापि मर्मस्पर्शी। सुमधुर-कण्ठ से आकर्षक काव्य-पाठ हेतु, ख्याति-लब्ध। वर्तमान में मंच पर काम दिखाई देती हैं। पता—बताशेवाली गली, अमीनाबाद, लखनऊ।

श्रीमती ज्ञानवती सक्सेना

जन्म—1930 ई.। गीत-गजल, मुक्तक आदि। साहित्यिक-दृष्टि से रचनाएँ सामान्य तथा छन्द एवं शिल्प की दृष्टि से कहीं-कहीं भटकाव, तथापि सुमधुर कण्ठ-स्वर के कारण प्राभवोत्पादक। वर्तमान में मंच पर कम दिवाई देती हैं। पता—55 गली भाटान; बरेली। अन्य पता—पो. बिल्सी (जि. बदायूँ) उ. प्र.।

अन्य कवयित्रयाँ

सुश्री अंजुम रहबर—शास्त्री पुल, गुना (मध्यप्रदेश)।

सुश्री अंबर प्रियदर्शी × —889/1 लार्ड गंज, कछियाना, जबलपुर-2।

डा. इन्दु वशिष्ठ—2-1-271/1 नल्ला कुंटा, हैदराबाद-44।

सुश्री उर्मिला निरखे × 115 महाकाल मार्ग, उज्जैन (म. प्र.)।

श्रीमती कमला शर्मा—मोहल्ला महाजनान, पो. बिलारी (जिला—मुरादाबाद)।

सुश्री किरण भारती × —A/5 कर्मभूमि, 576 मूर्वी रोड, माहिम, बम्बई 56।

सुश्री नसीम नखहत—मुहल्ला नक्खास, अमीनाबाद, लखनऊ।

श्रीमती निर्मला जोशी × —2 असालत चौराहा, शाहजहानाबाद, भोपाल।

श्रीमती निशि सक्सेना × —चन्द्र नगर, मुरादाबाद-18।

सुश्री नूतन कपूर × —WZ 2/27 रानी बाग, दिल्ली-34।

श्रीमती पुखराज पाण्डेय × —प्रतिभा कुटीर, हाटपुरा, आगर (जिला—उज्जैन)।

सुश्री पूर्णिमा 'पूनम' × —290 मढ़ाताल, जबलपुर (म. प्र.)।

श्रीमती प्रभा मिश्रा—397 शाहगंज, इलाहाबाद।

सुश्री बरखा रानी × —मौसम बाग, लखनऊ।

श्रीमती माधवी लता शुक्ल—प्राचार्या : के. के. गर्ल्स इण्टर कालिज, किदवई नगर, कानपुर।

सुश्री मीना काजी × —14 झापुर झा, साहित्य-सहवास, बांद्रा पूर्व, बम्बई।

सुश्री रजनी टंडन—द्वारा—श्रीकिशन स्वरूप टंडन, मोहल्ला कोट पूर्वी, पो. संभल, (जिला—मुरादाबाद)।

सुश्री रमा पालीवाल—द्वारा प्रो. शलभ, 11/23 जयपुर रोड, अजमेर।

डा. रमासिंह × —किशोर भवन, रतनाड़ा, जोधपुर (राजस्थान),

सुश्री विनय कुमारी शर्मा—द्वारा: डा. एच. एल. शर्मा, सराय नसरुल्ला खाँ, खुर्जा (जिला—बुलन्दशहर)।

श्रीमती शकुन्तला श्रीवास्तव—417 सोही स्ट्रीट, कालेज रोड, लुधियाना।

श्रीमती शबनम × —द्वारा : श्री एम. पी. गुप्ता, आर. एम. एस., कोटा।

श्रीमती शान्ति अग्रवाल × —द्वारा-रंजना अग्रवाल, 32/7-8 रमेशनगर, डबलस्टोरी, नई दिल्ली-15।

डा. शान्ति सुमन—हिन्दी विभाग, एम. डी.-डी. एम. कालिज, मुजफ्फरपुर—842002 (बिहार)।

श्रीमती शीला मिश्रा—द्वारा : श्री. जी. के अग्निहोत्री, ईस्ट कैनाल रोड, देहरादून।

श्रीमती सरला भटनागर—A38 अशोक विहार, दिल्ली 52।

श्रीमती सरोजिनी अग्रवाल—अभिवादन, वाल्दा रोड कालोनी, निशातगंज, लखनऊ।

श्रीमती सावित्री शर्मा—B69, सैक्टर C, महानगर, लखनऊ।

टिप्पणी—इस सूची की कुछ कवयित्रियों के नामों के आगे स्वयं—सर्जिका होने के विषय में संदेहात्मक प्रश्न-चिह्न (?) भी लगाया जाता है।

सहायक-ग्रंथ सूची

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक/सम्पादक/प्रकाशक
1.	हिन्दी साहित्य का इतिहास	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2.	ब्रज का इतिहास, भाग 1 और 2	सं. श्री कृष्णदत्त वाजपेयी
3.	ब्रज साहित्य का इतिहास	डा. सत्येन्द्र
4.	ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन	,,
5.	हिन्दी साहित्य कोश, खण्ड 1 और 2	ज्ञानमण्डल लि., प्रयाग
6.	भारतीय राष्ट्रवाद के विकास की हिन्दी साहित्य में अभिव्यक्ति	डा. सुषमा नारायण
7.	हिन्दी साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास	डा. जयकिशन प्रसाद
8.	शंकर-सर्वस्व	सं. डा. हरिशंकर शर्मा
9.	पद्य-प्रसून	पं. अयोध्या सिंह उपाध्याय "हरिऔध"
10.	भारत गीत	पं. श्रीधर पाठक
11.	आर्त-कृषक	पं. गया प्रसाद शुक्ल "सनेही"
12.	युग चरण	पं. माखन लाल चतुर्वेदी
13.	अनामिका	पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला"
14.	अपरा	,,
15.	संचिता	डा. गोपालशरण सिंह
16.	वीर चरितामृत	कविमणि कृष्णदास
17.	मुकुल	श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान
18.	इतिहास के आँसू	श्री रामधारी सिंह "दिनकर"

19. हुंकार	श्री रामधारी सिंह 'दिनकर'
20. जीवन ज्योति	श्री जगन्नाथ प्रसाद "मिलिन्द"
21. भैरवी	श्री सोहन लाल द्विवेदी
22. काकली	श्री कौशलेन्द्र राठौर
23. मंजरी	श्री मधुसूदन चतुर्वेदी
24. स्याम संदेसौ	श्री अमृत लाल चतुर्वेदी
25. नूरजहाँ	श्री गुरुभक्तसिंह "भक्त"
26. अपने कुछ विचार कण	कुं. हरिश्चन्द्र देव वर्मा "चातक"
27. रत्न-दीप	पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी
28. पद्य-पराग	पं. हरिशंकर शर्मा
29. सौमित्र	श्री रामेश्वर दयाल दुबे
30. नूपुर	"
31. चित्रकूट	"
32. हृषीकेश रचनावली	सं. सतीशचन्द्र चतुर्वेदी "प्रेमी"
33. हृषीकेश चतुर्वेदी की लोकप्रिय कविताएँ	"
34. निर्भय किसान दोहावली	ठा. उल्फतसिंह चौहान "निर्भय"
35. चीन कमीन ने धोकौ कियौ	"
36. विनय वृत्तावली	खूबीराम लवानियाँ
37. धारणा	श्री कृष्ण लाल "कुसुमाकर"
38. अहिंसा	श्री गजराजसिंह "सरोज"
39. साधना शतक	श्री मथुरा प्रसाद "मानव"
40. पराग	श्री सुनहरीलाल "पराग"
41. हाफिज की रुबाइयाँ	अनु. श्री रामचन्द्र सैनी
42. वीरजा	श्री शिशुपाल सिंह "शिशु"
43. पूर्णिमा	"
44. अजन्ता	श्री प्रियतमदत्त चतुर्वेदी "चच्चन"
45. वीर विक्रम वैभव	श्री रामलला "लला कवि"
46. बुझा न दीप प्यार का	श्री नवाबसिंह चौहान "कंज"
47. गोपी प्रेम पियूष	श्री नवनीत चतुर्वेदी
48. सुपर्णा	श्री भगवान दत्त चतुर्वेदी
49. श्रीकृष्ण कौस्तुभ	श्री बालमुकुन्द चतुर्वेदी "मुकुन्द"
50. श्याम तरंगिणी	ज्यो. राधेश्याम द्विवेदी
51. राधा	श्री दाऊ दयाल गुप्त

52. वाल्मीकि रामायण	अनु. श्री घूरेलाल गुप्त "लाल"
53. सरगम	दाऊदत्त श्यामलाल उपाध्याय
54. मधुमती	श्री ओंकार मिश्र "प्रणव"
55. मिश्रा की फांसी	कविरत्न पाराशर
56. सीप	श्री नीरव शास्त्री
57. कैदी कविराय की कुंडलियाँ	श्री अटलबिहारी वाजपेयी
58. रूपगन्धा	डा. राम गोपाल शर्मा "दिनेश"
59. दीवारों के पार	डा. मलखानसिंह सिसौदिया
60. धरती पर उतरो	डा. पद्मसिंह शर्मा "कमलेश"
61. कितने पदचिह्न	डा. बाबूलाल गोस्वामी
62. शंख और वीणा	डा. इन्द्रपालसिंह "इन्द्र"
63. एक डाल, तीन फूल	डा. त्रिलोकी नाथ "ब्रजबाल"
64. साधना	डा. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ
65. प्रकृति सन्देश	डा. मुरारि लाल शर्मा "सुरस"
66. जीवन के स्वर दो	डा. प्रेम प्रकाश गौतम
67. रंग और व्यंग्य	डा. बरसाने लाल चतुर्वेदी
68. उदयाचल	डा. भगवान सहाय पचौरी
69. पुरवाई	डा. श्री मोहन "प्रदीप"
70. जागरण के गीत	डा. शिव शंकर शर्मा "राकेश"
71. काव्य श्री	डा. सुधीन्द्र
72. रवीन्द्र भ्रमर के गीत	डा. रवींद्र भ्रमर
73. भोर के सपने	डा. घनश्याम अस्थाना
74. चन्द्रशेखर आजाद	डा. कृष्णचन्द्र पण्ड्या "पूषन"
75. गीत प्रीत के	डा. बनवारी लाल मिश्र
76. बन्द जिन्दगी और विद्रोह	डा. सुरेश पाण्डेय
77. क्रान्ति घोष	डा. सत्य प्रकाश "बजरंग"
78. दर्पण बन गया इतिहास	डा. मुहम्मद अयूब खां "प्रेमी"
79. एक चेहरा, पच्चीस दरारें	डा. मनोहर "अभय"
80. अजी सुनो	श्री गोपाल प्रसाद व्यास
81. विभावरी	श्री गोपाल दास "नीरज"
82. साँझ सकारे	श्री बलवीर सिंह "रंग"
83. कौन रखे याद राजघाट की कसम	श्री निर्भय हाथरसी
84. धूल का परिचय	श्री राम कुमार चतुर्वेदी "चंचल"
85. राजहंस	श्री राजेश दीक्षित

86. आँधी के पाँव और घुँघरू	श्री मधुर शास्त्री
87. गीतम	श्री वीरेन्द्र मिश्र
88. पंछी और पवन	श्री विद्यानन्दन "राजीव"
89. खण्ड-खण्ड चाँदनी	श्री शचीन्द्र भटनागर
90. यादों के चम्पई बबूल	श्री निखिल सन्यासी
91. शिला और लहरें	श्री भोजराज चतुर्वेदी
92. हिमालय के आँसू	श्री आनन्द मिश्र
93. भारत मां की लोरी	श्री देवराज दिनेश
94. पंख कटी मेहराबें	श्री देवेन्द्र शर्मा "इन्द्र"
95. मुखर हुई धरती बलिदान की	श्री शान्ति स्वरूप "चाचा"
96. किनारे के पेड़	श्री मुकुट बिहारी "सरोज"
97. मेघ मल्हार	श्री महेश शरण जौहरी "ललित"
98. कवि और आशा	श्री हरिपाल सिह चौहान "दग्ध"
99. देश यह वन्दनीय मेरा	श्री राम प्रकाश "राकेश"
100. ज्योति के फूल	श्री लाखनसिंह भदौरिया "सौमित्र"
101. याद के मस्तूल	श्री मुनीश मदिर
102. अँजुरी भर पीड़ा	श्री बंकट बिहारी "पागल"
103. निर्मल मिलन	श्री गोपेश शरण शर्मा "आतुर"
104. महावीर वाणी	श्री ओम् प्रकाश "द्रोणाचार्य"
105. काश, खुदा ! मैं नारी होता	श्री सतीशचन्द्र शर्मा "कमलाकर"
106. किरणभर उजाले को	श्री मदन मोहन "उपेन्द्र"
107. भारत निराला है	श्री मूलचन्द्र शर्मा "नादान"
108. ठहरो क्षण भर	श्री राजेन्द्र मिलन
109. आराधना	श्री मोहन लाल शर्मा
110. बोलता हुआ सच	श्री राम गोपाल परदेशी
111. गूंजते स्वर	"
112. फागुन की गंध	"
113. मिट्टी के स्वर	श्री उत्तम चन्द्र जैन "प्रेमी"
114. रमेश रंजक के लोकगीत	श्री रमेश रंजक
115. माण्डवी: एक विस्मृता	श्रीमती सरोज गौरिहार
116. ज्योतिलेखा	श्री शत्रुघ्न दुबे
117. राग चापलूसी	श्री श्यामसुन्दर गोस्वामी
118. बिम्ब-प्रतिबिम्ब	श्री राधेश्याम अग्रवाल
119. पराग-कण	श्री महेश चन्द्र अग्रवाल

120. चीन को चुनौती — श्री राम अवतार "शशि"
121. सान्ध्य-घन — श्री जगन सिंह चौहान
122. जुगलपद वन्दन — (तपस्विनी) कृष्णा मां
123. समग्र क्रान्ति — श्री सुरेन्द्र भारद्वाज
124. पंकज दूत — श्री यमुना प्रसाद चतुर्वेदी "प्रीतम"
125. ब्रज के सवैया — श्री देवकी नन्दन कुम्हेरिया
126. अंखुए और अंकुर — प्र. हिन्दी प्रचार सभा, मथुरा
127. गूंजते स्वर — "
128. हिन्दी कवयित्रियों के प्रेमगीत — सं. क्षेमचन्द्र "सुमन"
129. फीरोजाबाद-परिचय — सं. गणेशलाल शर्मा "प्राणेश"
130. आगरा : एक सांस्कृतिक परिचय — प्र. विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
131. भारतीय लेखक कोश — ले. राम गोपाल "परदेसी"
132. हिन्दी सेवी संसार — सं. श्री प्रेमनारायण टंडन
133. कवि-सम्मेलन निर्देशिका — सं. श्री निर्भय हाथरसी
134. नारी तेरे रूप अनेक — सं. श्री क्षेमचन्द्र "सुमन"
135. चेतना के स्वर — सं. डा. प्रकाश चतुर्वेदी "चंचल"
136. अर्श मल्सियानी — सं. प्रकाश पण्डित
137. नसीमुल बलागत — ले. मौ. हा. सै. जलालुद्दीन अहमद'
138. आईन. ए. उरूजो काफिया — सं. श्री कन्हैयालाल माथुर 'तालिब'

अभिनन्दन ग्रंथ, स्मृति-ग्रंथ, विशेषांक तथा स्मारिकाएं

1. श्री सनेही अभिनन्दन ग्रंथ — सं. श्री छैल बिहारी दीक्षित 'कण्टक'
2. श्री काकाहाथरसी अभिनन्दन ग्रंथ, सं. डा. गिरिराज शरण अग्रवाल
3. निष्ठा और निर्माण — सं. डा. राजेन्द्र रंजन
   (श्री भगवान दत्त चतुर्वेदी अभिनन्दन ग्रंथ)
4. श्री बरसानेलाल चतुर्वेदी अभिनंदन ग्रन्थ, सं. डा. प्रकाश चतुर्वेदी "चंचल"
5. श्री सत्यनारायण कविरत्न स्मृति-ग्रन्थ सं. श्री रमेशचन्द्र दुबे
6. "नये विज्ञापन" का "रामगोपाल परदेसी—विशेषांक", सं. श्री रावी
7. "युवक" का "कमलेश"—स्मृति अंक, सं. श्री क्षेमचन्द्र सुमन
8. "युवक" का "शिशु"—स्मृति अंक, सं. श्री प्रेमदत्त पालीवाल
9. "फीरोजाबाद संदेश" का "भोजराज चतुर्वेदी" विशेषांक — सं. श्री जगन्नाथ लहरी

10. नवचण्डी मेला, मेरठ की स्मारिकायें — सं. श्री रामप्रकाश "राकेश"

पत्र-पत्रिकायें

धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, मंगलदीप, कादम्बिनी, सान्ध्यमित्रा, वीर-प्रताप, स्मरणिका, संक्रमण, अभिव्यक्ति, मयूरवन, जन-साहित्य, बालप्रभात आदि ।

अन्य

अथर्व वेद, महाभारत, हरिवंश पुराण, वराह पुराण, अनेक काव्य-संकलन तथा हस्तलिखित पाण्डुलिपियाँ आदि ।

सिंहावलोकन

1981 की शरद में मानस-संगम, कानपुर द्वारा आमंत्रित चैकोस्लोवाकिया के हिन्दी विद्वान, शिक्षक तथा कवि डॉ. ओनोदल स्मेकल से औपचारिक वार्ता के बीच मैंने पूछा—'आपको भारत कैसा लगा ?' उनका उत्तर था—'मेरे देश में सूर्य का दर्शन बहुत कम हो पाता है, इसलिए मेरे लिए भारत का अर्थ सूर्य का देश है—प्रकाश का देश है। मैं यहाँ आकर स्वयं को प्रकाश में लिपटा हुआ अनुभव करता हूँ।' डा. स्मेकल के अस्पष्ट उच्चारण में भारत के मुक्ताकाश की भव्यता के सम्बन्ध में एक सनातन सत्य को शब्द मिले थे। उसी क्षण मुझे 1957 में, लालकिले में बाबू मैथिलीशरण गुप्त की अध्यक्षता में आयोजित गणतंत्र-समारोह के कवि-सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए प्रधान मंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू के भाषण का वह अंश याद आया, जिसमें उन्होंने कहा था—"दुनियाँ भर में हिन्दुस्तान ही एक ऐसा मुल्क है, जिसमें ऐसी सख्त सर्दी में भी खुले आसमान के नीचे पण्डाल बनाकर इतनी ज्यादा तादाद में लोग शायरी-कविता सुनने के लिए इकट्ठे होते हैं। मैथिलीशरणजी ने मुझे बताया है कि आप यहाँ बैठकर दूर-दूर से आये हुए इन कवियों को रात भर सुनेंगे। बेशक कविता और शायरी के इतने बड़े-बड़े जलसे हिन्दुस्तान के बड़े दिल का पता देते हैं।" राजनीति में चले गये हमारे कला-दूत, नेहरू के शब्दों में दिया गया विश्व-ईक्षा का यह निचोड़ भारतीय जनता की रसवन्ता और कला-संवेदनशीलता की निजी पहचान का द्वार खोलता है।

बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक से आरम्भ होने वाले सार्वजनिक कवि-सम्मेलनों का स्वभाव और चरित्र सातवें दशक से बहुत बदला है। एक समय था जबकि हिन्दी के शीर्षस्थ कवि काव्य-समारोहों में गर्व एवं हर्ष सहित भाग लेते थे और उस समय कवि-सम्मेलन का संयोजक कोई रचनाशील व्यक्ति ही होता था। 25-30 वर्ष पूर्व सट्टे में हारे हुए या दूसरे पेशों से हताश या असंतुष्ट लोग पेशेवर ठेकेदार बनकर संयोजक के आसन पर बैठ गये। इन्हीं अनधिकारी संयोजकों द्वारा चन्द उत्तेजक या लिजलिजी भावुकता पूर्ण रचनाओं (कविताओं नहीं) की ओछी पूँजी के दरिद्र रचनाकार, नौटंकिया, अदा के टीप-सुलतान और आपाद-मस्तक तवाइफों की सी साज-सज्जा से झिलमिल 'समाजबालाओं' के दुराचरण से युक्त पर-काव्य अपने नाम से सुनाने वाली कवयित्रीनुमा औरतों, चुटकुलों के पुलों से गुजरते हुए रचना-पाठ में आवाज और शक्ल में विकृति पैदाकर के विवेकहीन स्तर पर श्रोताओं को उल्लू बनाने वाले हास्यकार (हास्य-कवि नहीं) भी संयत, निष्ठावान् और मौलिक साहित्य साधक अर्थात् सचमुच के कवियों की सूची में शामिल कर लिये गये। पेशेवर संयोजकों ने धनिक वर्ग की त्रोली में बोलते हुए उनके समाज में अपना स्थान बनाकर संकर-उत्पादन से प्राप्त 'जी-हुजूर' रचनाकारों को आनन-फानन में अखिल भारतीय बना दिया। कला-कोष्ठकों में स्थान तो सीमित रहता ही है, फलस्वरूप अधिकांशत. सशक्त युगप्रवर्तक, स्वाभिमानी सच्चे-कवि मुख्य चक्र से बलात् बाहर कर दिये गये।

इसी बीच एक अपशकुन और हो गया—कवि-कुल-शिरोमणि सनेही, दिनकर, नेपाली, शिशु, रंग, तारा पाण्डेय और विद्यावती 'कोकिल' के तपःपूत काव्य की शीलवती संस्कार-कन्याओं के साथ वंश-कुल-हीन फिल्मी गाना बिल्कुल सटकर बैठ गया। इसी वेला में किशोरों के कच्चे मानस-कुंज में मंत्रधर्मा काव्य और बाईस्कोप के गाने में, जो मूलत: भावस्फुरण से उत्पन्न न होकर सिने-निदेशक की आदेश-कर्मशाला में 'एसेम्बिल' किया जाता है, भेदक-रेखा खींचने वाली स्वस्थ पहचान की हत्या कर दी गयी। देखते-देखते तुकेरों के प्रशंसक तथा कलावन्तों के 'हूटर' प्रेत श्रोताओं के मानस पर आधमके।

उपर्युक्त मंचीय-विपन्नता के अतिरिक्त श्रोता जगत के भी कुछ ऐसे कारण रहे, जिससे लोकप्रिय काव्य के प्रचार-प्रसार को भयंकर आघात पहुँचा। 1960 तक छोटी बड़ी शिक्षा-संस्थाओं के संजात समारोहों में कवि-सम्मेलन प्रमुख कार्यक्रम के रूप में आयोजित किये जाते थे, जिनमें संस्था के शिक्षक, शिक्षार्थी तथा नगर के गण्यमान नागरिक श्रोता-मण्डल में उपस्थित रहते थे। कालान्तर में शिक्षा विभाग की विवेकहीन नीति, संस्था-प्रमुखों की अशक्तता तथा छात्रों की अति उच्छृंखलता के कारण शिक्षा-संस्थाओं में कवि-सम्मेलनों का आयोजन समाप्त कर दिया गया। इस सबका परिणाम यह हुआ कि विगत 20-25 वर्षों में जो भी छात्र साक्षर होकर (शिक्षित होकर नहीं) जीवन के खुले प्रांगण में आया, वह कविता के संस्कार से बिल्कुल शून्य रहा। उसकी ग्रहणात्मिका क्षमता की कोरी पट्टी पर केवल रुग्ण फिल्मी संस्कार अंकित हो गये, जिसका परिणाम पूरा राष्ट्र भोग रहा है। इस स्थिति से एक और बड़ी हानि यह हुई कि जिस कालावधि में कुछ प्रतिभाशाली छात्रों में रचनाशीलता की भूमि अपेक्षाकृत अधिक उर्वरा होने के कारण अनुकूल वातावरण पाकर जन-सुगम काव्य-रचना की अधिक बलवती सम्भावना का अंकुरण हो सकता था, वे संवेदनहीन हो गये और बाद में उनकी अविकसित प्रतिभा का सड़ा हुआ भाव-बीज हमें कुण्ठा की अनुर्वरा भूमि पर पड़ा मिला।

दुर्घटना केवल इन्हीं स्थितियों तक सीमित नहीं रही। जन मंच-सम्मत श्रेष्ठ रचनात्मक काव्य-धारा में इस शताब्दी के चौथे दशक से विदेशी काव्य-आन्दोलनों की छाया पड़ गयी। शुद्ध हिन्दी कविता के क्षीर-कुण्ड में रूप-कलावाद का जामन लगाने में उन आलोकप्रिय रचनाकारों के योजनाबद्ध गिरोह का हाथ रहा, जो निजी असामर्थ्य के कारण कविता के नाम पर मात्र सम्प्रेषण-क्षमता रहित असम्बद्ध छूँछा गद्य देने में ही अपनी रचनाशीलता की सार्थकता मानते थे। ईर्ष्यालंकार से विभूषित ये दम्भी लोग [illegible] के साथ बन्द कमरों में बैठकर 'त्वमेव श्रोता च रचयिता त्वमेव' तथा 'अहो रूपं अहो ध्वनिम्' को दोहराते हुए जन सापेक्ष कवि-सम्मेलन-संस्था के सम्बन्ध में अपना दक्षिण पक्षाघात-ग्रस्त मुँह बिचकाते रहे।

हिन्दी जगत में काव्य पुस्तकों को पढ़ने-पढ़ाने की प्रथा नहीं है, वरन् उन्हें

ऊँचे मूल्य पर प्रकाशित करा कर आम आदमी की पहुँच से बाहर के पुस्तकालयों में सजाने का शौक रहा है। श्रुति युग के संस्कारों को जीवित रखते हुए हिन्दी भाषी हर स्तर पर श्रवण में ही आस्था रखता है। यह भी निर्विवाद रूप से सत्य है कि रचनाकार को जन-समूह से सार्थक विनिमयात्मक साक्षात्कार के इतने अधिक अवसर प्रदान करने वाला सशक्त एवं संभावनाशील माध्यम कवि-सम्मेलन के अलावा कोई दूसरा नहीं है। बहुमुखी षडयन्त्र जनित इन विषम परिस्थितियों में अपेक्षा इस बात की है कि ऐसे सहज-सुलभ माध्यम को परिष्कृत करके हम कैसे रचनात्मक मोड़ दें। इसके लिए यह परमावश्यक है कि कवि-सम्मेलन के रचना-संसार का विस्तृत-विश्लेषणात्मक अध्ययन करके उसके हर अन्तरंग पक्ष को उजागर किया जाये। यह कठिन अनुष्ठान बड़े कौशल और कठोर परिश्रम के साथ डॉ० विशेषलक्ष्मी 'वीणा' ने प्रस्तुत शोध-ग्रन्थ के माध्यम से किया है। उन्होंने इसमें हिन्दी कवि-सम्मेलन और कविता के साथ ही उर्दू मुशायरे और शायरी का परिचयात्मक विवेचन भी प्रस्तुत किया है, जो सम्भवतः हिन्दी माध्यम से अनुसन्धान के क्षेत्र में पहली बार ही हुआ है। इस दिशा में किये गये सर्व प्रथम समीक्षा-यज्ञ का स्वागत युगीन स्रोतस्विनी के तट पर होना ही चाहिये, क्योंकि इसका स्वागत वास्तव में जाने-माने-बेपहचाने असंख्य रचनाकारों का स्वागत सिद्ध होगा।

मैं डॉ० विशेषलक्ष्मी 'वीणा' को ऐसे दुष्कर एवं अछूते विषय की ओर अग्रसर होने के लिए कोटिशः साधुवाद एवं उसकी सफल सिद्धि के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ।

26/73 अहीर पाड़ा, आगरा-2 **सोम ठाकुर**

कार्तिक पूर्णिमा, 2041 वि० 

बधाई

प्रिय बेटी डा० विशेष लक्ष्मी 'वीणा' द्वारा लिखित "हिन्दी कवि-सम्मेलन और मंचीय कवियों का साहित्यिक-योगदान" शीर्षक शोध-प्रबन्ध हिन्दी-जगत, विशेषतः मंचीय-काव्य-प्रेमियों के लिए एक विशिष्ट उपलब्धि है।

हिन्दी कविता अथवा कवियों पर अब तक जितने भी शोध-कार्य हुए हैं, उनकी परिधि प्रायः संकुचित ही रही है। यह पहला शोध-प्रबन्ध है, जिसमे हिन्दी और उसके अन्तर्गत मानी जाने वाली बोलियों के सभी मंचीय-कवियों को, फिर चाहे वे प्राचीन-शैली के छन्द-सवैया लिखते हों, रहस्यवादी अथवा छायावादी गीतकार हों, मुक्त छन्दवादी हों अथवा नई कविता, नवगीत आदि के सर्जक हो, एक साथ सम्मिलित कर, उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त, परन्तु समीचीन दिग्दर्शन कराया गया है। साथ ही हिन्दी कवि-सम्मेलनों के गौरवपूर्ण उद्‌भव के इतिहास से लेकर वर्तमान शोचनीय स्थिति तक के कारणों पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए, निराकरण के उपायों को भी सुझाया गया है।

ब्रज क्षेत्र से सम्बद्ध लगभग 250 प्रमुख मंचीय कवियों के विस्तृत उल्लेख के साथ ही देश के वर्तमान ख्याति-प्राप्त प्रायः सभी मंचीय-कवियों का संक्षिप्त-परिचय भी इस ग्रन्थ की व्यापकता का परिचायक है। सम्पूर्ण ग्रन्थ में 1000 से अधिक मंचीय कवियों का उनकी लोक-प्रियता के आधार पर ऐसा सुन्दर विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है कि विवेचन की वैज्ञानिकता एवं सार्थकता को देखकर लेखिका के कठिन परिश्रम तथा अध्यवसाय की सराहना करनी पड़ती है।

इस शोध-कार्य का विषय सर्वथा नवीन, मौलिक तथा आकर्षक तो है ही, इस प्रबंध की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें जहाँ प्रत्येक मंचीय-कवि के निजी तथा साहित्यिक-व्यक्तित्व के उज्ज्वल-पक्ष को भली-भाँति उभारा गया है, वहीं उसके धुंधलके को छिपाने की भी कोई चेष्टा नहीं की गई है। मंचीय-ख्याति के साथ ही 'साहित्यिकता' से किस कवि का कितना सम्बन्ध है, इस विषय पर लेखिका ने अपने अध्यवसाय, सूक्ष्म दृष्टि एवं गम्भीर चिन्तन के आधार पर जो निष्पक्ष तथा निर्भीक विचार व्यक्त किए हैं—मेरी दृष्टि में वे ही इस शोध-कार्य की सबसे बड़ी उपलब्धि हैं।

जो लोग कवि-सम्मेलन एवं मंचीय कवियों के पूर्व तथा वर्तमान रूप की अन्तरङ्ग झाँकी लेने के इच्छुक हों, उनके लिए यह शोध-प्रबन्ध अणुवीक्षण-यन्त्र सिद्ध होगा।

इतना ही नहीं, इस ग्रन्थ में उल्लिखित अनेक मंचीय कवि भी रेखा-चित्रों के दर्पण में स्व-प्रतिबिम्ब को देखकर यदि अपने विषय में सँजोई गई गलत फहमियों से मुक्त न हो सकें तो भी कुछ-न-कुछ सोचने के लिए तो अवश्य बाध्य होंगे ही—यह निश्चित है। कवि-सम्मेलनों के श्रोताओं को भी उससे अपने प्रिय-कवियों के आन्तरिक स्वरूप की एक झलक प्राप्त हो सकेगी।

यह ग्रंथ कवि-सम्मेलनों के आयोजकों के लिए भी अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा, क्योंकि इसमें कार्यक्रम-सम्बन्धी तकनीकी-जानकारी का विस्तृत उल्लेख हुआ है। साथ ही कवियों के चुनाव में भी उन्हें सहायता मिल सकेगी। स्वातन्त्र्योत्तर काल की जिस पीढ़ी ने कवि-सम्मेलनों के यथार्थ-स्वरूप को देखा ही नहीं है और जो वर्तमान युग की 'भंड़ैती' को ही कवि-सम्मेलन मान बैठे हैं, उन्हें भी इस ग्रन्थ के अध्ययन से वास्ताविकता का भान हो सकेगा।

यह ग्रंथ हिन्दी साहित्य के भावी इतिहासकारों के लिए भी उपादेय सिद्ध होगा, क्योंकि इसमें उल्लिखित जो कवि कभी इतिहास-पुरुष बनेंगे, उनके व्यक्तित्व से सम्बन्धित प्रामाणिक-सूत्र इसके माध्यम से सहज ही प्राप्त हो सकेंगे।

हिन्दी-जगत् इस शोध-प्रबंध को बड़े स्नेह और सम्मान के साथ अपनायेगा—इस आशा के साथ मैं डा. वीणा को इस दुरूह कार्य की प्रशंसनीय सम्पन्नता के लिए हार्दिक बधाई और अशीर्वाद देता हूँ।

14 अक्टूबर 1984 ई.
हंटले हाउस
महात्मागांधी मार्ग, आगरा

डा. राम गोपाल सिंह चौहान
अध्यक्ष—हिन्दी विभाग
आगरा कालिज, आगरा

शुभाशीष

डा० विशेषलक्ष्मी 'वीणा' का शोध-प्रबन्ध—"हिन्दी कवि-सम्मेलन और मंचीय कवियों का साहित्यिक-योगदान"—प्रकाशित हो रहा है, यह बड़ी प्रसन्नता का विषय है।

कवि-सम्मेलनों का प्रादुर्भाव भारतेन्दु-युग में समस्या-पूर्ति के रूप में हुआ था, परन्तु उन कवि-सम्मेलनों को 'कवि-गोष्ठी' अभिहित करना ही समीचीन है, क्योंकि वे कवि-गोष्ठियाँ साहित्यिक अभिरुचि के कतिपय प्रबुद्ध-व्यक्तियों तक ही सीमित थीं। उनके विषय और अभिव्यंजना-शिल्प में भी विशेष अन्तर नहीं था, परन्तु आज के कवि-सम्मेलन विशाल जन-समूह को आकर्षित करते हैं। उनके विषय और अभिव्यक्ति-कौशल में वैविध्य है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में डा० 'वीणा' ने साठ वर्ष के अन्तराल में उद्भूत एवं निरन्तर प्रवहमान लगभग 250 मंचीय-कवियों की रचनाओं तथा प्रवृत्तियों को सूत्र बद्ध करके उनका विश्लेषण किया है। पाठकों को इतने अधिक कवियों से एक ही स्थान पर परिचित करा देना ही एक महत् कार्य है।

डा० 'वीणा' ने हिन्दी साहित्य के पाठकों को मंचीय-कवियों और उनकी काव्यगत विशेषताओं से अवगत कराने में अध्यवसाय, धैर्य, मौलिक-विचार तथा चिन्तन का परिचय दिया है, साथ ही कवि-सम्मेलन के स्वरूप, संचालन तथा मंच-व्यवस्था आदि का विवेचन एवं विश्लेषण करके प्रबन्ध को अधिक रुचिकर एवं परिचयात्मक बना दिया है। इस गुरुतर कार्य की सफल निष्पन्नता हेतु वे हमारे आशीर्वाद की पात्र हैं।

साहित्य-कुंज,
महात्मा गाँधी मार्ग, आगरा

डा० किरण कुमारी गुप्त डी० लिट्०
भू० पू० प्राचार्या: आगरा कालिज
(महिला-विभाग)



स्वागत

डा. विशेषलक्ष्मी 'वीणा' का शोध-प्रबन्ध "हिन्दी कवि-सम्मेलन और मंचीय कवियों का साहित्यिक-योगदान" प्रकाशित हो रहा है—यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मैंने इस शोध-ग्रन्थ की पाण्डुलिपि का गम्भीरता पूर्वक अध्ययन किया है, अतः मैं विश्वास पूर्वक यह कहने में समर्थ हूँ कि वर्तमान समय में जबकि हिन्दी कवि-सम्मेलन पतन के गहरे गर्त्त में डूबते चले जा रहे हैं, इस ग्रन्थ का प्रकाशन एक युगीन-आवश्यकता थी, क्योंकि इसमें लेखिका ने हिन्दी कवि-सम्मेलनों के उद्भव तथा उत्थान-कालीन श्रेष्ठतम साहित्यिक-स्वरूप का दिग्दर्शन कराते हुए, क्रमशः उसके पतन के कारणों एवं वर्तमान विकृत-दशा का ऐसा बेवाक चित्रण किया है, जो न तो किसी पूर्वाग्रह पर आधारित है और न अतिशयोक्तिपूर्ण ही है। हिन्दी-जगत के मनीषी विद्वानों, साहित्यानुरागियों तथा कवि-सम्मेलनों के प्रबुद्ध श्रोताओं की मौन-अनुभूतियों को इस शोध-ग्रन्थ ने भाषा देने का सराहनीय एवं साहसपूर्ण कार्य किया है और वह भी ऐसे कौशल पूर्ण ढंग से कि न तो किसी यथार्थ साहित्यिक-गौरव पर रत्ती भर आँच आने पाई है और न किसी अनधिकारी को स्थापित करने का प्रयास ही किया गया है। जहाँ जो कुछ भी है; सब सत्य है, यथार्थ है। इस ग्रन्थ के अध्ययन से स्वातन्त्र्योत्तर-कालीन पीढ़ी को हिन्दी कवि-सम्मेलनों के यथार्थ रूप को हृदयंगम करने तथा वर्तमान मंचीय-कवियों की साहित्यिक-प्रतिभा का सही मूल्यांकन करने में भी बड़ी मदद मिलेगी।

हिन्दी कवि-सम्मेलन से सम्बन्धित शायद ही कोई ऐसा विषय होगा, जो लेखिका की पारदर्शी दृष्टि से ओझिल रहा हो। संक्षेप में इसे "हिन्दी कवि-सम्मेलन तथा मंचीय कवियों का 'इनसाइक्लोपीडिया' भी कहा जा सकता है। तीव्र अनुभूति के साथ सशक्त भाषा, तथ्य-संकलन के साथ निर्भ्रान्ति एवं नीर-क्षीर विवेकी अभिमत की प्रस्तुति जिस तटस्थ एवं निरपेक्ष भाव से की गई है, वह लेखिका के उच्च बौद्धिक धरातल, साहस, निर्भीकता एवं रचनात्मकता का अप्रतिम उदाहरण है।

एक नितान्त अभिनव तथा सच्चे अर्थों में मौलिक विषय पर किया गया यह महत्वपूर्ण शोध-कार्य ऐतद्विषयक आगामी शोधकर्त्ताओं के लिए जहाँ प्रकाश-स्तम्भ सिद्ध होगा, वहीं सन्दर्भ-ग्रन्थ के रूप में अपनी अक्षुण्ण प्रतिष्ठा भी बनाये रहेगा—ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है।

मैं डा. विशेषलक्ष्मी की इस अभिनव कृति का हार्दिक स्वागत करती हूँ।

डा. (श्रीमती) कुसुम चतुर्वेदी
प्रभारी-प्रशिक्षण विभाग
श्रीमती भ. दे. जैन क. महाविद्यालय, आगरा